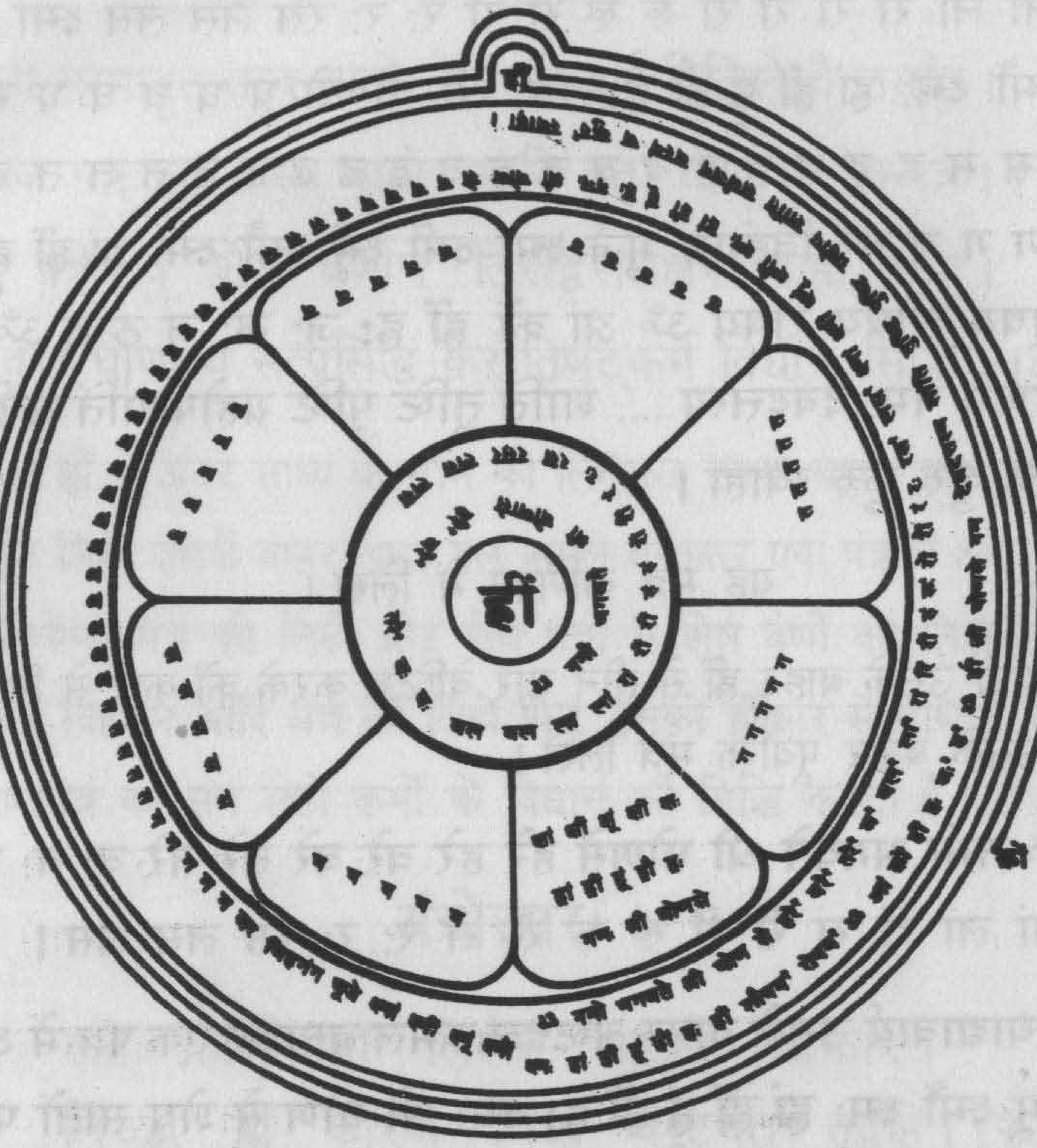


द्वादश पत्रांबु रूहं मलवरर्यूंकार संयुतं कूटं।
तन्मध्ये नाम युतं विलिखेत क्लींकार सं रुद्धं।।

बारह दल के कमल की कर्णिका में क्लींकार से संरुद्ध नाम सहित लिखे। मलवर यूंकार सहित कूटाक्षर क्षकार वाले क्ष्म्ल्वर्यूं में देवदत्त नाम सहित लिखे इस अक्षर की पार्श्व में अर्थात् दोनों तरफ क्लीं लिखे।

विलिखेत् जयादि देवी: स्वाहांतोकार पूर्विका दिक्षु:।
जभमह पिंडोपेता विदिक्षु जंभादिका स्तद्वत।।

जयादि चारों देवियों के नाम को ॐ आदि में और स्वाहा अंत में लगाकर चारों दिशाओं में लिखें- ॐ जये स्वाहा पूर्व दल में ॐ विजये स्वाहा, दक्षिण

सम्पादकीय

मंत्र शास्त्र भारत का ऐसा विज्ञान है जिसके चमत्कारों को सुन देख कर सम्पूर्ण विश्व चकित है। इस प्राचीन विज्ञान का अधिकांश विवरण अब प्राय: लुप्त हो चला है जिसके कारण हमें बहुधा इसकी सत्यता तथा प्रामाणिकता पर ही संदेह होने लगता है। फिर भी यह एक शाश्वत शास्त्र है। इसकी सत्यता केवल साधना से ही प्रमाणित हो सकती है। मंत्र, तंत्र, यंत्र से होने वाली अप्रभावना का मुख्य कारण ज्ञान तथा साधना का अभाव ही है। आज हर व्यक्ति केवल यही चाहता है कि उसे कोई ऐसा मंत्र बता दिया जाय जिसे पढ़ने मात्र से ही चमत्कारिक परिणाम प्राप्त कर ले। परन्तु मंत्र शास्त्र की प्रत्येक पुस्तक में उल्लेख है कि पुस्तक में लिखा मंत्र निष्प्रभावी होता है क्योंकि प्रत्येक मंत्र को जागृत करने के लिए विधीवत साधना की आवश्यकता होती है। प्राचीन काल में साधक ऋषि, मुनि ऐसी साधनाऐं करते थे तब उनको तदनुसार सिद्धियाँ प्राप्त होती थीं। मंत्र की सिद्धि कर मनुष्य अपना कार्य सिद्ध कर लेते थे। मंत्र साधना मधु मक्खियों के छाते में हाथ डालने के समान है प्राय: मंत्र सिद्ध करने वालों को या तो उसे बीच में ही छोड़ना पढ़ता है। या फिर कुछ कमी रहने के कारण सिद्धि नहीं मिलती, मंत्र सिद्धि करने वाले व्यक्ति में अनेक गुणों का होना आवश्यक है। यदि व्यक्ति शुद्ध आचरण के साथ मन वचन काय को वश में करके मंत्र साधना करता है तो उसको सिद्धि अवश्य ही मिलती है।

मंत्र महा विज्ञान में इस कमी को पूरा करने का प्रयास किया गया है कि जैसा नाम है उसी प्रकार के मंत्र यंत्र भी इसमें दिए गए हैं।

आज कल जन मानस की आस्था मंत्रों के उपर से कम होती जा रही है कोई कहता है कि मंत्र यंत्र ये सब कपोल कल्पित बातें हैं। यदि मंत्र शक्ति का लोगों ने दुरुपयोग किया है जिसके फल स्वरूप आज हमारे मन में एक गलत धारणा बन गई।

मंत्र के प्रति दृढ विश्वास और अटूट श्रद्धा ही व्यक्तियों को सिद्धि प्रदान कराती है। सच्ची श्रद्धा से कठिन कार्य भी सुसाध्य हो सकते हैं। मंत्र में अचिन्त शक्ति है विधी पूर्वक सिद्ध करने पर मंत्र सिद्ध होते हैं। और नाना प्रकार के इष्ट पदार्थों की पूर्ति करते हैं।

जो विशिष्ट प्रभावक शब्दों द्वारा निर्मित किया हुआ वाक्य होता है वह मंत्र कहा जाता है। बार-बार जाप करने पर शब्दों के पारस्परिक संघर्षण के कारण वातावरण में एक प्रकार की विद्युत तरंगें उत्पन्न होने लगती हैं तथा साधक की इच्छित भावनाओं को बल मिलने लगता है। फिर वह जो चाहता है वही होता है मंत्र के लिए उसके हिसाव से जाप्य की संख्या, शब्द, बीजाक्षर, अक्षर तथा विभिन्न मंत्रों के लिए विभिन्न प्रकार की मालाएँ, वस्त्र, आसन, दिशाएँ क्रियायें आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है तभी मंत्र सिद्ध होता है।

इस पुस्तक में इन सभी की जानकारी विशेष रूप से दी गई है। पाठक वृन्दों को यदि कोई भूल नजर आवे तो सूचित करने की कृपा करें ताकि आगामी संस्करण में सुधार किया जा सके।

एतद् गोप्यं महागोप्यं न देयं यस्य कस्यचित

मंत्र साधना में सफलता का मूल आधार चित्त की एकाग्रता है। मंत्र अपने आप में देवता है अत: लौकिक एवं पारलौकिक सिद्धियों एवं सफलताओं के लिए इससे बढ़कर अन्य कोई साधन नहीं है।

अनादि मूल मंत्रोऽयं सर्व विघ्न विनाशनः।

मंङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलं मत।।

द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा यह मंगल सूत्र अनादि है और पर्थार्थिक नय की अपेक्षा सादि है इस प्रकार यह नित्यानित्य रूप भी है। यह णमोंकार मंत्र अनादि निधन है। सम्पूर्ण मंत्रों का मूल स्तरूप होने के कारण इसको मूल मंत्र भी कहते है इस मंत्र के माध्यम से सम्पूर्ण विघ्न नष्ट हो जाते हैं। सम्पूर्ण मंगलों में यह मंगल एवं प्रथम मंगल है। इस मंत्र से चौरासी हजार मंत्रों का उद्भव हुआ है। जो इस मंत्र को श्रद्धा से स्मरण करता है उसके पापों का नाश स्वतः ही हो जाता है।

बारह अंगों का लोप होने पर भी पूर्व ज्ञान उसके बाद तक भी बना रहा। उसमें विद्यानुवाद का अस्तित्व तो बहुत बाद तक बना रहा तथा दिगम्बर जैनाचार्यों ने इसको लिपीबद्ध कर मंत्रों के अस्तित्व को जीवन दान दिया। आज जैन भंडारों में सैकड़ों ग्रन्थ हस्त लिखित भरे पढ़े हैं। उनका सही रूप में उपयोग भी नहीं हो पा रहा है। अतः मन में विचार आया कि गोपनीय विद्या समाज के सामने लाया जाय ताकि समाज के बुद्धिमान श्रावक इससे लाभ ले सकें।

इस कृति को पढ़कर विधीपूर्वक जो साधना करेगा उसके सभी मनोरथ पूरे होंगे। अन्त में पुनः पाठकों से अनुरोध करूँगा कि वे सीधे ही मंत्र का प्रयोग या अनुष्ठान प्रारम्भ ना करें उन्हें अपने गुरु से सम्यक ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए। यद्यपि एक मंत्र और उससे संबन्धित अनुष्ठान को पूर्ण करने के लिए बहुत अधिक विधि विधान की आवश्यकता होती है उसका ज्ञान गुरु से ही प्राप्त होता

है। अतः साधक को चाहिए कि गुरु चरणों में बैठकर विनय पूर्वक अपने अनुकूल साधना करें।

मुझे विश्वास है कि यह ग्रन्थ प्रत्येक साधक को वरदान स्वरूप सिद्ध होगा और वे अपने इक्छाओं की पूर्ति कर सकेगें।

जैन मन्दिर
गुलाब वाटिका दिल्ली

ब्र. धर्मचंद शास्त्री
प्रतिष्ठाचार्य
ज्योतिषाचार्य
मंत्र, यंत्र, तंत्र विशेषज्ञ

सूचि-पत्रम

आदि मंगल

ओंङ्कारं विन्दु संयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव, ओंङ्काराय नमो नमः।।१।।

अविरल शब्द घनौघ- प्रक्षालित सकल भूतकलङ्का।
मुनि भिरुपासित तीर्था, सरस्वती हरतु नो दुरिताम्।।२।।

अज्ञान तिमिरान्धानां, ज्ञानाज्जन-शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।३।।

नमस्तस्यै सरस्वत्यै, विमलज्ञान मूर्तये।
विचित्रा लोक यांत्रेयं, यत्प्रसादात्प्रवर्तते।।४।।

गुरु-भक्त्या वयं सार्ध-द्वीप-द्वितय-वर्तिनां।
वन्दामहे त्रिसंख्योन-नवकोटि-मुनीश्वरान्।।५।।

अज्ञान तिमिरान्धानां, ज्ञानाञ्जशलाकया।
चक्षुरुन्मीलिनं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।६।।

गुरवः पान्तु वो नित्यं, ज्ञान दर्शन नायकाः।
चारित्रार्णव गम्भीरा, मोक्षमार्गोपदेशकाः।।७।।

जिन पंजर स्तोत्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं, अर्हद्भ्यो नमो नमः।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं, सिद्धभ्यो नमो नमः।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं, आचार्यभ्यो नमो नमः।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं, उपाध्यायेभ्यो नमो नमः।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतम स्वामी प्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमो नमः।

एषो पंच नमस्कारः सर्वपापक्षयंकरः।
मंगलाणं च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलं।।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं जये विजये, अर्हं परमात्मने नमः।
कमलप्रभ सूरींद्र-भाषितं जिन पंजरम्।।३।।
एकभुक्तोपवासने त्रिकालं यः पठेदिदम्।
मनोभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवं।।
भूशायी ब्रह्मचर्य्येण, क्रोध लोभ विवर्ज्जितः।
देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासै-र्लभते फलं।।४।।
अर्हन् स्थापयेन्मूर्ध्नि - सिद्ध चक्षुर्ललाटके।
आचार्यं श्रोतयो मर्ध्ये, उपाध्यायन्तु नासिके।।५।।
साधुवृंदं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धिं विधाय च।
सूर्य चंद्र निरोधेन, सुधीः सर्वार्थ सिद्धये।।६।।
दक्षिणे मदनद्वैषी, वाम पार्श्वे स्थितो जिनः।
अंग संधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः।।७।।
पूर्वस्यां जिनो रक्षत् आग्नेय्यां विजितेन्द्रियः।
दक्षिणस्यां पर-ब्रह्म, नैऋृत्यां च त्रिकालवित्।।८।।

पश्चिमायां जगन्नाथो, वायव्ये परमेश्वर:।
उत्तरां तीर्थकृत्सर्व, ईशाने च निरंजन:।।९।।

पातालं भगवान्नार्ह,- न्नाकाशे पुरुषोत्तम:।
रोहिणी प्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलम्।।१०।।

ऋषभो मस्तकं रक्षेदजितोऽपि विलोचने।
संभव: कर्ण युगले, नासिकां चाभिनन्दन:।।११।।

ओष्ठौ श्री सुमति रक्षेत् दंतान्पद्मप्रभो विभु:।
जिह्वां सुपार्श्व देवोऽयं, तालु चंद्र प्रभाभिध:।।१२।।

कंठं श्रीसुविधी रक्षते् हृदयं श्री सुशीतल:।
श्रेयांसो बाहु युगलं, वासुपूज्य: कर- द्वयं।।१३।।

अंगुलीं विमलो रक्षते् अंनतोऽसौ नखानपि।
श्री धर्मोप्युदरास्थीनि, श्री शांति-र्नाभिमंडलं।।१४।।

श्री कुंथो गुह्यकं रक्षते्, अरो रोमकटीतले।
मल्लिररु पृष्टि वंशं, पिंडिकां मुनिसुव्रत:।।१५।।

पादांगुलि-र्नमी रक्षते् श्री नेमीश्चरणं द्वयम्।
श्री पार्श्वनाथ: सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकम्।।१६।।

पृथ्वी जल तेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत्।
रक्षेद शेष मो पेभ्यो, वीतरागो निरंजन:।।१७।।

राजद्वारे स्मशाने च, संग्रामे शत्रु संकटे।
व्याघ्र चौरादि सर्पादि, भूत प्रेत भयाश्रिते।।१८।।

अक़ाले मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रितें ।
अपुत्रत्वे महादु:खे, मूर्खत्वे रोग पीडिते ।।१९।।

डाकिनी शाकिनी ग्रस्ते, महाग्रह गणादिते ।
नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ।।२०।।

प्रातरेव समुत्थाय, य: पठेज्जिनपंजरं ।
तस्य किंचिद् भयं नास्ति, लभते सुख सम्पद: ।।२१।।

जिन पंजर नामेदं य:, स्मरत्यनु वासरम् ।
कमलप्रभ राजेन्द्र श्रीयं स लभते नर: ।।२२।।
प्रात: समुत्थाय पठेत्कृतज्ञो, य स्तोत्र मेतज्जिनपिंजरस्य ।
आसाद येत स: कमल प्रभाख्यं, लक्ष्मीं मनोवांछित पूरणाय ।।२३।।

विधि– स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन कर शरीर को धूप देय, एक भुक्त उपवास करें। ब्रह्मचर्य से भूमि पर सोवे तथा कषाय रहित होकर त्रिकाल पढ़े छह मास तक निरन्तर। अन्त में अगर, गूगल, गोले से होम करें। मंत्र १०८ जपे। सभी कार्य सिद्ध होए।

–०–

भस्म पंजर स्तोत्र

परमेष्ठी नमस्कार, सारं नवपदात्मकं।
आत्मरक्षाकरं वज्र, पंजराभं स्मराम्यहम्।।१।।

ॐ णमो अरिहंताणं, शिर स्कंधर- संस्थितम्।
ॐ णमो सिद्धाणं, मुखे मुखपटांबरं।।२।।
ॐ णमो आयरियाणं, अंग रक्षाति शायिनीम्।
ॐ णमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढं।।३।।
ॐ णमो लोए सव्व साहूणं, मोचके पादयोः शुभे।
एसो पंच णमोकारो, शिला वज्र मयीतले।।४।।
सव्व पावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बही।
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगार खातिकां।।५।।
स्वाहा तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवई मंगलं।
वप्रो परि वज्र मयं, पिधानं देह रक्षणे।।६।।
महा प्रभाव रक्षेयं, क्षुद्रो पद्रव नाशिनी।।
परमेष्ठि पदोद्भूता, कथिताः पूर्व सूरिभिः।।७।।
यश्चै कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा।
तस्य न स्याद्भयं व्याधि, राधिश्चापि कदाचन।।८।।

–०–

गुरु का महत्व

गुरुदेव भवेन्माता, गुरुरेव भवेत् पिता।
गुरुरेव सखा चैव, गुरुरेव भवेद्धितं।।

गुरुः स्वामी गुरुर्भर्ता, गुरुविद्या गुरुर्गुरः।
स्वर्गो गुरुर्गुरुर्मोक्षो, गुरुर्बधुः गुरुः सखा।।

गुरुपदेशादिह मंत्रबोधः प्रजायते शिष्यजनस्य सम्यक्।
तस्माद्गुरुपासनमेव कार्यं, मंत्रान्बुभुत्सोर्विनयेन नित्यम्।।

प्रत्येक मनुष्य को पहले किसी योग्य गुरु के चरणों में बैठकर शिष्य बनने की योग्यता प्राप्त करनी चाहिए और फिर गुरु की आज्ञा पाने पर मंत्र की आराधना में लगना चाहिए। शिष्य को आदि से अन्त तक तन-मन और धन से सेवा करते हुए विनय करते रहना चाहिए। क्योंकि मंत्र विधि से सब आपत्तियों से प्राणों की रक्षा करने के कारण गुरु ही माता, गुरु ही पिता और गुरु ही हितकारी होता है। इसके अतिरिक्त साधक के योग्य उत्तम उपदेश देने के कारण गुरु ही स्वामी, गुरु ही भर्त्ता, गुरु ही विद्या, स्वर्ग और मोक्ष का दाता है तथा गुरु ही मित्र होता है। शिष्य को गुरु के उपदेश से ही भली प्रकार मंत्र का ज्ञान होता है। अतः ज्ञान की इच्छा रखने वाले को सदा ही विनय पूर्वक गुरु की उपासना करनी चाहिए। मंत्र गुरु से ही ग्रहण करना चाहिए।

गुरु के लक्षण

अथातः संप्रवक्ष्यामि मंत्रिलक्षण मुत्तमम्।
यो मंत्रादि विधौ प्रोक्तस्सज्जातीयस्त्रिवर्णभृत्।।

रत्नत्रय धन: शूर: कुशलो धार्मिक: प्रभु:।
प्रबुद्धाखिल शास्त्रार्थ:, परार्थ निरत: कृती।।
शांत: कृपालुनिर्द्वेष:, प्रपन्न: शिष्यवत्सल:।
षट्कर्म कर्म वित्साधु, सिद्धविद्यो महायशा:।।

सत्यवादी जितासूर्यो, निरासो निरहंकृति:।
लोकज्ञ: सर्व शास्त्रज्ञे, तत्त्वज्ञो भाव संयुत:।।

मंत्र सिद्ध कराने वाले गुरु में निम्नलिखित लक्षण होने चाहिए। वह बीजाक्षरों को बनाने और मंत्रों को शुद्ध करने में समर्थ हो। वह बीजकोष, मंत्र व्याकरण और मंत्र सामान्य विधान का अच्छा ज्ञान रखने वाला हो। उत्तम वर्णवाला, साहसी, धार्मिक, सब शास्त्रों का अर्थ जानने वाला, दूसरों का उपकार करने में आनन्द मानने वाला, कृतज्ञ, शान्त, कृपालु, चतुर, शिष्यों से प्रेम करने वाला, लोक को पहचाने वाला, यशस्वी, तेजस्वी, सत्यवादी, ईर्ष्या रहित, अभिमान न करने वाला और द्वेष रहित पुरुष ही मंत्रों को सिद्ध कराने में गुरु बन सकता है–

शिष्य के लक्षण

दक्षो जितेन्द्रियो मौनी, देवताराधनोद्यत:।
निर्भयो निर्मदो मंत्री, जप होम रत: सदा।
धीर: परिमिताहार:, कषायरहित: सुधी।।
सुदृष्टि र्विगतालस्य: पाप भीरु दृढ व्रत:।
शीलोपवाससंयुक्तो, धर्म दानादि तत्पर:।।
मंत्राराधन शूरो धर्म दयास्वगुरु विनय शीलयुत:।

मेधा विगतनिद्रः प्रशस्तचित्तोऽभिमानरतः ।।
देव जिन समय भक्तः सविकल्पः सत्वाक् विदग्धाश्च ।
वाक्पटुरपगतशंकः शुचि रार्द्रमना विगतकामः ।।
गुरु भणित मार्ग वर्ती, प्रारब्धस्यांत दर्शनोद्युक्तः ।
बीजाक्षराव धारी, शिष्यः स्यात्सद्गुणोपेतः ।।

मंत्र साधन करने वाले शिष्य में निम्नलिखित गुण होना चाहिए– जो बुद्धिमान, चित्तको व इन्द्रियों को संयम में रखने वाला, मौन से रहने वाला, देवता की आराधना करने को उद्यत हो, भय से रहित, मान से रहित, सदा जप और होम में रत रहने वाला, धीर, संयमित आहार करने वाला, कषाय से रहित, सुधी, सम्यग्दृष्टि, आलस्य रहित, पाप से डरने वाला, ग्रहण किए व्रतों को दृढ़ता से निर्वाहने वाला, शील तथा उपवास से युक्त, धर्म तथा दानादि में लीन, मंत्र सिद्ध करने में वीर, दया भाव रखने वाला, अपने गुरु की विनय करने वाला, जप के समय ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला, मेधावी, निद्रा को जीतने वाला, प्रसन्न रहने वाला, स्वाभिमानी, देव और शास्त्र की आराधना व भक्ति करने वाला, निशंक, सच बोलने वाला, पवित्र मन वाला, कामदेव को जीतने वाला, गुरु के बताये मार्ग पर चलने वाला, बीजाक्षरों को पहचानने वाला तथा अपने भाग्य के फल को भोगने को तैयार रहने वाला ही शिष्य हो सकता है।

मंत्र साधना के अयोग्य पुरुष

सम्यग्दर्शन दूरो वाक्कुंठ श्छांद सो भय समेतः ।
शून्य हृदयोप लज्जो, मंत्रश्रद्धा विहीनश्च ।।

आलस्यो मंद बुद्धिश्च, मायावी क्रोधनो विटः ।
गर्वी कामी मदोद्रिक्तो, गुरुद्वेषी च हिंसकः ।।
अकुलीनोऽतिबालश्च, वृद्धोऽशीलोदयश्च नः ।
चर्मादि श्रृंग केशादि-धारी चाधर्मवत्सलः ।।

ब्रह्महत्यादिदोषोढ्यो, विरूपो व्याधि पीडित: ।
ईदृशो न भवेद्योग्यो, मंत्रवादेषु च सर्वथा।।

निम्न दोषों वाला मनुष्य कभी मंत्र साधक नहीं बन सकता, अत: गुरु कों उचित है कि उसको मंत्र न दे- .

जो सम्यग्दर्शन से दूर हो, पाप करने वाला, कुंठित वाणी वाला, भय करने वाला शून्य हृदय,, मंत्रों में श्रद्धा न रखने वाला, आलसी, मंद बुद्धि, मायावी, क्रोधी, भोगी, इन्द्रिय लोलुपी, कामी, गुरु से द्वेष रखने वाला, हिंसक, शील रहित, अंग-भंग, अत्यन्त बालक, अत्यन्त वृद्ध, १६ वर्ष से कम उम्र वाला, रोगी हो वह साधक नहीं हो सकता।

जाप्य के प्रकार

मानसिक, वाचनिक और कायिक

मानसिक जाप

मन में मंत्र का जाप करना, यह कार्य सिद्धि के लिए होता है।

वाचनिक जाप

उच्च स्वर में मंत्र पढ़ना, यह पुत्र प्राप्ति के लिए होता है।

काययिक जाप

बिना बोले मंत्र पढ़ना, जिसमें होठ हिलते रहें। यह धन प्राप्ति के लिए होता है या किया जाता है।

इन तीनों जाप्यों में मानसिक जाप्य श्रेष्ठ है जांप उंगलियों पर या माला द्वारा करना चाहिए। माला चाहे सूत की हो या स्फटिक, सोना, चाँदी या

मोती आदि की हो सकती है।

विश्व शान्ति के लिए आठ करोड़ आठ लाख आठ हजार आठ सौ आठ जाप करें। कम से कम सात लाख जाप करें। यह जाप नियमबद्ध होकर निरन्तर करें, सूतक पातक में भी छोड़े नहीं। विश्व शान्ति के लिए दिनों का प्रमाण कर लेना चाहिए।

पुत्र प्राप्ति, नवग्रह शान्ति, रोग-निवारण आदि कार्यों के लिए एक लाख जाप करें। आत्मिक शान्ति के लिए सदा जाप करें। दिनों का कोई नियम नहीं है।

जप पूर्ण होने पर भगवान् का अभिषेक पूजा करके यथा शक्ति दान पुण्य करें।

आसन तथा वस्त्र विधान

१. बाँस– बाँस की चटई पर बैठकर जाप करने से दरिद्र हो जाता है।

२. पाषाण– पाषाण पर बैठकर जाप करने से व्याधि पीड़ित हो जाता है।

३. भूमि– भूमि पर जाप्य करने से दु:ख प्राप्त होता है।

४. पट्टे– पट्टे पर बैठकर जाप करने से दुर्भाग्य प्राप्त होता है।

५. घास– घास की चटाई पर बैठकर जाप करने से अपयश प्राप्त होता है।

६. पत्तों– पत्तों के आसन पर बैठकर जाप करने से भ्रम हो जाता है, तथा मन चंचल होता है।

७. कथरी– कथरी पर बैठकर जाप करने से मन चंचल होता है।

८. चमड़े– चमड़े पर बैठकर जाप करने से ज्ञान नष्ट हो जाता है।

९. कंबल– कंबल पर बैठकर जाप करने से मान भंग हो जाता है।

१० नीले रंग– नीले रंग के वस्त्र पहनकर जाप करने से बहुत दु:ख हो जाता है।

११. **हरे रंग**– हरे रंग के वस्त्र पहनकर जाप करने से मान भंग हो जाता है।

१२. **श्वेत वस्त्र**– श्वेत वस्त्र पहन कर जाप करने से यश की वृद्धि होती है।

१३. **पीले रंग**– पीले रंग के वस्त्र पहन कर जाप करने से हर्ष बढ़ता है।

१४. **लाल रंग**– ध्यान में लाल रंग के वस्त्र श्रेष्ठ हैं। धन धान्य की वृद्धि करता है।

१५. **दर्भासन**– सर्व कार्य सिद्ध करने के लिए दर्भासन (डाभ का आसन) उत्तम है।

गृहे जप फलं प्रोक्त वने शत गुणं भवेत्।
पुण्यारामे तथारण्ये सहस्र गुणितं मतम्।।
पर्वते दश सहस्रं च नद्यां लक्ष मुदाहृतम्।
कोटि देवालये प्राहुरनन्तं जिन सन्निधौ।।

घर में जो जाप का फल होता है उससे नौ गुना फल बन में जाप करने से होता है। पुण्य क्षेत्र तथा जंगल में जाप करने से हजार गुणा फल होता है। पर्वत पर जाप करने से दस हजार गुणा, नदी के किनारे जाप करने से एक लाख गुणा, देवालय (मन्दिर) में जाप करने से करोड़ गुणा और भगवान के समीप जाप करने से अनन्त गुणा फल मिलता है।

अंगुली विधान

अंगुष्ठ जपो मोक्षाय, उपचारे तु तर्जनी मध्यमा धन सौख्याय, शान्त्यर्थं तु अनामिका कनिष्ठा सर्व सिद्धि दा तर्जनी शत्रु नाशायइत्यपि पाठान्तरोऽस्ति हि।

मोक्ष के लिए अंगुठे के जाप करें, उपचार (व्यवहार) के लिए तर्जनी से, धन और सुख के लिए मध्यमा अंगुलि से, शान्ति के लिए अनामिका से और सब कार्यों की सिद्धि के लिए कनिष्ठा से जाप करें। शत्रु नाश के लिए तर्जनी अंगुली से जाप करें।

अँगुष्ठ– अँगुठे को अँगुष्ठ कहंते हैं।
तर्जनी– अंगुठे के साथ की अंगुली का तर्जनी कहते हैं।
मध्यमा– तीसरी बीच की अँगुली को मध्यमा कहते हैं।
अनामिका– चौथी यानि मध्यमा के पास की अँगुली को (अँगुष्ठ से चौथी को) अनामिका कहते हैं।
कनिष्ठा पाँचवीं सबसे छोटी अँगुली को कनिष्ठा कहते हैं।

अंगुष्ठेन तु मोक्षार्थं धर्मार्थं तर्जनी भवेत्।
मध्यमा शान्तिकं ज्ञेया सिद्धिला भायऽनामिका।।१।।

जाप्य विधि में मोक्ष तथा धर्म के वास्ते अँगुष्ठ के साथ तर्जनी से, शान्ति के लिए मध्यमा तथा सिद्धि के लिए अनामिका अंगुली से जाप्य करें।

कनिष्ठा सर्व सिद्धार्थ एतत् स्याज्जाप्य लक्षणाम्।
असंख्यातं च यज्जप्तं तत् सर्वं निष्फलं भवेत्।।२।।

कनिष्ठा सर्व सिद्धि के लिए श्रेष्ठ है, ये जाप के लक्ष्य जाने बिना मर्यादा किया हुआ सब जाप्य निष्फल होता है अर्थात् किसी मंत्र का २१ बार जाप्य लिखा है तो वहां २१ से कम या अधिक जाप्य नहीं करना, ऐसा करने से वह निष्फल होता है। मंत्र सिद्ध नहीं होता।

अंगुल्ग्रेण यज्जप्तं यज्जप्तं मेरु लंघने।
व्यग्र चित्तेन यज्जप्तं तत् सर्वं निष्फलं भवेत्।।३।।

अंगुली के अग्र भाग से जो जाप किये जायें तथा माला के ऊपर जो तीन दाने मेरु के हैं, उनको उल्लंघन करके जो जाप्य

किया जाय तथा व्याकुल चित्त से जो जाप्य किया जाय वह सब निष्फल होता है।

माला सपंच वर्णानां सुमाना सर्व कार्यदा।
स्तम्भने दुष्टसंत्रासे जपेत् प्रस्तर कर्कशान्।।४।।

सब कार्यों में पांचों वर्णों के फूलों की माला श्रेष्ठ है, परन्तु दृष्टों को डराने में तथा स्तम्भन करने व कीलने में कठोर (सख्त) वस्तु के मणियों की माला से जाप्य करें।

धर्मार्थी काम मोक्षार्थी जपेद वै पुत्र जीविकाम्।
शान्तये पुत्र लाभाय जपे दुत्तमालिकाम्।।५।।

मंत्र साधन करने वाला धर्म के लिए, काम और मोक्ष के लिए तथा शान्ति के लिए पुत्र प्राप्ति के वास्ते मोती आदि की उत्तम माला से जाप्य करें। शान्ति से यह उपद्रव हो उसकी शान्ति करना। अन्य कामों में नवीन माला से जाप्य करें।

शान्ति अर्द्ध रात्रि वारुणि दिक् ज्ञान मुद्रा पंकजासन।
मौक्तिक मालिका स्वच्छे स्वेते पू० चन्द्र नाड़ी क्रा।।६।।

शान्ति के प्रयोग में मंत्र जाप्य करने तथा आधी रात के समय पश्चिम दिशा की ओर मुख करके ज्ञान-मुद्रा सहित कमलासन युक्त मोतियों की माला से स्वच्छ स्वेत बाएँ योग पूरक चन्द्र नाड़ी के चलते का उच्चारण करता हुआ जाप्य करें।

स्त्भनं पूर्वान्हे वज्रासने पूर्व दिक् शंभुमुद्रा।
स्वर्ण मणि मालिका पीताम्बर वर्ण ठः ठः।।७।।

स्तम्भन (रोकना तथा कीलना) के प्रयोग में पूर्वाहन अर्थात् दोपहर से पहले काल में वज्रासनयुक्त पूर्व दिशा की तरफ मुख करके स्वर्ण के मणियों की माला से पीले रंग के वस्त्र पहने हुए ठः ठः पल्लव उच्चारण करता हुआ जाप्य करें।

शत्रुच्चाटनें च रुद्राक्ष विद्वेषारिष्टजंप्जा।
स्फाटिकी सूत्रजामाला मोक्षार्थानां तू निर्मला।।८।।

दुश्मन का उच्चाटण करने के लिए रुद्राक्ष की माला, वैर करने के लिए अरिठा की माला, मोक्षाभिलाषियों को स्फटिक मणि की तथा सूत्र की माला श्रेष्ठ है।

उच्चाटनं वायव्यदिक् अपरहनकाल कुक् क्कुटासन।
प्रवाल मालिका धूम्रा च फटित् तर्ज न्यगुष्ठयोगेन।।६।।

उच्चाटन इसके प्रयोग में वायव्य कोण (पश्चिम और उत्तर के बीच में) की तरफ मुख करके अपराहन (दोपहर के बाद) में कुक्कुटासनयुक्त मूँगे की माला से धुँवे के रंग व फट् पल्लव लगाकर अँगूठा और तर्जनी से जाप करें।

वशीकरण पूर्वा स्वस्तिकासन उत्तरदिक् कमलमुद्रा।
विद्रुममालिका जपा कुसुम वर्ण वषट् ।।१०।।

वशीकरण अर्थात् वश में करना इसके प्रयोग में पूर्वाहन, दोपहर के पहले काल में स्वस्तिकासन युक्त उत्तर दिशा की तरफ मुख करके कमल मुद्रा सहित मूँगे की माला से जपें। कुसुमवर्ण वषट् पल्लव उच्चारण करता हुआ जाप्य करें।

आसन डाभ, रक्त वर्ण, यन्त्रोद्धार! रक्त पुष्प, वाम हस्त, डाभ के आसन पर बैठ कर लाल कपड़े सहित यंत्रोद्धार.... लाल फूल रखता हुआ बायें हाथ से जाप्य करें।

आकृष्टि पूर्वाहन् दण्डासनं अंकुश मुद्र दक्षिणदिक्।
प्रवाल माला उदयार्क वर्ण वौषट् स्फुट अंगुष्ठ मध्यमाभ्यंतु।।११।।

आकृष्टि– बुलाना इसके प्रयोग में पूर्वाहन् (दोपहर से पहले) काल में दण्डासनयुक्त अंकुश मुद्रा-सहित दक्षिण दिशा की तरफ मुख करके

मूँगे की माला से उदयार्कवण.... षाट उच्चारण करता हुआ अंगूठे और बीच की अंगुली से जाप्य करें।

निषिद्ध सम्ध्यासमय भद्र पीठासन ईशान दिक् वज्रमुद्रा।
जीवापोता मालिका धूम्र बहुभ कनिष्ठांगुष्ठयोगेन।।१२।।

निषिद्ध कर्म या मारण कर्म समय में भद्र पीठासन युक्त ईशान (उत्तर और पूर्व दिशा के बीच) की तरफ मुख करके वज्र युक्त अरीठा की माला से धूप खेता हुआ या होम करता हुआ अंगूठे और कनिष्ठा से जाप करें।

इन मंत्रों का जाप्य भगवान् की वेदी के सामने देव स्थान में जाप्य करना चाहिए या घर में एकान्त स्थान में जाप्य करें। किन्तु घर में होम और पुण्याहवाचन करके णमोकार मंत्र का चित्र और जिनेन्द्र भगवान का चित्र, या यंत्र के समीप दीप और धूपदानी समक्ष रख कर, आसन पर बैठकर और शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप्य करें। उस स्थान पर बच्चों आदि का उपद्रव या शोर नहीं होना चाहिए। मंत्र की जाप्य, अत्यन्त शुद्ध, भक्ति के साथ करनी चाहिए। मंत्र में किसी प्रकार की आकुलता, चिन्ता, दुःख, शोक आदि भावनाएँ नहीं रहनी चाहिए। जाप्य करते समय मन को स्थिर रखना चाहिए। पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके जाप्य देनी चाहिए, मौन रखना चाहिए। जितने दिन जाप्य करें, एकाशन, किसी रस का त्याग, वस्त्र आदि का परिमाण करें। जमीन, चटाई या तख्ते पर सोवें, जाप्य समाप्त होने तक ब्रह्मचर्य व्रत रखें। मंत्र की जाप्य पुष्य, हस्त और मूल आदि शुभ नक्षत्रों में आरम्भ करना चाहिए। प्रात: दोपहर और शाम को जाप्य करें। सुबह ५ बजे उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र पहन कर जाप्य दें। श्वेत वस्त्र पहनें। यदि घर में जाप्य करनी हो तो भगवान् का दर्शन-पूजन करने के पश्चात् करनी चाहिए। दोपहर को शुद्ध वस्त्र पहनकर तथा संध्या को मन्दिर में दर्शन करने के पश्चात् शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप्य करें।

नोटः– जो बिना रक्षा मंत्र के मंत्र साधन करते हैं वे अक्सर व्यन्तरों से डराये जाकर अधबीच में मंत्र छोड़ देने से पागल हो जाते हैं। इसलिए जब कोई मंत्र सिद्ध करने बैठे तो मंत्र जपना आरम्भ करने से पूर्व इनमें से कोई रक्षा-मंत्र जरूर जप लेना चाहिए। इससे मंत्र साधन करने में कोई उपद्रव नहीं हो सकेगा और कोई ब्यन्तर वगैरह रूप बदलकर ध्यान में विघ्न नहीं डाल सकेगा। सीमा के अन्दर आ नहीं सकेगा।

मंत्र साधन करने वाले के लक्षण

निर्जित मदनाटोपः प्रशमित कोपो विमुक्त विकथालापः।
देव्यर्चनानुरक्तो जिनपद भक्तौ भवेन्मंत्री।।१।।

जिससे कामदेव को जीता है और जिनके क्रोधादि शान्त हैं, जो विकथाओं से दूर रहने वाला है, देवियों की पूजा करने में जिसका चित्त अनुरक्त है, और जिनेन्द्र प्रभु के चरण कमलों की भक्ति वाला है, वह मंत्री हो सकता है याने मंत्र साधन करने वाला हो सकता है।

मंत्राराधन शूरः पाप विदूरो गुणेन गम्भीरः।
मौनी महाभिमानी मंत्री स्यानीदृशः पुरुषः।।२।।

जो मंत्राराधना करने में शूरवीर है पाप क्रियाओं से दूर रहने वाला है, गुणों में गम्भीर है, मौनी महान् स्वाभिमानी है, ऐसा पुरुष ही मंत्रवादि हो सकता है।

गुरुजन हितोपदेशी गततेन्द्रो निद्रया परित्यक्ताः।
परिमित भोजन शीलः स स्यादाराधको मंत्राः।।३।।

जिसने गुरुजनों से उपदेश को प्राप्त किया है, तन्द्रा जिसकी खत्म हो चुकी है और जिसने निद्रा लेना छोड़ दिया है, जो परिमित भोजन करने वाला है, वहीं मंत्रों का आराधक हो सकता है।

निर्जित विषय कषायोधर्मामृत जनित हर्षगत कायः ।

गुरुतर गुण सम्पूर्णः समवेदा राधको देव्याः मन्त्रा ।।४।।

जिसने सम्पूर्ण विषय कषायों को जीत लिया है, धर्मामृत का सेवन करने से जिसकी काय हर्ष युक्त है, उत्तम गुणों से संयुक्त है, ऐसा पुरुष ही मंत्राराधना कर सकता है।

शुचिः प्रसन्नो गुरुदेव भक्तो दृढ़ व्रतः सत्य दया समेतः।

वक्षः पटुर्बीज पदाव धारी मंत्री भवेदीदृश एव लोके ।।५।।

एते गुणायस्य न सन्ति पुंसः क्वचित् कदाचिन्न भवेत् स मंत्री।

करोति चेद्दपं वशात् स जाप्यं प्राप्नोत्यनर्थ फणिशेखरायाः ।।६।।

जिसका बाह्य और अभ्यन्तर से चित्त शुद्ध है, प्रसन्न है, देव शास्त्र गुरु का भक्त है, व्रतों को दृढ़ता से पालन करने वाला है ऐसा व्यक्ति ही लोक में मंत्राराधना कर सकता है।

उपरोक्त गुणों से जो पुरुष युक्त नहीं है, वह मंत्र साधन का अधिकारी किसी भी हालत में नहीं होता है। अगर अभिमान से संयुक्त होकर मंत्र साधना कोई करता है तो वह मंत्रों के अधिष्ठाता देवों के द्वारा अनर्थ को प्राप्त होता है।

मंत्र साधना की विधि

- जो पुरुष मंत्र साधन के लिए जिस किसी स्थान में जावें, प्रथम उस क्षेत्र, के रक्षक देव से प्रार्थना करे कि मैं इस स्थान में, इतने काल तक ठहरूँगा, तब तक के लिए आज्ञा प्रदान करो, और किसी प्रकार का उपसर्ग होवे तो उसका निवारण करें – क्योंकि, जैन मुनि भी जब कहीं किसी स्थान पर जाकर ठहरते हैं तो उस स्थान के रक्षक देव को कहते हैं कि इतने दिन तक तेरे स्थान में ठहरेंगे तू क्षमा भाव रखना। इसी प्रकार गृहस्थीयों को अवश्य ही उपरोक्तानुसार रक्षक देव से आज्ञा लेनी चाहिए।

● जब मंत्र साधन करने के वास्ते जावो तब तहां तक हो ऐसे स्थान में मंत्र, सिद्ध करो जहां मनुष्यों का गमनागमन न हो जैसे जैन तीर्थ, सम्मेदशिखर जी, मांगी तुङ्गी जी, सिद्धवरकूट रेवा नदी के तट पर या सोनागिरी एकान्त स्थान में हैं, या बाग-बगीचों या मकानों में, पहाड़ों में तथा नदी के किनारे पर या निर्जन स्थान में, ऐसे स्थानों में मंत्र सिद्ध करने को जाना चाहिए। जब उस स्थान में प्रवेश करो, वहाँ ठहरो तो मन, वचन, काय से उस स्थान का जो रक्षक देव या यक्ष आदि है उसका योग्य विनय मुख से यह उच्चारण करे कि हे इस स्थान के रक्षक देव मै, अपने इस कार्य की सिद्धि के वास्ते तेरे स्थान में रहने के लिए आया हूं। तेरी रक्षा का आश्रय लिया है, इतने दिनों तक निवास के लिए आज्ञा प्रदान कीजिए। अगर मेरे ऊपर किसी तरह का संकट, उपद्रव या भय आवे तो उसे निवारण कीजिए।

● जब मंत्र साधन करने जावे तो, साथ में एक सेवक जो रसोई की वस्तु लाकर, रसोई बनाकर तुमको भोजन करा दिया करे। तुम्हारा धोती-दुपट्टा धो दिया करे, तब तुम मंत्र साधन करने बैठो, तब तुम्हारे सामान की चौकसी रखे।

● जो मंत्र साधन करना हो पहले विधि पूर्वक जितना-जितना हर दिन जप सके उतना ही हर दिन जप कर सवा लाख पूरा कर मंत्र साधना करे, फिर जहाँ काम पड़े उसका जाप जितना करें। १०८ बार या २७ बार या जैसा मंत्र की विधि में लिखा हो, उतनी बार जपने से कार्य सिद्ध होवे। मंत्र शुद्ध अवस्था में जपे। शुद्ध भोजन खाये। और मंत्र में जिस शब्द के दो-दो का अंक हो उस शब्द का दो दो बार उच्चारण करें।

● जब मंत्र जपने बैठे, पहले रक्षा-मंत्र सकलीकरण कर अपनी रक्षा कर लिया करें, ताकि जाप्य में विघ्न न डाल सकें। अगर रक्षा मंत्र जप कर मंत्र जपने बैठे तो सांप, बिच्छू, भेड़ियां, रीछ, शेर, बकरा उसके बदन को न छू सकें। दूर ही ठहर जावें। मंत्र पूर्ण होने पर जो

देवी-देव सांप वगैरह बनकर उसको डराने आवें तो जो रक्षा मंत्र जप कर जाप करने बैठे उसके अंग को वह छू नहीं सके। सामने से ही डरा सकें। जप मंत्र पूर्ण होने को आवे तब देव पूर्ण विक्रिया से साँप वगैरह डराने आवे तो डरें नहीं। चाहे प्राण जावे तो डरे नहीं तो मंत्र सिद्ध होय। मनोकामना पूर्ण होय। यदि बिना मंत्र रक्षा के (रक्षा मंत्र के) जपने बैठे तो पागल हो जावे। इस वास्ते पहले रक्षा-मंत्र जप कर, पश्चात् दूसरा मंत्र जपना चाहिए।

● मंत्र जहाँ तक हो सके ग्रीष्म ऋतु में करना चाहिए ताकि धोती दुपट्टा में सर्दी न लगे। मंत्र सिद्ध करने में धोती दुपट्टा दो ही कपड़े रखें। व कपड़े शुद्ध हों, उनको पहने हुए शौच को ना जावें, खाना नहीं खावें, पेशाब नहीं जावें, सोवें नहीं, जब जप कर चुके तो उन्हें अलग उतार कर रख देवें, दूसरे वस्त्र पहन लिया करें, यह वस्त्र नित्य हर दिन स्नान कर बदन पौंछ कर पहना करें। वह वस्त्र सूत के पवित्र वस्तु के हों। ऊन, रेशम वगैरह अपवित्र वस्तु के न हों। स्त्री सेवन न करें। गृह कार्य छोड़कर एकान्त में मंत्र जप सिद्ध करें।

● मंत्र में जिस रंग की माला लिखी हो उसी रंग की माला आसन आदि। धोती दुपट्टा भी उसी रंग का हो तो और भी श्रेष्ठ है, यदि माला उसी रंग की न होवे तो सूत की माला उस रंग में रंग लेवें। जब मंत्र जपने बैठें तो इतनी बातों का ध्यान रखें।

● पहले सब काम ठीक करके मंत्र जपें।

● आसन सबसे अच्छा डाभ का लिखा है, या सफेद या पीला या लाल- जैसा जिस मंत्र में चाहिए वैसा ही बिछावें।

● ओढ़नी की धोती-दुपट्टा सफेद उम्दा हो या जिस रंग का जिस मंत्र में चाहिए। वैसा हो।

● शरीर की शुद्धि करके परिणाम ठीक करके धीरे-धीरे तसल्ली के साथ जाप्य करें, अक्षर शुद्ध पढ़ें।

● मंत्र पद्मासन में बैठकर जपें। जिस प्रकार बैठी हुई जैन प्रतिमाओं

का आसन होता है, बाँया हाथ गोद मे रखकर दाहिने हाथ से जपे। जो मंत्र बाए हाथ से जपना लिखा हो तो वहाँ दाहिना हाथ (गोद) में रखकर बायें हाथ से जपें।

- जहां स्वाहा लिखा हो वहां धूप के साथ जपे यानी धूप अग्नि में खेवे।
- जहां दीपक लिखा हो, वहां घी का दीपक आगे जलाना चाहिए।
- जिस जिस अंगुली से जाप्य लिखा हो उसी अँगुली और अँगूठे से जाप्य जपे।

सकलीकरण

दृष्टे मृष्टे भुवि न्यस्ते, सन्निविष्टः सु विष्टरे।
समीप स्थापना द्रव्यो, मौनमा कर्मिक दधे।।१।।

मंत्र– ॐ क्ष्वीं भूः शुद्धयतु स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठं आसन निक्षिपयामी स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं ह्युं ह्युं णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं मौन स्थिताय मौनव्रतं गृण्हामि स्वाहा।

शोधये सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकली क्रियाम्।।२।।

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं हूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

इस मंत्र से हाथ में पानी लेकर सर्व पूजा के बर्तनों की शुद्धि करें।

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं सः असिआ समस्त तीर्थ जलेन शुद्ध पात्रे निक्षिप्त पूजा द्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

सर्वपूजा द्रव्यों का शोधन करें।

मंत्र–ॐ ॐ ॐ रं रं रं झौं झौं झौं असि आ उ सा दर्भासने उपवेशनं करोमि स्वाहा।

यह मंत्र पढ़ कर दर्भ के आसन पर बैठे। पश्चात्–

मैं अग्नि मण्डल में पर्यङ्कासन से बैठा हुआ हूँ और मेरे चारों और हवा से प्रज्वलित अग्नि से यह सप्त धातुमय शरीर जल रहा है, ऐसा चिंतवन करें।

मंत्र–ॐ ह्रीं ॐ क्रों दर्भेराच्छादनं करोमि स्वाहा।

मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं भगवतो जिनभास्करस्य बोधसहस्त्र किरणैर्ममनोक मै धन द्रव्यं शोषयामि घे घे स्वाहा।

यह पढ़ कर ऐसा विचार करे कि मेरे कर्म शोषण हो रहे हैं।

मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ ॐ ॐ रं रं रं ह्म्ल्व्र्यूं ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल संदह संदह कर्ममलं दह दह दुखं पच पच पापं हन् हन् हूं फट् घे घे स्वाहा।

इति कर्म दहन ध्यानम्।

इस मंत्र को पढ़ कर विचार करें कि हमारे सर्व कर्म जल गये हैं।

मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनप्रभजन मम कर्म भस्म विधूननं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र को पढ़ करके विचार करें कि कर्म जल कर उनकी राख उड़ गई है।

ॐ पंच ब्रह्म मुद्राग्रन्यस्त गुर्वमृताक्षरैः।
क्षरत्सुधौघैः सिंचामि सुधा मंत्रेण मुर्धनि।।

अब यहां पर पंच गुरु मुद्रा बनाकर और उसको मस्तक पर उलटा रखकर अमृत बीज मंत्र से अपनी शुद्धि करें। निम्नलिखित अमृत मंत्र से हाथ में लिए हुए जल को मंत्रित कर अपने सिर पर डालें–

मंत्र–ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं स: असि आ उ सा मम् सर्वाङ्ग शुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

इति अमृत प्लावनम्।

शून्याक्षरादि गुरु पंच पदान्कनीय।
स्याद्यंगुली त्रितय पर्वसु चाग्र भागे।।
अंगुष्ठ तर्जनीकया क्रमश: कराभ्याम्।
विन्यस्य हस्त युगलं मुकुली करोमि।।

यहां पर दोनों हाथों को मिलाकर मुकुलित करें अर्थात् हाथ जोड़ं और हाथ जोड़े जोड़े ही निम्नलिखित मंत्र के अनुसार अङ्गन्यास -अङ्गरक्षण करें अर्थात् जिस स्थान का नाम आया है उस स्थान का स्पर्श करें।

मंत्र–ॐ ह्रां णमों अरहंताणं स्वाहा।

ॐ ह्रीं सिद्धाणं स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमों आयरियाणं स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा।

हस्तसंघटनं करोमी

करन्यास मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः वं मं हं सं तं पं अ सि आ उ सा स्वाहा।

हस्त द्वय मुकुलीकरण मंत्र

अर्ह नाथस्य मंत्र हृदय सर सिजे सिद्ध मंत्रं ललाटे।
प्राच्यामाचार्य मंत्रं पुनर्वटुवटे पाठकाचार्य मंत्रं।।
वामे साधो स्तुतिं मे शिरसि पुनरिमानं स योनीभि देशे।
पार्श्वाभ्यां पंच शून्यैः सह कवच शिरोऽङ्ग न्यास रक्षा करोमि।।

मंत्र–ॐ ह्रां णमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

हृदय

मंत्र–ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

मुखम

मंत्र–ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

दक्षिणांग

मंत्र–ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

वांमागं

मंत्र–ॐ ह्रां णमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ललाट भाग

मंत्र–ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ऊर्ध्व भाग

मंत्र–ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

शिरो दक्षिण भाग

मंत्र–ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

शिरो अपर भाग

मंत्र–ॐ ह्ः णमो लोए सव्वसाहूणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

शिरो वाम भाग

मंत्र–ॐ ह्रां णमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

दक्षिण कुक्षि

मंत्र–ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

वाम कुक्षं

मंत्र–ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

नाभि प्रदेशं

मंत्र–ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

दक्षिण पार्श्व

मंत्र–ॐ ह्ः णमो लोए सव्व साहूणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

वाम पार्श्व

(इति अङ्गन्यास)

विन्यस्य कर तर्जन्यां, पंच ब्रह्म पदावलिं।
बध्नामि स्वात्म रक्षायै, कूट शून्या क्षरै र्दिशः।।

नीचे लिखे मंत्रों से दिशा बंधन करें।

मंत्र–ॐ क्षां ह्रां (पूर्वे)। ॐ क्षीं ह्रीं (अग्नौ)। ॐ क्षीं ह्रीं (दक्षिणे)। ॐ क्षें ह्रे (नैऋते)। ॐ क्षैः हैं (पश्चिमे)। ॐ क्षों ह्रों (वायव्ये)। ॐ क्षौं ह्रौं (उत्तरे)। ॐ क्षं ह्रं (ईशाने)। ॐ क्षः ह्ः (भूतले)। ॐ क्षीं ह्रीं (उर्द्धे)। ॐ नमोऽर्हते श्रीमते समस्त दिग्बंधनं करोमि स्वाहा।

ऊपर लिखे मंत्रों से क्रम क्रम पूर्वक एक-एक दिशा में तर्जनी अंगुली

घुमावे। तर्जनी अंगुली पर अ सि आ उ सा केशर से लिखें, दाएं हाथ की तर्जनी अंगुली पर लिखना चाहिए।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं अर्हद्भ्यो नमः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धेभ्यो नमः।

परमात्य ध्यान मंत्र का यहां पर ध्यान करें।

जिनेन्द्र पादार्चित सिद्ध शेषया, सिद्धार्थ दर्वायवचंदनाक्षतान्।
उपासका नामपि मूर्ध्नि निक्षिपन्, करोमि रक्षां मम शान्ति का नाम्।।

मंत्र— ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र से पुष्प या पीली सरसों को ७ बार मंत्रित करें और सर्व दिशा में फैकें। तथा मंत्र बोलते हुए सब दिशाओं में ताली बजावें व तीन बार चुटकी बजावें।

सिद्धार्थ नभि मंत्रितान्सह्य वैरादाय यज्ञ क्षितौ।
स्वां विद्यामभिरक्षणाय, जगतां शांत्यै सतां श्रेयसे।।
सर्वासु प्रचुरान् दिशासु, पर विद्या छेदनार्थं।
किराभ्यर्हत्याग विधि, प्रसिद्ध कलि कुंडाख्येन मंत्रेण च।।

मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं श्री कलिकुंड स्वामिन् स्क्रां स्क्रीं स्क्रूं स्क्रें स्क्रैं स्क्रों स्क्रं स्क्रः हूं क्षूं फट् इतीन् घातय विघ्नान् स्टोटय् स्फोटय् पर विद्यां छिन्द छिन्द आत्म विद्यां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र से जौ और सरसों मंत्रित कर दाहिनी दिशा में डालें।

इत्थं सदैव सकलीकरणं यथाव।
त्वं भाकयतिमशोषा मलंध्य शक्तिः।
भूतो रोगादिं विष किलिवष दुःख मुग्रं।
निर्जित्य निश्चय सुखान्यनु भूयतेऽसौ।

।। इति सकलीकरणं।।

माला विधान एवं फल

दुष्ट या व्यंतर देवों के उपद्रव दूर करने, स्तम्भन विधि के लिए, रोग शान्ति के लिए या पुत्र प्राप्ति के लिए मोती की माला या कमल बीज माला से जाप करने चाहिए। शत्रु उच्चाटन के लिए रुद्राक्ष की माला, सर्व कार्य की सिद्धि के लिए पंच वर्ण के पुष्पों से जाप करनी चाहिए। हाथ की अंगुलियों पर जाप करने से दस गुना फल मिलता है आँवले की माला पर जप करने से सहस्र गुना फल मिलता, लौंग की माला से पाँच हजार गुणा। स्फटिक की माला पर दस हजार गुणा, मोतियों की माला पर लाख गुणा, कमल बीज पर दस लाख गुणा, सोने की माला पर जाप करने से करोड़ गुणा फल मिलता है। माला के साथ भाव शुद्धि होनी चाहिए।

मंत्र सिद्ध होगा या नहीं उसको देखने की विधि

जिस मंत्र की साधना करना हो उस मंत्र के अक्षरों को ३ से गुणा करें, फिर अपने नाम के अक्षरों को और मिला देवें, उस संख्या में १२ का भाग देवें, शेष जो रहे, उसका फल निम्नानुसार जानें:-

५-९ बाकी बचे तो मंत्र सिद्ध होगा। ६-१० बचे तो देर से सिद्ध होगा।

७-११ बचे तो अच्छा होगा। ८-१२ बचें तो सिद्ध नहीं होगा।

कोई मंत्र अगर अपने नाम से मिलाने पर ऋणी या धनी आता हो, तो उस मंत्र के आदि में ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं इनमें से कोई भी बीच के साथ जोड़ देने पर मंत्र अवश्य सिद्ध हो जायगा।

आवश्यक सूचना

मंत्रों के आराधन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

१. मंत्र पर पूर्ण श्रद्धान हो।

२. मन में ग्लानि न हो, चित्त शान्त हो और शरीर स्वस्थ हो।

३ मंत्र की साधना के समय ध्यान इधर-उधर न रखे, मंत्र में ही निहित हो पन की प्रवृत्ति को चलायमान नहीं करे।

४ मंत्र की माधना के समय भयभीत न होवे।

५. मैं अमुक कार्य के लिए अमुक मंत्र की साधना कर रहा हूं ऐसा किसी से नहीं कहे किन्तु गुप्तरूप से मन्त्र को सिद्धि करे।

६. शुद्ध एकान्त स्थान में मंत्र की साधना करे।

७. मंत्र साधना की समाप्ति तक स्थान परिवर्तन नहीं करे।

८. जिस मंत्र की जो साधन विधि है तद्रूप ही कार्य करे अन्यथा प्रवृत्ति करने से विघ्न बाधाएँ उपस्थित हो सकती हैं और सिद्धि में भी आशंका हो सकती है।

९. प्रारम्भ से समाप्ति पर्यन्त दीपक, धूपदान, आसन, माला, वस्त्र आदि चीजों में परिवर्तन नहीं करे।

१०. एक समय शुद्ध सात्त्विक भोजन करे।

११. जमीन या पाटे पर शयन करे।

१२. ब्रह्मचर्य व्रत से रहे।

१३. हर एक मंत्र शुभ मिति से प्रारम्भ करे।

१४. धोती, दुपट्टा, बनयान प्रति दिन धो कर सुखा देवे।

१५. स्नान करने के बाद ही मन्त्र पाठ करे।

१६. धूप बाजारू न खरीदे, शोध कर अपने घर पर ही बनावे।

१७. तिलक लगावे।

१८. घृत का दीपक बराबर जलावे।

१९. मंत्र प्रारम्भ करने से पूर्व प्रतिदिन अंगशुद्धि एवं सकलीकरण अवश्य करे।

२० चोटी में गांठ अवश्य लगा लेवे।

२१. बार बार आसन न बदले। एक ही आसन से बैठ कर मंत्र की साधना करे।

मंत्र जपने के लिए आसन

पद्मासनं श्रितो पादौ, जङ्घाभ्यामुत्तराधरे।
ते पर्यङ्कासनं न्यस्तापूर्वो वीरासनं क्रमौ।।

पर्यंकासन

इसे सुखासन भी कहते हैं। दोनों जंघाओं के नीचे का भाग पाँव के ऊपर करके बैठे यानि पालथी मार कर बैठें और दाहिना व बायां हाथ नाभि कमल के पास ध्यान मुद्रा में रखें।

वीरासन

दाहिना पैर बाँयी जंघा पर व बायाँ पैर दाहिनी जंघा पर रख कर स्थिरता से बैठें।

वज्रासन

वीरासन की मुद्रा में पीठ की तरफ से लेकर दाहिने पैर का अंगुठा दाहिने

हाथ और बायें पैर का अंगुठा बाँये हाथ से पकड़ें तो वज्रासन होता है।

पद्मासन

दोनों जंघाओं से दोनों पैरों के संश्लेषण को पद्मासन कहते हैं। अर्थात्– दाहिने पैर के नीचे बाएँ पैर को या बाएँ पैर के ऊपर दाहिने पैर को अथवा बाएँ पैर के नीचे दाहने पैर को या दाहिने पैर के ऊपर बाएँ पैर को रखकर पालथी मारने को पद्मासन कहते हैं।

भद्रासन

पुरुष चिन्ह के आगे पाँव के दोनों तलुये मिलाकर उनके ऊपर दोनों हाथ की अंगुली परस्पर एक साथ एक करने के बाद दोनों अंगुलियाँ ठीक तरह से दीखती रहें इस प्रकार हाथ जोड़कर बैठना भद्रासन है।

दण्डासन

जिस आसन में बैठने से अंगुलियाँ, गुल्फ व जंघा से स्पर्श करें, इस प्रकार पाँवों को लम्बे कर बैठना दण्डासन कहा जाता है।

उत्किटिकासन

गुदा और ऐडी के संयोग से दृढ़ता पूर्वक बैठे तो उत्किटिकासन कहा जाता है।

गो दोहिकासन

गाय दुहने को बैठते हैं, इस तरह बैठना, ध्यान करना गो दोहिकासन है।

कायोत्सर्गासन

खड़े-खड़े दोनों भुजाओं को लम्बी कर घुटने की तरफ बढ़ाना या

बैठे-बैठे काया की अपेक्षा नहीं रख कर ध्यान करना कायोत्सर्गासन कहलाता है।

मुद्राओं का स्वरूप

सुरभिमुद्रा या धेनुमुद्रा

दोनों हाथ जोड़कर दाहिने हाथ की छिंगुरी को बाएँ हाथ की अनामिका (छिंगुरी के पास की) अँगुली से मिलाना।

बायें हाथ की तर्जनी को दाएं हाथ की बीच की अँगुली से मिलाना।

बायें हाथ की तर्जनी को दाहिने हाथ की बीच की अँगुली को लगाकर और दोनों हाथों के अँगूठा जोड़ना। इस प्रकार अँगुलियों को मिलाने से जो एक विशेष आकृति बनेगी, उसी को 'सुरभि मुद्रा' या धेनु मुद्रा' कहते हैं।

पंञ्च गुरु मुद्रा

अपने दोनों हाथों को सीधाकर हाथों की आठों अँगुलियों को एक सीध में रखनी चाहिए। फिर दोनों अनामिका अँगुलियों को मिली हुई खड़ी करना चाहिए। पश्चात् दोनों हाथों की मध्यमा अँगुलियों को तर्जनी अँगुलियों से दबाना चाहिए। पीछे दोनों कनिष्ठा (छिगुरी) अँगुलियों को अँगूठे से दबाना चाहिए। इस प्रकार करने से पाँच अंगुलियां ऊपर को खड़ी हुई दिखाई देंगी तथा पांच दबी हुई अदृश्य रहेंगी। इसी को 'पंचगुरुमुद्रा' कहते हैं।

आह्वानन् मुद्रा या आकर्षिणी मुद्रा

दोनों हाथों को खोलकर एक साथ मिलाकर फैलाना। फिर दोनों अंगूठे दोनों अनामिकाओं के मूलस्थान में रखना इससे हाथों की जो आकृति बनती है वह 'आह्वानन् मुद्रा' कहलाती है।

स्थापिनी मुद्रा

उसी आकर्षिणी मुद्रा सहित दोनों हाथों को उलटा रखने से 'स्थापिनी मुद्रा' होती है। अर्थात् आकर्षिणी मुद्रा में जो दोनों हथेली ऊर्ध्वमुख थी, वे ही अँगूठों को जहां के तहां रखकर अधोमुख कर देने से जो आकृति होती है उसे 'स्थापिनी मुद्रा' कहते हैं।

सन्निधीकरण मुद्रा

दोनों हाथों की मुट्ठी बांधकर मिलाने से और दोनों अँगूठे ऊपर की ओर रखने से 'सन्निधीकरण मुद्रा' होती है। सन्निधीकरण करते समय में सन्निधीमुद्रा से हृदयस्पर्श और नमस्कार करना चाहिए।

हस्ताभ्याम अंजिलीं कृत्वा-नामिकामूल पर्वाणि।
अंगुष्ठौ नाक्षिपेत्सेयं, मुद्रस त्वावाहिनी मता।।
अधोमुखी चेयं चेत्स्यात्, स्थापिनी मुद्रिका मता।
उच्छिताङ्गुष्ठयुष्ट्योस्क-संयोगात्सन्नधापिनी।।१।।

जिन मुद्रा

जिन मुद्रान्तरं कृत्वा पादयोश्चतुङ्गरलम्।
ऊर्ध्व जानोरबस्थानं, प्रलम्बित भंजद्वयम्।।२।।

दोनों पैरों का चार अङ्गुल प्रमाण अन्तर (फासला) रखकर दोनों भुजाओं को नीचे लटकाकर कायोत्सर्ग रूप से खड़ा होना 'जिनमुद्रा' कहलाती है।

योग मुद्रा

जिनाः पद्मासनादीना-मङ्कमध्ये निवेशनम्।
उत्तानकर युग्मस्य, योग मुद्रां बभाषिरे।।३।।

पद्मासन, पर्यङ्कासन और वीरासन इन तीनों आसनों को गोद में नाभि के समीप दोनों हथेलियों को चित्त सीधा कर रखने को जिनेन्द्र देव 'योग मुद्रा' कहते हैं।

वन्दना मुद्रा

मुकुलीकृत माधाय जठरोपरि कूर्परम्।
स्थितस्य वन्दना मुद्रा, कर द्वन्दं निवेदिता।।४।।

दोनों हाथों को मुकुलित कर उनकी कुहनियों को उदर पर रखकर खड़े हुए पुरुष के हाथों से उस विशेषाधिकार को बन्दना मुद्रा कहते हैं। अर्थात् दोनों कुहनियों को पेट पर रखकर दोनों हाथों को मुकुलित करना 'बन्दना मुद्रा' कहलाती है।

मुक्ता शुक्ति मुद्रा

मुक्ता शुक्तिर्मता मुद्रा, जठरोपरि कूर्परम्।
ऊर्ध्वजानों करद्वन्दं, संलग्नाङ्गुलि सूरिभिः।।५।।

दोनों हाथों की अंगुलियों को मिलाकर दोनों कुहनियों को उदर पर रखकर खड़े हुए पुरुष के हाथों, अंगुलियों और कुहनियों के विशेष आकार को आचार्य 'मुक्ता शुक्ति मुद्रा' कहते हैं।

भावार्थ– दोनों कुहनियों को पेट पर रखकर दोनों हाथों को जोड़कर अंगुलियों को मिला देना 'मुक्ताशुक्ति मुद्रा' है।

विनय मुद्रा

कमलों के दल के समान मुकुलित कर दोनों हाथों को जोड़ना 'विनय मुद्रा' कहलाती है।

नमस्कार मुद्रा

दोनों हाथों की हथेलियां परस्पर चिपका कर हाथ जोड़कर दोनों अँगूठे जोड़ कर माथे (कपोल) से लगाकर नमस्कार करने को 'नमस्कार मुद्रा' कहते हैं।

ज्ञानमुद्रा

पद्मासन से या सुखासन से बैठ कर अपनी बायीं जंघा पर बाँया हाथ चित्त रखकर उसकी ज्ञानमुद्रा करे। अर्थात् बाएँ हाथ के अँगूठे से तर्जनी अंगुली को दबाकर रखे तथा शेष तीनों अंगुलियां जैसी की तैसी हो लम्बी रहने देवें। और दृष्टि नासिकाग्र पर रखकर दाहिना हाथ ऊपर ऊंचा उठाकर १०८ मणि की माला हाथ में लेकर बैठना 'ज्ञानमुद्रा' कहलाती है। एकाग्रचित्त से विधि पूर्वक माला फेरना 'जाप' कहलाता है। अथवा 'दर्जन्यंगुष्ठयोगेन ज्ञानमुद्रेति भाषिता' अर्थात्– तर्जनी अँगुली को नवाकर अँगूठे की जड़ से लगाना शेष तीनों अँगुलियां खड़ी रखना 'ज्ञानमुद्रा' है।

आहार मुद्रा

मुनिराज जब आहार के लिए जाते हैं तब अपने बायें हाथ में पीछी और कमण्डलु लेकर दाहिने हाथ की पांचों अँगुलियों को मिलाकर उन मिली हुई अँगुलियों को कन्धे पर रख लेते हैं उनकी इस मुद्रा को 'आहर मुद्रा' कहते हैं।

आचमन मुद्रा

अपने दाहिने हाथ की हथेली, पांचों ही अंगुलियों को लम्बा कर चित्त रखे। अनन्तर तर्जनी (अंगूठे के पास की अंगुली) को अंगूठे के नीचे लगा देवें तथा उसके ऊपर अंगुठें को दबाकर रखे और बाकी की तीनों अंगुलियां जैसी की तैसी ही लम्बी रहने देवें। इससे हाथ की हथेली अपने आप गड्ढारूप बन जाती है। इसी को 'आचमन मुद्रा' कहते हैं।

अमृत स्नान या प्रोक्षण करने की मुद्रा

अमृत स्नान दोनों हाथों की हथेलियों को परस्पर जोड़कर सब अंगुलियों परस्पर मिलाते हुए मिटा देवें और केवल अंगूठे के पास की दोनों हाथों की दोनों ही अंगुलियां (तर्जनी) लम्बी करते हुए परस्पर जोड़ देवें, इससे जो आकृति बनती है। उसे 'अमृत स्नान मुद्रा या प्रोक्षण मुद्रा' कहते हैं।

पूजन के उपकरण

उच्चासन (चौकी बाजौटा वगैरह) मेरु, पीठ अभिषेक की सामग्री। जल-फलादि रखने के बर्तन, कल्कचूर्ण, और सर्वोषधि आदि को जितने आवश्यक हों उतने बर्तन। जल भरने के लिए एक घड़ा। पाँच कलशों से चतुष्कोण को चार छोटे और बीच का एक बड़ा तथा छटवें, कलश के लिए एक इस प्रकार छह कलश। अर्पित (चढ़ाई हुई) द्रव्य रखने के लिए एक थाली। जलधारा छोड़ने के लिए एक बर्तन।

अष्टविधार्चन द्रव्य, अक्षत (चांवल) आदि रखने के लिए एक थाली।

इस थाली को ढ़ांकने के लिए एक वस्त्र। जलधारा के लिए एक भृगार (झारी), अष्टगंध के साथ पिसा हुआ गाढ़ा चन्दन (गन्ध) रखने के लिए एक कटोरी। पूजा द्रव्य (जल, फलादि) चढ़ाने के लिए एक रकाबी। रकाबी आदि पोंछने के लिए एक छोटा सा वस्त्र।

दीपक के लिए एक आरती। आरती पर एक दयापात्र (ढक्कन)। धूप जलाने के लिए एक धूप पात्र (धूपदानी)। जिनमन्दिर में प्रवेश करते समय अपने पैरों को धोने के लिए घर से जल लाने का एक लोटा। इनके सिवाय मण्डप, चँदेवा आदि जो कुछ विशेष आवश्यक हो वह वस्तु प्रथम ही संग्रह कर लेना चाहिए।

पंञ्चामृताभिषेक का द्रव्य

जल, इक्षुरस, आमरस, घी दूध, दही, ये पिछले पांच पंञ्चामृत कहलाते हैं।

पूजा विधान (अष्ट विधार्चन द्रव्य)

जल– स्वच्छ, सुगन्धित और प्रासुक होना चाहिए। जल को प्रासुक करने के लिए इलायची, कपूर या लवंग केशर पीसकर मिला देने से उसमें सुगन्ध आ जाती है। और वह जल प्रासुक हो जाता है। गरम किया हुआ जल भी प्रासुक होता है।

चन्दन– शुद्ध कश्मीरी केशर या अष्टगन्ध के साथ घिसा हुआ गाढ़ा चन्दन (गंध) इस को कटोरी में रखना चाहिए और इसमें पानी नहीं मिलाना चाहिए।

पुष्प– सुन्दर सुगंन्धित साबुत चावलों को ही शुद्ध जल से धोकर ही काम में लेवे टूट चूरा चावलों को काम में न लेवें चावल साबुत ही चढ़ाये।

पुष्प– यत्नाचार पूर्वक तोड़े गये, ताजे, शुद्ध और प्रासुक जल से कई बार भलीभांति धोये हुए गुलाब, चम्पा, चमेली, कमल, बकुल मालती आदि अनेक

सुगन्धित फूल। प्रयत्न करने पर भी यदि उक्त प्रकार फूलों को उपलब्धि न हो सके तो केशर से रंगकर पीले किये गये चांवलों को या लौंग में पुष्पों की कल्पना करके चढ़ावें। परन्तु ऐसी कल्पना सदा के लिए नहीं होनी चाहिए।

चरु– (नैवेद्य) दाल, रोटी, खीर, आदि अन्न और फेनी, घेवर, बरफी, पेड़ा, लड्डू आदि मिठाई। ये सब पकवान नैवेद्य कहलाते हैं। ये ताजे और दिगम्बर मुनि के आहार योग्य शुद्ध बनाकर चढ़ाना चाहिए। वर्तमान में लोगों ने शुद्ध खान-पान को छोड़ दिया। इसलिए नारियल-गोला के छोटे टुकड़ों को या अशुद्ध अन्न और पकवान को नैवेद्य में चढ़ाकर सन्तोष कर लेते हैं। यह प्रमाद का प्रभाव है। नैवेद्य में शुद्ध (मुनिराज के आहार योग्य) पकवान चढ़ाना ही योग्य है।

दीप– दीप पात्र (आरती) में शुद्ध घी भरकर रुई की बत्ती जलाकर बनाना चाहिए। दीप चढ़ाते समय असली कपूर भी जलाकर चढ़ा सकते हैं। आजकल कोई-कोई लोग देखादेखी गरी के टुकड़े केशर से रंगकर पीले करके उनमें दीपक की कल्पना करके चढ़ाते हैं। परन्तु यह विधि शास्त्र सम्मत नहीं है। क्योंकि इस प्रकार दीप बनाने की विधि का किसी भी शास्त्र में प्रमाण नहीं मिलता। इसलिए शास्त्र सम्मत दीपक उपरोक्त प्रकार की बनाना चाहिए। डालडा मिश्रित घी को आरती या पकवान के काम में नहीं लाना चाहिए।

नोट– पुजारी की अवस्था में दियासलाई की डिब्बी (पेटी-माचिस) नहीं छूना चाहिए। क्योंकि उस पर जो कागज चिपका रहता है वह अपवित्र वस्तु (सरेस) से चिपका होता है। इसलिए इस अशुद्धता से बचना चाहिए।

धूप– रूवीमस्तंगी, छेलछबीला, कपूर, चंदन, अगर, तगर कपूरकाचरी, नागरमाथा, सुगन्धवाला आदि सुगन्धित चीजें शोध बीनकर कूटकर बनी हुई अष्टांग धूप। इस प्रकार अष्टांग धूप की सुलभता न हो तो बढ़िया सुगन्धि मलयागिर चन्दन जो तुरन्त का तैयार किया गया चूर्ण (बुरादा) भी अग्नि में खेकर धूप का काम लिया जा सकता है। धूप अग्नि में ही चढ़ाना चाहिए। जिससे जिनालय में सर्वत्र सुगन्ध फैल जाय।

फल– सेव, संतरा, पिस्ता, केला, अनार, आम मोसम्बी आदि पके व ताजे फल। या श्रीफल (नारियल) छुहारा, बादाम, सुपारी आदि सूखे फल, ये फल यथेच्छ और यथा शक्ति चढ़ाये जा सकते हैं।

अर्घ्य– जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, चरु (नैवेद्य), दीप, धूप और फल इन आठों द्रव्यों का मिश्रण कहलाता है। लिखा भी है कि–

जलेन गन्धे सद्क्षतैश्च, पुष्पेण शाल्यन्न चरुत्करेण।
दीपेन धूपेन फलेन भक्त्या, सुरासुरार्च्यं जिन मर्चयामि अष्ट विधार्चने।।

नोट–"आठों द्रव्यों को एक साथ चढ़ाया जाय'' इसका मतलब यह नहीं हैं कि– अक्षत, पुष्प या पीले चांवल (कल्पित पुष्प), बनावटी नैवेद्य व गरी के टुकड़े, एक दो चिटक प्रमाण धूप तथा बादाम आदि दो चार फल ये सब परस्पर मिलाकर उसमें चार बूंद गन्ध मिश्रित जल छीटक कर थाली में रख देवें। और उसी को अर्घ्य द्रव्य मानकर उसमें से अपनी अंगुलियों से जितना हाथ में आ जाय उतना द्रव्य उठाकर रकाबीया प्लेट से चढ़ा देवें। अर्घ्य चढ़ाने का मतलब यह नहीं है। किन्तु अर्घ्य चढ़ाते समय वह ध्यान रखना आवश्यक है कि एक एक द्रव्य का नाम लेते हुए आठों द्रव्य एक रकाबी में रखकर रकाबी से ही द्रव्य चढ़ाना चाहिए। अंगुलियों से या हाथ की हथेली में रखकर अर्घ्य कदापि नहीं चढ़ाना चाहिए।

अक्षरों की शक्ति, लिंग, वर्ण की सूचि

अकार से लेकर हकार पर्यन्त एक एक अक्षर का लक्षण स्वरूप आदि

क्रं	अक्षर	अक्षरों की शक्ति व कार्य	लिंग	वर्ण
१.	अकारस्य	अतीव बली, गंभीर	पु.	हेमवर्ण
२.	आकारस्य	महाद्युति कारक	स्त्री.	श्वेत
३.	इकारस्य	मन्द स्वर, क्षत्रिय	नपु.	हेम
४.	ईकारस्य	दिव्य शक्ति कारक	स्त्री.	श्वेत
५.	उकारस्य	वश्याकर्षण कारक	स्त्री	धूम्र
६.	ऊकारस्य	फल शूलधर	स्त्री	रक्त
७.	ऋकारस्य	सर्व विघ्न विनाशक	नपुं.	?
८.	ॠकार	व्यभिचार, मोहन	नपुं.	कपिल
९.	ऌकार	सर्व विघ्नकारी	नपुं.	पीत
१०.	ॡकार	उच्चाटन कारक क्षत्रिय	नपुं.	पीत
११.	एकार	शुभ कारक	नपुं.	?
१२.	ऐकार	वश्याकर्षण शक्ति	नपुं.	अग्नि
१३.	ओकार	सर्वमंत्र, संसाधन,	-	तप्तकांचन
१४.	औकार	स्तंभन शक्ति		पीत
१५.	अंकार	प्रसन्न, अतिमधुर		पीत
१६.	अःकार	शुभ कर्म शासन	नपु.	धूम्र
१७.	ककार	स्तंभ, शांतिक, पौष्टिक वश्याकर्षणकारी		पीत
१८.	खकार	चिंतित मनोरथकारी	नपुं.	
१९.	गकार	सर्वशान्तिकर क्षत्रिय	पुं.	
२०.	घकार	उच्चाटन, छेदन, मोहन, स्तंभनकारी, सर्वशान्ति कर		

		महाशक्ति क्षत्रिय	नपु.	धूम्र
२१	डकार	दुष्ट स्वर, दुर्दष्टि	नपुं.	
२२.	चकार	सुस्वर, सुमनप्रिय ब्राह्मण		श्वेत
२३	छकार	आकर्षणादि रौद्रकर्म कारक सर्वकार्य सिद्धिकारक		श्याम
२४.	जकार	वश्याकर्षण सत्यावादी		
२५.	झकार	धर्म-अर्थ-काम-मोक्षकारी, सत्यवादी वश्याकर्षणकारी	पुं.	पीत
२६.	ञकार	महाक्रूर स्वर, सर्वजीव भयंकर		कृष्ण
२७.	टकार	मृदुस्वर	पुं.	कपिल
२८.	ठकार	रक्षा, स्तम्भन, मोहन, कार्य सिद्धि क्षत्रिय		
२९.	डकार	रक्षा स्तम्भन, मोहनकारी, शुभ स्वर		शंख
३०.	ढकार	दुष्ट निग्रह, शिष्ट प्रतिपालन, वश्याकर्षण		रक्त
३१.	णकार	शापानुग्रहकारी	नपुं.	कृष्ण
३२.	तकार	चन्द्रादि देवता पूजित	पुं.	-
३३.	थकार	सर्व कामादि		
३४.	दकार	निष्ठुर ध्वनि, मरकन्दुन्मोक्षण, मंत्र साधन	नपुं.	कृष्ण
३५.	धकार	रौद्र कार्य कारक, रौद्रदृष्टि		कषाय
३६.	नकार	रौद्रदृष्टि, रौद्रकर्म		कृष्ण
३७.	पकार	सर्वदुष्ट विनाशक	पुं.	-
३८.	फकार	व्याधि, विष, दुष्टग्रह विनाशक		

		महादिव्यशक्ति प्रसंगप्रिय	पु.	
३९.	बकार	वश्याकृष्टि प्रसंगाप्रिय		इंगुल
४०.	भकार	विकृतरूप, रौद्रकान्ति, सिद्धिकर		
४१.	मकार	अनन्त योजन प्रभा शक्ति,		
		सर्वव्यापि, सर्वसाधक		उदयार्क
४२.	यकार	व्यभिचार कर्मप्रिय, सर्वगर्भकर्तारं, सर्वलोक प्रिय	नपुं.	अरूपी
४३.	रकार	सर्व होम प्रिय, रौद्र शक्ति, परविद्याछेदक, आत्म कर्म साधक स्तंभनादिक कर्मकर	नपुं	आदित्य
४४.	लकार	स्तम्भन मोहनकारक, सर्वजीवधारक		पीत
४५.	वकार	वश्याकर्षण, निर्विष, शान्तिकारक श्वेत		
४६.	शकार	वश्याकर्षण, शान्तिक, पौष्टिक कर्ता		रक्त
४७.	षकार	स्तभन, मोहनकारी	पुं.	नील,
४८.	सकार	सर्वकर्म कर्ता वश्याकर्षण कर्ता	पुं.	श्वेत
४९.	हकार	सर्वव्यापि, सर्वकर्मकर्ता, सर्वमंत्राग्रणी मन: स्थायी विजय, चिन्तित मनोरथ साधक त्रिकाल, त्रिलोक दर्शक	नपुं.	
५०.	क्षकार	सर्वरक्षाकर, सर्वप्रिय, सर्वकाल ज्ञान महीश्वर, सकल मंत्रप्रिय	पुं.	पीत

वर्गों की शक्ति

श्वेताक्षरं धनार्थं पीताक्षरमाकृष्टि स्तंभन मोहनार्थं हरिताक्षरं कृष्णांक्षरं च व्यभिचार करं तत स्तत त्कर्म करोति।

श्वेत अक्षर धन के लिए, पीत अक्षर आकर्षण स्तंभन और मोहन के लिए, हरा और काला अक्षर व्यभिचार करने वाला होता है। यह अपने अपने कार्यो को करते हैं।

ई ऊ वरुणं स्त्री। ऋ ऋ लृ ल ङ च ण न म पदा ए ऐ उ ऊ विकल्पेन स्त्री नाम करोति जयमा विल्पेनषंडा: शेषाक्षराणि पुमांस:।

इ ऊ स्त्री लिंग हे ऋ ऋ लृ ल ङ ञ ण न म पद ए ऐ उ ऊ यह विकल्प से स्त्री लिंग है जय और म विकल्प से नपुंसक अक्षर कहे जाते गये हैं। शेष अक्षर पुल्लिंग है।

गण नाम इते त्रिधा वा अक्षरं विकल्पेन प्रयोजनमीति

इस प्रकार अक्षरों के तीन प्रकार के गण कहे। नाम का विकल्प से प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार नपुंसक अक्षर कहे गये हैं।

इ ष लृ लृ ऊ ऐ वं पीताक्षरं = ई ष लृ लृ और ऊ नपुंसक और पीत अक्षर है ऋ ऋ ष ण य द दा क्ष रा संभाविकं कृच्छं विकल्प स्यभेदानि।

कार्य कारण संबंध स्यान्या सर्वाक्षरास्तिल तंदुल मिश्र व त्तिष्टंति ऋ ऋ ष ण य द क्ष और र कठिन भेद और कार्य कारण संबंध वाले कार्यों को करते हैं । शेष अक्षर मिले हुए तिल और चावलों के समान रहते हैं।

✠

बुद्धि मनुष्यता मात्रा मंत्र वत् कार्यं

मंत्र को जानने वाला मनुष्यता की विशेषता बुद्धि से सब काम ले।

अकारो आकारस्य प्रतिषेधका: बिन्दु सर्वसंहिता: शांतिकं पौष्टिकं वश्याकर्षणानि करोति।

अकार आकार का प्रतिषेधक है अकार बिन्दु सहित होने पर शांतिक पौष्टिक वश्य और आकर्षण कर्मों को करता है। उ ऋ ॠ ए ऐ आं निर्विष व्यभिचारं करोति अंकार: सर्वोच्चाटनं करोति उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ और आं निर्विष कर्म तथा व्यभिचार करते हैं अंकार सब का उच्चाटन करता है।

खकारो निर्विषं विकल्पेन वश्यं करोति।

घकारों वश्यं करोति विकल्पेन/स्तंभन/भेदन व्यभिचार कर्माणि करोति।

खकार निर्विष कर्म को व विकल्प से वशीकरण करता है। घकार वशीकरण किन्तु विकल्प से स्तंभन भेदन और व्यभिचार कर्म को भी करता है।

च छकार शांतिकं पौष्टिकं करोति विकल्पेन भेदनं व्यभिचारं करोति।

चकार और छकार शांतिक पौष्टिक को करता है और विकल्प से भेदन और व्यभिचार को भी करता है।

ज झ कारो निर्विषं करोति विकल्पेन व्यभिचारो करोति।

ज झ कारो निर्विष करेता है और विकल्प से व्यभिचार को भी करता है।

ञकारे आकृष्टिं विकल्पेन व्यभिचारं करोति।

टकारः- वश्यं व्यभिचारं करोति।

ञकार आकर्षण को किन्तु विकल्प से व्यभिचार को भी करता है।

टकार वश्य और व्यभिचार को करता है।

णकारो व्यभिचारं करोति- त थ कारः शांतिकं पौष्टिकं करोति।

णकार व्यभिचार करता है। तथा शांति और पुष्टि करता है।

द ध कारों व्यभिचारं करोति न कारो व्यभिचारं करोति।

द ध व्यभिचार करता है, न व्यभिचार करता है।

प फ कारः शांतिकं पौष्टिकं करोति ब भकार स्तोभ स्तंभनं करोति।

प और फ शांतिक और पौष्टिक करता है। ब भ स्तंभन करता है।

मकारः- सर्वकर्म विकल्पेन सर्व सिद्धि करोति।
यकारः- सर्वभिचार कर्म विकल्पेन आकृष्टिं करोति।
लकारः- स्तंभन मोहन वशीकरण विकल्पेन निर्विषों करणं वकारो निविषं करोति।

म सब कर्मो को और विकल्प से सब सिद्धि को करता हैं

य सब व्यभिचार के कर्म और विकल्प से आकर्षण करता है।

ल स्तंभन वशीकरण मोहन तथा विकल्प से निर्विष करता है व निर्विष करता है।

शकारः- शांति पौष्टिक वश्याकृष्टिं षकारः स्तंभन मोहनं सकारो वाचा सिद्धिं करोति।

श शांतिक पौष्टिक वश्य और आकर्षण करता है ष स्तंभन और मोहन करता है स वाणी को सिद्ध करता है।

हकारः सर्वकर्म करोति क्षकारः सर्वयोगाक्षरं मंत्रिणा अक्षरं प्रति प्रयतनं सर्व कर्तव्यं।

ह सब कार्य करता है। क्ष सब योगों को करने वाला अक्षर है। मंत्री को अक्षर के प्रति सभी प्रयत्न करना चाहिए।

अर्ह ह्लं ह्लां हिं हीं हुं हूं हृ हृ ह्लृ ह्लृ हे हौ हं हः इन सोलह बीजों को बांधने का कर्म होता है।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः इन अक्षरों से विकल्प से एक दूसरें का निरोध होता है।

स्वा (वायव्य) और रं (अग्नि) अक्षर परस्पर मित्र होते है। (स्वा) वायव्य और हं (आकाश) परस्पर शत्रु है।

क्षि (पृथ्वी) प (जल) मित्र होते है। पीताक्षर और लाल अक्षर एक दूसरे के संबंधी हैं।

कृष्णाक्षर हरिता अक्षर संबधं स्वेताक्षरमात्म संबधं।

काले अक्षर और हरे अक्षर एक दूसरे के संबंधी हैं, श्वेत, अक्षर का अपना ही संबंध होता है।

ज क ग ऌ ॡ ए ऐ अभक्षं संबंध होता है। और उ ए का संबंध है और श का संबंध है।

ऋ ॠ य र ङ ण और म का संबंध नहीं होता है विकल्प से संयोग संबंध हो जाता है ख ध छ झ ठ थ फ व का और प्रकार का संबंध होता है। शेष अक्षर उदासीन रहते है।

आधाराक्षरै ज्जालवान् आधाराक्षर संयुक्तं चयोक्षरै र्बलीयान्।

आधार अक्षरों से आधार अक्षरों को मिलाकर जल बनावे उनमें जो अक्षर बलवान हो उसी से मिलावे।

कृष्णाक्षरं सर्व शकरं न कार्य विनाशयंति संबंधि। विकल्पनोर्द्धाधोक्षर भाषाक्षरैराकर्षण मुच्चाटनं करोति।।

कृष्णाक्षर सब से सुख देते है। वह मिलाये जाने से कार्य को नष्ट नहीं करते उर्द्ध अक्षर और अधः अक्षर भाषा अक्षरों के साथ विकल्प से आकर्षण और उच्चाटन करते हैं।

अव्याक्षरं स्तंभन प्रतिषेधं अधोरक्षर विकल्पेन सर्वकर्म करोति। प्रतिषेध कार्य रहित निर्विषाक्षरं विसर्गरहितं वश्यम मे वच।।

अव्यय अक्षर स्तंभन और प्रतिषेध करते है। अधः अक्षर विकल्प से सब

काम करते हैं, निर्विष अक्षर प्रतिषेध कार्य को नहीं करता विसर्ग रहित वशीकरण को ही करता है।

तच्चतु स्त्रिंशधोरक्षरैः षोडशाक्षरः सर्वकर्म करोति। एकैकाक्षरं षोडशा मंत्र यंत्रणि भवंति।।

चौबीस योगाक्षर और सोलह स्वर अक्षर सभी कर्म कर लेते हैं। एक एक अक्षर के सोलह मंत्र और यंत्र होते हैं।

क्रिया कारक संबंधि पंचाशत् चतुरोत्तर। चत्वारि शन्मत्रं यंत्राणि भवंति मंत्र व्याकर्णे चतुर्थ प्रकर्णं।।

क्रियाकारक से संबंध से पचास तथा ४४ चौवालीस मंत्र और यंत्र बनते हैं।

बीजाक्षरों की सामर्थ्य

बीजाक्षर	बीजाक्षरों के कार्य
ह्रीं अं ह्रीं	मृत्युनाशन
ह्रीं आं ह्रीं	आकर्षण
ह्रीं इं ह्रीं	पुष्टिकर
ह्रीं ई ह्रीं	आकर्षण
ह्रीं उं ह्रीं	बल कारक
ह्रीं ऊं ह्रीं	उच्चाटन
ह्रीं ऋं ह्रीं	क्षोभणं
ह्रीं ॠ ह्रीं	मोहनं
ह्रीं लृं ह्रीं	विद्वेषण
ह्रीं लॄं ह्रीं	उच्चाटन
ह्रीं एं ह्रीं	वश्य
ह्रीं ऐं ह्रीं	पुरुष वश्य
ह्रीं ओं ह्रीं	लोक वश्य
ह्रीं औं ह्रीं	राजा वश्य
ह्रीं अं ह्रीं	हस्ति वश्य
ह्रीं अः ह्रीं	मृत्यु नाशन
ह्रीं कं ह्रीं	विष बीज
ह्रीं खं ह्रीं	स्तंभन
ह्रीं गं ह्रीं	शुभ

ह्रीं घं ह्रीं	स्तम्भन
ह्रीं ङं ह्रीं	असुर
ह्रीं चं ह्रीं	सुरबीज
ह्रीं छं ह्रीं	लोभ और मृत्युनाशन
ह्रीं जं ह्रीं	ब्रह्मराक्षस और मृत्युनाशन
ह्रीं झं ह्रीं	चन्द्र बीज, कर्म और धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को देता है। राज्य वश और आकर्षण कारक
ह्रीं ञं ह्रीं	मोहन
ह्रीं टं ह्रीं	क्षोभन और चित्र कलंककारि
ह्रीं ठं ह्रीं	चन्द्र बीज विष मृत्यु
ह्रीं डं ह्रीं	गरूड बीज, विषनाशक
ह्रीं ढं ह्रीं	कुबेर बीज, उत्तराभिमुख होकर चार लाख जप से सिद्ध होता है। धन धान्य समृद्धि, शंख और पद्मनिधि को करने वाला
ह्रीं णं ह्रीं	असुर बीज और तीन लाख जप से सिद्ध होता है।
ह्रीं तं ह्रीं	अष्ट वसुधा बीज, जाप्य से धन धान्य समृद्धि कारक
ह्रीं थं ह्रीं	यमराज बीजं, मृत्युनाशनम्
ह्रीं दं ह्रीं	दुर्गा बीज, सत्य पुष्टिकारक
ह्रीं धं ह्रीं	सूर्य बीजं, जय-सुखकरं
ह्रीं नं ह्रीं	ज्वर बीजं, स्वर देवता

ह्रीं पं ह्रीं	वीरभद्र बीज, सूर्य विघ्न विनाशनं
ह्रीं फं ह्रीं	विष्णु बीज, धन-धान्य वर्द्धक
ह्रीं बं ह्रीं	ब्रह्मबीज, वात-पित्त-कफ-पिशाचभयोच्चाटनं।
ह्रीं भं ह्रीं	भद्रकाली बीज, भूत-प्रेत-पिशाचभयोच्चाटनं
ह्रीं मं ह्रीं	मालाग्नि रूद्र बीज, स्तंभन, मोहन, विद्वेषण कर भूत-प्रेत पिशाचाद्याह्वाननं अष्टमहासिद्धिंकरं।
ह्रीं यं ह्रीं	वायु बीजं, उच्चाटनं
ह्रीं रं ह्रीं	आग्नेय बीजं, उग्रकर्म कार्यकारक
ह्रीं लं ह्रीं	इन्द्रबीजं धनधान्य सम्पतकरं
ह्रीं वं ह्रीं	ऋणबीजं, विष-मृत्यु नाशनं
ह्रीं शं ह्रीं	लक्ष्मी बीजं, एक लाख जप से श्री कारक
ह्रीं ष ह्रीं	सूर्यबीजं, धर्म अर्थ काम- मोक्ष कारक
ह्रीं स ह्रीं	वागीशं ज्ञानकारक-वचन सिद्धि सिद्ध
ह्रीं ह ह्रीं	शिवबीज, दस हजार जप से कार्य सिद्ध
ह्रीं क्ष ह्रीं	भूबीज- भू लाभकर
ह्रीं ज्ञ ह्रीं	नृसिंह बीज, दस हजार जप से मृत्यु नाश होता है।

नोट:- इन अक्षरों की सिद्धि पृथक पृथक की जाती है। ह्रींकार- को मध्य में और अकारादि 'क्ष' पर्यन्त अक्षरों को लिखकर उनमें अक्षरों की मणि रूप स्थापन कर उनमें जप करने पर सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

बीजकोश

बीज	पर्यायवाची नाम
ॐ	तेज, भक्ति, विनय, प्रणव, ब्रह्म अब्ज, दहन, ध्रुव आदि और द्यु ये ॐ के वाचक हैं।
ह्रीं	माया तत्व, शक्ति, लोकेश, त्रिमूर्ति और बीज– ये ह्रीं के वाचक हैं।
क्ष्वीं	कूट और कूटाक्षर
म्ल्व्र्यूं	पिण्ड, अमृत मूर्ति (म्–ल्–व्–र्–यूं) इनका संयुक्त वर्ण म्ल्व्र्यूं है।
द्रां द्रीं क्लीं	ये पाँच बाण के वाचक हैं।
ब्लूं सः	
झ्वीं–क्ष्वीं	मुद्राक्षर और वाग्भव सुरभि।
ह्ः	सुरभि
क्षिं	पृथ्वी
प	जल
ॐ	अग्नि
स्वा	वायु

हा	आकाश
क्षिप ॐ स्वाहा	खगपति, पंचाक्षर, आकाश दिशा
ईं	श्री, लक्ष्मी
इवी	इन्दू
क्ष्वीं	सुधा अक्षर
क्रों	अंकुश
क्लीं	अनंग बीज
क्ष्मं	पीठ अक्षर
स्वाहा	होम संज्ञक
क्ष्में-क्लीं	रत्न युग्मक
वं	सुधा
हंस:	निर्विष बीज
ह्यौं च	ख खल्वाट बीज, महाशक्ति बीज
हा	निरोध बीज
ठ ठ	स्तम्भन बीज
र्हं	सकल, जैन
ग्लौं ग्लौं	स्तम्भ
जं हूं	विद्वेषण
ब्लूं	द्रावण
य:	चलन और चल
ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र:	शून्य

लं	ऐन्द्र बीज
घे घे	बध बीज
द्रां द्रीं	द्रावण बीज
ह	शब्द शून्य
नमः	शोधन, अर्चन
अ	पर, सिद्ध इनका जाप करना चाहिए।
आं ह्लां ह्लीं क्षीं क्रों, क्लीं द्रां द्रीं ब्लूं	नौतत्व
ह्वः क्ष्वीं यः वः स्वाहा	सुधाक्षर
क्षां क्षीं क्षं क्षौ क्षः	
वां क्षे क्षै क्षो क्षं	कूट पांच

वज्र आठ हैं-

(१) कम्र्व्यूं, (२) रव्म्ल्व्यूं, (३) भमल्व्यूं, (४) स्म्ल्व्यूं

(५) ह्मल्व्यूं(६)घम्ल्व्यूं (७) मम्ल्व्यूं (८) रम्ल्व्यूं

पिंडाक्षर - वम्ल्व्यूं, खम्ल्व्यूं, घम्ल्व्यूं, छम्ल्व्यूं, ड्म्ल्व्यूं,

त्म्ल्व्यूं, भ्मल्व्यूं, मम्ल्व्यूं, यम्ल्व्यूं स्म्ल्व्यूं ह्मल्व्यूं, क्ष्म्ल्व्यूं।

मंत्र जाप्य करने के लिए पल्लवादि का विधान

१	शान्ति कर्म	पोष्टिक कर्म	वश्य कर्म	आकर्षण कर्म
२	पश्चिम वरुण दिशा	नैऋत्य दिशा	कुबेर दिशा उत्तर	दक्षिण यम दिशा
३	अर्द्ध रात्रि	प्रभात काल	पूर्वान्ह काल	पूर्वान्ह काल
४	ज्ञान मुद्रा	ज्ञान मुद्रा	सरोज मुद्रा	अंकुश मुद्रा
५	पर्यङ्कासन	पंकजासन	स्वस्तिकासन	दण्डासन
६	स्वाहा पल्लव	स्वधा पल्लव	वषट् पल्लव	वौषट् पल्लव
७	श्वेत वस्त्र	श्वते वस्त्र	अरुण पुष्प	उदयार्क वस्त्र
८	श्वेत पुष्प	श्वेत पुश्प	रक्त वर्ण	अरुण पुष्प
९	श्वेत वर्ण	श्वेत वर्ण	रक्त वस्त्र	उदयार्क वर्ण
१०	पूरक योग	पूरक योग	पूरक योग	पूरक योग
११	दीपन आदि नाम	दीपन आदि नाम	संपुट आदि नाम	ग्रन्थन वरुणांतरित नाम
१२	स्फटिक मणि	मुक्ता मणि	प्रवाल मणि	प्रवाल मणि
१३	मध्यमांगुली	मध्यमांगुली	अनामिका	कनिष्ठका
१४	दक्षिण हस्त	दक्षिण हस्त	वाम हस्त	वाम हस्त
१५	वाम वायु	वाम वायु	वाम वायु	वाम वायु
१६	शरद ऋतु	हेमन्त ऋतु	वसन्त ऋतु	वसन्त ऋतु
१७	जल मण्डल मध्य	जल मण्डल	जल मण्डल	अग्नि मण्डल
१८	अर्द्ध रात्रि	प्रभात काल	पूर्वान्ह काल	पूर्वान्ह काल

नोट– प्रतिदिन 2¼ घड़ी का एक घंटा होता है। २४ मिनिट की एक घड़ी होती है।

मंत्र जाप्य करने के लिए पल्लवादि विधान का कोष्टक

स्तम्भन कर्म	मारण कर्म	विद्वेषण कर्म	उच्चाटन कर्म
पूर्वाभिमुख	उत्तर पूर्व के मध्य ईशान दिक्	पूर्व दक्षिण मध्य आग्नेय दिक्	पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य दिक्
पूर्वान्ह काल शंख मुद्रा	संध्या काल वज्र मुद्रा	मध्यान्ह काल प्रवाल मुद्रा	अपरान्ह काल प्रवाल मुद्रा
वज्रासन	भद्रासन	कुर्कुटासन	कुर्कुटासन
ठः ठः पल्लव पीत वस्त्र	घे घे पल्लव कृष्ण वस्त्र	हूँ पल्लव धूम्र वस्त्र	फट् पल्लव धूम्र वस्त्र
पीत पुष्प पीत वर्ण	'' पुष्प कृष्ण वर्ण	'' पुष्प धूम्र वर्ण	'' पुष्प धूम्र वर्ण
कुम्भक योग	रेचक योग	रेचक योग	रेचक योग
विदर्भाक्षर मध्य	रोधन आदि	पल्लवांत नाम	पल्लवान्त नाम
नाम	मध्य नाम		
स्वर्ण मणि	पुत्र जीवा मणि	पुत्र जीवा मणि	पुत्र जीवा मणि
कनिष्ठका	तर्जन्यंगुली	तर्जन्यंगुली	तर्जन्यंगुली
दक्षिण हस्त	दक्षिण हस्त	दक्षिण हस्त	दक्षिण हस्त
दक्षिण वायु	दक्षिण वायु	दक्षिण वायु	दक्षिण वायु
वसन्त ॠतु	शिशिर ॠतु	ग्रीष्म ॠतु	प्रावट् ॠतु
पृथ्वी मण्डल	वायु मण्डल	वायु मण्डल	वायु मण्डल
पूर्वान्ह काल	संध्या काल	मध्यान्ह काल	अपरान्ह काल

स्वरों और व्यंजनों की शक्ति

महामंत्र :- णमो अरिहंताणं।

णमो सिद्धाणं।

णमो आयरियाणं।

णमो उवज्झायाणं।

णमो लोए सव्व-साहूणं।

विश्लेषण

(१) ण् + अ + म् + ओ + अ + र + इ + ह् + त् + आ + ण् + अ + म्।

(२) ण् + अ + म् + ओ + स + इ + द् + ध् + आ + ण् + अ + म्।

(३) ण् + अ + म् + ओ + आ + य् + अ + र + इ + य् + आ + ण + अ + म्।

(४) ण् + अ + म् + ओ + उ + व् + अ+ ज् +झ् + आ +य् + आ + ण् + अ + म्

(५) ण् + अ + म् + ओ + ल् + ओ + ए + स् + अ + (६) व् + अ + स् + आ + ह् + ऊ + ण् + अ + म्

इस विश्लेषण में से स्वरों को पृथक् किया तो–

अ + ओ + अ + इ + अं + आ + अं + अ + ओ + इ + आ + अं + अ +ओ + आ + अ + इ + आ + अं + अ + ओ + उ + अ + आ + आ + अं + अ + ओ + ओ + ए + अ + अ + आ + ऊ + अं

पुनरुक्त स्वरों को निकाल देने के पश्चात् रेखांकित को ग्रहण किया तो–

अ आ इ ई उ ऊ (र) ऋ ॠ (ल्) ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

व्यंजन

ण् + म् + र + ह् + त् + ण् + ण् + म् + स् + द् + ध् + ण् + ण् + म् + य् + र + य् + ण् + ण् + म् + व् + ज् + झ् + य् + ण् + ण् + म् + ल् + स् + व् + व् + स् + ह + ण्।

पुनरुक्त व्यंजनों को निकालने के पश्चात्

ण् + म् + र + ह + ध् + स् + य् + र + ल् + व् + ज् + घ + ह।

ध्वनि सिद्धान्त के आधार पर वर्गाक्षर वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है।

अतः घ् = कवर्ग, झ् = चवर्ग, ण= टवर्ग, ध् = लवर्ग, म् = पवर्ग, य, र, ल, व, स = श, ष, स, ह।

अतः इस महामंत्र की समस्त मातृका ध्वनियाँ निम्न प्रकार हुईः

अ आ इ ऊ उ ऋ ॠ ऌ ऌ ऐ ऐ ओ औ अं अः क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् त् थ् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म् य् र् ल् व् ष् स् ह्।

उपर्युक्त ध्वनियाँ ही मातृका कहलाती हैं। जयसेन प्रतिष्ठा पाठ में बतलाया गया है–

अकारादिक्षकारान्ता वर्णा प्रोक्तास्तु मातृकाः।
सृष्टिन्यास स्थितिन्यास– संहृतिन्यासतस्त्रिधाः।।

अर्थात्– अकार से लेकर क्षकार (क + ष + अ) पर्यन्त मातृका

वर्ण कहलाते हैं।

इनका तीन प्रकार का क्रम है— सृष्टि क्रम, स्थिति क्रम और संहार क्रम।

णमोकार मंत्र में मातृका ध्वनियों का तीनों प्रकार का क्रम सन्निविष्ट है। इसी कारण यह मंत्र आत्म कल्याण के साथ लौकिकं अभ्युदयों को देने वाला है। अष्ट कर्मों के विनाश करने की भूमिका इसी मंत्र के द्वारा उत्पन्न की जा सकती है। संहार क्रम कर्म विनाश को प्रगट करता है। तथा सृष्टि क्रम और स्थिति क्रम आत्मानुभूति के साथ लौकिक अभ्युदयों की प्राप्ति में भी सहायक है। इस मंत्र की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि इसमें मातृका ध्वनियों के तीनों प्रकार के मंत्रों की उत्पत्ति हुई है। बीजाक्षरों की निष्पत्ति के सम्बन्ध में बताया गया है। हलो बीजानि चोक्तानि स्वराः शक्तय ईरिताः। अर्थात् ककार से लेकर हकार पर्यन्त व्यंजन बीजसंज्ञक हैं और अकारादि स्वरशक्ति रूप है। मंत्र बीजों की निष्पत्तिबीज और शक्ति के संयोग से होती है।

सारस्वत बीज माया, शुभनेश्वरी बीज, पृथिवी बीज, अग्नि बीज, प्रणव बीज, मारुत बीज, जल बीज, आकाश बीज, आदि की उत्पत्ति उक्त हल् और अचों के संयोग से हुई है। यों तो बीजाक्षरों का अर्थ बीज कोश एवं बीज व्याकरण द्वारा ही ज्ञात किया जाता है। परन्तु यहां पर सामान्य जानकारी के लिए ध्वनियों की शक्ति पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

णमोकार मंत्र में से ही बीजाक्षरों की उत्पत्तिः-

ॐ	समस्त णमोकार मंत्र से
ह्रीं	की उत्पत्ति णमोकार मंत्र के प्रथम चरण से
श्रीं	की उत्पत्ति णमोकार मंत्र के द्वितीय चरण से
क्षीं क्ष्वीं	की उत्पति णमोकार मंत्र के प्रथम, द्वितीय और

तृतीय चरण से

ग्लीं — की उत्पत्ति णमोकार मंत्र के प्रथम पाद में से प्रतिपादित।

द्रां द्रीं — की उत्पत्ति णमोकार मंत्र के प्रथम और पचम चरण से।

हं — की उत्पत्ति णमोकार मंत्र के प्रथम चरण से।

ह्रं — की उत्पत्ति णमोकार मंत्र के बीज हे तीर्थङ्करों के यक्षिणी द्वारा अत्यन्त शक्तिशाली और सकल मंत्रों से व्याप्त है।

ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः — की उत्पत्ति णमोकार मंत्र के प्रथम धरणी से उत्पन्न हुए हैं।

क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः की उत्पत्ति णमोकार मंत्र के प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण से उत्पन्न हुए हैं।

अक्षरों की शक्ति का वर्णन

अ — अव्यय, व्यापक, आत्मा के एकत्व का सूचक, शुद्ध-बुद्ध, ज्ञान रूप शक्ति द्योतक, प्रणव बीज का जनक।

आ — अव्यय शक्ति और बुद्धि का परिचायक, सारस्वत बीज का जनक, माया बीज के साथ कीर्ति धन और आशा का पूरक।

इ — गत्यर्थक, लक्ष्मी प्राप्ति का साधक, कोमल कार्य साधक, कठोर कर्मों का बाधक व ह्रीं बीज का जनक।

ई — अमृत बीज का मूल कार्य साधक, अल्प शक्ति द्योतक, ज्ञानवर्धक, स्तम्भक, मोहक, जृम्भक।

उ — उच्चाटन बीजों का मूल, शक्तिशाली, श्वास, नलिका द्वारा जोर का धक्का देने पर मारक।

ऊ उच्चाटक और मोहक बीजों का मूल, विशेष शक्ति का परिचायक, कार्य ध्वंस के लिए शक्तिदायक।

ऋ ऋद्धि बीज, सिद्धि दायक, शुभ कार्य सम्बन्धी बीजों का मूल, कार्य सिद्धि का सूचक।

लृ सत्य का संचारक, वाणी का ध्वंसक, लक्ष्मी बीज की उत्पत्ति का कारण, आत्म सिद्धि में कारण।

ए निश्चल पूर्ण, गति सूचक, अरिष्ट निवारण बीजों का सूचक पोषक और संवर्धक।

ऐ उदात्त, उच्च स्वर का प्रयोग करने पर वशीकरण बीजों का जनक, पोषक और संवर्द्धक जल, बीज की उत्पत्ति का कारण, सिद्धि प्रद कार्यों का उत्पादक बीज, शासन देवताओं का आह्वानन करने में सहायक, क्लिष्ट और कठोर कार्यों के लिए प्रयुक्त बीजों का मूल, ऋण विद्युत का उत्पादक।

ओ अनुदात्त– निम्न स्वर की अवस्था में माया बीज का उत्पादक, लक्ष्मी और श्री का पोषक, उदात्त, उच्च स्वर की अवस्था में कठोर कार्यों का उत्पादक बीज, कार्य साधक निर्जरा का हेतु, रमणीय पदार्थों की प्राप्ति के लिए आयुक्त होने वाले बीजों में अग्रणी, अनुस्वरान बीजों का सहयोगी।

औ मारण और उच्चारण सम्बन्धी बीजों में प्रधान, शीघ्र कार्य साधक निरपेक्षी अनेक बीजों का मूल।

अं स्वतंत्र शक्ति रहित कर्माभाव के लिए प्रयुक्त ध्यान मंत्रों में प्रमुख शून्य या अभाव का सूचक, आकाश बीजों का जनक, अनेक मृदुल शान्तियों का उद्घाटक, लक्ष्मी बीजों का मूल।

अ शान्ति बीजों में प्रधान निरपेक्षा अवस्था में कार्य असाधक सहयोगी का अपेक्षक।

क शान्ति बीज, प्रभावशाली सुखोत्पादक, सम्मान प्राप्ति की कामना का पूरक, काम बीज का जनक।

ख आकाश बीज, अभाव कार्यों की सिद्धि के लिए कल्पवृक्ष, उच्चाटन बीजों का जनक।

ग पृथक करने वाले कार्यों का साधक, प्रणव और माया बीज के साथ कार्य सहायक।

घ स्तम्भक बीज, स्तम्भन कार्यों का साधक, विघ्न विघातक, मारण और मोहक बीजों का जनक।

ङ शत्रु का विध्वंसक, स्वर मातृका बीजों के सहयोगानसुार फलोत्पादक विध्वंसक बीज का जनक।

च अंगहीन खण्ड शक्ति द्योदक स्वर मातृका बीजों के अनुसार फलोतपादक उच्चाटन बीज का जनक।

छ छाया, सूचक, माया बीज का सहयोगी बन्धनकारक, आप बीज का जनक, शक्ति का विध्वंसक, पर मृदु कार्यों का साधक।

ज नूतन कार्यों का साधक, आधि व्याधि विनाशक, शक्ति का संचारक, श्री बीजों का जनक।

ञ स्तम्भक और मोहक, बीजों का जनक, कार्य साधक, साधना का अवरोध माया बीज का जनक।

ट बह्नि बीज, आग्नेय कार्यों का प्रसारक और निस्तारक, अग्नि तत्व युक्त विध्वंसक कार्यों का साधक।

ठ अशुभ सूचक बीजों का जनक, क्लिष्ट और कठोर कार्यों का साधक, मृदुल कार्यों का विनाशक, रोदन कर्त्ता, अशान्ति का जनक सापेक्ष होने पर द्विगुणित शक्ति का विनाशक, ब्रह्नि बीज।

ड शासन देवताओं की शक्ति का प्रस्फोटक, निकृष्ट कार्यों की सिद्धि के लिए अमोध संयोग के पंचतत्वरूप बीजों का जनक, निकृष्ट अचार-विचार द्वारा साफल्योत्पादक अचेतन क्रिया साधक।

ढ निश्चल माया बीज का जनक, मारण बीजों में प्रदान, शान्ति का विरोध ी, शान्ति वर्धक।

ण शान्ति सूचक, आकाश बीजों में प्रधान, ध्वंसक बीजों का जनक, शक्ति

का स्फोटक।

त आकर्षक बीज, शक्ति आविष्कारक, कार्य साधक, सारस्वत बीज के साथ सर्व सिद्धि दायक।

थ मंगल साधक, लक्ष्मी बीजों का सहयोगी, स्वर मातृकाओं के साथ मिलने पर मोहक।

द कर्म नाश के लिए प्रधान बीज आत्म शक्ति का प्रस्फोटक वशीकरण बीजों का जनक।

ध श्रीं और क्लीं बीजों का सहायक, सहयोगी के समान फलदाता, माया बीजों का जनक।

न आत्म सिद्धि का सूचक- जल तत्व का स्रष्टा, मृदुतर कार्यों का साध क, हितैषी आत्म नियन्ता।

प परमात्मा का दर्शक जलत्व के प्राधान्य से युक्त समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए ग्राह्य।

फ वायु और जल तत्व युक्त महत्वपूर्ण कार्यों के लिए ग्राह्य स्वर और रे युक्त होने पर विध्वंसक, विघ्न विधातक, फट् की ध्वनि से युक्त होने पर उच्चाटक कठोर कार्य साधक।

ब अनुस्वार युक्त होने पर समस्त प्रकार के विघ्नों का विघातक और निरोधक, सिद्धि सूचक।

भ साधक विशेषतः मारण और उच्चाटन के लिए उपयोगी, सात्विक कार्यों का निरोधक, परिणत कार्यों का तत्काल साधक, साधना में नाना प्रकार से विघ्नोत्पादक, कल्याण से दूर, कटु मधु वर्णों से मिश्रित होने पर अनेक प्रकार के कार्यों का साधक, लक्ष्मी बीजों का विरोधी।

म सिद्धि दायक, लौकिक और पारलौकिक सिद्धियों का प्रदाता सन्तान की प्राप्ति में सहायक।

य शान्ति का साधक, सात्विक साधना की सिद्धि का कारण, महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए उपयोगी, मित्र प्राप्ति या किसी अभीष्ट वस्तु

की प्राप्ति के लिए अत्यन्त उपयोगी ध्यान का साधक।

र अग्नि बीज, कार्य साधक समस्त प्रदान बीजों का जनक, शक्ति का प्रस्फोटक और वर्द्धक।

ल लक्ष्मी प्राप्ति में सहयोग श्री बीजों का निकटतम, सहयोगी और सगोत्री कल्याण सूचक।

व सिद्धि दायक आकर्षक ह, र और अनुस्वर के संयोग से चमत्कारों का उत्पादक, सारस्वत बीज, भूत- पिशाच- शाकिनी बाधा का विनाशक, रोग हर्ता लौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिए अनुस्वार मातृका सहयोगीपेक्षी मंगल साधक, विपत्तियों का रोधक और स्तम्भक।

श निरर्थक सामान्य बीजों का जनक या हेतु उपेक्षा धर्म युक्त शान्ति का पोषक।

ष आह्वन बीजों का जनक, सिद्धि दायक, अग्नि स्तम्भक, जल स्तम्भक, सापेक्ष ध्वनि ग्राहक, सहयोग द्वारा विलक्षण कार्य साधक, आत्मोन्नति बीज का जनक, भयंकर और वीभत्स कार्य के लिए प्रयुक्त होने पर साधक।

स सर्व समीहित साधक, सभी प्रकार के बीजों में प्रयोग योग्य शन्ति के लिए परम आवश्यक, पौष्टिक कार्यों के लिए परम उपयोगी, ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय आदि कर्मों का विनाशक, क्लीं बीज का सहयोगी, काम बीज का उत्पादक आत्मक सूचक और दर्शक।

ह शान्ति पौष्टिक और मांङ्गलिक कार्यों का उत्पादक, साधन के लिए परमोयोगी स्वतन्त्र और सहयोगापेक्षी, लक्ष्मी की उत्पत्ति में साधक, सन्तान प्राप्ति के लिए अनुस्वार युक्त होने पर जाप में सहायक, आकाश तत्व युक्त कर्म नाशक सभी प्रकार के बीजों का जनक।

सिद्धि के लिए आवश्यक विचार

छिन्द– जिस मंत्र के आदि, मध्य और अन्त में संयुक्त वियुक्त या स्वर रहित तीन, चार या पांच बार अग्निबीज (रं) का प्रयोग हो वह मंत्र छिन्न कहलाता है।

रुद्ध– जिस मंत्र के आदि, मध्य और अन्त में दो बार भूमि बीज (लं) का उच्चारण होता है उसको रुद्ध जानना चाहिए।

फल– यह बड़े क्लेश से सिद्धि दायक होता है।

शक्तिहीन– प्रणव और कचव (हुं) ये तीन बार जिस मंत्र में आये हों वह लक्ष्मी युक्त होता है। ऐसी लक्ष्मी से हीन मंत्र को शक्तिहीन जानना चाहिए।

फल– यह दीर्घकाल के बाद फल देता है।

पराङ् मुख– जहाँ आदि में कामबीज (क्लीं) मध्य में मायाबीज (ह्रीं) और अन्त में अंकुश बीज (क्रौं) वह मंत्र पराङ् मुख जानना चाहिए।

फल– यह साधकों को चिरकाल से सिद्धि देने वाला होता है।

बधिर– कर्ण हीन मंत्र को बधिर कहते हैं।

फल– यह बहुत कष्ट उठाने पर थोड़ा फल देने वाला होता है।

नेत्रहीन– यदि पंचाक्षर मंत्र हो किन्तु उसमें रेफ, मकार और अनुस्वार न हों तो उसे नेत्रहीन जानना चाहिए।

फल– यह क्लेश उठाने पर भी सिद्धिदायक नहीं होता।

कीलित– आदि, मध्य और अन्त में हंसबीज (सं) प्रासाद तथा बागबीज (ऐं) हों अथवा हंस और चन्द्रबिन्दु वा सकार, फकार अथवा (हुँ) हों तथा जिसमें मा, प्रा और नमामि पद न हों वह मंत्र कीलित माना गया है।

स्तम्भित– इसी प्रकार मध्य में और अन्त में भी वे दोनों पद न हों तथा जिसमें फट् और लकार न हो वह मंत्र स्तम्भित माना गया है।

फल– जो सिद्धि में रुकावट डालने वाला है।

दग्ध– जिस मंत्र के अन्त में अग्निबीज (रं) वायुबीज (यं) के साथ हो तथा जो सात अक्षरों से युक्त (स) दिखाई देता हो वह दग्ध संज्ञक मंत्र है।

त्रस्त– जिसमें तीन, छः या आठ अक्षरों के साथ अस्त्र (फट्) बीज दिखाई दे उस मंत्र को त्रस्त जानना चाहिए।

भीत– जिसके मुख भाग में प्रणव रहित होकर हकार अथवा शक्ति हो वही मंत्र भीत कहा जाता है।

मलिन– जिसके आदि, मध्य और अन्त में चार (म) हों वह मलिन माना जाता है।

फल– यह अत्यन्त क्लेश से सिद्धि दायक होता है।

तिरस्कृत– जिस मंत्र के मध्य भाग में 'द' अक्षर और अन्त में क्रोधबीज (हुं हुं) हो और साथ अस्त्रबीज (फट्) हो तो वह मंत्र तिरस्कृत कहा जाता है।

भेदित– जिसके अन्त में म तथा य तथा हृदय हो और मध्य में वषट् एवं वौषट् हो वह मंत्र भेदित कहा जाता है।

फल– उसे त्याग देना चाहिए क्योंकि वह बड़े क्लेश से फल देने वाला होता है।

सुषुप्त– जो तीन अक्षर से युक्त तथा हंसहीन हो उस मंत्र को सुषुप्त कहा गया है।

मदोन्मत– जो विद्या अथवा मंत्र १७ अक्षरों से युक्त हो तथा जिसके आदि में पाँच बार फट् का प्रयोग हुआ हो उसे मदोन्मत माना गया है।

मूर्च्छित– जिसके मध्य भाग में फट् को प्रयोग हो उसे मूर्च्छित कहते हैं।

हतवीर्य– जिसके विराम स्थान में अस्त्र (फट्) का प्रयोग हो वह हतवीर्य कहा गया है।

भ्रान्त– जिस मंत्र के आदि, मध्य और अन्त में अस्त्र (फट्) का प्रयोग हो तो उसे भ्रान्त जानना चाहिए।

प्रध्वस्त– जो मंत्र अट्ठारह अथवा बीस अक्षर बाला होकर कामबीज

क्लीं से युक्त होकर साथ ही उसमें हृदय, लेख और अंकुश के भी बीज हों तो उसे प्रध्वस्त कहा गया है।

बालक– सात अक्षर वाला मंत्र बालक कहलाता है।

कुमार– आठ अक्षर वाला मंत्र कुमार कहलाता है।

युवा– सोलह अक्षर वाला मंत्र युवा कहलाता है।

प्रौढ– चौबीस अक्षरों वाला मंत्र प्रौढ कहलाता है।

वृद्ध– बीस, चौंसठ, सौ, चार सौ अक्षरों वाला मंत्र वृद्ध कहलाता है।

निस्त्रिंश– प्रणव सहित नवार्ण मंत्र को निस्त्रिंश कहते हैं।

निर्जीव– जिसके अन्त में हृदय (नमः) कहा गया हो, मध्य में शिरोमंत्र (स्वाहा) का उच्चारण होता हो, और अन्त में शिखा वषट् का वर्म (हुं) नेत्र (वौषट्) और अस्त्र (फट्) देखे जाते हों, शिव एवं शक्ति से हीन हो, उस मंत्र को निर्जीव कहते हैं।

सिद्धहीन– जिस मंत्र के आदि, मध्य और अन्त में छः बार फट् का प्रयोग देखा जाता हो, वह मंत्र सिद्धहीन होता है।

मन्द– पांच अक्षर के मंत्र को मन्द कहते हैं।

कूट– एकाक्षर मंत्र को कूट कहते हैं।

निरंशक– एकाक्षर मंत्र को निरंशक भी कहते हैं।

सत्त्वहीन– दो अक्षर का मंत्र सत्त्वहीन कहा गया है।

केकर– चार अक्षर का मंत्र केकर कहलाता है।

बीजहीन– छः या साढ़े सात अक्षर का मंत्र बीजहीन कहा गया है।

धूमित– साढ़े बारह अक्षर के मंत्र को धूमित माना गया है।

फल– वह निन्दित है।

अलिगित– साढ़े तीन बीज से युक्त बीस-तीस तथा इक्कीस अक्षर का मंत्र अलिगित कहा गया है।

मोहित– जिस मंत्र में दन्त स्थानीय अक्षर हों, वह मंत्र मोहित बताया गया है।

क्षुधार्त्त– चौबीस या सत्ताईस अक्षर के मंत्र को क्षुधार्त्त जानना चाहिए।

दृप्त– ग्यारह, पच्चीस अथवा तेईस अक्षर का मंत्र दृप्त (अतिदीप्त(कहलाता है।

हीनांग– छब्बीस, छत्तीस तथा उनत्तीस अक्षर के मंत्र को हीनांग कहते हैं।

अत्यन्तक्रुद्ध– अट्ठाईस और इकत्तीस अक्षर का मंत्र अत्यन्तशुद्ध (अत्यन्त क्रूर) कहा जाता है।

फल– यह सम्पूर्ण कामों में निन्दित माना गया है।

व्रीडित– बत्तीस अक्षर से लेकर तिरेसठ अक्षर तक का जो मंत्र है से व्रीडित (लज्जित) समझना चाहिए।

फल– यह समस्त कार्यों को सिद्धि में समर्थ नहीं होता।

शान्तमानस– पैंसठ अक्षर के मंत्र को शान्तमानस जानना चाहिए।

स्थानभ्रष्ट– पैंसठ अक्षरों से लेकर निन्यान्बे अक्षरों तक के जो मंत्र हैं उन्हें स्थानभ्रष्ट जानना।

विकल– तेरह और पन्द्रह अक्षरों के जो मंत्र हैं उन्हें विकल कहा है।

नि: स्नेह– सौ, डेढ़ सौ इक्यानवे, अथवा तीन सौ अक्षरों के जो मंत्र होते हैं, वे नि: स्नेह कहे गए हैं।

अत्यन्त वृद्ध– चार सौ से लेकर एक हजार अक्षर तक के मंत्र प्रयोग में अत्यन्त वृद्ध माने गए हैं। उन्हें शिथिल कहा गया है।

पीड़ित– जिन मंत्र में एक हजार से भी अधिक अक्षर हों, उन मंत्र को पीड़ित बताया गया है।

नोट– इससे अधिक अक्षर वाले मंत्र को स्तोत्र रूप माना गया है। इस प्रकार के मंत्र दोष युक्त कहे गये है।

दूषित मंत्र साधन विधि

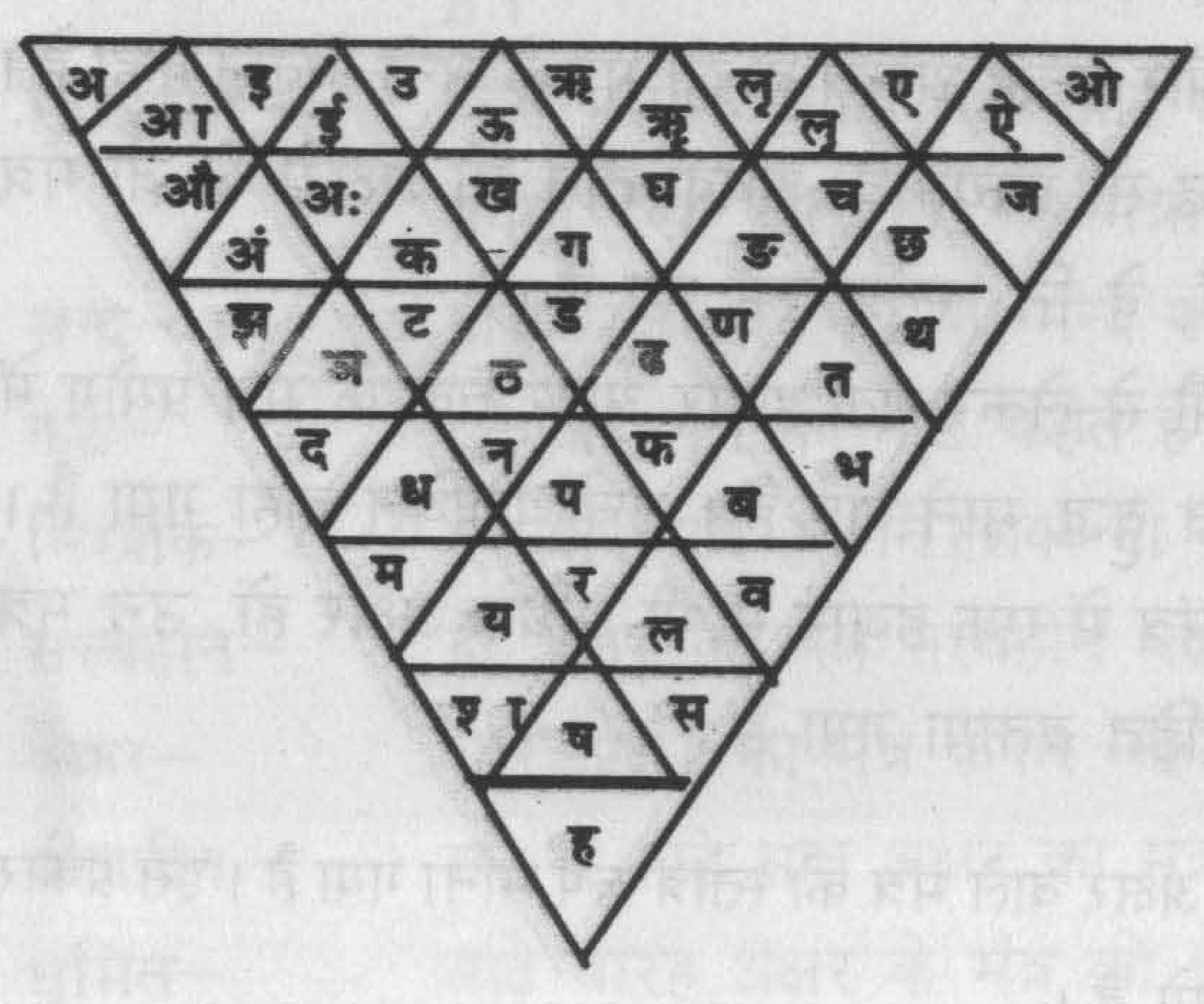
छिन्नादि दोषों से दूषित मंत्र का साधन बताता हूँ। मनुष्य योनि मुद्रासन

से बैठकर एकाग्रचित हो जिस किसी भी मंत्र का जाप करता है, उसे सब प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

बायें पैर की एड़ी को गुदा के सहारे रखकर दायें पैर की एड़ी को ध्वज (लिंग) के ऊपर रखें तो इस प्रकार योनिमुद्रा बंध नामक उत्तम आसन होता है।

मंत्र दोष शान्त्यर्थ संस्कार

प्राचीन मंत्रशास्त्रों में मंत्रों के छिन्न, कच्छादि ४९ दोष कहे हैं। किन्तु सात कोटि मंत्रों से कोई भी ऐसा दोष नहीं है जो उन मंत्रों में न हो। अतएव उन दोषों को शान्ति के लिए निम्नलिखित दस संस्कार करने चाहिए। ये हैं– १. जनन २. दीपन ३. बोधन ४. ताडन ५. अभिषेक ६. विमलीकरण ७. जीवन ८. तर्पण, ९. गोपन १०. आयायन। अब इनका स्वरूप कहते हैं।



१. भोजपत्र पर गोरोचन केशर से एक त्रिकोण यंत्र बनावे। उसको पश्चिम के कोने से आरम्भ करके सात बराबर भागों में बांटकर दक्षिण और पूर्व की ओर से भी सात बराबर भागों में बांट दें। इस प्रकार उसमें ४९ कोठे बन जायेंगे। उनमें अ से ह तक ४९ मातृकाओं को लिखे। यह मंत्र निम्न है।

जनन– इस यंत्र के ऊपर देवी का पूजन चन्दन आदि से करके फिर इस प्रकार का दूसरा यंत्र बनाकर उसमें प्रथम यंत्र में से मंत्र के अक्षरों को लेकर लिखे। इसको जनन कहते हैं।

दीपन– मंत्र को 'हंसः' मंत्र के संपुट में एक सहस्त्र जपने को दीपन कहते हैं।

बोधन– मंत्र को 'ह्रूँ' के सम्पुट में पांच सहस्त्र जपने को बोधन कहते हैं।

ताड़न– मंत्र को फट् के सम्पुट में एक सहस्त्र जपने को ताडन कहते हैं।

अभिषेक– ताडपत्र पर लिखे हुए मंत्र को 'ऐं' हंसः ॐ मंत्र से एक सहस्त्रवार अभिमंत्रित जल के द्वारा अभिषेक कहते हैं।

विमलीकरण– मंत्र को 'ॐ त्रों वषट्' के सम्पुट में एक सहस्त्र जपने को विमलीकरण कहते हैं।

जीवन– स्वधा वषट् के सम्पुट में एक सहस्त्र जपने को जीवन कहते हैं।

तर्पण– दूध, घी और जल के द्वारा उसी मंत्र से एक सहस्त्र और तर्पण करने को तर्पण कहते हैं।

गोपन– 'ह्रीं' के सम्पुट में एक सहस्त्र जपने को गोपन कहते हैं।

आप्यायन– 'हनौः' के सम्पुट में सहस्त्र जपने को आप्यायन कहते हैं।

होम विधि

हवन कुण्ड

जिनमें गार्हस्थादि अग्नियों की स्थापना की जाती है वे कुण्ड तीन प्रकार के होते हैं– चौकोर, त्रिकोण और गोल।

उनकी लम्बाई, चौड़ाई और गहराई एक हाथ ही होनी चाहिए। वह चारों ओर मेखला के समान तीन कटनियों से घिरी हुई हो। उनमें से पहली कटनी की ऊँचाई पाँच अंगुल, दूसरी की चार और तीसरी की तीन अंगुल है।

मंत्र कुण्ड से दो हाथ दूर अपने सामने एक हाथ लम्बी और तीन हाथ

चौड़ी ऊँची वेदी बनावे। कुण्ड और वेदी के चारों और सब लोकपालों के लिए आसन रखे। अथवा मंत्री मंत्र सिद्धि के लिए एक मेरु पीठ, नौ कुण्ड और नौ पीठों को शास्त्रोक्त विधि से बनावे।

मारण, आकर्षण और वश्य कर्मो में त्रिकोण कुण्ड, विद्वेषण- उच्चाटन में गोल तथा शेषं- शान्ति-पौष्टिक व स्तम्भन कर्मों में चौकोर कुंण्ड प्रशंसनीय होता है।

समिधा विधान

सामान्य- हवन के लिए मुख्य रूप से पलाश की और उसके अभाव में दूध वाले वृक्षों की समिधाएँ लेनी चाहिए। यह सामान्य नियम है। क्षुद्र कर्मो के हवन के लिए कुंचले, बहेड़े, नीम, धतूरे अथवा अमलतास की समिधाएँ लेनी चाहिए। मारण और विद्वेषण में आठ अंगुल की, पौष्टिक और शांतिक कर्मो में नौ अंगुल की और आकर्षण, वश्य कर्मो में बारह अंगुल की समिधाएँ लेनी चाहिए। दूध वाले वृक्षों का जो काष्ठ पवित्र व सूखा हो, वह सभी होम कर्मो में लिया जा सकता है। सफेद और लाल चन्दन की समिधाएं मुख्य होती हैं। उनके न मिलने पर शमी की और लकड़ी के बिल्कुल न मिलने पर ढाक और पीपल समिधा से होम करें।

होम द्रव्य विधान

कृष्ण पक्ष अष्टमी से अमावस तक लवंग और दूब के अंकुरों से, शांति और पौष्टिक कर्म को, तथा लाल कनेर के पुष्पों के हवन से स्त्रियों का वशीकरण करे। महिषाक्ष गूगल और कमल गट्टे के होम से प्रतिदिन नगरवासियों को क्षोभ होता रहता है। सुपारी के फल तथा पत्तों के हवन से राजा लोग वश में होते हैं। चमेली के फूलों सहित होम से योगी लोग वश में होते हैं। तिल, धान्य और घी के होम से धन और धान्यों की वृद्धि होती है। कांगनी, प्रियंगु सुपारी, चीनी, तिल, अलसी, शालि, कुलथी, आढकी दाढ़सी, सनके बीज, श्यामक, संवाई जौ, उड़द, सफेद व पीली सरसों, बांस

के बीज, गेहूँ, शिवक उड़द, और मूंग यह अठारह धान्य कहलाते हैं। दूध, घी और गुड़ ये त्रिमधुर कहलाते हैं। नारियल, कपूर, कनेर के फूल, भूमि, पुष्प और कदम के फूलों के होम से नागकुमारी वश में होती है। आम और घी के होम से विद्याधर वश में होते हैं। पलाश के होम से यक्षिणी वश में होती हैं। ग्रह धूम, नील के फूल, सफेद सरसों, नमक, और काकपक्ष के होम से भाइयों में विरोध हो जाता है। मशान की लकड़ी और ग्रह धूम का बहेड़े कं अंगारों में होम करने से शत्रु सप्ताह भर में मर जाता है। मारण, उच्चाटन, विद्वेषण और स्तम्भन इन अशुभ कर्मों में क्रोध सहित अशुद्ध द्रव्यों से होम करे। शान्तिक, पौष्टिक, वशीकरण तथा आकर्षण शुभ कर्मों से उत्तम द्रव्यों से प्रसन्न चित्त होकर हवन करे।

होम द्रव्य

होम करनें में एक सेर दूध, एक सेर घी, और अष्टांग धूपादि से मिला हुआ द्रव्य दो सेर लेवे।

हवन के पात्र

सृक, हवन, पात्र, चन्दन के बने हुए या पीपल के बने हुए मुख्य हैं। उसके न मिलने पर पलाश के वा पीपल के पत्ते के बनावे।

हवन विधि

सकलीकरण से शुद्ध हुआ मंत्री यज्ञोपवीत और धाती दुपट्टा पहन कर निम्न मंत्र बोलकर पर्यंकासन से हवन कुण्ड के आगे बैठें–

''ॐ ब्रह्मासनेऽहमुपविशामि स्वाहा।'

फिर वह भक्ति पूर्वक निम्न मंत्र से वेदी का पूजन करे–

''सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय कर्मदहनाय भवतु।''

फिर मंत्री उस वेदी में मंत्र की अधिष्ठाता देवता की स्थापना करके उसको जल-चन्दन आदि द्रव्यों से उनकी पूजा करे। और निम्न मंत्र से कुण्ड की पूजा करे–

"ॐ ह्रीं कुण्डमर्चयामि स्वाहा।"

फिर निम्न मंत्र पढ़ कर अग्नि की स्थापना करे–

"ॐ ह्रीं स्वस्तये श्रीमत्पवित्रतरमग्नीन्द्रं स्थापयामि स्वाहा।"

फिर निम्न मंत्र से कुण्ड को झपके–

"ॐ पिंगल दह दह पच पच सर्व आज्ञापयति स्वाहा।

फिर निम्न मंत्र बोलकर अग्निकुण्ड में घृत सहित एक समिधा डालकर अग्नि को सन्निहित करें–

ॐ वैश्वानर जातवेदस ईहावलोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधयामि स्वाहा।

फिर क्रमशः निम्न मंत्रों को बोलकर इन्द्रादि लोकपालों का आह्वानन स्थापन तथा सन्निधिकरण करें–

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे इन्द्र एहि-एहि संवौषट्।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे इन्द्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे इन्द्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधि करणम्।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सुवर्ण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे इन्द्र देवाय इदं जलं गंधं अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं फलं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।१।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे अग्नि एहि-एहि संवौषट्।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे अग्नि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे अग्नि मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रक्तवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे अग्नि देवाय इदं जलं गंधं अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं फलं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।२।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे यम एहि एहि संवौषट्

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे यम तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे यम मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे यम देवाय इदं जलं गंधं अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं फलं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्यामवर्ण सर्वलक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे नैऋृत्य एहि एहि संवौषट् आवाह्नन्।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्यामवर्ण सर्वलक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे नैऋृत्य तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्यामवर्ण सर्वलक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे नैऋृत्य मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्यामवर्ण सर्वलक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे नैऋृत्य देवाय इदं जलं गंधं अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं फलं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

ॐ आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे वरुण एहि-एहि संवौषट् इत्यावाह्ननं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे वरुण तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे वरुण मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे वरुण देवाय इदं जलं गंधं अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं फलं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे वायो एहि एहि संवौषट्।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे वायो तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे वायो मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृष्णवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे वायो देवाय इदं जलं गंधं अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं,

धूपं फलं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पीतवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे कुबेर एहि एहि संवौषट् आवाह्ननं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पीतवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे कुबेर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पीतवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे कुबेर मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पीतवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे कुबेर देवाय इदं जलं गंधं अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं फलं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

ॐ आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे ईशान एहि एहि संवौषट्।

ॐ आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे ईशान तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे ईशान मम् सन्निहितो भव-भव वषट्। सन्निधिकरणं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपिवार हे ईशान देवाय इदं जलं गंधं अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं फलं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

ॐ आं क्रौं ह्रीं निशाकर किरणप्रभ सर्व लक्षण सम्पूर्ण सायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे धरणेन्द्र एहि एहि संवौषट्। आवाह्ननं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं निशाकर किरणप्रभ सर्व लक्षण सम्पूर्ण सायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे धरणेन्द्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं निशाकर किरणप्रभ सर्व लक्षण सम्पूर्ण सायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे धरणेन्द्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्। सन्निधिकरणं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं निशाकर किरणप्रभ सर्व लक्षण सम्पूर्ण सायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे धरणेन्द्र देवाय इदं जलं गंधं अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं फलं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमदेवाय सर्व लक्षण सम्पूर्ण सायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे धरणेन्द्र एहि एहि संवौषट्। आवाह्ननं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमदेवाय सर्व लक्षण सम्पूर्ण सायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे धरणेन्द्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमदेवाय सर्व लक्षण सम्पूर्ण सायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे धरणेन्द्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्। सन्निधिकरणं।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमदेवाय सर्व लक्षण सम्पूर्ण सायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे धरणेन्द्र देवाय इदं जलं गंधं अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं फलं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

इसके पश्चात मंत्री जलादि से पूजन करें–

ॐ नीरजसे नमः। जलम्।

ॐ शीलगंधाय नमः। चन्दनं।

ॐ अक्षताय नमः अक्षतं।

ॐ विमलाय नमः। पुष्पं।

ॐ परमसिद्धाय नमः । नैवेद्यं

ॐ ज्ञानोद्योताय नमः । दीपं

ॐ श्रुतधूपाय नमः ।। धूपं

ॐ अभीष्टफलप्रदाय नमः ।। फलं

ॐ दर्पमथनाय नमः । अर्घ्यं

चौखूंटे कुण्ड में नित्य हवन करने योग्य गार्हपत्य अग्नि की स्थापना करे और गोल कुण्ड से दक्षिणापत्य अग्नि की। फिर मंत्री उस कुण्ड में एक समिध त्रिमुधुर (दूध, घी, गुड़) के और एक घी के साथ जप मंत्र पढ़ता हुआ अपने हाथ से डाले। इसके पश्चात् हवन के सब द्रव्यों को मिलाकर १०८ अथवा जप का दसवां अंश समिधाएं रख लेवे। श्रुवा से (खदिर के बने हुए पात्र से) आप का दसवां अंश अथवा यथा निर्दिष्टि आहुतियां देवे। होम के समय मंत्र के अन्त में स्वाहा लगा लेवे। हवन की समापित पर चतुः संघ को आहारादि दे।

जो मंत्री एक मंत्र को पूर्ण सामग्री से अच्छी तरह सिद्ध कर लेता है उसकी थोड़ी सामग्री से ही दूसरे मंत्र भी सिद्ध हो जाते हैं।

श्री सरस्वती स्तोत्रम्

अनुष्टप् छन्द

सरस्वत्याः प्रसादेन, काव्यं कुर्वन्ति मानवाः।
तस्मान्निश्चल भावेन, पूजनीया सरस्वती।।१।।
श्री सर्वज्ञ मुखोत्पन्ना, भारती बहु भाषिणी।
अज्ञान तिमिरं हन्ति, विद्यायां विकासिनी।।२।।
सरस्वती मया दृष्टा, दिव्या कमल लोचना।
हंस स्कन्ध समारुढ़ा, वीणा–पुस्तक–धारिणी।।३।।

प्रथमं भारती नाम, द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदा देवी, चतुर्थं हंस गामिनी।।४।।
पंचम विदुषां माता, षष्ठं वागीश्वरी तथा।
कुमारी सप्तमं प्रोक्त–मष्टमं ब्रह्मचारिणी।।५।।
नवं च जगन्माता, दशमं ब्राह्मिणी तथा।
एकादशं तु ब्रह्माणी, द्वादशं वरदा भवेत्।।६।।
वाणी त्र्योदशं नाम, भाषा चैव चतुर्दशम्।
पंचदंश श्रुतदेवी, षोड्शं गौ निगद्यते।।७।।
एतानि श्रुत नामानि, प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
तस्य सन्तुष्यति माता, शारदा वरदा भवेत्।।८।।
सरस्वति! नमस्तुभ्यं, वरदे काम रुपिणी।
विद्यारम्भ करिष्यामि, सिद्धि र्भवतु मे सदा।।९।।

सरस्वती साधना विधि मंत्र यंत्र

विनयं माया हरि वल्लभाक्षरं तत्पुरो वद द्वितीयं।
वाग्वादिनी च होमं वागीशा मूल मंत्रोयं।।१।।

विनयं बीजं हरि प्रिया तत्पुरो वद द्वितीयं।
वाग्वादिनी च होमं वागीशा मूल मंत्रोऽयं।।२।।

मूल मंत्र

मंत्र– ॐ ह्लीं श्री वद वाग्वादिनी स्वाहा।

यह सरस्वती का मूल मंत्र है।

मंत्रोध्दार

ॐ ह्लीं श्री वद वद वाग्वादिनी स्वाहा।

ॐ वद वद वाग्वादिनी ह्लां हृदयाय नमः।

ॐ वद वद वाग्वादिनी ह्लीं शिरसे स्वाहा।

ॐ वद वद वाग्वादिनी हूँ शिखायै वषट्।

ॐ वद वद वाग्वादिनी ह्लौं कवचाय वषट्।

ॐ वद वद वाग्वादिनी ह्लः अस्त्राय फट्।

रेफैर्ज्वलद्भिरात्मानं दग्धं–मग्नि पुरः स्थितं।
ध्यायेदमृत मंत्रेण कृतस्नानस्ततः सुधीः।।३।।

इसके पश्चात् विद्वान मंत्री अपने को अग्निमंडल के बीच में बैठा हुआ तथा अपने मल को जलते हुए रं बीज से जला हुआ ध्यान करके अमृत मंत्र से स्नान किया हुआ ध्यान करे।

सर्वशरीरे प्रणवः शीर्षे वा नयनयो कारश्च।
घोणा यां च वकार सर्वत्र मुखे दकारः स्यात।।४।।

वाग्वदने वा कंठे दि हृदये नीं च योजयेन्नाभो।
पाद द्वितये स्वाहा शब्दं कुंदेन्दु सम वर्ण।।५।।

महापद्मयसो योग पीठाग्रेति नमोतकः।
पीठस्थापन मंत्रः स्योत्तजो ह्रीं कार पूर्वकः।।६।।

फिर सर्व शरीर में प्रणव (ॐ) सिर में और दोनो आंखों में ह्रीं नाक में व और मुख से सर्वत्र द का ध्यान करें।

कंठ से लगाकर हृदय तक में वाग्वदने नाभि में नीं और दोनों पावों में कुंद पुष्प तथा चन्द्रमा के समान वर्ण वाला स्वाहा शब्द लगावे। तेज (ॐ) और ह्रींकार पूर्वक महापद्मा यशोयोग पीठाग्रे के अंत में नमः लगाकर पीठ स्थापन मंत्र बनता है।

मंत्र– ॐ ह्रीं महापद्मा यशोयोग पीठाय नमः।

दिक्कपत्रे अष्ट दलांभोजं श्री खंडेन सुंगधिना।
जाति का स्वर्ण लेखिनीन्या दुर्वा दर्भेण वा लिखेत।।७।।

दिशाओं के पत्रों में आठ दल युक्त कमल को सुगंधित चंदन चमेली सोने या डाम का कलम द्वारा लिखे।

ॐ कार पूर्वाणि मंत कानि शरीर विन्यास।
कृताक्षराणि प्रत्येकतोऽथैवयथा क्रमेण देवानि।।८।।

तन्यष्टषु पत्र केषु ब्रह्म होम नमशब्द यंमध्ये कर्णिकां लिखेत।
कंक प्रभृति ंभिस्तंच कैशरै वेंष्टये नमः।।६।।

उन आठों पत्रों के प्रत्येक पत्र के आदि में ॐ और अंत में नमः लगाकर शरीर में न्याय करके अक्षरों को पृथक पृथक पत्रों में लिखे।

उसकी कर्णिका के बीच में ब्रह्म (ॐ) होम (स्वाहा) और नमः शब्द को लिखे और कंकः आदि को उसके पराग के स्थान में रखे।

कादीनां प्रथमायुद्य अष्टौ काद्याः परस्परः।
स्वरांताभ्यां क्रमाद्युता विज्ञेया स्तत्र केशरा।।१०।।

क आदि वर्ग के प्रथम आदि अक्षरों तथा प आदि आठो अक्षरों के अंत के दो स्वर अं अः से युक्त करके पराग या केशर के स्थान में रखे।

कंकः चंचः टंटः तंतः पंपः यंयः रंरः लंलः वंवः शंशः षंषः संसः हंहः खंखः छंछः ठंठः थंथः फंफः गंगः जंजः डंडः दंदः बं बः घंघः झंझः ढंढः धंधः भंभः दंदः यं यः णंणः नंनः मंमः।

एतानि केसराक्षराणि बाह्ये त्रिमायया वेष्टयं।
कुंभकेनांऽबुजोपरि प्रतिष्ठापन मंत्रेण स्थापयेतां सरस्वतीं।।११।।

फिर इस मंत्र को बाहर से ह्रीं से तीन बार वेष्टन करके उस कमल के ऊपर कुंभक प्राणायाम से प्रतिष्ठापन के द्वारा सरस्वती देवी की स्थापना करें।

मंत्र– ॐ अमले विमले सर्वज्ञे देवी भारती वागीश्वरी ज्वलद्वपुषिणे स्वाहा।

प्रतिष्ठापन मंत्र

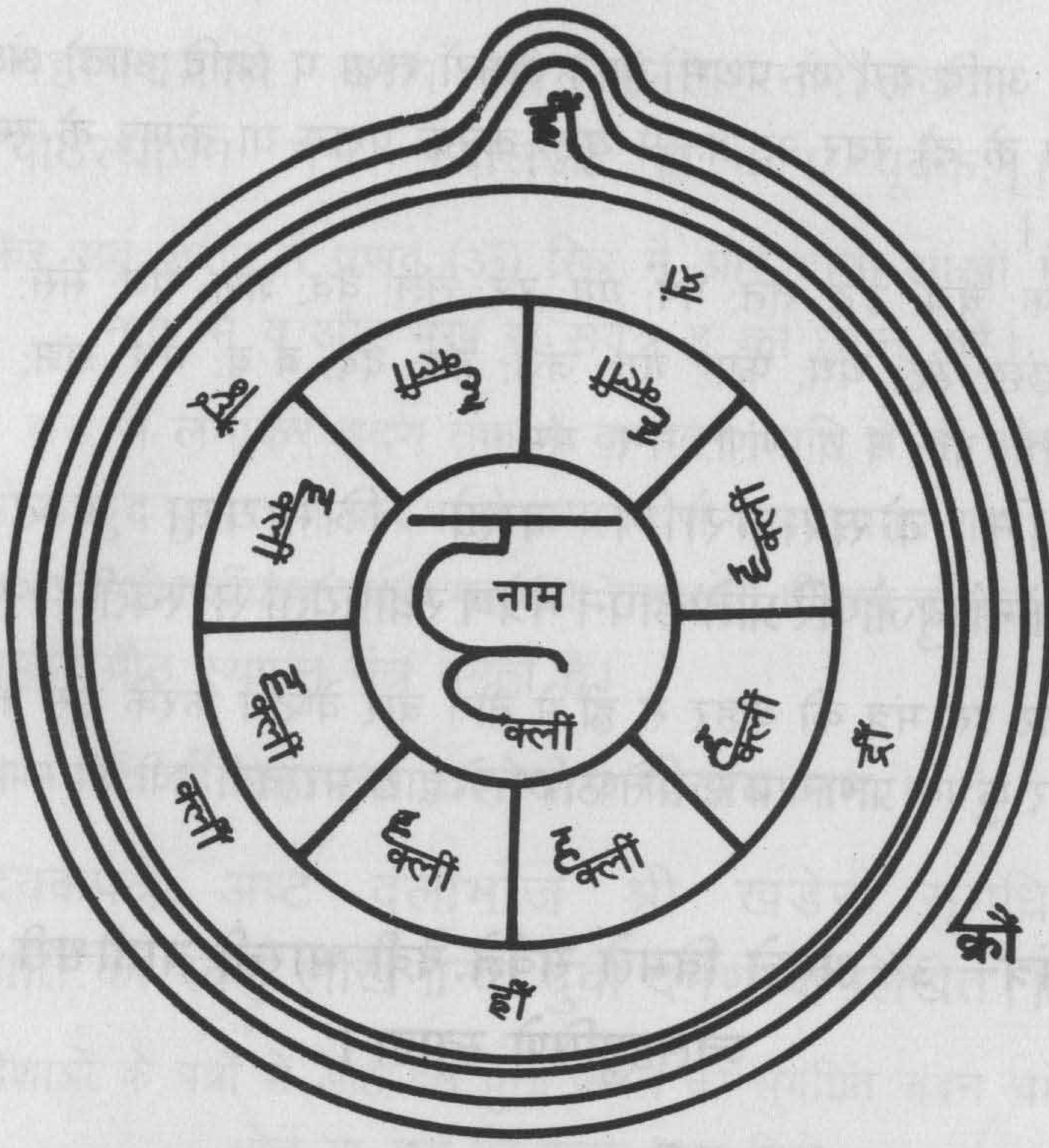
मंत्र– ॐ अमले विमले सर्वज्ञे ह्रीं हंसः ॐ ह्रीं वद वद वाग्वादिनी भगवती सरस्वती श्री देवी भारती वागीश्वरी ज्वल वज्र मणि प्रभवे ॐ नमः स्वाहा।

अर्चयन्परया भक्त्या गंध पुष्पाक्षतादिभिः।
विनयादि नमोतेन ह्रीं मंत्रेण सरस्वती।।१२।।

इसके पश्चात् उस सरस्वती देवी का आदि में विनय (ॐ) तथा अंत में नमः वाले ह्रीं मंत्र से अत्यंत भक्तिपूर्वक गंध पुष्प अक्षत आदि के द्वारा पूजन करें।

सरस्वती यंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनी नमः।



सांख्य भौतिक चार्वाक मीसांसक दिगंबरा: ।

योग कास्तेपिदेवि त्वां ध्यायंति ज्ञान हेतवे ।।१३।।

गमकत्वं कत्वं कवित्वं च वादित्वं वागमिता तथा।

हे भारती त्वत्प्रसादेन जायते भुवनै: नृणां।।१४।।

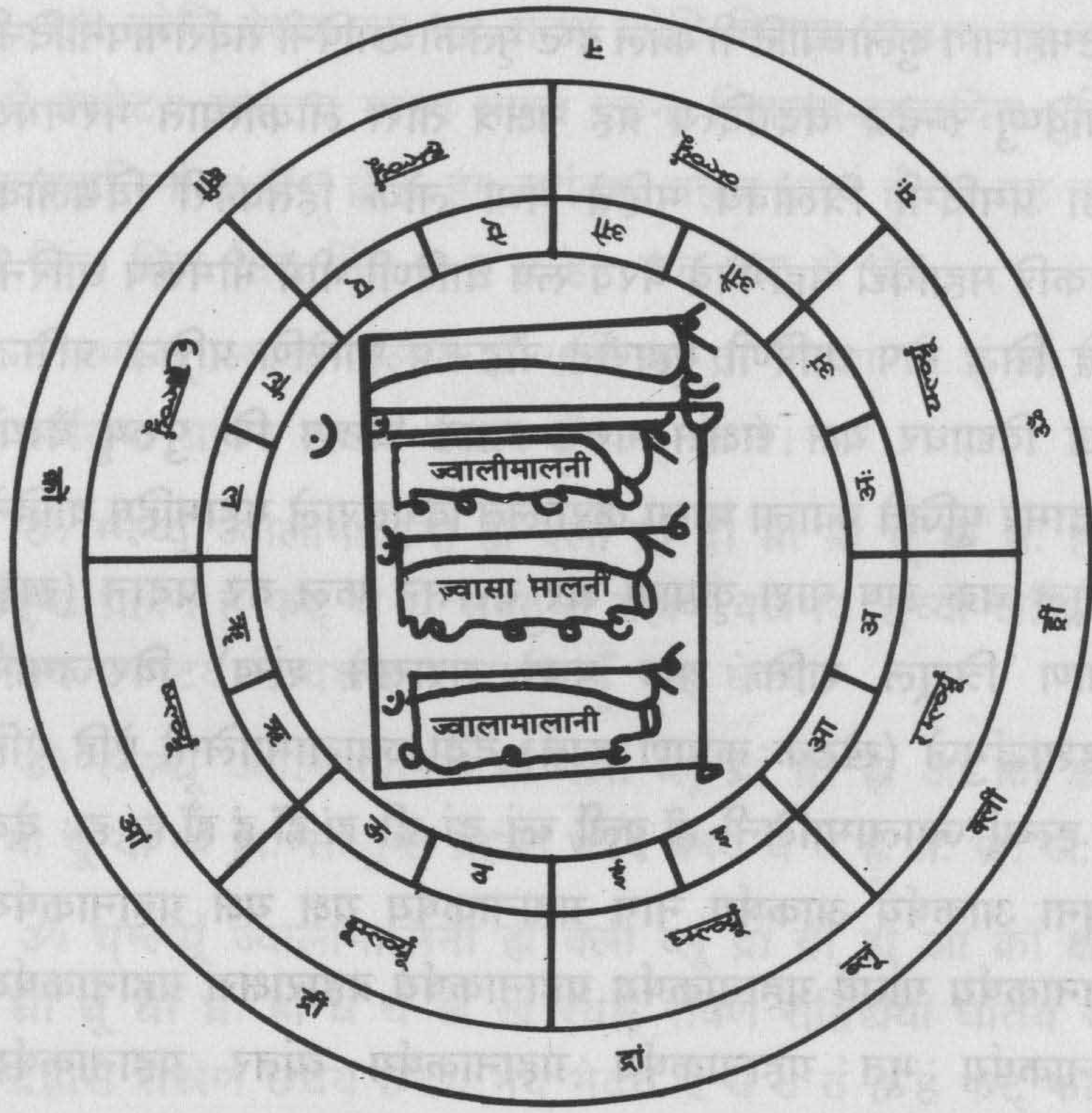
भानुदेय तिमिरमेति यथा विनाशं, क्ष्वेडं विनस्यति यथा गरुडाग्मिन।

तद्वत्समस्त दुरितं चिरं संचितं मे देवी, त्वदीय मुख दर्पण दर्शनेन।।१५।।

हे सरस्वती आप की सांख्य, भौतिक, चार्वाक, मीमांसक, दिगम्बर और योगमति ज्ञान की वृद्धि के वास्ते ध्यान करते हैं।

आपका ध्यान करने से कविता करने की वाचन सिद्धि होती है। जिस तरह सूर्य के उदय होने से अंधेरा नष्ट होता है, तथा गरुड़ के आगमन पर विष नष्ट होता है, उसी तरह से चिरकाल से इकट्ठा किया हुआ पाप हे सरस्वती देवी आप के दर्शन से नष्ट होता है।

ज्वालामालिनी देवी साधना मंत्र



ॐ नमो भगवते श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय शशांक शंख गोक्षीर हारनीहार धवल गात्राय घाति कर्म निर्मूलनो छेदन कराय जाति जरामरण शोक विनाशनाय संसार कांतारोन्मूलन कराय अचित्यं बल पराक्रमाय अप्रतिहत शासनाय त्रैलोक्य वंशकराय सर्वसत्व हितंकराय सुरासुरोरगेन्द्र मणि मुकुट कोटि धृष्ट पाद पीठाय त्रैलोक्य नाथाय देवाधि देवाय अष्टदश दोष रहिताय धर्म चक्राधीश्वराय सर्वविद्या परमेश्वराय कुविद्याध्नाय तत्पाद पंकजाश्रय

निषेवणि देवि जिन शासन देवते त्रिभुवन जन संक्षोभिणी त्रैलोक्य शिवाय हारिणि स्थावर जंगम कृत्रिम विषमं विष संहारिणी सर्वाभिचार कर्माप हारणि परविद्या छेदिनीं परमंत्र यंत्र तंत्र प्रनाशिनी अष्टमहानाग कुलोच्चाटिनी काल दष्ट मृतकोच्छापिनी सर्वरोगापनोदिनी ब्रह्मविष्णु रुन्द्रेद्र चंद्रादित्य ग्रह नक्षत्र तारा लोकोत्पात मरणभय पीडा प्रमर्दिनी त्रिलोक्य महिते भव्य लोक हितंकारी विश्वलोक वशंकरि महाविद्ये महाभैरवे भैरव रूप धारिणी भीमे भीमरूप धारिनी सिद्धे सिद्ध रूप धारिणी महारौद्रे रौद्ररूप धारिणि प्रसिद्धे प्रसिद्ध सिद्ध विद्याधर यक्ष राक्षस गरुड गंधर्व किन्नर किं पुरुष दैत्यो रंगेद्रामर पूजिते ज्वाला माला करालित दिगंतराले महामहिष वाहिने त्रिशूल चक्र झष पाश कृपाण शर वरासन फल वर प्रदान (खड्ग कृपाण त्रिशूल शक्ति चक्र पाश शरासन शंख) विराजमाने षोडशार्द्धभुजे (खेटक कृपाण हस्ते) देवी ज्वालामालिनी ऐहि ऐहि ॐ ह्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः हाः देव ग्रहाना आकर्षय आकर्षय नाग ग्रहानाकर्षय यक्ष यक्ष ग्रहानाकर्षय ग्रहानाकर्षय गांधर्व ग्रहानाकर्षय ग्रहानाकर्षय ब्रह्मराक्षस ग्रहानाकर्षय ग्रहनाकर्षय भूत ग्रहानाकर्षय ग्रहानाकर्षय व्यंतर ग्रहानाकर्षय ग्रहानाकर्षय सर्वदुष्ट ग्रहानाकर्षय ग्रहानाकर्षय शतकोटि देवताकर्षय सहस्त्रकोटि पिशाच राजानाकर्षय कट्ट कट्ट कंपय कंपय कंपावय कंपावय शीर्ष चालाय चालय नेत्रं चालय चालय बाहुं चालय चालय गात्रं चालय चालय पादौ चालय चालय सर्वांगं चालय लोलय लोलय धनु धुनु कंपय कंपय कंपावय कंपावय शीघ्रमवतर शीघ्रमवतर गृहण गृहण ग्राह्य ग्राह्य आवेश्य आवेश्य ह्रूं संवौषट् ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः हाः सर्वदुष्ट ग्रहाना स्तंभय स्तंभय ठ ठ फट् फट् घे घे ॐ र्म्ल्वर्यूं ज्वालामालिनी देवी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रूं ज्वल ज्वल र र र र र रां रां प्रज्वल प्रज्वल धग धग

धूं धूं घूमांध कारणी ज्वलन शिखे प्रलय धगद्धगित वदने देवग्रहान दह दह नाग ग्रहान दह दह सर्व दुष्ट ग्रहान दह दह यक्ष ग्रहान दह दह गंधर्व ग्रहान दह दह, ब्रह्म राक्षस ग्रहान दह दह भूत ग्रहान् दह दह, शत कोटि देवतां दह दह सहश्र कोटि पिशाच राजान दह दह घे घे स्फोटय स्फोटय मारय मारय दहना क्षिप्रलयद्धगद्धचित मुखि ज्वालामालिनी ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः हाः सर्वदुष्ट ग्रहान हृदयं हूँ दह दह पच पच छिंद छिंद भिंद भिंद ह ह ह हाः फट् फट् घे घे।

ॐ भ्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः हाः सर्वदुष्ट ग्रहान् ताडय ताडय हूँ फट् घे घे।

ॐ म्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं द्रां द्रीं म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः हाः सर्वदुष्ट ग्रहान हुं फट् घे घे सर्वदुष्ट ग्रहाण वज्रमय शूच्यां अक्षिणी स्फोटय स्फोटय न दर्शय न दर्शय हूँ फट् घे घे।

ॐ रम्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ह्रां आं क्रों क्षीं यां यों यूं यों यः हाः सर्वदुष्ट ग्रहाण प्रेषय प्रेषय घे घे हूं जः जः जः।

ॐ घ्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं हां आं क्रों क्षीं घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः हा घं घं खं खं रवङ्गै रावण सद्विद्यया घातय स च्चन्द्रहास शस्त्रेण छेदय छेदय भेद भेदय यं यं ठं ठं हं हं फट् फट् घे घे।

ॐ झ्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं हां आं क्लीं क्षीं क्षं झ्रं झ्रीं झ्रौं झ्राः हा सर्वदुष्ट गृहाणं वज्र पाशेन बंध बंध फट् फट् घे घे।

ॐ ख्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं हां आं क्रों क्षीं ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रों ख्रः हाः सर्वदुष्ट ग्रहाणं गल भगं कुरु कुरु फट् फट् घे घे।

ॐ छ्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं आं क्रों क्षीं छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रौं छ्रः हाः सर्व दुष्ट ग्रहाणां मंत्राणि छिंद छिंद भिंद भिंद फट् फट् घे घे।

ॐ वम्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रा द्रीं हां आं क्रों क्षी व्रां व्रीं व्रूं व्रौं व्रः हाः सर्वदुष्ट ग्रहाण विद्युतपाषाणस्त्रेण ताडय ताडय भूम्यां पातय पातय हूँ फट् घे घे।

ॐ ट्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं हां आं क्रों क्षीं ट्रां ट्रीं ट्रौ ट्रः हा सर्वदुष्ट ग्रहाण समुद्रे मर्जय मर्जय हूँ फट् घे घे।

ॐ ड्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं हां आं क्रों क्षीं ड्रां ड्रीं ड्रूं ड्रौं ड्र हा सर्वडाकिनी स्तंभय सर्वशत्रून ग्रासय ग्रासय ख ख ख ख ख खादय खादय सर्व दैत्यान् विध्वंसय विध्वंसय दह दह पच पच पाचय पाचय धम धम धर धर पुरु पुरु खुरु खुरु घुरु घुरु सर्वोपद्रव महाभयं विनाशय विनाशय झम झम हम हम धम धम फर फर फर खर खर रवङ्कै रावण विद्या घातय घातय पातय पातय चंद्रहास शस्त्रेण छेदय छेदय भेदय भेदय झं झं छं छं हं हं खं खं छिंद छिंद भिंद भिंद फट् फट् घे घे हां आं क्रों क्षीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ज्वालामालिन्याज्ञापयति स्वाहा।

अयं पठित सं सिद्ध श्री ज्वालिन्यधि देवता।
माला मंत्रः प्रजापाद्यैर्ग्रह रोग विषादि हृतः।।१६।।

यह श्री ज्वालामालिनी देवी का माला मंत्र केवल पढ़ने से ही सिद्ध होता है। इसका जप इत्यादि करने से ग्रह रोग और विष आदि नष्ट हो जाते हैं।

-⌘-

श्री कुष्मांडिनी देवी साधना मंत्र

मंत्रोद्धार

मंत्र— ॐ हूं ह्रौं हैं ॐ हैं ह्रौं स्वाहा ॐ ह्रीं क्ष्मं ठः नमः स्फ्रां आम्र कुष्माडिनी नमः।

सुयोज्यो मंत्रा विभौ यक्षाः मूल विद्या मिया मुक्तं।
ब्रह्मचारी नरोजपेत युद्वास्नान विशुद्धः सननित्यब्रह्मचार्यपि।।१।।

इत्यादि स्फ्रों आम्र कुष्मांडिनी सहित पांच उपचारों का मंत्र है। यक्षिणी के इनं दोनों स्तोत्रों को भली प्रकार योग्य स्थल पर लगाना चाहिए।

स्नान से शुद्ध होकर जपे मूलमंत्र को ब्रह्मचारी पुरुष जपे।

जपेन्मंत्रं मुं मंत्री लक्षं यक्ष्या पुरः स्थितः।
अशोके फलके तस्य लिखिताया पुरोथवा।।२।।

मंत्री यक्षिणी की मूर्ति को निम्नलिखित लक्षणों से युक्त अशोक वृक्ष की तख्ती पर या पत्र पर लिखकर और उसके सामने बैठकर एक लाख जप करें।

स्नान मंत्र

ॐ नमो आम्रकुष्मांडी सर्वपाप नाशके स्वाहा।

स्नान करावे।

गंध मंत्र

ॐ नमो भगवती आम्रकुष्मांडी सुगंध महाभगवती महासुगंधिनी स्वाहा।

गंध लगावे।

पुष्प मंत्र

ॐ नमो भगवती आम्रकुष्मांडी कुसुमे भगवती महाकुसुम स्वाहा।

पुष्प चढ़ावें।

आरती मंत्र

ॐ नमो भगवती आम्र कुष्मांडी महाज्वल महादीप्ते प्रयच्छतुनः स्वाहा।

दीप से आरती करें।

अर्घ्यं मंत्र

ॐ नमो भगवती आम्रकुष्मांडी महादेवी सर्वभूत वशंकरि महादेवी सर्वभूतानां वलिं प्रयच्छतु स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ावे।

चोटि रक्षा मंत्र

ॐ नमो भगवते अरिष्ट नेमि भट्टारकाय तीर्थनाथाय त्रैलोक्य प्रकंपनाय ह्रीं शिखां रक्षिकाय हूँ फट् स्वाहा।

चोटि को स्पर्श करें।

रक्षा मंत्र

ॐ नमो भगवते अरिष्ट नेमि भट्टारकाय तीर्थनाथाय त्रैलोक्य पूजनाय द्रावय द्रावय वज्रे वज्रे कवचाय हन हन दह दह कवचाय हूँ फट् स्वाहा।

अस्त्र रक्षा मंत्र

ॐ नमो भगवते अरिष्ट नेमि भट्टारकाय सर्व तीर्थ कराय सर्व दुष्टग्रह छेदनाय सर्वग्रहान हन हन दह दह हूँ फट् स्वाहा।

हृदय रक्षा मंत्र

ॐ नमो भगवती आम्रकुष्मांडी हृदयं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। हृदयं।

शिर रक्षा मंत्र

ॐ नमो भगवती आम्रकुष्मांडी शिरो रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

कवच रक्षा मंत्र

ॐ नमो भगवती आम्रकुष्मांडी हर हर ह्रीं वज्र कवचाय रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा। कवचं।

अस्त्र रक्षा मंत्र

ॐ नमो भगवती आम्रकुष्मांडी सर्व दुष्ट ग्रह निग्राहनिति तय खट्कां हूँ फट् स्वाहा। अस्त्रं।

ॐ नमो भगवती आम्र कुष्मांडी ॐ ऊर्ज्यंत गिरि शिखर निवासिनी सर्वांग सुंदरी वामरूपधारिणी पूर्वद्वारं बंधामि अग्निद्वारं बंधामि वायव्य द्वारं बंधामि उत्तर द्वारं बंधामि ईशान द्वारं बंधामि उध र्वद्वारं बंधामि अधोद्वारं बंधामि शिरं द्वारं बंधामि कुक्षि बंधामि सर्वप्रदेशं बंधामि आत्म रक्षे भूत रक्षे पिशाच रक्षे चोर रक्षे सर्व रक्षे काम रक्षे स्वाहा।

वज्र प्रकार अग्निप्रकारः प्राकारं भूमि बंध आकाश बंध दिगबंध चोर बंध आत्म रक्षा सर्व रक्षानाम विद्या।

इस प्रकार आम्र कुष्मांडी देवी का पूजन करके अंग न्यास करने में प्रत्येक अंग के नाम के साथ अंग को छूना चाहिए।

कवच में मंत्र को बोलकर हाथों को अस्त्र के आकार का बनावे हृदय बोलकर हृदय को छुए शिखा को छुए चोटी को छुए कवच का आकार बनावे आदि।

मंत्र बोलकर रक्षा के लिए दिशाओं को बांधकर अपने चारों तरफ वज्रमय कोट का ध्यान करे।

ॐ नमो भगवती आम्र कुष्मांडी अंबा अंबोल अंबिके स्वाहा।

आह्वानन मंत्र

ॐ नमो भगवति सर्व पाप भक्षके स्वाहा।

विसर्जन मंत्र

ॐ नमो भगवति आम्रकुष्मांडी विसर्जनाहि स्वाहा।

सर्ववश्य मंत्र

ॐ नमो भगवति आम्रकुष्मांडी महायक्षिणी ईश्वरी सर्वजन मनोहरी सर्वमुख रंजिनी सर्वराजवंश करि वशमानय वशमानय स्वाहा।

आकर्षण मंत्र

ॐ नमो भगवति आम्रकुष्मांडी ईश्वरी सर्व स्त्र्याकर्षणी हूँ फट् स्वाहा।

मुख वश्याकर्षण मंत्र

ॐ नमो भगवति आम्रकुष्मांडी सर्वमुख रंजिनी सर्व मुख स्तंभिनी हूँ फट् स्वाहा।

सर्व निर्विष मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवति अनंत वासुकि तक्षक कर्कोट पद्म महापद्म शंखपाल कुलिक अष्टो महा नागराज कामनी अनंत काले किलि स्वाहा वासुकि काले किलि स्वाहा तक्षक काले किलि स्वाहा कर्कोटक काले किलि स्वाहा पद्म काले किलि स्वाहा महापद्म काले किलि स्वाहा शंखपाल काले किलि स्वाहा कुलिक काले किलि स्वाहा क्षिप ॐ स्वाहा जयाय स्वाहा विजया स्वाहा।

अथोर्द्ध त्रिविधि प्रवक्ष्यामि पूर्व मे लक्षंजपेत् पश्चात त्रि संध्यवा विशंतिवारं जपेत अपरिमितं कुर्यात्।

आचाम्लशनः एक भुक्तोवा पक्षीतप फलं भवति।

इस मंत्र को प्रातः दोपहर और सायंकाल के समय बीस–बीस बार अपरिमित दिनों तक जपे उस समय केवल पीने योग्य द्रव्यों का ही भोजन करता रहे। इस प्रकार के भोजन को दिन में एक बार करने से पन्द्रह दिन के तप का फल होता है।

श्री कलिकुण्ड यंत्र मंत्र सिद्धि विधान

कलिकुण्ड नमस्कृत्य पार्श्वनाथाभि वाचकं।
कलिकुण्ड प्रभेदानं वक्ष्ये साराधन क्रमं।।१।।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी के वाचक कलिकुण्ड को नमस्कार करके कलिकुण्ड के भेदों को आराधना विधि सहित कहूँगा।

हूं कार ब्रह्म रुद्धं स्वर परि कलितं वज्र रेखाष्टभिन्नं।
वज्रस्याग्रांतराले प्रणवमनुप मानानाहतं सश्रणिंच तद्विदंते।।२।।
वार्णातद्यान संपिंडान ह भ म र घ झ स खान वेष्टये।
वज्राणां यंत्र मेतत्परकृत पर विद्या विनाशे प्रयुक्तं।।३।।

ब्रह्म (ॐ) से घिरे हुए हुंकार को स्वरों से घेर कर उसके चारों तरफ आठ वज्र रेखाओं से बँधा हुआ हो और प्रत्येक अंतराल में अनुपम (ॐ) बीज अनाहत् (ॐ ह्रीं) तथा ह भ म र घ झ स ख पिंडों से युक्त हो इस वज्रों के यंत्र का प्रयोग दूसरों की विद्या को नष्ट करने के लिए किया जाता है।

ॐ ह्रीं श्रीं जैन बीजं तदुपरि कलिकुण्डेति दंडाधिपायं स्क्रां
स्क्रीं स्क्रूं स्क्रें स्क्रः।

इति चतुरतोपात्मविद्यां च रक्ष रक्षेत्यन्यस्य विद्यां स्फूरतिमनुपमं
छिंद भिंद द्वयांते हुं फट् स्वाहेति
मंत्रं जपतु द्रढः मना अन्य विद्या विनाशे।

ॐ ह्रीं श्रीं जैन बीज (र्हं) लिखकर उसके ऊपर कलिकुंड स्वामिन अतुल बल वीर्य पराक्रम दण्डाधिपति स्क्रां स्क्रीं स्क्रूं स्क्रें स्क्रः आत्म विद्यां रक्ष रक्ष पर विद्यां छिंद भिंद भिंद हूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र को दूसरे की विद्या के नाश के लिए दृढ़ मना होकर जपना चाहिए।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं र्हं कलिकुंडदंड स्वामिन् अतुल बल वीर्य पराक्रम स्क्रां स्क्रीः स्क्रें स्क्रूं देवदत्तस्य सर्वकार्य सिद्धिं कुरु कुरु आत्म विद्यां रक्ष रक्ष पर विद्यां छिंद छिंद भिंद भिंद हूँ फट् स्वाहा।

पर विद्या छेदन मंत्र

एते पिंडा समर्थाः क्ष ह भ म घ य र झोन युक्ताः, प्रकर्तुमर्त्यानां सर्वदाहज्वर भर हरणं सर्व पीडा विनाशं यंत्र श्री खंडालिप्तेलिखत सु विशदे कांश्य पात्रे त्रिमुष्टि प्रोन्नत्पादर्म यष्टा विविध गुणयुतो मंत्रवादी समर्थः।

उस पर विद्या छेदन मंत्र से उन पिंडों के स्थान म ह भ म य र घ और झ पिंडो को लिख कर यंत्र बनाने से मनुष्यों के सब प्रकार के दाह ज्वरों का बोझ हल्का होकर सब पीडायें नष्ट हो, नहीं तो इस यंत्र को चंदन से तीन मुट्ठी चूर्ण काँसी के बर्तन में डालकर लकड़ी से अनेक प्रकार के गुणों से मंत्री को लिखना चाहिए।

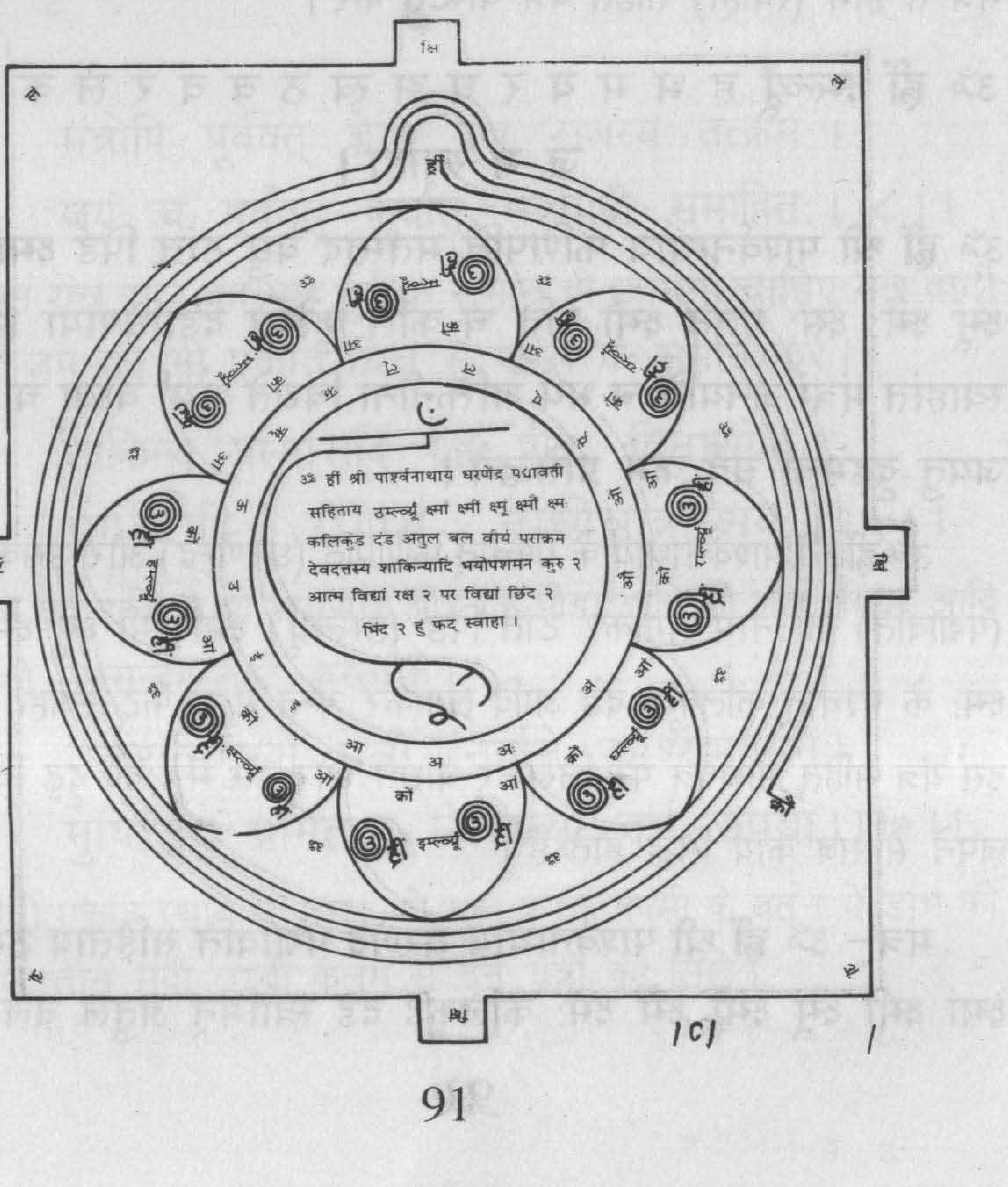
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं च बीजं तदुपरि कलिकुंडेति दंडाधिपं च दा हो पेतोग्रयैत्य ज्वर तर हरणं सर्व पीडा विनाशं कुर्यादात्मान्य विद्यानिवहमनुदिनं रक्ष छिंद द्वयंति।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बीज (र्हं:) कलिकुंड दंड स्वामिनः।

अतुल बल वीर्य पराक्रम के पश्चात् पंडित का नाम लिखकर दाह ज्वाराद्य उपशांति कुरु कुरु लगावे फिर आत्म विद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां छिंद छिंद भिंद भिंद लिखकर।

श्रीं ह्रीं ऐं उच्चाटन बीज हूँ फट् और होम स्वाहा लगावे इस मंत्र को यंत्र में लगाकर जप करने से अत्यंत तीव ज्वर से पीड़ित पुरुष को भी सब पीड़ा दूर हो जाती है।

मंत्र–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं र्हं कलिकुंड दंड स्वामिन्नतुल बल वीर्य



पराक्रम देवदत्तस्य दाह ज्वराद्युपशांतिं कुरु कुरु आत्म विद्यां रक्ष रक्ष पर विद्यां छिंद छिंद भिंद भिंद श्रीं ह्रीं ऐं हूँ फट् स्वाहा।

सर्व पिंडैः प्रसिद्धैः क्ष ह भ म व य र घै।
र्जातं कांतैश्च टांतै र्लांतै र्विदुर्द्ध रेफैः परिमल।।४।।
वर यूंकार समर्थैः शाकिन्यो यांति नाशं।
पर लक सहजायैग्व संवेष्टयेत्तान्।।५।।

ब्रह्माण्यद्यैश्च वेष्टया प्रमित भुवनपाद्यै स्तुतैश्चात होमः।।

उस पूर्वोक्त पर विद्या छेदन यंत्र को क्ष ह भ म य व र घ जांत (झ) कांत (ख) टांत (ठ) और लांत (व) अक्षरों को मलवरम् (म्ल्व्र्यूं) सहित पिंडो तथा व र ल क स ह ज और च बीजों से उनकी आदि में ॐ ह्रीं और मंत्र से होम (स्वाहा) सहित यंत्र वेष्टित करें।

ॐ ह्रीं क्ष्म्ल्व्र्यूं ह भ म य र घ झ ख ठ व वं रं लं कं सं हं जं मं स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय फणिपति मंतस्तद वधु टांत पिंडं क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मैं: क्ष्मः एतत क्ष्मौ इति च कलि कुंडेति दंडाधिपायां हूँ फट् स्वाहांत मंत्रां जनयति च भयं शक्तिनीनां विद्यते भूर्या वध्वा च भव्यो जयतु दृढ़मना सर्व कर्म प्रसिद्धयै।

ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय के पश्चात् फणिपति (धरणेन्द्र) और उसकी स्त्री (पद्मावति) का नाम लगाकर टांत पिंडं (ठम्ल्व्र्यूं) क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौ क्ष्मं क्ष्मः के पश्चात् कलिकुंड दंड आदि लगाकर अन्त में हुं फट स्वाहा लगावे इस यंत्र सहित भोजपत्र पर लिखकर बाँधने और इस मंत्र को दृढ़ चित्त से जपने से सब कार्य सिद्ध होते हैं।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय धरणेद्र पद्मावति सहिताय ठम्ल्वर्य्रूं क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मैं क्ष्मः कलिकुंड दंड स्वामिन् अतुल बल वीर्य

पराक्रम देवदत्तस्य शाकिन्यादि भयो मनं कुरु कुरु आत्मविद्यां रक्ष -रक्ष परविद्यां छिंद छिंद भिंद भिंद हूं फट् स्वाहा।

इति शाकिन्यादि भयोपशांति कृत यंत्रोद्धार:।

यंत्र त्रस्य वज्राग्रे विलिखेत् पूर्ववत् क्रमात्।
ह्रीं कारं शिरसा वेष्टयं क्रों कारेण निरोधयेत्।।६।।

उस पर विद्या छेदन यंत्र के वज्रों के आगे क्रम से ह्रीं कार से तीन बार वेष्टित करके क्रों से निरोध करें।

पृथ्वी मंडल मध्यस्थं कुर्याद् यंत्रेशमुत्तमं।
घ कलिकुंड समाख्यातं रंध्र संख्या समन्नुतं।।७।।

फिर इस रंध्र (आठ) संख्या युक्त कलिकुंड नाम के मंत्र को उत्तम यंत्र राज को पृथ्वीमंडल के बीच में करे अर्थात् इसके चारों तरफ पृथ्वी मंडल बनावे।

मंत्रोपि पूर्ववत् ज्ञेयो यंत्र राजस्य तत्क्रम:।
जयं च पूर्ववत् कुर्यात् मंत्रवादी समाहित:।।८।।

इस यंत्र राज का मंत्र पूर्व के समान ही जानना चाहिए मंत्र वादी इसके जप को भी एकांत चित्त से पहले के समान करें।

शाकिन्य पस्मारादि ग्रह पीडां विनाशयेत्।
भगंदरादि रोगाश्च नाश्येन्नात्रसंशय:।।९।।

यह यंत्र शकिनी भी अपस्मार और ग्रह पीड़ा आदि को और भंगदर आदि रोगो को निस्सन्देह नष्ट करता है।

उत्तराभिमुखो मंत्री निर्जने कांश्यभाजने।
मुष्टित्रय प्रमितया लेखिन्या दर्भ रुपया।।१०।।

मंत्री एकांत स्थान में उत्तर को मुख करके कांसी के बर्तन में डाभ की बनी हुई तीन मुट्टी लम्बी कलम से इन यंत्रों को लिखे।

श्री पार्श्वनाथ पुरुतः शुभ ध्यान परायणः।
सुगंधैः कुसुमैः श्वेत शतमष्टोत्तर जपेत्।।११।।

फिर उत्तम ध्यान में लगा हुआ श्री पार्श्वनाथ स्वामी के सामने सुगंधित श्वेत पुष्पों से एक सौ आठ बार जपे।

अर्चयित्वा ततो यंत्रं पायचेत् साध्य मंभसा।
इत्येवं कारयेन्मंत्री फलं यावद्दिने दिने दिने।।१२।।

फिर मंत्री यंत्र का पूजन करके उस यंत्र को जल से धोकर साध्य को पिला दे इस प्रकार करते हुए मंत्री को प्रतिदिन अधिकाधिक फल होता है।

परविद्या प्रणश्यंति फल निष्पादन क्षमा।
शाकिनी भूता वेताल पिशाच ब्रह्म राक्षसाः।।१३।।

शाकिनी भूत वेताल पिशाच और ब्रह्म राक्षस के फल उत्पन्न करने वाली दूसरे की विद्या नष्ट हो जाती है।

अपमृत्युच्युत साध्यं न स्पृशति कदाचनः।
शूल विसूचि का जीर्ण लूति विस्फोट कादयः।।१४।।
अभिचार कृता रोगा विष स्थावर जंगमाः।
इत्ये वमादयो रोगाः प्रशमयंति तत् क्षणात्।।१५।।

इससे उस साध्य की दर्द, हैजा, पुरानी खाज, फोड़े आदि से होने वाली की किसी प्रकार की अपमृत्यु नहीं होती है।

अभिचार से होने वाला रोग स्थावर और जंगम विष तथा अन्य प्रकार के रोग भी उसी क्षण शांत हो जाते हैं।

गर्भिण्यपि सुखेनैव प्रसूतै स्तैस्तनु-
मव्यथा मृतवत्सापि जीवं तं वंध्यासु लभते सुतं।।१६।।

गर्भिणी के बड़े सुख से बच्चा होता है बच्चा मर जाने वाली के

पुत्र चिरायु हो जाते है। और बंध्या को भी पुत्र की प्राप्ति होती है।

सिद्धयंति कार्य सर्वाश्च स्वयंमेव मृगादशाः।
न केवलं राज वश्यं जन वश्यं भवत्यदं।।१७।।

मृगनयनी स्त्रियों के सब कार्य स्वयं सिद्ध हो जाते हैं। इससे केवल राजा वशीकरण ही नहीं होता बल्कि सभी लोग वश में हो जाते हैं।

ज्वर मुष्णं शीतले च शीतले वारिणार्पित।
उष्णोदके स्थितं यंत्रं ज्वरं नाशय व्यद्रुतं।।१८।।

ठंडे जल में यंत्र को डालने से गरम बुखार और गरम जल में डालकर देने से शीत ज्वर उसी क्षण नष्ट हो जाते हैं।

–❖–

यंत्र अभिषेक विधि

स्थापना

इदानाम अभिषेक विधि समभिधीयते।
संसाध्याखिल कल्याण मालो द्वेलोयः श्रियम्।।
कुलिकुंड मखण्डात्मा भीष्ट मारोपयाम्यहम्।
अनेनाह्वानन स्थापनं सन्निधीकर्णनि कुर्यात्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड दंड स्वामिन् अतुल बल वीर्य पराक्रम अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड दंड स्वामिन् अतुल बल वीर्य पराक्रम अत्र तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड दंड स्वामिन् अतुल बल वीर्य पराक्रम अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् संवौषट् हूं फट् स्वाहा।

अब अभिषेक विधि का वर्णन किया जाता है सब प्रकार से कल्याणकारी कार्यों को करने वाले लक्ष्मीवान अखंड रूप कलिकुंड यंत्र का साधन करके अब इच्छा किये हुए कार्य को आरंभ किया जाता है। इसे पढ़कर आह्वानन आदि करें।

इसके पश्चात् एक श्लोक से कलश की स्थापना दूसरे कलश से स्नान करावे तथा तीसरे से आठों प्रकार का द्रव्य चढ़ाकर पूजन करें फिर एक–एक श्लोक बोलकर यंत्र को क्रम से जल, केले द्रव्यादि के रस, घी, दूध, दही, सुगंधित जल से स्नान करावें।

सत्पुरुष दान्माप्रविराजितेन घटेन पूणोनिसपल्लवेन।
समंगलार्थ कलिकुंड देव पदाग्रभूमिं समलङ्करोमि।।१।।

इति कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

जल कलश अभिषेक

शुद्धेन शुद्ध सरोवर ह्रद पल्वल कूप वापी गुङ्ग, तटाकादि समाहृतेन।
शीतेन तोयेन सुगधिना हं भक्तयाभिविषञ्चे कलिकुण्ड यंत्रम्।।२।।

मंत्र– ॐ ह्रीं---- यंत्राभिषेकं करोमि स्वाहा।

नीरै सुगंधे कलमाक्षतौद्यैः पुष्पैर्हवि र्भिर्वर दीप धूपैः।
भास्वत फलौधैः कलिकुण्ड यंत्रै सम्पूजयामी भीष्ट फलायक्तया।।३।।

मंत्र– ॐ ह्रीं कलिकुंड यंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्राक्षा एवं आम रसाभिषेक

ये चोच मोचादि स दिक्षुजा ये द्राक्षा रसालादि फलोद्भवाये।
ऐभि रसैः स्वैरमृतोपमानै र्भक्त्यामि षिञ्चे कलिकुंड यंत्रम्।।४।।

मंत्र–ॐ ह्रीं कलिकुंड यंत्रेभ्यो: रसाभिषेकं करोमि स्वाहा।

नीरै सुगंधे कलमाक्षतौद्यै: पुष्पेर्हविर्भिर्वर दीप धूपै:।
भास्वत फलौधै: कलिकुण्ड यंत्रै सम्पूजयामी भीष्ट फलायक्तया।।

मंत्र ॐ ह्रीं कलिकुंड यंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत स्नपनम्

गोरोचनापिङ्गिल पावना युरारोग्य पुष्टयादि कृतानराणाम्।
द्रा विष्टया सघृत धारयाहं भक्त्यामि षिञ्चे कलिकुंड यंत्रम।।५।।

मंत्र– ॐ ह्रीं कलिकुंड यंत्रेभ्यो: घृतरसेन करोमि स्वाहा।

नीरै सुगंधे कलमाक्षतौद्यै: पुष्पेर्हविर्भिर्वर दीप धूपै:।
भास्वत फलौधै: कलिकुण्ड यंत्रै सम्पूजयामी भीष्ट फलायक्तया।।
मंत्र– ॐ ह्रीं कलिकुंड यंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्ध स्नपनम्

कुन्दाव दातोत्पल सिन्धवार चंद्राशु मालाद्रव माहसद्भि:।
गव्यै पयोभि: किमु माहिषैश्च भक्तयामि षिञ्चेकलिकुंड यंत्रम।।६।।

मंत्र– ॐ ह्रीं कलिकुंड यंत्रेभ्यो: दुग्ध स्नपनम् करोमि स्वाहा।

नीरै सुगंधे कलमाक्षतौद्यै: पुष्पेर्हविर्भिर्वर दीप धूपै:।
भास्वत फलौधै: कलिकुण्ड यंत्रै सम्पूजयामी भीष्ट फलायक्तया।।

मंत्र– ॐ ह्रीं कलिकुंड यंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दधि स्नपनम

ग्राहिष्ठगंधेन कुठार लोढय काठिन्य भाजाकर युग्मकेनभि।
स्निग्धेन सच्चारुतरेणम् दग्धाभक्त्याभि षिञ्चे कलिकुण्ड यंत्रम।।७।।

मंत्र– ॐ ह्रीं कलिकुंड यंत्रेभ्यो: दधि स्नपनम् करोमि स्वाहा।

नीरै सुगंधे कलमाक्षतौद्यैः पुष्पेर्हविर्भिर्वर दीप धूपैः।
भास्वत फलौधैः कलिकुण्ड यंत्रै सम्पूजयामी भीष्ट फलायक्तया।।

मंत्र– ॐ ह्रीं कलिकुंड यंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार कलश स्नपनम्

नीरैमीभिन्निर्वियदाप गंद्यांनीतै र्हिमामोदि मृतालि वर्गै।
आपूरितैः कोण घटेश्चुर्भिभक्तया भिषिञ्चे कलिकुंडयत्रम्।।८।।

मंत्र– ॐ ह्रीं कलिकुंड यंत्रेभ्यो: चतुः कलश स्नपनम् करोमि स्वाहा।

नीरै सुगंधे कलमाक्षतौद्यैः पुष्पेर्हविर्भिर्वर दीप धूपैः।
भास्वत फलौधैः कलिकुण्ड यंत्रै सम्पूजयामी भीष्ट फलायक्तया।।१०।।

मंत्र– ॐ ह्रीं कलिकुंड यंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन लेपन, पुष्पक्षेपण एवं आरती

भक्त्याभि षिञ्चान्ति भजंति भक्तया ये विघ्रयातैः कलिकुंड यत्रम्।
सुताहितज्ञामर कर्तिनस्ते यान्त्यष्ट कर्म क्षयरूप मुक्तिम्।।६।।

मंत्र– ॐ ह्रीं कलिकुंड यंत्रेभ्यो: दीपार्चन करोमि स्वाहा।

नीरै सुगंधे कलमाक्षतौद्यैः पुष्पेर्हविर्भिर्वर दीप धूपैः।
भास्वत फलौधैः कलिकुण्ड यंत्रै सम्पूजयामी भीष्ट फलायत्तया।।

मंत्र- ॐ ह्रीं कलिकुंड यंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-■-

मंत्रोद्धार

मंत्र -ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं कलिकुंड दंड स्वामिन्नतुल बल वीर्य पराक्रम स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौं, स्फ्रैं स्फ्रः आत्मविद्यां रक्ष रक्ष पर विद्यां छिंद छिंद भिंद भिंद हूँ फट् स्वाहा।

स्थापना

सं साध्याखिल कल्याण मालो द्रेलोदयः श्रियम्।
कलिकुंड मखण्डात्माभीष्ट मारोपयाम्यहं।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड दंड स्वामिन्नतुल बल वीर्य पराक्रम अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड दंड स्वामिन्नतुल बल वीर्य पराक्रम अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड दंड स्वामिन्नतुल बल वीर्य पराक्रम अत्र मम सन्निहितो भव भव संवौषट् हूँ फट् स्वाहा।

यंचत् कांचन रत्न रश्मि रुचिर भृंगार नालोच्छल त्कपूरो।
लवणगंध द्यावदलिभिः सतीर्थ वार्भिर्वरं तेज स्तत्व।।
रमा- र्हमादि भिरंहंधोरोप सर्गपहं चायेश्री कलिकुंड।
पार्श्व मसमं यामिष्टं सं सिद्धये।।१।।

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुड पार्श्व प्रभवे जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री खंड द्रव कुकुमामल मिलत्कर्पूर पूरादिभि।
सद्गांधैर्मधु भृन्मुखोच्छ मधुरा रावैर्मनोहारिभिः।।
तेजस्तत्व रामा र्हं मादि मिरिहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व मसमं चामष्टि सं सिद्धये।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे गंध निर्वपामीति स्वाहा।

प्राद्यच्छाख चारचंद्र किरण श्री स्पर्द्धि गंधाक्षतैः।
शालीयै रमलै विशाल कमलैः क्रोडो घृतैरक्षतै।।
तेजस्तत्व रामा र्हं मादि मिरिहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व मसमं चामष्टि सं सिद्धये।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प चंपक पारिजात कनकां भोजे स्मिलन्याद्यवै।
मंदारामल मल्लिका प्रविक सत्पुन्नाग पुष्पैरपि।।
तेजस्तत्व रामा र्हं मादि मिरिहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व मसमं चामष्टि सं सिद्धये।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

स्फ्रूंर्ज त्फार सुधा विशुद्ध मधुरान्नाज्येतु निर्थासजै नैंवेद्यैः।
सु सुवर्ण पात्र भरणाभ्यासै र्गुणज्ञोपमैः।।
तेजस्तत्व रामा र्हं मादि मिरिहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व मसमं चामष्टि सं सिद्धये।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे चरुं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वांत ध्वंस समुद्धतो द्धत शिखा व्याप्तांरालरेलं दीपैर्नव्यं।
दिवाकर भ्रमकरैः र्माणिक्य मामासुरै।।
तेजस्तत्व रामा–र्हंमादि–मिरिहं–घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व मसमं चामष्टि सं सिद्धये।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कपूरां गुरुदेवदारु दहनोद्य दिव्य धूपैर्मिल।
द्भृगांराव वशी कृतामर वर स्त्रैणेर्मनो हरिभिः।।
तेजस्तत्व रामा–र्हंमादि–मिरिहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व मसमं चामष्टि सं सिद्धये।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

खर्जूरावर (कम्राम्रमल) मातुलिंग कदली सन्नाक्ति किरोद्रवैः।
स्निग्ध स्वादु रसातिरेक विलसत्प्राकैः फलै निस्तुलैः।।
तेजस्तत्व रामा र्हं मादि मिरिहं घोरोपसर्गापहं।
चाये श्री कलिकुंड पार्श्व मसमं चामष्टि सं सिद्धये।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे फलं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याराध्यां सुगंधाक्षत कुसुम निवेद्योल्लस द्दीप धूप प्रेषत्।
सन्नालिकेरामल फल निकरौधैर्रन धैर्नार्घ्यं।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंड पार्श्व प्रभवे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पादौ दिव्यां सुगंधाक्षत कुसुमयुतं प्रोक्षिपाम्यंजलि।
श्री पार्श्व स्याखंड कीर्ते विकल कलिकुंडा कृतेरिष्ट पुष्टैः।।१०।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

निस्संकल्प विकल्पो धान दधातु जिनेशितुः।
कलिकुंडैक भागस्थं ह पिंडाराधकं भजेत्।।१।।

मंत्र– ॐ ह्रीं ह्म्ल्व्र्यूं ॐ ह्रीं ॐ आं क्रों ह्रीं हपिंडाधिष्टित कलिकुंड दंड-धीश्र्व अतुल बल वीर्य पराक्रम श्री मत्पार्श्व भगवतोऽर्हंतोंगपालाहोत्र पूर्वमवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः मम् सन्निहितो भव भव वषट्! चोरारी मारि शाकिनी प्रभृति धोरोपसर्गान पनया पनय ममा भिनमनशेषं पूरय पूरय इदमं अर्घ्य पाद्यं गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं स्वस्तिकमक्षतं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इवाह्वानादिकं कर्म क्रियते त्रय इच्छया।
तत्सर्वं पूर्णतामिति शांति कादिभिरो दरात्।।१।।
शुक्ल ध्यान घनोदारा खंड चित्पिंड मृद्धिभो।
कलिकुंडैक भागस्य भापिंडाराधकं भजे।।२।।

ॐ ह्रीं भ्म्ल्व्र्यूं ॐ ह्रीं ॐ आं क्रों ॐ ह्रीं भा पिडाधिष्टि तेत्यादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

उज्ज्वल श्वेत वर्ण घट द्वारा ध्यान करे अखंडित चित्त करके पिंड का अक्षर वैभव का दायक है।

मार मार्गेण निर्भ्वेद मीतभव्य विभितिदं।
कलिकुंडैक भागस्य म पिंडाराधकं भजेत्।।३।।

ॐ ह्रीं म्मल्वर्य्रूं ॐ ह्रीं ॐ आं क्रों ह्रीं म पिंडाधिष्टते अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

जो काम. मार्ग का भेदक है भव्य जीवों को अभय करने वाला म पिंड अक्षर का ध्यान करें।

ब्रह्माग्नि मासितानंत भव संभव मूरुह।
कलिकुंडैक भागस्थं र पिंडाराधक भजेत्।।४।।

ॐ ह्रीं रम्ल्व्र्यूं ॐ ह्रीं ॐ आं क्रों ह्रीं र पिंडाधिष्टतेत्यादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

घनाघनाय संद्यात धातित्वाद्य धन प्रभो।
कलिकुंडै क भागस्थ घ पिडाराघकं भजेत्।।५।।

ॐ ह्रीं ह्म्ल्व्र्यूं ॐ ह्रीं आं क्रों ह्रीं घ पिंडाघिष्टितेत्यादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

क्षरदक्षर पीयूष पूरा पूरात्म नोजसा।
कलिकुंडैक भागस्य झ पिंडाराधकं भजेत्।।६।।

ॐ ह्रीं झ्म्ल्व्र्यूं ॐ ह्रीं ॐ आं क्रों ह्रीं झ पिंडाधिष्टते अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दुष्टकर्माष्टि कोद्राम मातंग मद भेदिनः।
कलिकुंडैक भागस्थं स पिंडाराधक भजेत्।।७।।

ॐ ह्रीं स्म्ल्व्र्यूं ॐ ह्रीं ॐ आं क्रों ह्रीं स पिंडाधिष्टते त्यादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

श्री मचंडोग्र पार्श्वस्य खसौख्य विमुखस्यवै।
कलिकुंडैक भागस्थं ख पिंडाराधकं भजेत्।।८।।

ॐ ह्रीं ख्म्ल्व्र्यूं ॐ ह्रीं ॐ आं क्रों ह्रीं खपिंडाधिष्टते अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

जलगंधामल तंदुलपुष्पैः नैवेद्य दीप धूप फलैः।
कलिकुण्ड दंड मंडन पार्श्वशस्यावतारयामि अर्घ्यं।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलि कुण्ड दंड पार्श्व प्रभवे
अर्घ्यमवतारयामि स्वाहा।

मंत्रः- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलि कुण्डदंड स्वामिन्नतुल बल वीर्य पराक्रम आत्म रक्ष रक्ष पर विद्यां छिंद छिंद भिंद भिंद स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौं स्फ्रैं स्फ्रः ह्रूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र का १०८ बार जाप करना चाहिए।

जयमाला

प्रोद्यत्सन्मणि नाग नायक फटा टोयोल्ल सन्मंडपं।
सद्भक्त्या नमदिद्रं मौलि मणिभि र्भास्वत्पदाभोरूहं।।
प्रोन्मलिन्नत्तपा नील दालि पटली संकाश मुत्पादकं।
ध्याये श्री कलिकुंड दंड विलस चंडोग्र पार्श्व प्रभुः।।१।।
सुविद्ध विशुद्ध विवाहैद निधान विकाशित विश्व विवेक विधान।
पिंडवित काम जगज्जय चंडसदा सदयोदय जय कलिकुंड।।२।।
पयोधि पयोधर धीर निनाद निराकृत दुर्मत दुर्मद वाद।
असत्य पथैक पतत्पविदंड सदा सरयोदय जय कलिकुंड।।३।।
निराकुल निर्मल शलि निरीह निगस निरंजन जिन नरसिंह।
विपाटित दुष्ट मद द्विपगंडसदा सदयोदय जय कलिकुंड।।४।।
कषाय चतुष्टय काष्ट कुठार निरामय नित्य नरामर सार।
विदार्ण धनाधन विघ्नकरंड सदासद योदय जय कलिकुंड।।५।।
अनल्प विवल्प विहीन विकल्प विशल्प विसूल विसर्प विदर्प।
विरोग विभोग विखंड विमुंड सदा सदयो दय जय कलिकुंड।।६।।
फणीश नरेश महीश दिनेश सुमेश गणेश मुणीश।
विदर्क विकाशित शत दल तुंड सदा सदयोदय जय कलिकुंड।।७।।

विशोक विशंक विमुक्त कलंक विकाशित विश्व विदूरित पंक।
कला कुल केवल चिन्मय पिडं सदा सदयोदय जय कलिकुंड।।८।।
निकंदित मोह महीरूह कंद वरप्रद सत्यद सपदं मंदं।
त्रिदंड विखंडित माय विखंड सदा सदयोदय जय कलिकुंड।।६।।

ॐ ह्रीं कलिकुण्ड यंत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

कलिल मलन दक्षं योगि योग्योप लक्षं।
हृदय विकलि कलिकुंडो दंड पार्श्व।।१।।
प्रचंड शिव सुख श्रुम संपद्वास कल्ली वसतं।
प्रतिदिन मह मीडे वर्द्धमान रिद्धी सिद्धये।।२।।
निलविल जल मलयत्र तदुल कुसुमोरु परिमला ममलां।
कलिकुंडाय समज्ञ ऋद्धयैः ददानि कुसुमांजलिं भक्तया।।३।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

(इदानीं स्तोत्र द्वारेणकलिकुंडमभि धीयते)।
देवाधिदेवं जिन भावयातं देवाधिपैः चर्चित पाद पद्यं।।१।।
नत्वा जिनेन्द्रं शिव सौख्य सिद्धयैस्तोष्ये पवित्र कलिकुंड यंत्र।
पूजा प्रकुर्वंति नरा सुभक्तया यंत्रस्यये श्री कलिकुंड नाम तेषां।।२।।
नराणामिद्द सर्वविघ्नानस्यत्यवश्यं भुवि तत्प्रसादात्।।३।।
चित्ताबुजे ये स्व गुरुप्रदेशोध्यायति नित्यं कलिकुंड यंत्रं।
सिंहादयो दुष्ट भृगा स्तुलोके पीडां न कुर्वंतिनृणां चतेषा।।४।।
युक्तां स्तुवंति कलिकुंड यंत्रं सर्वे सदोषा पह युक्तमत्तं।
मोक्षानध श्री पर चारु सौख्य प्राप्ति स्तुते तेषां भवतीह सत्यं।।५।।

यंत्रस्य चिंता हृदयेस्ति यस्य सद्धर्मरक्ता व्रतशील युक्ताः।
बध्यापि सत्पुत्रवती भवेत्सालोके क्रमात् स्वर्ग सुखं प्रयांति।।६।।
स्मरंति यंत्रस्य विधानमेनं नराअहिं सादि गुणा प्रयुक्ता।
ज्वर ग्रहणादी रुजोत्र तेषां प्रयांतिनाशं कुलिकुंड यंत्रात।।७।।
सुरासुरैशैरपि सेव्यमानं समस्त दोषोज्झित बीजमालं।
यत्रं नराये कलिकुण्डमेतेयेतन्नित्यं भजंत्यत्र भयं न तेषां।।८।।

सर्पित्सर्पेश दर्पो स्फुट तरल तरोत्तर फूतकार वेला।
संवर्तोत्पत्ति वाताहत शठ कमठोद्भूत जीभूत जातान्।।६।।
खेलत्स्वर्गा पवर्गातिर्ज्जल जनित सल्लोल डिंडीर पिंडं।
व्याजात श्री पार्श्वरो ज्वल विजय यशोराज हंसोवताद्वः।।१०।।

इत्याशीर्वादः

ॐ मोमादि समाराध्य माराध्य राध्यतां ययुः।
चिवत्स्त्वमित्य र्हंमिह कलिकुंड श्रिये श्रिये।।१।।

कलिकुंड यंत्र कल्याण सुख मंगल का कर्ता है।

कलिकुंड चिंदानंद खंड पिंड नमोस्तुते।
पाखंड खंडनो वृतये कृत वृतये।।२।।

कलिकुंड अखंड पिंड को नमस्कार है यह पाखण्ड का खंडन करने वाला, सत्य स्वरूप प्रगट करने वाला है।

तत्वांतर्वर्तिने तत्वा तत्व बोधेद्ध सिद्धये।
तुभ्यमद्य चिदानंद सपदे संपदे नमः।।३।।

तत्व की पहली बात से तत्व ज्ञान की सिद्धि करती है। उद्योतकारी चिदानंद को नमस्कार हो जो संपत्ति लक्ष्मी करता है।

संसाध्या सिद्ध संसिद्धि सं साध्य सिद्धये।
श्री मते कलि कुंडाय नमोस्तेशुद्ध बुद्धये।।४।।

सुखकर साध्य है सिद्ध सुख सिद्ध देती है शोभायमान कलिकुंड को नमस्कार हो जो शुद्ध और बुद्ध है।

कलिकुंड सुधा कुंडे निमज्जन्मनि संत्वयि।
चितिपंडाखंड सौभाग्य महोन्जोन्नोप सर्यति।।५।।

अमृत कुंड से उपज्या है चमत्कारी अखंड सौभाग्य का कर्ता है महान उपसर्ग को नहीं होने देता है।

नरामराहीश्वर मूतयस्त्वयि मपि प्रसन्ने सुलमान दुर्लभा।
यत्वत्प्रसादादः भवतः सभोग्यपि प्रभोवियोगीश्वर भोग भोग्यपि।।६।।

आपके प्रसाद से सब भोज्य सामग्री मिलती है।

विघ्नविघ्नक विभूति भूषिणं त्वामुपति विनिवृतं भूषणं।
कानि कानि कलिकुंड दंडिनं वाधितानि न भजति भक्तिका।।७।।

विघ्न निर्विघ्न होय कवि की सीमा होती है अशोभनीय भी शोभा पाती है। कोने कोने में कलिकुंड का भक्त मनोवांछित फल पाता है।

पद्मावती पाणी पयोजपूजां प व्योजप्रजांध्रि पयोज युग्मं।
त्वां तोष्ट मीष्टे कलिकुंड दंड स्वामिन्क्यं मादृग लब्ध वोधाः ।।८।।

पद्मावती के हाथ से कमल लेकर पार्श्वनाथजी के चरण कमल की पूजन से मनोवांछित फल पाता है ज्ञान की भी प्राप्ति करता है।

तथापि मम चेतसि स्फुरित पद्म नंदिः।
प्रभोः पदांबुज युगी ततोमल मतिः।।९।।

पद्म नंदिजी का चित्त स्फुरायमान होता है प्रभु के चरण युगल की निर्मल बुद्धि से स्तुति से आपका स्त्रोत उत्पन्न होता है। जिससे लक्ष्मी की वृद्धि होय इससे सत्पुरुषों को निर्मल शुद्ध संपदा प्राप्त होती है।

देवाधिदेव भगवान कलिकुंड पार्श्वनाथ जी के चरण कमलों को पूजें नमस्कार करें। मुक्ति के सुख की सिद्धि के लिए पवित्र कलिकुंड मंत्र की स्तुति करता हूं जो नर भली भक्ति से पूजा करें तो सर्व विघ्न दूर होय।

युक्ति से स्तवे तो सर्वदोष हरे और उत्तम पद होय मोक्ष पावे पाप रहित श्रेष्ठ मनोहर सुख पावे। अगर इसकी प्रतीतिं सत्य मन में रखे।

यंत्र का स्मरण हृदय में रखें सत्य धर्म में लीन रहे शीलव्रत युक्त होय तो बंध्या के पुत्र होय लोक में अनुक्रम में स्वर्ग सुख पावे।

यंत्र का स्मरण करे समस्त दोष दूर करे या विधान करे जीवरक्षा गुणयुक्त हो तो ज्वर, संग्रहणी दूर होय असुर निश्चय सेवा करे समस्त दोष दूर करे। जो इस यंत्र को धारण करे निरंतर भजे तो भयभीत न हो।

सर्व अग्नि जल विष सर्वविष विघ्न दूर होय यंत्र के प्रसाद से मगर जिन चरण कमल को नित्य नमस्कार करे।

इति कलि कुंड कल्प समाप्त:

श्री पार्श्वनाथ कलिकुंड रक्षा यंत्र

उवसग्ग भिवह जिण चरणनि णमि सिरसासणाद भत्तीये।
कलिकुंड वक्ष्ये कम्म सहस्सा निवारेयि।।१।।

कम्मा सम सयल कयणं वा बारं क्रूर दिट्ठि उव सग्गे।
तंवारयति निग्धं कलिकुंड सुणीविदं कद्यं।।२।।

ररके वा पर विज्जे थंभनपर विद्ये मोहणे वसीयरणं।
तुठितंमरण मारण विद्या विदेश कम्ममियं।।३।।

मोदारवीय मझं णामं यं लिखं वसुदयं पदवे।
अंगुल वोय सुजुता वालण वीयंदले दले णियमा।।४।।

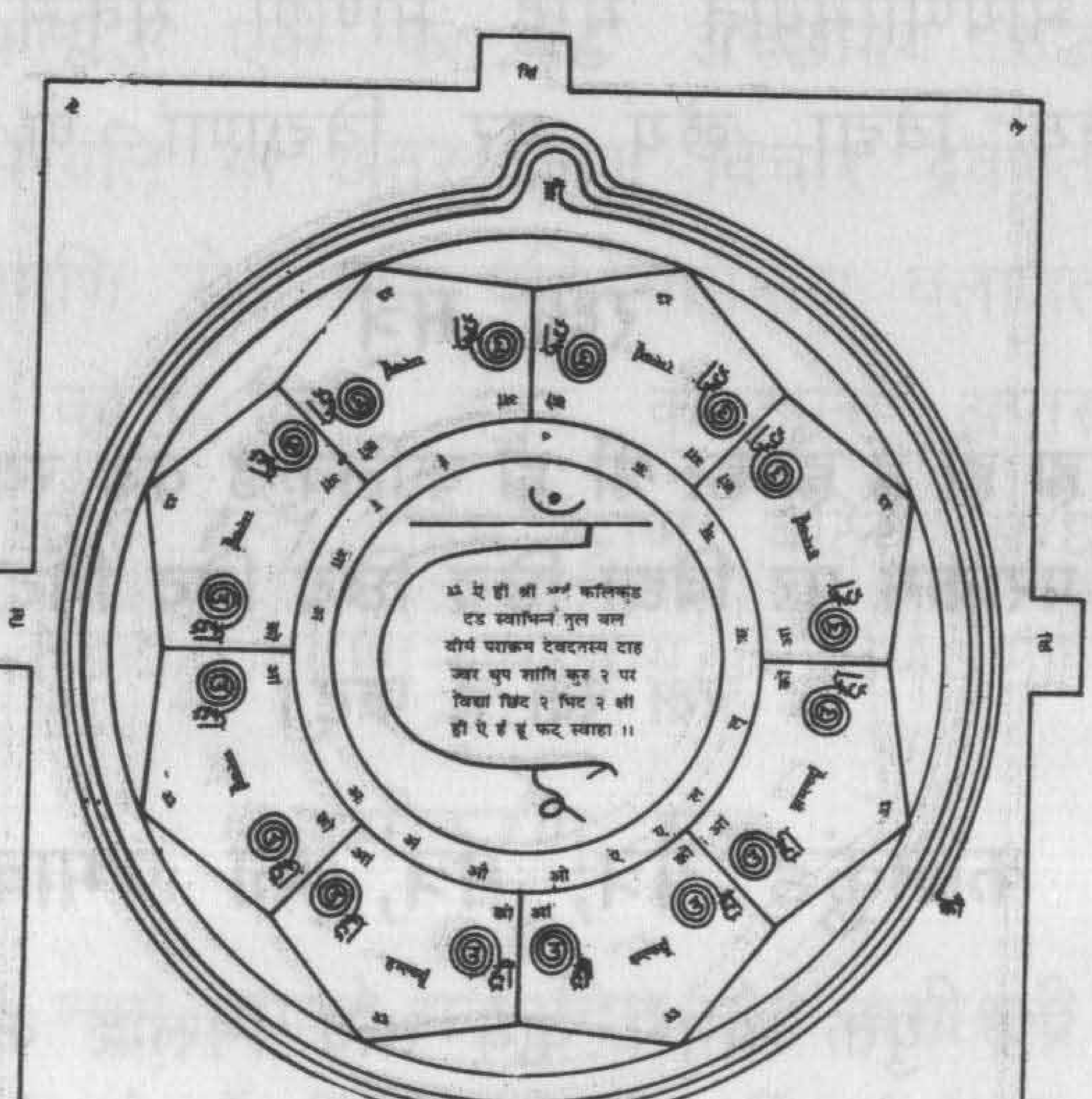
मूयं दलवसणो लिक्खं सोह जुग वाइणिरक्क माहयर्हृं।

कलिकुंड देवपूजा अट्ठसयं कुण हरोपम मुणोहिं।।५।।
कर कंठ वाहु देशे धारई दयरक्क सघणेणियमा।
सयल गह मूय शारणि रख्काअरणं महाघोरं।।६।।

रक्षा यंत्र

कर्म सकल नष्ट होय यह कलिकुंड पार्श्वनाथजी का प्रभाव है राक्षस कृत उपद्रव, पर शत्रुकृत उपद्रव, पर विद्या, मोहन, वशीकरण, स्तंभन, मारण, विद्वेषन कृत सब कर्म नष्ट होय भोजपत्र व वस्त्र पर लिखकर कंठ, बाहू में धारे तो तत्काल शाकिनी ग्रहभूत घोर उपसर्ग नष्ट करें।

सियवसण कंस लिख्कह अंगुल वीयाणीणाम वेठेद्यं।
आभिय करमंत वे ठई मुणिवर कलिकुंड तमंतं।।१।।
सिययं कय सर पूरक कलजु बत्तीस जोभणी सव्वं।
आमियकर मतं वेट्ठर आमियंत सत्तणह वलयं पाइयं।।२।।



इसेय वसूण गंध लेविज्ज रोगि देह पर णासई।
सव्व जराणं परविद्या णासणाइंसन्ति परं।।३।।

विद्याप्रदायि मंत्र

मंत्रः- ॐ अर्हन्मुख कमल वासिनी पापाद्यंक्षयं कारिणी श्रुत ज्ञान ज्वाला सहस्त्र प्रज्वलित सरस्वती अमुकस्य.... पापं हन् हन् दह दह क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीर वर धवले अमृत संभवे वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं इ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

अमृत मंत्रः

मंत्रः- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं ह्रीं कलिकुंड दंड स्वामिन सर्व रक्षाधिपतये देवदत्तस्य....... रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

मूलमंत्रोऽयं

कंसेसु भायणामियति मुट्ठि माणेण सकुस दब्भेण।
विर विय विद्या छेयं पर विद्याणां ण संदेहो।।

रक्षा मंत्र

मंत्रः-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं ह्रीं कलिकुंड दंड स्वामिन अतुल बल वीर्य पराक्रम पर विद्या छिंद छिंद भिंद भिंद आत्म विद्या रक्ष रक्ष हूँ फट्।

कलिकुंड यंत्र, मंत्र, का प्रभाव

हुंकार रेफ युक्त अनल वायु तत्व निरूद्ध कर फिर रेखा भिन्न–भिन्न लिखे यह वज्र यंत्र है इसको अष्ट गंध से डाभ से लिखे तो पर विद्या छेदन हो इसमें संदेह नहीं। छाया ऊपर की नष्ट करे,

शाकिनी भूत राक्षस यंत्र कृत उपद्रव नष्ट होते हैं। कार्य संपूर्ण होते हैं, अमृत मंत्र है। कलिकुंड दंडयुक्त आठ अतिशय सहित रिद्धी संपद्धा पाते हैं।

मोहनी मंत्र

मंत्रः- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लूं यूं स्त्रौं मदन मोहिनी कुरु कुरु त्रिभुवन वश्यं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

अट्ठत्तर मयय सुणं अठुतर कमुक दीवाई।
अच्चण कालेदेयं पठास मतयाडिईज्जं।।१।।
तस्स दुसहस्स होमं पूयम हुमहिम-खिसम्मि स्संरति।
हुयं वड समिपायसुण जयं वरुण दिसि मंति।।२।।
अट्ठ दिसिं हक्के क्कं एक्कं मझंमि वसियकं काउ।
काय स्सणेय पुडियं णाम वहिकाम मयेण जुयां।।३।।
सोलह कलाउ एके कं वेढं अच्छीगय रुद्धं।
कोण कमेण्यलि खं अंतंर कोण विचार द्रवणंतं।।४।।
जोणी कामणि रोहं महि वहि पासगाण बलाणंतं।
तह अट्ठ कोण लिख अंतर कोष्ठास्स अपारं।।५।।
गयरोहं अग्ग दले एहिम ठ्ठाण वेठियं सग्धं।
कालि कुंडाई याणं कालतय भासियं णाणं।।६।।

बसीकरण मंत्र

मंत्रः- ॐ नमो भगवते मदमुदित मोहे वागीश्वरी कलिकुण्डं मुक्ती प्रसादेन आं क्रों ह्रीं ब्लें द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजन वश्यं कुरु कुरु वषट्।

वसिय यरण काम मोहण मणिय जंतेण कलिय कुंडेंसि।
सिय वसणे सिय सहोणि खज्जई जासला काई।।१।।
जाई पणं रत्त चय कर बीरं मल्लियाई इय पसुण।
जव इणिच्च पमाणं अठसयं आठ दिवस क्रमे।।२।।
अहवा वेडई सिद्धे जंतं काऊणभट पुरोलिखं।
उबलिं पूप विहाणं पुव्व वहिं जाण सुणि णाहो।।३।।
भूमितले णिरवी वियं पूपं काउण रक्ष कुसुमेण।
युसई कलि कुंडाणं सत्त-दिणे-रावपसि-यराणं।।४।।

इस मंत्र का लाल फूलों से जाप करें।

आइतियंत मियं णारी पुरुसाणमोति माईणी।
कलिकुंड मुणिदाणं कहियामियं सव्व लोयसा।।१।।
जोणी कामणि वेयं विलासिणी तहय जोईमाहवई।
सोलह कला णवलयं णामं संलिख णायँवा।।२।।
वाहि गीतं तंवहियं मह्माहर जोण पासवणोवणीहि।
हेय वहि गयरं घाणं तेण पुरं तत्थ परि परियं।।३।।
पावय पुरु वहि मयणं वणाई ॐ ममदं संजुप्त।
तेण वह मिय माया खोणीपुर तस्स परि परियंज्ज।।४।।
एवल स पिंडं जुदं णामं सं विलिख्य वहि खेलयं।
तेण पुरु म विहयं वायु पिंड परि परियं।।५।।
अणं जो पि पुराणं मेतं वहि णामं रुद्ध बलयाज्ज।
महिणा वट्टई अज्झो वाइत्तयं तस्स परिपरियं।।६।।

आकर्षण मंत्र

मंत्रः- ॐ णमो भगवति हरोहर मोहमातंगिनी कलिकुंडावरण मदारक्त प्रिये रां रां मदन मुदिता वागेश्वरी सर्वाकृष्टिं कुरु कुरु आं क्रों ह्रीं क्लीं ब्लूं ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः नित्ये क्लिनेन मदद्रवे मदनातुरे अमुकी...... आकर्षय आकर्षय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं ह्रीं कलिकुंड स्वामि आज्ञापयति ह्रीं संवौषट्।

इयं मंतेणाय वेठइ जवईज्जं तालतयेण कपं।
पुतूलि सुदापवयणं वर गुहि णाणिखमणसम वहि तावणंणियमा।।१।।

इच्छीय पुरुषा इच्छीसत्त दिशोहो तिसा णियमा।
जिण वर कलिकुंडाणं कहियमाणं मुणेयव्वा।।२।।

तिल सरिसव लवण जुयं पसुणं समेत परिणयं।
काले णियमिय मणसा फाणई सिकई आईड्डितिकाले।।३।।

इह विजा गुइ वरेयं जिणवर मय सामण दायव्वं।
जिणवर मुणियं एवं माणेयं कलिकुंड मुणिणाहई।।४।।

पौष्टिक मंत्र

मंत्रः- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं ह्रीं कलिकुंड स्वामिन् प्रसादेन णमो अरहंताणं श्री शांतिनाथाय अमुकस्य.... तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

इयं मंतं जवई कंतं जंतु वरिपमव तुष्टितं।
हवई णियमिय मणसा पुज्जंभुण सहस्सेण सिझंति।।१।।

मिय पसुणे जिणागे हे यंते शुद्ध देस।
जवि इज्ज सयल जण राम जंतं तुट्ठि पुट्ठि सुहंप्तेइ।।२।।

णियमेणवस्स का लंजवमिई सिद्धति सिद्धाणं।
सयल जल दाह चोरं इणि कुल णासणं सिद्धं।।३।।
देसस्स राज युद्धि पीडानर पहुईणि घोर उवसग्गां।
णासह दंसण मित्ते भूप पिसासई सव्वाणी।।४।।

मनोवांछित कार्य सिद्धि मंत्र

मंत्रः- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं ह्रीं कलिकुंड दंड स्वामिन अमुकस्य. ... क्रोध मुखजिव्हा मति गति गर्भ दिव्य सेना स्तंभनं कुरु कुरु क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः ग्लौं ठः ठः स्वाहा।

इस मंत्र का सवा लाख जाप्य करने से इच्छित कार्य सिद्ध होता है।

मारण रक्षा मंत्र

मंत्रः- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अणं मारण विद्या पर गय कुटिलाणि कोडि कम्भाणि मयण मयं पुरु सुखं इच्छिं वा सौकूव रूवाणि हेयसिया वश्य तमियं णाम रूद्ध रूपारं एवल माया जरसुस मंतं बल ईछं।

नौ लाख जाप्य करने से यह मंत्र सिद्ध होता है।

पर विद्या निवारण मंत्र

मंत्रः- ॐ नमो भगवती पर विद्या छेदिनी ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं ह्रीं कलिकुंड दंड स्वामिन् अमुकस्य...... झै झै छिंद छिंद भिंद भिंद तस्यां गाणि छेदय छेदय भेदय भेदय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ग्रां हुं घे घे।

इस मंत्र का ९००० जाप्य करने से सिद्धि होती है।

पर विद्या छेदन

यह परविद्या छेदन मंत्र है सुख का कर्ता है। इस यंत्र को उसके मंत्र से निरुद्ध करे वेष्टित करे। सर्व कुटिल विद्या तत्काल नष्ट करे।

मंत्र:- ॐ दीवे शिखा उवरि आवेशय आवेशय सत्यं कथय कथय स्वाहा।

मंत्र:- ॐ ह्रीं सुंदरि सुंदरि परम् सुंदरि परम सुंदरि अवतर अवतर आगच्छ आगच्छ अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ धनु धनु कंप कंप आवेशय वेग वेग शीघ्र शीघ्र अवतर अवतर प्रज्वल प्रज्वल दह दह खं गं जं गं। ज्वालामालिनी देवी ॐ ह्रीं प्रें ब्लूं अवतर अवतर पंच पंच क्षोभय क्षोभय घे घे हुं फट् स्वाहा।

यह पर विद्या छेदन करने वाला मंत्र है।

अर्चन, पूजन, सेवा, अष्ट प्रकार की पूजा से शत्रु मित्र बनता है।

प्रथम ही प्रभात काल यंत्र का कलशाभिषेक सुगंध, दूध, घृत, इक्षु, रस आदि सुगंध द्रव्य से मंत्र पढ़े कलशाभिषेक करना तथा पूजा करे तो पहले का यदि दोष रूप हो तो नष्ट होता है। दाहिनी दिशा बैठ चोखा सालि से तत्काल निकाले चावल से पूजन करे और दीपक से पूजन करे।

अष्टोत्तर दीपक और इतना ही फल से पूजन करे तो अंतर दिशि गमन की व्यथा नष्ट होती है। दीप का मंत्र पढ़े यंत्र पर पुष्प क्षेपण करे।

सुंदरि मंत्र की विद्या विद्वेष कर्ता है और पर विद्या चलती नहीं, और यह यंत्र जब लिखे तो अपने आप ही पर विद्या नष्ट हो जाती है।

गणधर वलय कार्य सिद्धि मंत्र

मंत्र–ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो अरिहंताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

संकल्प

ॐ अद्य भगवतो मदादिब्रह्मणो त्रिलोक्य मध्ये मध्यास्ते जंबू वृक्षोपलक्षित जंबू द्वीपे सुमेरु दक्षिण दिग्भागे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे

अस्मिन् विनय जनिता भिरामौ दिल्ली प्रदेशे गुलाव बाटिका नगरे श्री मूल नायक पाार्श्वनाथ जैन चैत्यालय प्रदेशे एतद् अवसर्पणीकालावसानं प्रवर्तमान कलियुगाभिधान पंचम काले महति महावीर स्वामि धर्मोपदेश व्यति कर श्री गौतम स्वामी प्रतिपादित श्रेणिक महामंडलेश्वर समाचरित महाराज धिराज स्वाहा। जित राज्य प्रवर्तमान संवत..... । प्रवर्तमान मासोत्तम मासे.... । शुभ पक्षे.... । तिथौ... । वासरे शुभ ग्रह नक्षत्र होरा मुहूर्त्त लग्न युक्तायां मूलसंघ बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंद कुंदाचार्यन्वे.... गोत्र नाम्नार्थ इष्ट कार्य सिद्धयर्थ सकलारिष्ट निराकरणार्थ इदं गणभृत्यं स्तोत्रं मंत्र.. । संख्या आराधन संकल्प करिष्ये श्रीरस्तु।

—•—

गणधर वलय पूजा

षट्गणाष्ठऋद्धि संपन्नं गणाधीश समुच्चयम्।
आहूय स्थापयित्वाऽत्र तद्यंत्रे सन्निधायेत्।।१।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गणधर समूह आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गणधर समूह अत्र तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गणधर समूह अत्र भव भव वषट् स्वाहा।

कर्पूर चंदन रसान्वय दिव्य गन्धै
भृंङ्गार नाल गलितैः सुरभि कृताशैः।
स्तीर्थोदकैरघोरजो हरण प्रवीणैः
पाद्य ददामि गणिनां वलय गणाय।।२।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गणधर समूहेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर कुंकुम हिमाम्बू करम्वितेन
सद्गंध सार तरु कल्पित कर्द्दमेन
संसार संज्वर निवारण कारणेन सं
चर्चयामि गणिनां चरणाम्बुजानि।।३।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गणधर समूहेभ्यो गंध निर्वपामीति स्वाहा।

शाल्यक्षत्तान पतुषान प्रथितान खण्डान् राका।
शशाङ्क शकल प्रबल प्रकाशान्
रवार्ग पवर्ग फल बीज गणाङ्कुराभान्
चक्रे पदेषु गणिनाम घिरोपयामि।।४।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गणधर समूहेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुन्नाग पूग कुहली करवीर जाती
मंदार कुन्द वकुलाब्ज सहादि पुष्पैः
सत्केत्कैर्मरुबकै रऽपि हृद्य गन्धै
संपूजयामि गण वृन्द ममन्द भक्तया।।५।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गणधर समूहेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थाल स्थितं विधुकलाऽमल शालि भक्तं
पक्वान्न शाक परमान्न सिताज्य युक्तं

आराधनाय गणिनां गुणमंडिताना मग्रे
करोम्य मृत पिण्डमिवाति रम्यम्।।६।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गणधर समूहेभ्यो चरुं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तस्तमोह पह घुरामघ दाहिना च
स्थांतु भियेव पुरतोप्यति कंपामानैः
कर्पूर तैल जनितै रूरूदीपं जालै
रूद्योतयामि गणिनाभरूणांध्रि पद्मान्।।७।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गणधर समूहेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार संज्वर हुताशन वृष्टि सृष्टीः
द्राक कर्त्तुमा हट्ट मिवाभ्रम नूत्पतद्भिः
कालागुरु प्रभृति बन्धुर धूप धूमैः
संधूपयामि गणवृन्द पदाम्बुजानि।।८।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गणधर समूहेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बीर जम्बु पनस त्रिपुटाम्र ताल
खर्जूर माधुरस मन्मथ नालिकेरैः
रम्भेक्षु नागदल पूग सुदाडिमाद्यै
रभ्यर्चयामि गण भृच्चरणान फलौद्यैः।।९।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गणधर समूहेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वारि गंध सदक प्रसवाद्यै श्वेत सर्षप मुखैश्च शुभाद्यैः।
भाजनार्पित मनर्घ्य गुणाना मर्पयामि गणिनामह मर्घम्।।१०।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः गणधर समूहेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्जन्याः फल वृद्धयेऽत्र समये वर्षन्तु सस्ये जलं।
राजन्याः परिपालयन्तु सततं धर्मेण सर्वाः प्रजाः
नश्यन्तीति गण भवंतु सुखिनः सर्वेऽर्हतां वर्द्धताम्
धर्मोऽग्रे भवतां करोमि पयसां धारां जगत् शांतये।।११।।

ॐ ह्रीं स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतिकृद्भ्यः शांतिधारामभिः पातयामि स्वाहा।

इति शांति धारा

पूजा

षटकोण कोष्टं तिधि गंतु मध्ये षडष्ट पत्रं गणभृत सुमंत्रैः।
आवेष्टितं षोडश सत् स्वरै श्च तदाह्वये श्री गण नाथ यंत्रं।।१।।

नीरेण गंधेन च तंदुलेन पुष्पेन न ह्वयेन च दीपकेन धूपेन।
रंभादि फलेन चाहं यजामि कोण स्थित वर्ण मात्रान्।।२।।

जिनानऽशेषान जितकर्मशत्रून् नअवाप्त सद्ज्ञान विशेषभूपान्।
निजात्म सिद्धाये प्रणि पत्य सम्यग् आराध्याम्यऽष्ट विद्यार्चनेनः।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं गंधं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं चरुं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं शांतिधारां करोमि स्वाहा।

अनेन प्रकारेण तत्तन्मंत्रं भेदेन सर्वत्र पूजा कर्त्तव्येति।

गुणार्थीगुण भूषितांगान्प्रभूत कर्मेन्धन
दाहदक्षान जलादिभिस्तं परिपूजायामि।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रसन्न मूत्तीन् प्रहताखिलात्तीनं
परापर ज्ञान परमाऽवधीशान्
जिनान निंधानऽखिलाऽभि
वंद्यानऽर्चामि चंच जलं चंदनाद्यैः।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वाऽवधि ज्ञान जुषो जिनेशान्
विनाशिताऽशेष हृषीक दोषान्
मनोज्ञ वेषान् महिमा युषस्तान्
शुभुषयाम्य हर्ण्याति हर्षात्।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमोऽस्त्वनन्तावधि बोध केभ्य
इति प्रणुत्य प्रणिपत्य भक्त्या
भजामि तान देश जिनानऽशेषा
ननन्त सद्ज्ञान सुखादि सिद्धयै।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिष्ठन्ति धान्यानि यथाढय कोष्ठे
ण्यह्य संकरा यत्र तथैव येषां
बुधो विवित्का विविधा गमार्था स्तान्
कोष्ठ बुद्धीन महमयामि धीरान्।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोष्ठ बुद्धीणं जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत वार्धि पारम्तान बीज बुद्धिन
सुसपर्याहं भजामि भव्याध विधात् दक्षान्।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विदोभवंतिपदाणु सारि प्रतिभान भंगां
स्तान् च्चर्चयाभ्यंम्बु मुखैर्म्महर्षीन्।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणु सारिणं जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधीत्य चैकं पद मात्र मेवये ते द्वादशांगार्थ।
सद्वारि गन्ध सदक प्रसवादि सिद्धं
सिद्धार्थ कादि वर मंगल वस्तु शस्तं
सौवर्ण पात्र निहितं सदनर्घ्य मर्घ्य

मुद्धारयामि गणि वृन्द पदाम्बुजाग्रे ।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो अष्टदल पूजाया पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्त्ये–शान्ति धारा

गणधर वलय यंत्र मंत्र साधना विधान

नमस्कृत्य गणाधीशं गौतमं मुनि पुंगवं।
वक्ष्ये हं गण भृद्यत्रं भुक्ति मुक्ति प्रदायकं।।

गणों के स्वामी मुनियों में उत्तम गणधर को नमस्कार करके भोग और मोक्ष के देने वाले गणधरवलय यंत्र का वर्णन करूंगा।

सव्ये तरा प्रादि विचादि युक्त षट्कोण मध्य स्थितं हं र्हं स्मरंतः।
आवेष्टितं सौंगणं भृद्भिरतेः झ्रौं झ्रौं परस्यांत गहावसानैः।।

इदानीं ध्यानमुच्यते

षट्कोण चक्रं विरचय चन्मध्ये हंकारं विन्यस्य षट्कोण भ्यंतरे सव्येन अप्रति चक्रे फडित्यैकैकाक्षरं विन्य्नस्य षट्कोण बाहये अपसव्येत विचक्राय स्वाहेति इत्येकैकं विन्यस्य द्वाह्ये चंद्र मंडलं स्फुर चंद्रामं विन्यस्य तद्वाह्ये मालाचंमंत्रं विन्यस्य ततो बाह्ये चंद्र मंडलं विन्यस्य भुपूरं च कथं भूतं महायंत्रं हृद्धियंतयेत्।

एक छह कोण चक्र बनाकर उसके बीच में र्हंकार को रखकर छहों कोणों के बीच में सव्येन अप्रति चक्रे फट् से एक एक अक्षर को रखकर, उसके बाहर प्रकाशित चंद्रमा के समान चंद्रमंडल बनाकर, उसके बाहर माला मंत्र रखकर, उसके बाहर चन्द्रमंडल रखकर पृथ्वी मंडल बनावे। इस प्रकार के महायंत्र का हृदय में ध्यान करें।

श्री खंडागुरू कुंकुम कर्पूर वेणुज गोरोचन सित सर्षय।

दुर्वांकुरलवगैलादिभि सुसंवर्ण लेखन्या दर्भादिनावा।।

एतद्यंत्र स्फुटाक्षरं फलके ताम्र पत्रे भूर्ज्जेपटेवा विलिख्य गंद्याक्षत पुष्प दीप धूपादि रर्च्चयतोमारि चोराद्युपसर्ग्ग न भवंति।

इस यंत्र को श्री खंड (चंदन), केशर, बंस लोचन, गोरोचन, सफेद सरसों, दूब के अंकुर, लोंग, इलायची आदि से सोने या डाभ आदि की कलम से स्पष्ट अक्षरों में तख्ती ताम्र पत्र या भोजपत्र पर लिखकर, गंध अक्षत पुष्प दीप धूप आदि से पूजा करने वाले को शत्रु, महामारी चोर आदि के उपसर्ग नहीं होते।

इदमेव चक्रं ते रेव द्रव्यै स्तया भूत लेखिन्या हंकारस्य मध्येसाध्यनाम स्वनाम मध्ये यस्याद्य स्ताद्विलिख्य विधिना सप्त रात्रमभ्यर्चितं राजादि वश्यं करोति।

इस ही चक्र को उन ही द्रव्यों से वैसी ही कलम से हंकार के बीच में साध्य के नाम को अपने नाम के बीच में नीचे लिखकर विधि पूर्वक सात रात्रि तक पूजन किया जावे तो राजा का वशीकरण होता है।

अथतेनैव विधिनात दिदं यंत्रं विलिख्य हंकार मध्ये ज्वरित नामलिखित्वा त्रिरात्रं सप्तं रात्रं वा विधिनाऽभ्यर्चितं ज्वरमपहरति ऐवा सर्व्व व्याधीष्वन्येषुप सर्ग्गेशु च यंत्र मिदं यथाविधि योजनीयं।

इसी ही विधि से इस यंत्र को लिखकर हंकार के बीच में ज्वर से पीड़ित साध्य नाम को रखकर तीन रात या सात रात तक विधिपूर्वक पूजन करने से ज्वर को दूर करता है। इसी प्रकार इस यंत्र को सब रोगों और उपसर्गों में लगाना चाहिए।

अथेदं यंत्रं पीत वर्णयस्य ह्दयाऽभ्यंतरे पूर्वं विचिंत्यं पश्चात् तस्य शरीर व्यापी चित्यंत्तस्मिन क्रोधादि स्तंभनं भवति यथाऽस्मिन् धूम्र वर्णत्तया चिंतिते उच्चाटनं भवति नीलवर्ण तया मोहनं भवति

कृष्ण वर्ण तया द्वयोरप्या शक्त चिंतयो हृदि शरीर व्यापि त्वेन चिंतित्ते परस्पर विद्वेषणं भवति धवल वर्ण तया निर्विषकरणं स्यात्।

यदि इस यंत्र को पृथ्वी मंडल में पीले रंग का पहले किसी के हृदय में ध्यान करके फिर उसके शरीर भर में व्याप्त ध्यान किया जाये तो उसमें क्रोधादि का स्तंभन होता है। उसी में इसको धूम्रवर्ण वायुमंडल का ध्यान करने से उच्चाटन और द्वेष होता है। नीले वर्ण का ध्यान करने से मोहन भी होता है। वशीकरण में अग्निमंडल कहा है। काले वर्ण का दोनों असमर्थ चित्तवालों के हृदय तथा शरीर में व्याप्त चिंतवन करने से आपस में विद्वेषण होता है। और श्वेतवर्ण ध्यान में विष नष्ट होता है।

अर्चना

मध्ये ष्टकौंण चक्रं निखिल जिनपतेक्ष्माक्षरं पीठ बद्धं।
वामे ह्रीं दक्षिणे झ्वीं श्रियम धरतले तेषु सव्याप सव्यं।।
कोष्टेष्टा प्रति चक्रे फडि विवस विचक्राय होमांत मंत्रां।
श्री देवीनां च षर्ण वहि रपि विषिषन्मंत्र दुर्गस्य कोणे।।१।।

प्रादक्षिण्यं स होमं सकल शशि वृतं पूर्ण चंद्रावृतं।
तच्चिक द्वित्रिघ्र पत्राष्टक वलयादिलें।
ऐद्वियार्हं द्वित्रिघ्र ग्रै मंर्त्रैरावेष्टय्र बाह्यै।
गणधर वलये ह्रीं त्रीधाक्रौं निरुद्धं।
यंत्रं तत्पचं शून्यैरखिल गुरु पदाद्यक्षरैमूल मंत्रैः।।२।।

—●—

गणधर वलय यंत्र पूजा

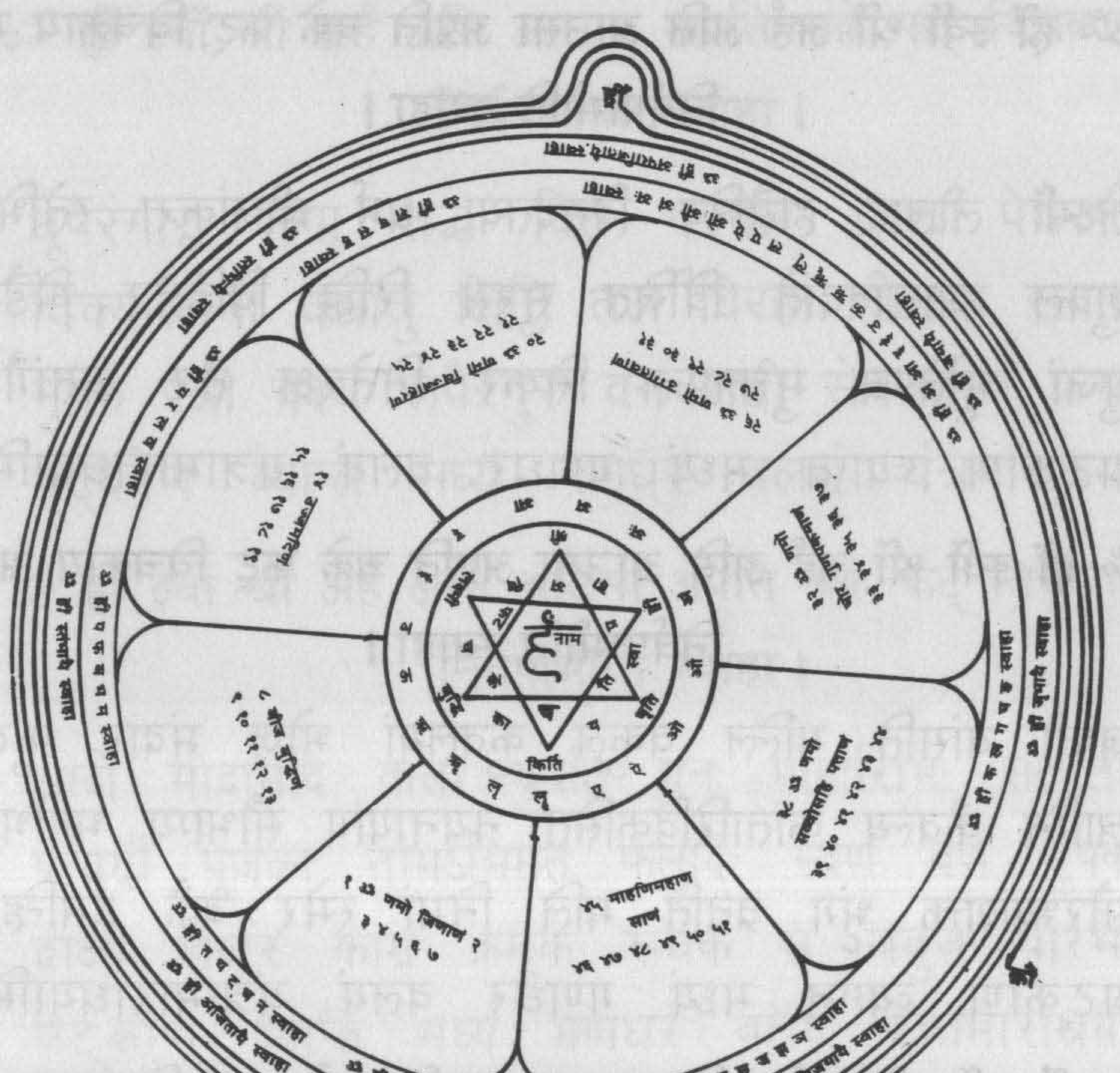
झ्रौं झ्रौं स्वाहांत्त गर्भैर्भुवन पति जिना झ्रौं नमो होम युक्ते।

स्ताम्र पात्रे पटे वा कनक गणिक्कया लिख्य सौगंध गंद्यैः।।
अभ्य व्ध्यद्य सदाग्रे परम जिनपते स्सं जपन चारु पुष्पै।
ईस्त प्राप्ता महीनामलक फ मिव स्वेष्ट सिद्धिं प्रयांति।।३।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।



कर्पूरामोदमत्त भ्रमर गण कृत श्लाद्यद्य तीर्थ वारां।
भृंगार स्फार नालादिह सुकृत लता वृद्धि मा पादयं त्या गंधाभः।।
स्वच्छ धारामिव ध वधि मया धारयाता हसंत्या।
षट्कोण व्याप्त मध्यं गणधर वलयं यंत्रामाराधयामि।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ द्विदंति गंडस्थल जसनदी गंधं लोलत्कालिमाला।
व्याजघ्रिशौरभै स्तैर्मलयज घनसारो ध्व काश्मीर मिश्रैः।।
गंधिः पूर्णेदु वर्णौर्भव भय परिता पापर्हिलेपनढ्यैः।
षट्कोण व्याप्त मध्यं गणधर वलयं माराधयामि।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय गधं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी लीलाद हासैरिव विसदतया धर्म बीजांकुरा स्तेभिः।
शुक्ल ध्यानावदाते र्विजित सुरस रिद्धि विडिंडैर पिंडैः।।
युजां भूतिश्च मुक्ताफल निकर नितेरक्ष तैर क्षतांगैः।
षट्कोण व्याप्त मध्यं गणधर वलयं यंत्रामाराधयामि।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जाती वांसति मल्लि वकुल कुवलयां भोज मंदार कुंद।
स्राग्नि कैवल्य कांतारिविकसित नयनायांग सौभाग्य भाग्भिः।।
सौरभ्यांशक्त भृंग व्रतति मलि निमां स्मेर वक्रै र्हमन्हिः।
षट्कोण व्याप्त मध्यं गणधर वलयं यंत्रामाराधयामि।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गांगेया मत्रा मध्य मार्प्पित कलम महविः पायषा मोदहृद्यैः।
नैवेद्यै र्वाष्प पूरात्परममृत भुजां प्रीति मुत्पादयाद्भिः।।
त्रैलोक्या काश मध्ये गणधर महिमां तेजसा दर्शयद्भिः।।
षट्कोण व्याप्त मध्यं गणधर वलयं यंत्रामाराधयामि।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैलासाद्रेर्द्द्यानिः श्रियमति विशदं सारदीसभ्रलीला।
न्नीतं पापांधकारं दिसिदिसि निखिलं नाम तानासयद्भिः।।
दीपै दैदीप्य मानेः कनक मनिगभाये रत्न कर्पूर कल्पैः।
षट्कोण व्याप्त मध्यं गणधर वलयं यंत्रामाराधयामि।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपैरंगार संगा तद्ध वित परमले ध्राण पेयैरमीभि।
दिक्यालानां वद्यातु क्षिति तल विरहां नीलया रावताभेः।।
मुक्ति स्त्री वश्य रूपैरगुरु वन सटी सेवनास्तिं फ्रगातैः।
षट्कोण व्याप्त मध्यं गणधर वलयं यंत्रमाराधयामि।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आदो मोदामेदि वासा युवति पन मोहारिभिः सत्पुलौद्यैः।
प्रत्यग्रौ पूजका नामऽभिमत फलादैः स्वर्ण वर्णै सुपक्केः।।
द्राक्षा खर्जूर काम्र क्रमुक रूचक सं जवुजे वीरभेदिः।
षट्कोण व्याप्त मध्यं गणधर वलयं यंत्रामाराधयामि।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्थं षक्कोण चक्रं निखिल गण भृतानाम मंत्रावृतं यस्तोयाद्यै।
रर्चनांगै र्यजति जपति वाध्यायति स्तौति भक्त्या।।
सोयं देवेन्द्र लक्ष्मी नरपति महिमां संयमः श्री प्रसन्नां।
पश्चा जैनिंद्र लक्ष्मीं विलय विरहितां मोक्ष लक्ष्मीं प्रयातिः।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं असि आउसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्यं यो गण भृन्मंत्रं विशुद्ध स्सन्पठत्य ऽमुं।
आश्रव स्तस्य पुण्यानां निर्जरा पाप कर्मणां।।
नस्यादुपद्रवः कश्चिद व्याधि भूत विषादिभिः।
सदसद्वीक्षणं स्वप्ने समाधिश्च भवेन्मृतौ।।

जो पुरुष शुद्ध होकर इस गणधर वलय मंत्र को पढ़ता है उसके पुण्य का आस्त्रव होता है और पाप कर्मों की निर्जरा होती है। उसके रोग, भूत, विष आदि से कोई कष्ट नहीं होता। वह स्वप्न में अच्छे और बुरे को देखता है। मृत्यु के समय उसके परिणाम शुभ रहते हैं अर्थात् उसका समाधि मरण होता है।

गणधर वलय मूल मंत्र

मंत्रः- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा।

मंत्रः- ॐ णमो अरहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

हैजा रोग की शान्ति का मंत्र

मंत्र-ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो अरहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र का प्रयोग करने से हैजा रोग की शांति होती है।
इस मंत्र का १०८ बार जाप करने से ज्वर नष्ट हो जाता है।

शिर रोग नाशन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो जिणाणं णमो परमोहि जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र सिर के रोग को नष्ट कर देता है।

आखों के रोग नाशक मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो सव्वोसहि णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र आँखों के रोगों को नष्ट करता है।

कान के रोग नाशक मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो अणंतोहि णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र कान के रोगों को नष्ट करता है।

शूल रोग नाशन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो कोट्ठबुद्धिणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र वायु गोल, पेट के रोगों को नष्ट करता है।

श्वास रोग नाशक मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धिणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः
अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा
झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं ॐ णमो संभिणसोदराणं ह्रां ह्रीं ह्रूं
ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा
झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र श्वांस और हिचकी आदि रोगों को नष्ट करता है।

विरोध नाशक मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं ॐ णमो पादाणुसारीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं
ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र आपस के बैर को नष्ट करता है।

प्रतिवादी की विद्या नष्ट करने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं ॐ णमो पत्तेयबुद्धाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं
ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा
झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र प्रतिवादी की विद्या को नष्ट करता है।

बुद्धि प्राप्ति का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं ॐ णमो सयंबुद्धाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः
अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा
झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र कविता करने की शक्ति और विद्वता प्राप्त करता है।

मंत्र– ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं ॐ णमो वोहियबुद्धाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से दूसरे के ग्रहण किये हुए शास्त्रों को सुनकर उसी के समान याद हो जाता है।

शान्ति मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं ॐ णमो उज्जुमुदीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।

इस मंत्र से सर्व प्रकार की शांति होती है।

ज्ञानवान होने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं ॐ णमो विउमदीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से बड़ा भारी पंडित हो जाता है। इस मंत्र के प्रयोग काल में नमकीन व खट्टे पदार्थ नहीं खाना चाहिए।

विशेष ज्ञानी होने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं ॐ णमो दशपुव्वीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से दस अंग धारी ज्ञानी हो जाता है।

ज्ञान प्राप्ति का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ॐ णमो चउदश पुव्वीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र के जाप्य से स्व व पर के ज्ञान की प्राप्ति होती है।

जीवन मरण को जानने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ॐ णमो अट्ठांगमहाणिमित्त कुशलाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।।

इस मंत्र से जीवन मरण आदि को जाना जाता है।

इच्छा पूर्ति मंत्र

मंत्र-- ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ॐ णमो विउव्वण इड्डि पत्ताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से मनुष्य इच्छा की हुई वस्तु को २८ दिन में प्राप्त करता है।

प्रवक्ता बनने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ॐ णमो विज्जाहराणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से उपदेश के एक प्रदेश का ज्ञान करा देता है।

खोई हुई वस्तु का ज्ञान करने का मंत्र

मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ॐ णमो चारणां ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से भूली हुई बात और खोई हुई चीज का स्वयं ज्ञान हो जाता है।

आयु जानने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं ॐ णमो पणसमणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से मनुष्य आयु को जानता है।

आकाश में चलने का मंत्र

मंत्र–ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं ॐ णमो आगासगामीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से आकाश गमन की सिद्धि होती है।

शत्रु नष्ट करने का मंत्र

मंत्र–ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं ॐ णमो अरिहंताणं आसीविसाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।

इस मंत्र से शत्रुता नष्ट हो जाती है।

विष नाश करने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं ॐ णमो दिट्ठि विसाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से स्थावर जंगम और कृत्रिम सभी विष नष्ट होते हैं।

वाणी स्तंभन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं ॐ णमो उग्गत्तवाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से वाणी का स्थंभन होता है।

सेना स्तंभन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं ड्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो दित्तवाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र को रविवार को दोपहर के समय जप कर सिद्ध करने से सेना का स्तंभन होता है।

जल-अग्नि स्तंभन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं ड्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो तत्तत्तवाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से जल और अग्नि का स्तंभन होता है।

जल स्तंभन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं ड्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो महातवाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से जल स्तंभन होता है।

रोगादि नाशन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं ड्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो घोरवत्तावाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र विष और मुख के रोग आदि को नष्ट करता है।

दुष्ट मृगादि भय नाशन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं ड्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो घोर गुणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र दुष्ट जानवरों के भय को नष्ट करता है।

गर्भपात नाशन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्वीं श्रीं अर्हं ॐ घोरगुण परक्कमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र का जाप्य करने से चींटी कान खजूरे व गर्भपात का भय नष्ट होता हैं।

ग्रहों के नाशन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो घोर गुण ब्रह्मचारीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र ब्रह्म राक्षस और ग्रहों को नष्ट करता है।

अपमृत्यु नाशन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो खेलोसहिपत्ताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से कहीं भी अपमृत्यु नहीं हो सकती है।

वैर नाशन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो आमोसहि पत्ताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

चिन्ता नाशक मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो जल्लोसहि पत्ताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र चिंता से फंसे रहने को नष्ट करता है।

उपसर्ग निवारण मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो सव्वोसहि पत्ताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से मनुष्यों और देवताओं के उपसर्ग दूर होते हैं।

रोग शान्त करने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो मणवलिणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से सभी प्रकार के रोग शांत होता है।

जानवर रक्षा मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो वचिवलीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से जानवरों की बीमारी नष्ट होती है।

गौ मारी रक्षा मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो कायवलिणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से गायों की बीमारी नष्ट होती है।

गंडमाला रक्षा मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से १८ प्रकार के गंडमाला आदि रोगों को नष्ट करता है इसकी सिद्धि में दिन ४१ तक गाय का दूध जप कर पीएं।

शीत ज्वरों के शमन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो सप्पिसवीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

वह मंत्र रोज आने वाले, दूसरे दिन वाले, तेइया चौथी या पाक्षिक मासिक और वार्षिक आदि सभी शीत ज्वरों को नष्ट करता है।

रोग नाशक मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो महुर सवीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र सब रोगों को नष्ट करता है।

उपसर्ग रक्षा मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो अमियसविणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

यह मंत्र समस्त प्रकार के उपसर्गों को नष्ट करता है।

आकर्षण मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो अक्षीण महाणसाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र की जाप्य से आकर्षण होता है।

बंधन मुक्ति मंत्र

मंत्र–ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो वड्ढमाणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से बंधन मुक्त होता है।

राजा आदि को वशीकरण मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो लोए सव्व सिद्धाय दणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से राज पुरुषादिक का वशीकरण होता है।

समाधि मरण करने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं ॐ णमो भयवद्दो महदि महावीर वड्माण बुद्ध ऋषीणं चेदि ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से पुरुष समाधि सुख को पाता है।

गणधर वलय मंत्र का प्रभाव

शुक्ल चतुर्दश्यां पंचम्यामष्टम्यां वा गुर्वादि प्रमाणिको भव्यः। उपोष्य श्रुचि भूत्वा शर्वर्या सर्वज्ञ पूजनं परिसमाप्य। पश्चात परमेष्टिनं गणधर वलय चक्रं च गंधादिभिरभ्यर्च्यं। पश्चात् चंदन कुष्ट क्षोदेन मंत्री स्व दक्षिणा कर्ण मालिप्य।

जीवित मरण लाभालाभादिषु मध्ये।
विविक्षितं किमपि कार्य संप्राधार्य तदानीमेव।।

मंत्रः- ॐ णमो जिणाणं प्रभृति यावदागास गामीणं तावत् प्रमाणेन झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी पंचमी या अष्टमी को गुरु आदि की पूजन में तत्पर भव्य पुरुष उपवास करके स्नानादि से पवित्र होकर रात्रि में ही सर्वज्ञ भगवान की पूजन को समाप्त करके इसके पश्चात् परमेष्ठि गणधर वलय चक्र की चंदनादि से पूजन करें। इसके पश्चात् चंदन कूठ के चूर्ण से मंत्री

अपने दाहिने कान को लीपकर जीवन-मरण लाभ और अलाभ में से जानने योग्य किसी कार्य का निश्चय करके उसी समय "ॐ णमो जिणाणं से लगाकर ॐ णमो आगास गामीणं'' तक तथा झ्रौं झ्रौं स्वाहा मंत्र से दाहिने कान को हाथ से छूता हुआ एक सौ आठ बार अभिमंत्रित करे, फिर एकांत स्थान में बाईं करवट से सोकर स्वप्न में जो कुछ भी देखता है वह सत्य होता है। अथवा जप काल में जो शब्द बिना बोलने वाले को देखे हुए सुनाई दे। वह सब सत्य होता है।

रोग निवारण मंत्रः

मंत्रः- ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो आमोसहियपत्ताणं ॐ णमो सव्वोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

अष्टोत्तर शत सुगंध पुष्पैः प्रजपन्मंत्री गुल्म, शूल, प्लीहा, गंडमाला, कुष्ट, ज्वारातिसारान् व्याधीन्नन्यानऽपि शमयेत् गोशीर्ष चंदनेन यथोक्तयंत्र मुर्द्धाष्टोत्तर शतेन सित सुगंध कुसमैर्जप्त्वा पानीयेन तदगंधं द्रवीकृत्य पाययेत् व्याधिता स्वस्था भवति।

ॐ णमो जिणाणं तथा ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं से लगाकर ॐ णमो सव्वोसहिपत्ताणं से झ्रौं झ्रौं स्वाहा सहित मंत्र को सुगंधित पुष्पों से एक सो आठ बार जपता हुआ मंत्री गुल्म शूल (वायुगोला) प्लीहा (तिल्ली) गंडमाला कुष्ट ज्वर और दस्त आदि अन्य व्याधियों को शांत करता है। गोरोचन और चंदन से उपरोक्त यंत्र के लिखकर १०८ बार सुगंधित सफेद फूलों से जपकर जल से उस गंध से लिखे हुए यंत्र को धोकर रोगी को पिलाने से रोग नष्ट होता है।

क्रूर प्राणी वशीकरण यंत्र

मंत्रः ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो मण बलीणं ॐ वचि बलीणं ॐ णमो काय बलीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र को लाल कनेर के फूलों पर एक सौ आठ बार जपकर जो बैठता है व्याघ्र सिंह, हाथी शार्दूल सिंह, सांप और क्रूर प्राणी उसके वश में हो जाते हैं।

आकाशगामी मंत्र

मंत्रः- ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो विउव्वन इड्डि पत्ताणं ॐ णमो पत्ताणं ॐ णमो विज्जाहराणं ॐ णमो चारणाणं ॐ णमो पणसमणाणं ॐ णमो आगास गामीणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र को ५ लाख जाप विधि पूर्वक करने से सिद्ध करने वाले को आकाश गामिनी विद्या सिद्ध हो जाती है।

स्वप्न सिद्धि मंत्र

मंत्रः— ॐ णमो जिणाणं से ॐ णमो आगास गामीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से स्वप्न सिद्धि होती है।

विष हरण मंत्र

मंत्रः— ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो आसीविषाणं ॐ णमो दिट्ठी विषाणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से विष को नष्ट करने की सिद्धि होती है।

शत्रु को जीतने का मंत्र

मंत्रः— ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो उग्गत्तवाणं ॐ णमो दित्ततवाणं ॐ णमो तत्तवाणं ॐ णमो महातवाणं ॐ णमो घोर गुणाणं ॐ णमो घोर परक्कमाणं ॐ णमो घोर गुण ब्रह्मचारिणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र का ढाई लाख बार जाप्य करने से शत्रु जीते जाते हैं।

रोग शान्त करने का मंत्र

मंत्रः– ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं ॐ णमो खेलोसहिपत्ताणं ॐ णमो जल्लोसहिपत्ताणं ॐ णमो विप्पोसहिपत्ताणं ॐ णमो सव्वोसहिपत्ताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से सब रोग शान्त होते हैं।

प्राण सिद्धि मंत्र

मंत्रः – ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो मण बलिणं ॐ णमो वचि बलिणं ॐ णमो काय बलिणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से महाप्राण की सिद्धि होती है।

अमृत सिद्धि मंत्र

मंत्रः– ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो खीर सवीणं ॐ णमो सप्पि सवीणं ॐ णमो महूरसवीणं ॐ णमो अमिय सवीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से मंत्रित करके वन की औषधि अमृत के समान हो जाती है।

भंडार सिद्धि मंत्र

मंत्रः– ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो अक्षीण महाणसाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से भंडार की सिद्धि होती है।

सरस्वती सिद्धि मंत्र

मंत्रः– ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो वढ्डमाण बुद्ध रिसीणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से सरस्वती सिद्धि होती है।

विजय मंत्र

मंत्रः– ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो घोर गुणाणं ॐ णमो घोर गुण ब्रह्मचारीणं नमः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असि आ उ सा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से दूसरे पर विजय मिलती है।

आरोग्य सिद्ध मंत्र

मंत्रः– ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो सव्वोसहि पत्ताणं नमः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असिआउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से आरोग्य सिद्धि होती है।

दिव्यौषधि मंत्र

मंत्रः– ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो अमिय सवीणं नमः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असिआउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से दिव्य औषधि की सिद्धि होती है।

वाणी सिद्धि मंत्र

मंत्रः– ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो वढ्डमाण बुद्ध रिसीणं नमः मम बुद्धि वृद्धिरस्तु ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट् विचक्राय असिआउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इस मंत्र से वाणी की सिद्धि होती है।

हिमैला गुरु कर्पूर रोचना शित सर्षपैः।
लवंग कुष्ट दुर्वा ग्रौशीराद्यैश्च सुपेषितैः।।१।।

हिम (लाल चंदन) इलायची, अगर, कपूर, गोरोचन, सफेद सरसों, लोंग, कूठ, सहित वच और खस आदि को अच्छी तरह पीस कर।

रै सूच्या जाति कांडेन वर्हिषाद्‌र्वयाथवा।
उपातैः फलकैः भूर्ज्जे भुप्र ताम्र पटे यथा।।२।।
लिखे त्षट्‌कोण चक्रस्य मध्ये बिंदु युतां नभः।
कोणो दरेषु सव्येना प्रति चक्रे फंड लिखेत्।।३।।

सोने की कलम या डाभ की कलम से तखंती भोजपत्र या ताम्रपत्र पर षटकोण चक्रे के बीच में विंदु सहित नभ (ह) लिख कर कोनों में सव्य मंत्र अप्रति चक्रेफट् लिखे।

अपसव्यं विचक्राय स्वाहा कोणांतरेषु च।
बहिरस्मात् स्फुर चंद्र नीकाशं चंद्रमंडलं भू पुरंततः।।४।।
गण भृद्वलयारव्येन् मंत्रैणै तत्प्रवेष्टयेत्।
लिखेदऽस्मात् बहिश्चंद्रं मंडल भूपरंततः।।५।।

और दूसरे कोणों में अपसव्य मंत्र विचक्राय स्वाहा लिखे। इसके बाहर चन्द्रमा के समान उज्ज्वल चंद्र मंडल बनाया जावे। इसके पश्चात् उस यंत्र को गणधर वलय नाम के मंत्र से घेर देवे। उसके बाहर चंद्रमंडल और फिर पृथ्वीमंडल बनावे।

मंत्रेण प्रादिगर्भेण यश्चक्रं प्रार्चाये दिदं।
उपसर्गान् तस्यस्यु श्चौर मार्यादिभिः कृता।।६।।

जो पुरुष अप्रादि गर्भ मंत्र से इस यंत्र का पूजन करता है उसको चोर या शत्रु आदि से किये हुए उपसर्ग नहीं हो सकते हैं।

अप्रादि गर्भ मंत्रःवश्य मंत्र

मंत्रः– ॐ **ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः** अप्रति चक्रे फट् विचक्राय **झ्रौं झ्रौं** स्वाहा।

तलोध्वांश लसत्साध्य साध्यका ह्वय गर्भितं।
कुंभोदरे जिनाग्रे वा पूजितं वशये दिदं।।७।।

अप्रदि गर्भ मंत्र के नीचे साध्य और ऊपर साधक के नाम को लिखकर उसे घड़े के पेट में रखे और इसका पूजन करे तो वशीकरण होता है।

मध्यस्थातुर संज्ञं तच्चकं गंधाक्षतादिभिः।
त्रिरात्रं सप्त रात्रं वा पूजितं सर्वरोगजित्।।८।।

हकार के मध्य में रोगी का नाम लिखकर इस गणधर वलय चक्र का गंध अक्षत आदि से तीन रात या सात रात तक पूजन करने से सब रोग जीते जाते हैं।

साध्यस्य हृदयं पूर्वं व्यश्रुवानं तत स्तुनुं।
सर्वं पीतमिदं ध्यातं स्यादति क्रोधरोध कृत्।।९।।

साध्य के हृदय को पहले सुनता हुआ फिर उसकी कल्पना इस यंत्र में करके इसको पीला ध्यान करने से साध्य के क्रोध का स्तंभन होता है।

कृष्ण वर्णं तथैवेदं ध्यायते स्निग्धयोर्द्वयोः।
तयोः परस्पर द्वेषः सप्त रात्रात् प्रजायते।।१०।।

यदि स्निग्ध पुरुषों के बीच में इस यंत्र का कृष्ण रूप में ध्यान किया जाये तो उनका सात दिन के अन्दर आपस में विद्वेषण हो जाता है।

ध्यातं तथैव साध्ये सित वर्णमिदं करोति निर्विषतां।
धूम्र प्रभ मुच्चाटं नील द्युति मोहनं तस्य।।११।।

उसी प्रकार साध्य में श्वेत रंग का ध्यान किया जाने से यह विष को दूर करता है। धुएँ के जैसा रंग का ध्यान किया जाने से उच्चाटन करता है। नील वर्ण का ध्यान करने से मोहन करता है।

व्या वर्णित मत्यद्भुत मिति गणधर वलय सामर्थ्यं।
अथ शक्तिं कथयाम्यहमपि गणधर वलय मंत्रस्य।।१२।।

इस प्रकार गणधर वलय की अत्यंत अदभुत सामर्थ्य का वर्णन किया गया है। अब गणधर वलय मंत्र की शक्ति का वर्णन किया जाता है।

सिद्धोमंत्रः कुरुते सजपादामुत्रिकार्य संसिद्धिः।
षटकर्म कर्म वत्वं नष्टादि ज्ञानमपि मेघां।।१३।।

यह मंत्र सिद्ध होने से इस लोक में तो कार्य सिद्ध करता है छहो कर्मो में कर्म शान्ति करता है। नष्ट वस्तु का ज्ञान करता है और अत्यंत बुद्धिदायक है।

तस्यांतर्वर्तिनो मंत्रा यंत्रस्याद्भुत शक्तयः।
विविधाः संति ते गम्या गुरुणामुपदेशत्।।१४

उसके अंदर के और मंत्रों की भी बड़ी अद्‌भुत अनेक प्रकार की शक्तियाँ है जिनको गुरु के उपदेश से ही जानी जा सकती हैं।

कथ्यंति तन्वर्त्तिषु चत्वार स्तेषु सं चक्रेस्यादौं।
णमो जिणाणं त्विति तेषामवयवः प्रथमः।।१५।।

उस मंत्र के मुख्य चार अवयव है या भाग है जिनमें से ॐ णमो जिणाणं पहला अवयव है।

आगास गामिनां घोर गुणादि ब्रह्मचारीणां।
सर्वोष ऋद्धी प्राप्ता नामऽमृतश्राविणामऽपि।।१६।।
झ्रौं झ्रौं स्वाहा वसानानि नमस्कार पदानिवै।
तेषां चतुर्णा मंत्राः स्युः क्रमतो मध्य वर्तिनां।।१७।।

आगास गामीणं से घोर गुणादि ब्रह्मचारीणं तक दूसरा अवयव है। सब औषधि की ऋद्धि प्राप्त करने वाले मंत्र तीसरे और अमृत देने वाली ऋद्धि मंत्र चौथा अवयव है। अन्त में झ्रौं झ्रौं स्वाहा और नमस्कार के बाद में उन चारों के बीच में रहने वाली ऋद्धि के मंत्र है।

शुद्धाष्टम्यां चतुर्दश्यां पंच दस्यामऽथापि या।
कृतोपवासः शर्वर्यां स्तुत्वाऽर्हतं समर्च्चे च।।१८।।

दक्षिण श्रवणं कुष्ट चंदनाभ्यां विलिप्य तत्।
स्पृशन्नष्टोत्तर शतं तेष्वाद्ये नाभि मंत्रयेत्।।१६।।

शुद्ध अष्टमी चतुर्दशी अथवा पूर्णमासी को उपवास करके रात्रि में भगवान अर्हंत् की स्तुति पूर्वक पूजन करके दाहिने कान पर कूठ और चंदन का लेप करके उसको छूता हुआ एक सौ आठ बार अभिमंत्रित करके।

मृत जीवन लाभाऽदौ कार्य किमपि चिंतयेत्।
स्वाप्याश्चवाम पार्श्वेन सुप्तो रूपं य दीक्ष्यिते।।२०।।
श्रृणोति वा वचोयं च तेन विद्यां बुधाः।
शुभ अशुभं वाऽपि तन्मिथ्यां कदाचन भविष्यति।।२१।।

जीवन मरण लाभ अलाभ आदि किसी कार्य को भी सोचकर बाई करवट से सोता हुआ जो कुछ वचन सुनता है। बुद्धिमान उसको शुभ अशुभ समझे वह कभी असत्य नहीं होगा।

द्वितीयोऽति बलं कुर्यात् तृतीय शमनं रुजां।
चतुर्थेन औषधं जप्तं सिंचितं स्यात्सुधोपमं।।२२।।
स्वाहा तमो ॐ मुख सप्त वर्ण तत पूर्वका ह परतो।
नमो र्हं विदिग्निशोराधतः क्रमेण मायावृतस्य त्रिगुणं लिषंतु।।२३।।

इति गणधर वलय मंत्र

विशेष

● **ॐ णमो जिणाणं से ॐ णमो आगास गामीणं''** तक जप करने से स्वप्न सिद्धि होती है।

● **ॐ णमो उग्गत्तवाणम ॐ णमो घोर गुण ब्रह्मचारीणं''** तक जप करने से अत्यंत बल होता है।

• **ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं से ॐ णमो सव्वोसहि पत्ताणं''** तक जप करने से रोगों को शांत करता है।

• **ॐ णमो खीर सवीणं सप्पिसविणं मुहुर सवीणं अमीय सवीणं''** जप करने से और मंत्रित औषधी देने से वह अमृत के समान हो जाती है।

• ॐ ह्रीं आदि सात वर्णों के पश्चात् र्हं और फिर नमो र्हं लगाकर अंत में स्वाहा लगावे इस मंत्र को रात्रि में विशाओं की तरफ मुख करके आराधना करता हुआ माया ह्रीं से तीन वार वेष्टित करके लिखे।

गणधर वलय मंत्र

मंत्रः— ॐ ह्रीं र्हं झ्रौं झ्रौं नमः र्हं नमो र्हं स्वाहा।

विशंति सहस्राभ्यऽधिक लक्ष प्रमाणं।
पूर्व सेवया समाराध्य पश्चात पार्श्वनाथ सन्निधौ।।
श्री वर्द्धमान जिनेश्वर सन्निधौ द्वि सहस्राधिक।
दश सहस्र जाती कुसुमैः साधनीये भव्यः स सिद्ध विद्यः।
षट कर्म्माणि लीलया कर्तुं शक्रोतिः।।

पार्श्वनाथ जी स्वामी के निकट आराधना करके एक लाख बीस हजार मंत्र जपे फिर श्री वर्द्धमान जिनेश्वर के समीप चमेली के फूलों से बारह हजार जपे भव्य पुरुष इस प्रकार साधन के मंत्र के सिद्ध करें।

महामंत्र णमोकार

ॐ **णमो** अरिहंताणं ॐ **णमो** सिद्धाणं ॐ **णमो** आइरियाणं ॐ **णमो णमो** उवज्झायाणं ॐ **णमो** लोए सव्व साहूणं।

गणधर वलय मंत्र



ॐ णमो जिणाणं, ॐ णमो ओहि जिणाणं, ॐ णमो परमोहिजिणाणं,

ॐ णमो सव्वोहि जिणाणं, ॐ णमो अणंतोहि जिणाणं,ॐ णमो कोट्ठबुध्दीणं,

ॐ णमो बीज बुध्दीणं, ॐ णमो पादानुसारीणं, ॐ णमो संभिणसोदराणं,

ॐ णमो पत्तेय बुध्द्रिणं, ॐ णमो सयं बुध्दीणं, ॐ णमो बोहिय बुध्दीणं,

ॐ णमो उज्जुमदीणं, ॐ णमो विउलमदीणं, ॐ णमो दसपुव्वीणं,

ॐ णमो चउदस पुव्वीणं, ॐ णमो अट्ठांगमहाणिमित्त कुशलाणं, ॐ णमो विउव्वण इड्ढि पत्ताणं,

ॐ णमो विज्जाहराणं, ॐ णमो चारणाणं, ॐ णमो पणसमणाणं,

ॐ णमो आगास गामीणं, ॐ णमो आसीविसाणं, ॐ णमो दिट्ठि विसाणं,

ॐ णमो उग्गत्तवाणं, ॐ णमो दित्तवाणं, ॐ णमो तत्ततवाणं,

ॐ णमो महात्तवाणं, ॐ णमो घोरत्तवाणं, ॐ णमो घोर गुणाणं,

ॐ णमो घोर गुण परक्कमाणं, ॐ णमो घोरगुण ब्रह्मचारीणं, ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं,

ॐ णमो खेलोसहि पत्ताणं, ॐ णमो जल्लो सहिपत्ताणं, ॐ णमो विप्पोसहिपत्ताणं,

ॐ णमो सव्वोसहि पत्ताणं, ॐ णमो मण बलीणं, ॐ णमो वचि बलीणं,

ॐ णमो कायबलीणं, ॐ णमो खीरसवीणं, ॐ णमो सप्पिसवीणं,

ॐ णमो महुरसवीणं, ॐ णमो अमिसवीणं, ॐ णमो अक्षीण महाणसणं,

ॐ णमो वढ्डमाणाणं, ॐ णमो लोए सव्व सिद्धायदणाणं,

ॐ णमो भय वदो महदि महावीर वढ्डमाण बुद्धि रिसीणं
झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

इति गणधर वलय मंत्र

मंत्र:– ॐ ह्रीं र्हं झ्रौं झ्रौं नमः।

मंत्र:– ॐ **ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः** अर्हं असि आउसा अप्रति चक्रे फट्
विचक्राय स्वाहा।

मंत्र:– ॐ **ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः** अर्हंन अप्रति चक्रे फट् विचक्राय **ह्रीं**
अर्हं **झ्रौं झ्रौं** स्वाहा।

गणधर वलय मंत्र का निरुपण

ॐ णमो जिणाणं अनेक जन्मों की गहन ज्ञान प्राप्ति के हेतु कर्म रूपी शत्रुओं को जीतने वाले जिन कहलाते हैं, क्योंकि वे घातिया कर्मों को पूर्ण रूप से नष्ट करते हैं। जिन ही केवलज्ञान आदि अनंत चतुष्टय को प्राप्त करने वाले अर्हंत हैं उनको नमस्कार होवे।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो उहि जिणाणं ॐ णमो जिणाणं।

अवधि ज्ञान प्राप्त जिन भगवान को नमस्कार हो।

देश अवधि जिनानां देश तो घाति कर्म क्षय विधानात् प्राप्त।
देशावधि ज्ञानानां देसोहि जिणाणं मिति पाठ।।

देश अवधि जिनानां एक देश घाति या कर्मों को क्षय करने का विधान होने से देशावधि ज्ञान के प्राप्त करने के कारण देशावधि जिन कहा है।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो परमोहि जिणाणं परमोहि जिणाणं तद्विधानं देवप्राप्त परम अवधि ज्ञानानां।

परम अवधि ज्ञान प्राप्त करने वाले जिन भगवान को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो सव्वोहि जिणाणं सव्वोहि जिणाणं प्राप्त सकल अवधि ज्ञानानां।

सकल अवधि ज्ञान धारी जिन भगवान को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो अणंतोहि ज़िणाणं अणंतोहि जिणाणं न विद्यते अंते यस्या सावनंतो भवांतरानुगामी सोवधि येषां ते च जिनाश्च देशत् कर्म क्षय कारका महर्षयस्तेषां।

अनंतावधि जिनानाम् जिसका अंत नहीं होवे उसको अनंत कहते हैं। दूसरे भव में साथ जाने वाले ज्ञान को अनंत अवधि ज्ञान कहा जाता है। उस ज्ञान के धारक एक देश कर्मों के नष्ट करने वाले महर्षियों को नमस्कार हो। अनंत अवधि ज्ञान के धारक जिन भगवान को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो कोट्ठबुद्धिणं कोट्ठबुद्धिणं बुद्धिनां कोष्टांगार के घृत भूरि धान्या नाम विनष्टाव्यतीकीर्णानां यथावस्थानं तथैवा च स्थान मव धारित ग्रंथानां यस्यां बुधौ सा कोष्ट बुद्धि तयो माहात्म्याद्विध ाते येषां ते कोष्ट बुद्धय।

कोष्ठबुद्धिनां जिस प्रकार बड़े भारी धानों के कोठों में धान बिना नष्ट हुए और बिना बिखरे हुए जैसे के तैसे रहते हैं। उसी प्रकार उनकी बुद्धि में याद किये हुए ग्रन्थों का उसी प्रकार का माहात्म्य होता है। उनको कोष्ठ बुद्धि वाले कहते हैं।

ॐ अर्हं ॐ णमो बीज बुद्धिणं विशिष्ट क्षेत्रे कालादि सहाय मेकमप्युप्तं बीज अनेक बीज प्रदं यथा भवति तथैक बीज पद ग्रहणांऽदनेक पदार्थ प्रति पतिर्यस्यां बुधौ सा बीज बुद्धिः सातपः प्रभावाद्विद्यते येषांते बीज बुद्धयः उभयत्र तद्योगोत्र्रच्छष्टयं।

जिस तरह से क्षेत्र कालादि की सहायता पाकर एक बीज से अनेक बीजों की उत्पत्ति होती है। उसी तरह एक बीज अक्षर से शेष शास्त्रों को जानने से बीज बुद्धि जिन के तप के प्रभाव से रहती है।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो पादाणु सारीणं पादाण सारीणं आदावंते यत्र तत्र चैकपद ग्रहणत समस्त ग्रंथस्यात् तस्यावधारणं यस्यांबुद्धौ सा पादानुसारिणी बुद्धि सा तपो माहात्म्यादि विद्यते येषां ते पदानुसारि बुद्धयः आपत्वाद्बुद्धिशब्दा प्रयोगः।

किसी ग्रंथ का एक पद के ग्रहण करने से समस्त ग्रंथ उनकी बुद्धि से जाने वा याद रहते हैं।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो संभिन्न सोदराणं समस्त शब्द प्ररूपक मुनि भिन्न कहने वालों को नमस्कार हो ।

सम्यक्तं कर व्यतिरेकेण भिन्न विविक्तं शब्दरूपं श्रुणोतीति संभिन्न श्रोत्री बुद्धि द्वादश योजनायाम नव योजन विस्तार चक्रवर्ति स्कंधा वावरोत्पन्न नर करमाद्यक्षरानक्षरात्मक शब्द संदोहस्या न्योन्य विभिन्न स्य युगपत प्रतिभासो बुद्धौ सत्यां भवति सा संभिन्न श्रोत्रीत्यर्थ सा तपः प्रभावद्विद्यते येषां ते संभिन्नश्रोतारः।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो सयं बुद्धाणंः।

अपने आप वैराग्य के कारण कुछ न देखकर बिना दूसरे के उपदेश के वैरागी हो वह स्वयं बुद्ध है।

ये वैराग्य कारणं किंचिद् दृष्ट्वा परोपदेशं वानपेक्ष स्वयमेव वैराग्य गतास्ते स्वयं बुद्धा।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो पत्तेय बुद्धाणं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि धारी मुनि को नमस्कार हो गरुड नागादि मान मदवादी जिनके प्रताप से शांत होते हैं।

प्रत्येकान्निसिता बुद्धा प्रत्येक बुद्धा यथा अंजना विलयात् वृषभनाथ ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो बोहिय बुद्धाणं बोधित।

हे बुद्ध ज्ञान जिनमें उनको नमस्कार हो।

ये वैराग्य कारणं भोगाशक्ता शरीरादिष्व शाश्वतादिरूपं प्रदर्श्य वैराग्यं नीता स्ते बोधित बुद्धा यथा सगर चक्रवर्ती।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उज्जमदीणं- सूक्ष्म पदार्थ अनेक जानने वाले ऋजु मति धारी शांति पुष्टि के करता ऋद्धिधारी मुनि को नमस्कार हो।

ऋजु मतिर्मनः पर्यय ज्ञानिनां।

मनपर्यय ज्ञान के धारी मुनिराजों को नमस्कार है।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो विउलमदीणं विपुल मतिर्मनः पर्य ज्ञानिनां विपुल मति ज्यौ।

मनः पर्ययः ज्ञान के धारी मुनि सर्वशास्त्र के धारी क्षण क्षण मात्र में हो उनको नमस्कार।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो दश पुव्वीणं अभिन्न दश पूर्व धारिणं।

दस पूर्व के धारी मुनिराजों को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो चउदश पुव्वीणं उत्पातादि चतुर्दश पूर्व्वाणां।

चौदह पूर्व के धारी मुनिराजों को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो अट्ठंग महानिमित्त कुशलाणं अष्टांग महानिमित कुशलाणं।

अंतरिक्ष भौम, अंग, स्वर, व्यंजन, लक्षण, चिन्ह, स्वप्न, यह आठ महानिमित्तं सूर्य, चन्द्रग्रह, नक्षत्र, उदय, अस्त के लक्षण जानकर शुभ, अशुभ फल कहे सो अंतरिक्ष, निमित्त, उद्यान, वापिका पर्वत, नदी, सरोवर आदि लक्षण जानकर भूमिगत, रत्न, सुवर्णादि को जाने वह भौम निमित्तज्ञान तिर्यंच अथवा मनुष्यों के लक्षण प्रकृति, रस, रुधिर, प्रमुख धातु को देखकर शरीर वर्ण गंध उच्च अवयव को देखकर जो निमित्त ज्ञान उत्पन्न हो वह अंग निमित्त है।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो विउव्वणं इड्डि पत्ताणं विविधा क्रिया अणु महदादि रूप तया काया देः कारणं यस्यामुद्धौ सा विक्रिया ऋद्धिः तां प्राप्ताणां।

विक्रिया ऋद्धि के द्वारा शरीर छोटा बड़ा बनाया जाता है जैसे विष्णुकुमार मुनि यह विक्रिया ऋद्धि जिनको प्राप्त हुई है उनको नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो विज्जाहराणं अंग पूर्व वस्तु प्राभृतादि लक्षण सकल विद्याधर भूतानां।

उपदेश से या बिना उपदेश से भावपूर्वक समस्त वृतांत जाने उन्हें विद्याधर मुनि कहिये, सो विद्याधरों की तरह आकाश में उड़कर चले ऐसे मुनि को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो चारणाणं अष्ट विद्याश्चारणां भवंति जल जंघा तंतु फल फुल्लवीय आयासथि गई कुशला अट्ठ विह चारण गुणा वइरि कम हीं सुविहरंति इत्यभिधानात्।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो पणहसमणाणं विद्या धराहि संतोपि तपो गृन्हं ति तेषां प्रज्ञाऽतिशय स्तथैवो त्मद्यतई तित्ते प्रज्ञा श्रवण उच्यंते।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो आगास गामीणं चारण शब्देनोक्तानामऽप्याकाश गामिनां इतर चारणेभ्यो विशिष्टित्वात्पुनः पृथग् उपादानं।

विद्याधर श्रेणी पर्यंत आकाश गमन करे सो आकाशगामी ऋद्धि धारी मुनिराजों को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो आसीविषाणं आसीरा शंसनं तदेव विषंयेषां मिय स्वेतयुक्ते नियमेन म्रियते उपलक्षण मेतत् तेनाशीरमृतानामित्यरित्यपि गम्यते शापानुग्रह समर्थानामित्यर्थः यदि हिते परस्यापकारमाशंस ते तदापकारो भवति यदोपकार माशं शंसंते तदो पकारो भवतीति।

तपोबल से मुनि ऋद्धि प्राप्त कर मुख से अगर कहे कि तु मर जा तो उसी क्षण मर जाय ऐसी सामर्थ्य जिनमें हो उनका नाम आसी विष है फल तथा सुमरण से सर्पादि का विष नष्ट होता है।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो दिट्ठि विसाणं।

इदं अप्पुलक्षणार्थतेन दृष्टयमृतानामिति गम्यते यदि हिते अप्रसन्न दृष्टया परभव लोकं ते तदा तद्भस्म करणे तेषां सामर्थ्य अथ प्रसन्न दृष्टया तमवलोकंते तदा ऋद्धि वृद्धि नीरोगतादि.करणे तेषां सामर्थ्या तपः प्रभावात् दृष्टि विशेष एवहि ते ताद्दशोनपुनः पुनरुपकार मपकारं व्रा ते कस्य चित्त कुर्वति शत्रो मित्रे च तेषां परमोदासीन तो पेतत्वात्।

तप बल से मुनि क्रोध को प्राप्त कर देखते ही मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है। दृष्टि मात्र से दूसरे को देखने की जिनकी सामर्थ्य होती है। अगर प्रसन्न दृष्टि से देखे तो ऋद्धि वृद्धि निरोगता आदि करने की जिनकी सामर्थ्य होती है। तप के प्रभाव से उपकार और अपकार विचारने मात्र से कर सकते हैं तथा स्थावर जंगम विष दृष्टि मात्र से दूर होवे ऐसी ऋद्धि के धारी मुनियों को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो उग्गतवाणं

ये पंचम्यांऽष्टम्यां चतुर्दश्यां च प्रति ज्ञातोपवसा लाभ द्वये त्रये वा तथैव निर्व्वाह यंति ते ये च प्रकार उग्र तपसः।

पांच उपवास, आठ उपवास, चार उपवास, पंचमी, अष्टमी, चतुर्दशी को उपवास ग्रहण किया है, जिन्होंने उनको अगर उपवास पारणा का अलाभ होय तो फिर उपवास करे। तीन उपवास, चार उपवास, पांच उपवास करके काल का निर्वाह कर इसे उग्रतप कहते हैं। ऐसे उग्रतप करने वाले मुनिराज को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो दित्ततवाणं तपः प्रभावोदभूतया देह दीप्त्या प्रहतांधकाराणां।

शरीर की दीप्ति कर बारह सूर्य का तेज जिनमें होय उसे दीप्त ऋद्धि कहते हैं। शत्रु सेना क्षण में भस्म करने की शक्ति दीप्त ऋद्धि से होती है।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो तत्तत्तवाणं तप प्रभावा देव तप्ताय: पिंडयतित जल कणवत गृहीत अहार शोषणान्नीहार रहिताणां।

गरम लोहे के पिंड में जल बिन्दु भस्म होय उसी तरह ग्रहण किये हुए आहार का शोषण कर आहार रहित से दिखे उसे तप्त ऋद्धि कहते हैं। दावानल अग्नि भी जो शांत करे ऐसे तप्त तप ऋद्धि धारी मुनिराजों को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो महात्तवाणं पक्ष मासपवासाऽद्यनुष्टान पराणां।

पक्षमास, षणमास, वर्षोपवास करने वाले मुनि महातप्त ऋद्धि धारी कहलाते हैं। वर्ष उपवास पीछे पारणा करे और केवल ज्ञान उपजे पीछे पारणा नहीं करे इनको स्मरण करने से सर्व शांति होती है।

ॐ अर्हं ॐ णमो धोरत्तवाणं सिंह शार्दूलद्या कुलेषु गिरि गह्वरादिषु भयानक श्मशानेषु च प्रचुरतर शीतवाना तपदंश मशकादि युक्तेषु गत्वा दुद्धरोपसर्ग सहन पराणां।

सिंह, व्याघ्र, चीता आदि क्रूर जानवरों का उपसर्ग आवे भयंकर पर्वत गुफा श्मसान में अत्यधिक शीतवान धूप आदि सहकर दर्द्धुर उपसर्ग सहे उसे घोर तप ऋद्धि कहते हैं।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो घोर गुणाणं घोर अद्‌भुता महांतो गुणां येषां ते घोर गुणाणं।

घोर वीर गुणों के धारी मुनिराजों को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो घोर गुण परक्कमाणं पराक्रमो दुर्द्धर व्रत धारण सामर्थ्यं घोरः अचित्यं पराक्रमो येषां तेषां।

भूत वेताल प्रेत राक्षस शाकिनी आदि घोर दुर्द्धर व्रत धारण करने को

जिनका पराक्रम सामर्थ्य हो ऐसे मुनिराजों को देखते ही भय को प्राप्त हों तथा क्रूर जीव शांति का प्राप्त हों उन घोर गुण पराक्रम धारी मुनियों को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो घोर गुण ब्रह्मचारीणं

घोर दुर्द्धरोगुणा निरतिचारता लक्षणो यस्य तत घोर गुणां दिव्यां गुणां लिंगनादि भिरप्य क्षुभित चितं अथवा घोरा अद्भुताः गुणा यस्मात्प्राणिनां भवंति तत घोर गुणं तच्च तद्ब्रह्मचर्यं तच्चरंत्यनु तिष्टं तीत्येवं शीलानां।

अतिचार रहित घोर दुर्द्धर दिव्य गुणों से भूषित ब्रह्मचर्य शीलधर्म का पालन करने वाले ऐसे मुनिराज जिनके चरण सिंह, व्याघ्र आदि से सेवित हैं, जिनके स्मरण मात्र से जन्मान्तर के बैर शांत होय उनको नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं आम अपक्व आहारः सर्व औषधि तां प्राप्तानां।

आमर्ष ऋद्धि के संयोग से समस्त रोग व अपक आहार के रोग जाते रहे, आमर्ष औषधि धारक मुनि को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो खेलोसहिपत्ताणं क्ष्वेलो निष्टीवनं सएवोषधिः तां प्राप्ताणां सा वा प्राप्तायेषा स्तेषां।

जिन मुनि के खंकार को छूने मात्र से दूसरों के रोग नष्ट हो उन मुनियों को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो जल्लोसहि पत्ताणं सर्वांग मलो जल्लः सः एवौषधि तां प्राप्तानां।

जिन मुनि के जल ऋद्धि उपजे तिनके सर्वांग मल जल के स्पर्श मात्र से दूसरे रोग नष्ट हो उसे नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो विप्पोसहिपत्ताणं विपुधो ब्रह्म विदंवः शेषं पूर्ववत्।

जिन मुनि की विष्टा के स्पर्श से दूसरे के सब रोग नष्ट हो उनको नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो सव्वोसहिपत्ताणं सर्व मूत्र पुरीष नख केशादिकं शेषं पूर्ववत्।

जिन मुनि के मूत्र विष्टा केश आदि मलों के स्पर्श से दूसरे के सब रोग नष्ट हो उनको नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो मणबलिणं नो इंद्रय श्रुतावरण वीर्यांतराय क्षयोपशम प्रकर्षे सति स्वेद मंतरेणांत मुहूर्ते सकल श्रुतार्थ चिंतनम्व-धातुम समर्थास्ते मनो बलिन्स्तेषां।

अंतर्मुहूर्त में समस्त शास्त्रों का चिंतवन करने की सामर्थ्य वान होवे सो मण बलि ऋद्धिधारी मुनिराजों को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो वचो बलिणं वचो जिव्हाश्रुतावरण वीर्यांतराय क्षयोपशम प्रकर्षे सति अंर्तर्मुहूर्ते सकलश्रुतोच्चारण समर्थास्तेवाग वलिन स्तेषां।

अंतर्मुहूर्त में समस्त शास्त्र के पाठ करने की जिनकी सामर्थ्य है सो वचनबलि है।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो कायबलिणं वीर्यांतराय क्षयोपशमादा विर्भूता साधारण काय बल त्वादंगुल्यग्रेण त्रिभुवन क्षोभनादिनि पुंसा स्तेकाय बलिन स्तेषां।

अंगुली के अग्रभाग से तीन लोक को उठाकर दूसरी जगह स्थापन करने की जिनकी सामर्थ्य है ऐसे कायबली ऋद्धिधारी मुनियों को नमस्कार है।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो खीरसवीणं। क्षीरस्य श्रावो श्रवणं स्वादो वासोस्ति ते क्षीर श्रवण: क्षीर स्वापि नोवा तेषांक दशन मपिहि पाणौ

पतितं तपो माहात्म्यात क्षीरं श्रवति स्वदत्ते वा ए व मुत्तर त्रयोपि मधुर शब्देन तु मधुर शब्देन तु मधुरो रसो गृह्यते।

जिन मुनि के हाथ में रस रहित भोजन रखने से वह भोजन खीर समान मुधर हो व खीर श्रवे वे खीरश्रावि ऋद्धि धारक है उनको नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो सप्पिसवीणं। सर्पिषो घृतस्य श्रावः श्रवणं स्वादो वा येषां ते सर्पिश्राविणः सर्पि स्वादिनो वाकदशन मपिहि पाणौ पतितं तपो माहात्म्यत सर्प्पिः श्रवति स्वदत्ते वा।

जिनके हाथ से लूखा भोजन से घृत झरने लगे अथवा मुनि के वचन घृत की तरह तृप्ति करे सो घृत श्राविणीं ऋद्धि है।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो मुहरस वीणं। मधो मधुर सस्य श्रावक श्रवणं स्वादो वा येषांते मधुर श्राविणः मधुर स्वादिनोवाक दशनः मपि हि पाणौ पतितं तपो माहात्म्यात् मधुर श्रवति स्वदत्ते वा।

जिन मुनि के हाथ में रखा हुआ रस रहित भोजन मिष्टान हो जावे अथवा जिनके वचन श्रोता को मिष्ट गुण को प्राप्त हो सो मधुर, श्राविणी धारी मुनियों को नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो अमिय सवीणं। अमृतस्य श्रावः श्रवणं वा स्वादो वा येषां ते अमृत स्वादिनो वाक दशनमपि हि पाणौ पतितं तपोमाहात्म्यात् अमृतं श्रवति स्वदत्तेवा।

जिन मुनिराज के हाथ में चाहे जैसा रस रहित आहार हो सो आहार अमृत समान हो जाय या जिनके वचन सुनने से अमृत समान मालूम हो उनको नमस्कार हो।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो अक्षीण महाणसाणं। अक्षीणं महानसं रसबती येषां ते यतो भाजना दुद्धतस्य भोजनं तेभ्यो दत्त तं चक्र वर्ति स्कंधा वारेपि भोजिते ऋद्धि विशेष वशातन् क्षीयते आ अस्तमयात।

जिसके घर मुनि भोजन आहार करे तो उस के घर भोजन की कमी नहीं होए उसी दिन कम नहीं होय। चक्रवर्ती की सेना भोजन करे तो भी घटे नहीं यह अक्षीणमहाणस ऋद्धि है। इस ऋद्धि से कल्पवृक्ष की तरह वांछित फल मिले।

ॐ अर्हं ॐ णमोवडमाणाणं अवसमंतांद ऋद्धिं व्याप्तं मानं ज्ञानं येषां।

तपकर परम ऋद्धि से जिनके मान बढे हैं। निर्मल चारित्र के धारी ऐसे मुनि वर्द्धमान भगवान है उनको नमस्कार है।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो सिद्धाय दणाणं सिद्धानां मुक्तात्मा नामा यतनानि निर्वाण स्थानानि।

लोक के अन्दर सर्व सिद्धायतन चैत्यालय है उनको नमस्कार हो निर्मल भावों से जप करने से राजादि वश में होते हैं।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो च्चारणाष्यो सहिपत्ताणं।

जिन मुनिराजों के उच्चारण रूपी औषधि के स्पर्श से मनुष्यों के रोग नष्ट होवे उन मुनियों को नमस्कार होवे।

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ णमो भयवदो महदि महावीर वडमाण बुद्धि रेसीणं चेदि भगवतः सहज विशिष्ट मत्यादि ज्ञान त्रय वतः पूजातिशय वतो वा महति महावीरः बुद्धि रिसीणं चेदि बुद्धो हेयो पादेय विवेक सम्पन्न ऋद्धिः प्रत्यक्ष वेदी च शब्दादि वीरादिनाम ग्रहणं इति शब्देन प्रकारार्थेन एवं प्रकारेभ्यो महर्षिभ्यो नमो।

भगवान महावीर वर्द्धमान बुद्धि ऋद्धि के धारी मुनिराजों को नमस्कार होय भगवान के स्मरण मात्र से बलवान वैरी स्मरण करने वालों को नहीं जीत सके।

इति शब्देन प्रकारार्थेन एवं प्रकारेभ्यो महर्षिभ्योनमः

—●—

पार्श्वनाथ स्तोत्र एवं सिद्धि

कार्य सिद्धि

श्री मद्देवेन्द्र वृंदारक मुकुट मणि ज्योतिषां चक्रवाले-।
र्व्यालिढिं पाद पीठं शठ कमठ कृतोपद्रवा-र्वाधितस्य।।
लोकालोकावभासि स्फुर दुरु विमलज्ञान सद्दीपदीपः।
प्रध्वस्त ध्वांत जालः स वितरतु सुखं पार्श्वनाथोत्रनित्यं।।१।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः विभास्वन्मरकतमणि भाक्रांत मूर्त्ते हि।
वं मं हं सं तं बीज मंत्रैः कृत सकल जगत क्षेम रक्षोरुवक्षः।।
क्षीं क्षीं क्षूं क्षें समस्त क्षिति तल महित ज्योति क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्षिप्त।
बीजात्मक सकल त नोनः सदा पार्श्वनाथः मां रक्ष रक्ष।।२।।

ह्रीं कारं रेफ युक्तं र र र र र रां देव सं सं प्रयुक्तं।
ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं सरेफं वियदमल कलापंचकोद्भासि।।
हूं हूं घूं घूं धूम्र वर्णै रखिलमिह जगन्मेवि देह्यां मुवश्यं।
मंत्रं पठंतं त्रिजगदधिपते पातु मां पार्श्व नित्यं पार्श्वमां रक्षः रक्षः।।३।

ॐ ह्रीं क्रों सर्व वश्यं कुरु कुरु सरसं क्रामणं तिष्ट तिष्ट।
हूं हूं हूं रक्ष रक्षं प्रबल बल महाभैरवाराति भीतं।।
द्रां द्रीं द्रूं द्रावय हन हन फट फट वषट बंध बंधः।
स्वाहा मंत्रं पठंतं त्रि जगुदधि पते पार्श्वमां रक्ष नित्यं।।४।।

हंसः झ्वीं क्ष्वीं स हंसः कुवलय कलि तैरं कितांग प्रसूनै।
ॐ वं व्हः प क्षि हं हं हर हर हर हु पक्षि पः पक्षि कोपं।।
वं झं हं संभवं सः सर सर सर सुंसः सदा बीज मंत्रौः।
स्त्राय स्वस्थावरादि प्रवल विष मुखं हारिभिः पार्श्वनाथैः।।५।।

क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्म: एतैरहि पति विनुते मंत्र बीजेश, नित्यं।
हा हा करोग्र नादैर्ज्वल दनल शिखाकल्प दीर्घोर्द्धकेशै:।।
पिंगाक्षै र्ल्लोल जिव्है र्विषम विषधरा लं कृतै स्तीक्ष्ण दंष्ट्रै:।
भूतै प्रेतै पिशाचैरनद्य कृत महोपद्रवाद्र रक्षं:।।६।।

उँ झ्रौं झ्रं किनिनां सर्पादि हर मदंभिंदि सुद्धेर्द्धबुद्धे।
ग्लौं क्ष्मं ठं दिव्य जिव्हा गति मर्ति र्कुपतिं स्तंभनं सं विधेहि।।
फट। फट फट सर्वरोग ग्रहमरणभयोच्चाटनं चैवं।
पार्श्वत्राय स्वाशेष दोषाद मरनर वरैर्नूत पादारविंद:।।७।।

स्क्रां स्क्रीं स्क्रूं स्क्रौं स्क्र: प्रवल वल फलं मंत्र बीजं जि।
नेन्द्र रां रीं रूं रौं र: एभि परम तरहितं पार्श्व देवादि देवं।।
क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्र: मेति ज ज ज ज ज जराज र्जरि कृत्यं देवं।
धूं धूं धूं धूम्र वर्ण दुरित विहारितं पार्श्वमां रक्ष नित्यं।।८।।

इत्थं मंत्राक्ष रोत्थं वचन मनुपमं पार्श्वनाथस्य नित्यं।
विद्वेषोच्चाटन स्तंभन जनवश कृत पाप रोगापनोदि।।
प्रोत्सर्पज्जंगम स्थावर विषम विषध्वसनं चायु दीघ।
मारोग्यैश्वर्व्यादि भक्त्या स्मरति पठति य: स्तोति तस्येष्ट सिद्धि।।९।।

मंत्राक्षरों से निकला हुआ उपमा रहित वचन श्री पार्श्वनाथ जी का स्तोत्र है। यह विद्वेषण उच्चाटन, स्तंभन और वशीकरण करता है। रोगों को नष्ट करता है। बैठे हुए जंगम और स्थावर कठिन विषों को नष्ट करता है। बड़ी आयु आरोग्य और ऐश्वर्य देता है। यहां तक कि जो इसको भक्ति पूर्वक पढ़ते हैं स्मरण करते हैं अथवा इसकी स्तुति करते हैं उसकी इच्छा किए हुए सब कार्य सिद्ध होते हैं।

अथ श्री पार्श्वनाथस्य पाद पद्यौ प्रपूज्येत।
पंचोपचार विधिना मूलं यंत्र ततोर्च्चं येत्।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान के चरण कमलों को पहले पंच उपचारों से पूजे और इसके पश्चात् मूल यंत्र का पूजन करें।

सन्निद्यो पार्श्वनाथस्य मूलमंत्रं ततो जपेत।
लक्षं तद्दशमांशं च होमं कुर्यात् स सिद्धयति।।

इसके पश्चात् श्री पार्श्वनाथ भगवान के समीप बैठकर मूल मंत्र का एक लाख जप करके उसका दसवाँ भाग अर्थात दस हजार होम करने से मंत्र सिद्ध होता है।

प्रजप्तः सप्त कृत्वोयं प्रयुक्तः सर्वमां मयं विघ्न।
विषं भयं दुष्टं ग्रहादींश्च विनाशयेत्।।

इसके पश्चात् इसको सात बार जपने से ही सब रोग, विघ्न, विष, भय और दुष्ट ग्रहों को नष्ट करता है।

वशयेत पुरुषान् राज्ञः स्त्रीश्च सं स्तंभयेदरीन।
आत्मनश्च संदापदभ्यो विदधीता भिरक्षणं।।

यह राजा पुरुष स्त्रियों को वश में करता है। शत्रुओं का स्तंभन करता है और निरंतर अपनी रक्षा करता है।

ज्वर हरण मंत्रः

नमो नमो भगवते बीजस्याधो विलिख्य तस्याथः।
न्यस्येच्च पार्श्वनाथये त्यों उँ ह्रीं बीज वेष्ट्रांततः।।

ॐ नमो भगवते बीज के नीचे नाम लिखकर उसके नीचे श्री पार्श्वनाथाय लिखे और उसको क्रम से ॐ ह्रीं से वेष्टन करें।

वहि रष्टं दलं कमलं दलेषु शेषाक्षरापि मंत्रस्य,।
रक्षोहर दलयोस्तु द्वे द्वे मंत्राक्षरे दद्यात्।।

उसके बाहर आठ दल का कमल बनाकर उनमें मंत्र के शेष अक्षरों को लिखे रक्ष हर एक दलों में दो दो अक्षर दे देवें।

नामोध्वर्दा विलिखित बीजाद्येना मुना बहिस्तेषां।
मंत्रेणवेष्टयित्वा विलेखिद्भूमंडलं बाह्ये।।

नाम के ऊपर और नीचे लिखे हुए इस बीज आदि के बाहर यंत्र को इस मंत्र से वेष्टित करके बाहर पृथ्वी मंडल बनावे।

यंत्र मिदं नव कमलं योद्भावन शुभंकं सभाजने लिखितं।
मंत्रेणार्पित्तमंभः पीतं शमयेत् ज्वरान् सर्वान।।

इस नवीन कमल वाले उत्तम यंत्र को उत्तम पात्र में (अथवा ताम्रपत्र) लिख कर उसमें इस मंत्र से मंत्रित किये हुए जल को पीता हैं। उसके सब प्रकार के ज्वर शांत हो जाते हैं।

मंत्र– ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय ऐहि ऐहि ह्रीं ह्रीं भगवती दह दह हन् हन् चूर्णय चूर्णय भंजय भंजय कडु मर्द्दय मर्द्दय ह्म्ल्व्र्यूं आवेशय आवेशय हूँ फट् स्वाहा।

मार्तंड संख्यया जापं सह च कुसुमैः।
पुराग्त्तद्दशांसेन होमेनाप्येष मंत्रः प्रसिद्धयति।।

पहले इस मंत्र की फूलों के साथ बारह हजार जपे और बारह सौ होम से सिद्ध करके तब काम में लेना चाहिए।

ज्वर ग्रह पिशाचाद्या स्तोभं कृत्वा शिरो व्यथां।
नश्यतिं पार्श्वनाथस्य मंत्रेण तेन तत्क्षणात्।।

पार्श्वनाथ स्वामी के इस मंत्र से ज्वर ग्रह पिशाच आदि रुक जाते हैं सिर का दर्द उसी क्षण नष्ट हो जाता है।

नील कंठ मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवते पार्श्व तीर्थंकराय नीलकंठी नीलकंठी निर्मलाक्षि निर्मलाक्षी अमृतवर्षिणी अमृतवर्षिणी शीघ्रं शीघ्रं आवेशय एहि पर ॐ क्षीं फट् स्वाहा।

अथवा

मंत्र– ॐ नमो भगवते पार्श्व तीर्थंकराय नीलकंठी नीलकंठी, निर्मलाक्षि निर्मलाक्षि, नागदूती नागदूती, अमृतवर्षिणी शीघ्रं-शीघ्रं आवेशय आवेश्य एहि एहि पर पर ॐ फट् स्वाहा।

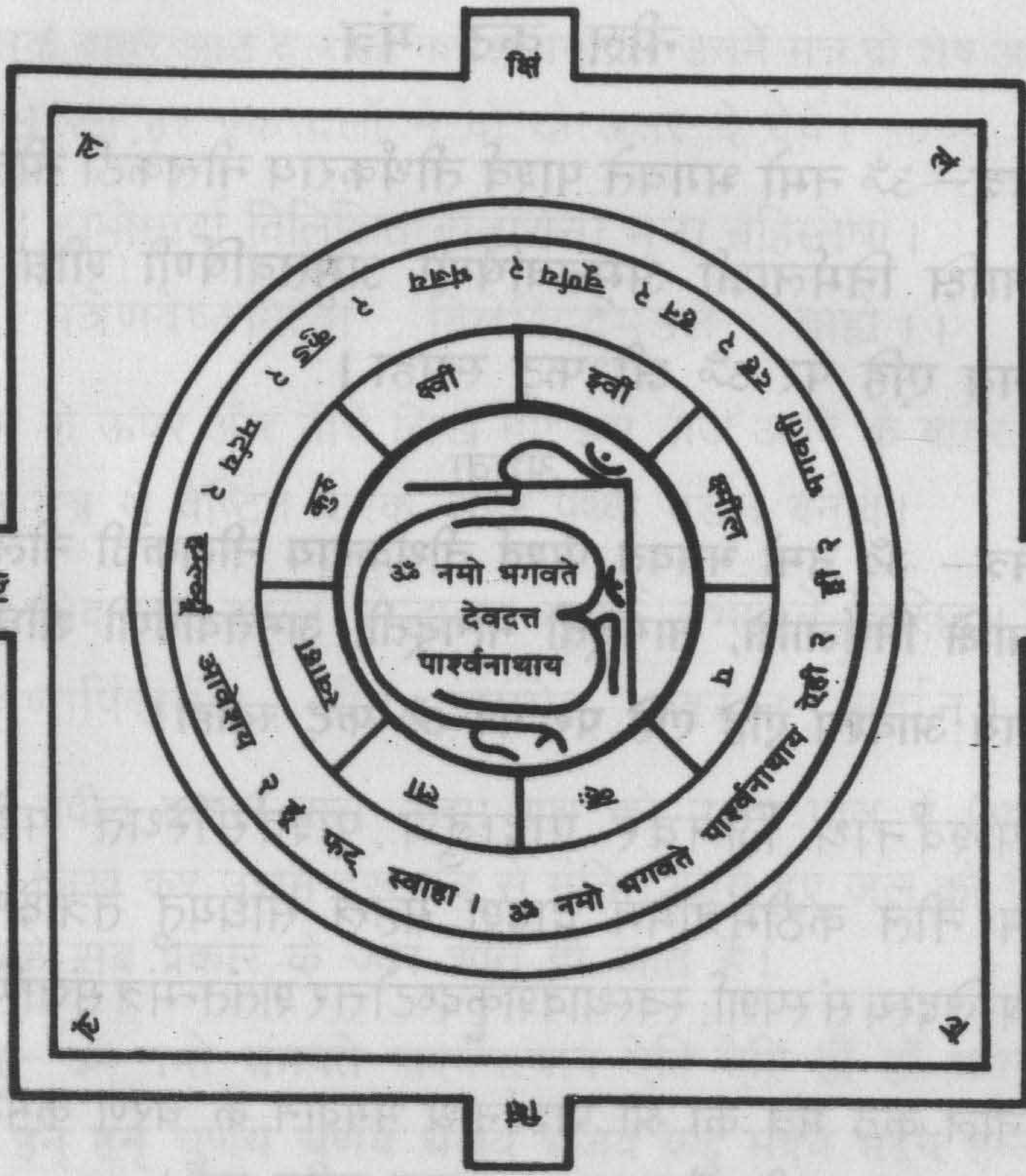
श्री पार्श्वनाथ जिनवर पादांबुज पार्श्वसंस्थितं पद्मैः।
संजप्प नील कंठीमंत्रमिमं द्वादश सहस्त्रं साधयतु तत्रक्षिप्तं।
रुग्विष जिदस्य सं स्पर्शाः स्वस्थावेशकृदष्टोत्तर शतंतन्मंत्र संजाप्तिः।।

इस नील कंठ मंत्र का श्री पार्श्वनाथ भगवान के चरण कमलों के समीप बैठकर १२ हजार जाप्य करें।

इस मंत्र को १०८ बार जप कर शीघ्र ही सिद्ध कर लेना चाहिए।

विष एवं रोग नाशक मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवतो पार्श्व तीर्थंकराय काली मुखीरवीनां वासुकिनां कर्कोटकानां कपिलानां काल दंतानां काल दंष्टाणां काल दृष्ट्रं करालकानां अष्टादश वृश्चिकानां एकादशदेवतानां पणरसविष सर्पाणां षोडश मूषिकाणां षोडश मर्कटानां, व्यंतरं, विषं वा सर्प विषं वा सर्वरोग विनाशिनी, सर्व विद्या छेदिनी, आत्म विद्या रक्ष रक्ष हितंकारी हितंकारी, वशं करि वशंकरि, अत्र यं करि मनोहारि सर्व



रोग शमं करि भीम करिभीम भीष्ण दंष्ट्रा करालाय सर्वजन वंश कराय सर्वराज वशमानय वशमानय सर्वलोक मृगभूत पिशाचादीन वशमानय हन हन दह दह पंच पंच शीघ्रं शीघ्रं आवेशय आवेशय मुंच मुंच नमो भगवते पार्श्वतीर्थंकरेभ्यो नमो नमः स्वाहा।

इस मंत्र के द्वारा छूने से वह रोग और विष को जीतकर निरोग कर देता है।

केवली मंत्र

मंत्र– ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो भगवते त्रैलोक्यनाथाय नमोस्तु परमेश्वराय क्ष्रीं नमो भगवते केवलि तीर्थंकराय देवकरे देवकरे, यक्षकरे यक्षकरे

राक्षसकरे, राक्षसकरे देव कटाक्ष करे, देव कटाक्ष करे, गरुडाक्ष करे गरुडाक्ष करे, गंधर्वाक्ष करे गंधर्वाक्ष करे, भूताक्ष करे भूताक्ष करे, पिशाचक्ष करे- पिशाचक्ष करे, राक्षसकरे- राक्षस करे, साधु राक्षस करे, साधु राक्षस करे, सर्वाक्ष करे, सर्वाक्ष करे, गवाक्ष करे, पिंगलाक्षकरे पिंगलाक्ष करे, कनाताक्ष करे कनाताक्ष करे गुंजाक्षकरे गुंजाक्षकरे मंडलाक्ष करे मंडलाक्ष करे, युद्धाक्ष करे, युद्धाक्ष करे, दक्ष करे दक्ष करे, धरयु धरयु, धर-धर तव-तव हुत-हुत सुच-सुच भूत-भूत, पुष्प-पुष्प दुष्ट-दुष्ट, महादुष्ट- महादुष्ट ग्रहदुष्ट -ग्रहदुष्ट, पर पर, हर-हर, भर-भर गरुडवाहिनी हुरू हुरू वशनि फट् फट् हूं फट् ह्रीं हूं फट् चारण तीर्थंकरेभ्य स्वाहा।

द्वादश सहस्त्र जापात् होमाचायं प्रसाधितः कुर्यात्।
केवलि तीर्थकरव्यो मंत्रः सर्वाणि कार्याणि।।

अष्टोत्तर शत जपतः स्वकर तलान्योन्य ताडनं।
ग्रह शांति शत्रु क्षयं च कुरुते मंसुरिकां हरति भस्म जंतु कृज्जप्तं।।

तन्मंत्रितः मुदिकादि व्याधीन सर्वान प्रणाशयेत्पीतं।
तज्जप्ताः सं स्पृष्टाः पुष्पंति फलंति च द्रुम लताद्याः।।

तन्मंत्रितः सिकता कृत परिवृत्ति सं रक्षिते।
भागः मूषक मूषिक विषधर शार्दूलाद्यै परिहियंते।।

यह केवली मंत्र तीर्थंकर मंत्र बारह हजार जाप और होम से सिद्ध होता है। और सब कार्यों को करता हैं यह मंत्र १०८ बार जप कर हथेली बजाने से ग्रहों की शांति तथा शत्रु का नाश करता है। इस मंत्र से जपी हुई भस्म को देने से मसूरिका (शीतला चेचक) दूर होती है।

इस मंत्र से मंत्रित जल को पीने से सर्व रोग नष्ट होते हैं इस मंत्र को जप कर छूने से वृक्ष लता आदि पर फल फूल आने लगते हैं।

इस मंत्र से जपी हुई बालू को मार्ग में अपने चारों तरफ डालकर मार्ग की रक्षा करने से चूहे, सर्प और सिंह आदि मार्ग से भाग जाते हैं।

रक्षा मंत्र

मंत्र - ॐ नमो भगवते अरहंत सिद्ध आईरिय उवज्झाया साधु रक्षा, चतुर्विंशंति तीर्थंकर रक्षा, ब्रह्मा रक्षा, विष्णु रक्षा, क्षेत्र शत कोटि पिशाच रक्षा, त्रियस्त्रिशदिद्रं रक्षा, ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः स्वाहा।

सं सिद्ध सर्व रक्षाख्यो मंत्रोयं सार्वकार्मिकैः।
अनेन विहितं स्नानं शांत्यादि शुभ कर्मकृत।।

यह सर्व रक्षा मंत्र सब कार्यों को सिद्ध करता है। इस मंत्र से स्नान करने से शांति आदि उत्तम कार्य होते हैं।

व्याधि हरण मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवते पार्श्वचंद्राय अष्टमहासिद्धि कराय लूति ज्वाला गर्द्दभ सर्वशूल मूल व्याधि दुष्ट वृण विनाशाय अनेक विधि विष संहाराय छिंद छिंद भिंद भिंद ज्वाला ग्रह संतापं हन हन रण रण रुण रुण कुण कुण सिलि सिलि चिलि चिलि मिलि मिलि कलि कलि ॐ ह्रां हंसः ॐ ह्रीं हंसः ॐ ह्रूं ॐ ह्रौं हंसः ॐ ह्रः हंस ॐ हंस ग्लौं क्ष्मं ठः ठः स्वाहा।

सर्वव्याधि हरो मंत्रः श्री पार्श्वस्य जिनेशिनः।
जपे होमादिनानित्यं सर्वकर्म करो भवेत्।।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी का सर्व व्याधि हरण मंत्र जप होम इत्यादि से सदा ही सब कार्यों को करता है।

सर्वशान्ति मंत्र

मंत्र –– ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय फणामणि मंडिताय कमठ विध्वंसनाय सर्व ग्रहोच्चाटनाय सर्वविष हराय सर्वशांति कांति च कुरु कुरु ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा मम् सर्व शांति कुरु कुरु स्वधा स्वाहा।

श्रीमत: पार्श्वनाथस्य मंत्र: सर्वार्थ साधन: ।
शांति पुष्टि करोत्येव मंत्राराधन योगत: ।।१६।।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी का मंत्र सब प्रयोजनों को सिद्ध करने वाला है। मंत्र सिद्धि होने से शान्ति और पुष्टि करता है।

घुमाने वाला मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं पद्मावती नालिकरं भ्रामय भ्रामय शीघ्रं शीघ्रं हूं फट् स्वाहा।

यह कुंभ को घुमाने वाला पद्मावती देवी का मंत्र अपने प्रभाव से शीघ्र ही नारियल को घुमाता है।

ऋषि मंडल स्तोत्र एवं यंत्र मंत्र

आद्यंताऽक्षर सं लक्ष्यमक्षरं व्याप्य यत्स्थितं।
अग्नि ज्वाला समं नादं विंदु रेखा समन्वितं।।1।।
अग्नि ज्वाला समाक्रांतं मनोमल विशोधनं।
दैदीप्यमानं हृत्पद्मे तत्पदं नौमि निर्मलं।।2।।

स्वर व्यंजनों के आदि के अक्षर अ और अंत का अक्षर ह को अग्निज्वाला (र) और इसके मस्तक पर बिन्दु और अर्धचन्द्र रेखा सहित करना अर्थात् अर्हं ऐसा बनाना यह अर्हं बीज अग्नि की ज्वाला के समान प्रकाश वाला है। मन के मैल पाप को धोने वाला निर्मल है और अर्हत पद का कहने वाला, प्रकाश मान अर्हं पद को हृदय के अष्टदल कमल में स्थापित करके उसको मन वचन काय से नमस्कार करता हूँ।

ॐ नमो: ऽर्हद्भ्य: इशेभ्य: ॐ सिद्धेभ्यो: नमो नम: ।
ॐ नम: सर्व सूरिभ्य: उपाध्यायेभ्य: ॐ नम: ।।३।।
ॐ नम: सर्व साधुभ्य: तत्त्व दृष्टिभ्य: ॐ नम: ।
ॐ नम: शुद्धे बोधेभ्यश्चारित्रेम्यो: नमो नम: ।।४।।

अर्हंत भगवान को जो ईश अर्थात तीन लोक के स्वामी है। अठारह दोष रहित हैं। चौत्तीस अतिशय आठ प्रतिहार्य, अनन्त चतुष्टय और छयालीस गुण सहित हैं। उनको नमस्कार हो। सूरि अर्थात् आचार्य छत्तीस गुण सहित, सर्व ऋद्धि के धारक, तद्भव मुक्तिगामी हैं। उनको नमस्कार हो। उपाध्याय परमेष्ठी हो संपूर्ण द्वादशांग के ज्ञाता पच्चीस गुण सहित तद्भव मोक्ष गामी हैं। उनको मेरा नमस्कार हो। सर्व साधु जो अट्ठाइस मूल गुण धारक तद्भव मोक्षगामी हैं तथा आठ अंग सहित सर्वोत्कृष्टज्ञान के धारक सर्व साधु परमेष्ठी को नमस्कार हो। सम्यकज्ञान तथा तत्त्वदृष्टि अर्थात सम्यक् दर्शन को नमस्कार हो। तेरह प्रकार के चारित्र धारी हैं उनको नमस्कार हो।

श्रेयसेऽस्तु श्रिये स्त्वेतऽर्हदाद्यष्टकं शुभं।
स्थानेष्वष्टसु संन्यस्तं पृथग् बीज समन्वितं।।५।।



श्रेयसे अर्थात कल्याण के कर्ता हैं, श्रेय लक्ष्मी के कर्त्ता हैं अर्हंत भगवान से आरंभ करके अर्थात अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय सर्वसाधु, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यकचारित्र आठों पद एवं कल्याण स्वरूप ॐ बीजाक्षर सहित अलग अलग आठ दिशाओं में स्थापन किये गये सुख देवे और लक्ष्मी को देवें।

आद्यं पदं शिरो रक्षेत् परं रक्षेतु मस्तकं।
तृतीय रक्षेन्नेत्रे द्वे तुर्यं रक्षेच्च नासिकां।।६।।
पंचमं तु मुखं रक्षेत् षष्ठं रक्षेत्तु घंटिकां।
सप्तम् रक्षेन्नाभ्यंतं पादांतं चाष्टमं पुनः।।७।।

अर्हंतादि आठ पदों में क्रम से पहला अरहंत पद शिर की रक्षा करो। दूसरा सिद्ध पद मस्तक की रक्षा करो। तीसरा आचार्य पद दोनों नत्रों की रक्षा करो। चौथा उपाध्याय पद नासिका (नाक) की रक्षा करो। पाँचवा सर्व साधु पद मुख की रक्षा करो। छटा सम्यकदर्शन पद गले की रक्षा करो। सातवाँ सम्यक ज्ञान पद नाभि की रक्षा करो। और आठवां सम्यकचारित्र पद पैरों की रक्षा करो।

पूर्वं प्रणवतः सांत सरेफो द्वित्रि पंचषान्
सप्ताष्टदश सूर्यांकान् श्रितो बिन्दु स्वरान् पृथक्।।८।।
पूज्यनामाक्षराद्यस्तु पंच दर्शन बोधकं
चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ह्रीं सांत समलं कृतः।।९।।

पहले तो प्रणव अर्थात् ॐ को लिखें, बाद में सकारांत अर्थात् ह में रकार मिलाकर उसमें दूसरी कला आ मिलावे। अर्थात् ह्रां हुआ। फिर हकार और रकार में तीसरी कला इ पांचवी कला उ छट्ठी कला ऊ सांतवीं कला (स्वर) ए आठवी ऐ नवमी मात्रा औ की मात्रा बिन्दु अनुस्वार सहित लगावे। अर्थात् ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः इस तरह लिखें। इसके बाद पूज्य पंच परमेष्ठियों के आदि के पांच अक्षर लेवे अर्थात्

असि आउसा लिखे, फिर सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो लिखकर अंत के नमः पद से पहले शोभायमान ह्रीं को लिखे तब मंत्र मिलकर

मंत्रः- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असि आउसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यों ह्रीं नमः।

ऐसा २७ अक्षर का मंत्र है।

आराधकस्य शुभनव बीजाक्षरः अष्टादश शुद्धाक्षरः एव मेकतर सप्तविशत्यक्षर रूपं

इस ऋषि मंडल यंत्र का मूल मंत्र सत्ताईस अक्षर का है। जिसमें ९ (नौ) बीज अक्षर हैं और अठारह शुद्ध अक्षर है यह मंत्र आराधना करने वाले की सब मनोकामना पूर्ण कर देने के कारण शुभ है। इस मंत्र में जो ॐ अक्षर पहले लगता वह गिनती में नहीं आता है। परन्तु उसके लगने से ही मंत्र शक्ति प्रगट होती है।

जंबु वृक्ष धरो द्वीपः क्षीरोदधि समावृतः।
अर्हदाद्यष्टकैरष्ट काष्टाऽधिष्टैरलंकृतः।।१०।।

तन्मध्ये संगतोमेरुः कूट लक्ष्यैरलंकृतः।
उच्चैरुच्चैस्तर स्तारस्तारामंडल मंडितः।।११।।

तस्योपरि सकारांतं बीजमध्यास्य सर्वगं।
नमामि बिंबमार्हत्यं ललाटस्थं निरंजनं।।१२।।

जंबु वृक्ष को धारण करने वाला द्वीप जंबू द्वीप है। उसके चारों तरफ से लवण समुद्र ने घेर रखा है। वह द्वीप आठ दिशाओं के स्वामी अर्हंत आदि पदों से शोभायमान है। अर्थात् अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्व साधु सम्यग्दर्शन सम्यक् ज्ञान सम्यकचारित्र यह आठ दिशाओं के अधिष्ठाता हैं, तो आठों दिशाओं में स्थापित करें।

इन आठों दिशाओं के मध्य में सुमेरु पर्वत है जो निन्यानवे हजार योजन ऊँचा है। एक हजार योजन भूमि में गड़ा हुआ है। चौड़ाई लम्बाई दस हजार योजन है। गोलमेरु है जो सौ कूट शिखरों से शोभायमान एक लाख योजन ऊँचे सुवर्ण का है। ७६० योजन की ऊँचाई पर तारामंडल है। दस योजन पर सूर्य का विमान है। ८० योजन ऊपर चन्द्रमा है इससे ४ योजन ऊपर नक्षत्र है नक्षत्रों से ऊपर ४ योजन ऊपर बुध है इससे ३ योजन ऊपर शुक्र है शुक्र से ३ योजन ऊपर बृहस्पति है जिससे ३ योजन ऊपर मंगल है इससे ३ योजन ऊपर शुक्र है शुक्र से ३ योजन ऊपर बृहस्पति जिससे ३ योजन ऊपर मंगल है इससे ३ योजन ऊपर शनिश्चर का विमान है शेष नक्षत्र चित्राभूमि से ऊपर बुध और शनिश्चर के बीच में स्थित हैं इसे ज्योतिचक्र कहते हैं।

यह सब सुमेरु पर्वत के चारों तरफ परिक्रमा देने से बहुत रमणीक मालूम होते हैं। ऐसे सुमेरु पर्वत के ऊपर सकारांत बीज ह्रीं को विराजमान करके उसमें बैठे हुए घातिकर्म अंजन से रहित अर्हंत भगवान को अपने ललाट (मस्तक) में स्थापन करके नमस्कार पूर्वक ध्यान करें।

अक्षयं निर्मलं शांतं बहुलं जाड्यतोज्झितं।
निरीहं निर हंकार सारं सार तरं धनं।।१३।।

अनुद्धुतं शुभं स्फीतं सात्विकं राजसं मतं।
तामसं विरसं बुद्धं तैजसं शर्वरी समं।।१४।।

साकारं च निराकारं सरसं विरसं परं।
परापरं परातीतं परं पर परापरं।।१५।।

एकवर्ण द्विवर्ण च त्रिवर्ण तुर्य वर्णकं।
पंच वर्णं महावर्णं सपरं च परापरं।।१६।।

सकलं निष्कलं तुष्टं निभृतं भ्रांति वर्जितं।
निंरजनं निराकांक्षं निर्लेपं वीत संशयं।।१७।।

ब्रह्माणमीश्वरं बुद्धं शुद्धं सिद्धं भंगुरं।
ज्योति रूपं महादेवं लोकालोक प्रकाशकं।।१८।।

अब अर्हंत के बिंब के ध्यान का स्वरूप बतलाते हैं। अर्हत भगवान का बिंब अक्षय शाश्वत जन्म मरण रूप से रहित है। कर्मरूपी मल से रहित है। शांतमूर्ति शांतमुद्रा वाले हैं। अत्यंत श्रेष्ठ है। अज्ञानता से रहित है। मद से रहित है। अभिलाषा से रहित है। अहंकार से रहित है। श्रेष्ठ श्रेष्ठों से भी अत्यंत श्रेष्ठ हैं।

मद रहित है (उद्धतपने से रहित हैं) शुभ हैं, स्वच्छ हैं, शांत गुण होने से सात्विक हैं। तीन लोक में मालिक होने से राजस गुणवाले हैं। मतं अर्थात् कहा है। अष्ट कर्मों के नाश करने के लिए तामस गुण युक्त हैं। श्रृंगार आदि रसों से रहित हैं। ज्ञानवान हैं। ज्योतिरूप सहित हैं। पूनम की अर्हंत रात के समान उज्ज्वल व आनन्द कारी हैं।

अर्हंत की अपेक्षा शरीर सहित होने से साकार अर्थात् आकार सहित हैं। सिद्ध की अवस्था में शरीर रहित होने से निराकार आकार रहित हैं। ज्ञान रस से भरे होने के कारण सरस हैं। परन्तु रसादि विषय से रहित हैं।

रम अर्थात उत्कृष्ट है। क्रम से उत्कृष्ट है। परातीतं अर्थात् शत्रुता से रहित हैं। परंपरं अनुक्रम से अतीत है। परात्परं आदि से भी परे अर्थात् अनादि है।

सपर अर्थात् स से परे आगे का वर्ण हकार अक्षर जो अरहंत का वाचक है वह एक वर्ण का सफेद है, दो वर्ण का श्याम है, तीन वर्ण का लाल है। तूर्यवर्ण अर्थात् ४ चार रंग का अर्थात् नीले वर्ण का है। पांच वर्ण का पीला वर्णमाला है। महावर्ण अर्थात् उत्कृष्ट वर्ण का है। उत्कृष्ट से भी उत्कृष्ट पांच वर्ण का हकार है।

सकलं अर्थात् कला सहित है। अर्हंत की अपेक्षा सकल है सिद्धों की अपेक्षा शरीर रहित है। तुष्टं अर्थात उनको देखने से संतोष उपजाने वाला है। निर्वृत्तं अर्थात् भ्रमण रहित होने से कल्याण के हेतू हैं। भ्रांति भ्रमण रहित है। कर्मांजन से रहित हैं। इच्छा से रहित हैं। कर्मरूपी लेप से रहित हैं। संशय रहित हैं। ब्रह्म स्वरूप हैं सब भव्यजीवों को हित की शिक्षा देने से ईश्वर तीन लोक के स्वामी हैं ज्ञानवान हैं। अठारह दोषों के न होने से शुद्ध हैं। सिद्ध स्वरूप है। संसार में आवागमन न होने से क्षण भंगुरता से रहित हैं। ज्योति स्वरूप हैं। देवों से पूजनीय होने से महादेव है तीन लोक और अलोकाकाश को अपने ज्ञान से प्रकाशने वाले हैं।

अर्हदाख्य सवर्णांतः सरेफो बिंदु मंडितः।
तुर्यस्वर समायुक्तो बहुध्यानादि मालितः।।१६।।

अर्हंत का आख्य वाचक सवर्णांत (स अक्षर के आगे का अक्षर) हकार है। वह रकार और बिन्दु अनुस्वार सहित हैं रेफ और बिन्दु से शोभायमान हैं। तथा चौथा स्वर ईकार सहित है। सो सब मिलाकर ह्रीं हुआ यह ह्रीं बीज बहुत प्रकार से ध्यान करने योग्य हैं।

अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे ऋषभाद्या जिनोत्तमाः।
वर्णै र्निजैर्निजैर्युक्ता ध्यातव्यास्तत्र संगताः।।२०।।

इस ह्रींकार बीजाक्षर में ऋषभनाथ जी लेकर चौबीस जिनेश्वर वर्द्धमान जी पर्यंत विराजमान हैं। उनका अपने अपने रंगों सहित ध्यान करना योग्य है।

नादश्चद्र समाकारो बिन्दुर्नील समप्रभाः।
कलारु समासांतः स्वर्णाभ सर्वतोमुखः।।२१।।

शिरः संलीन ईशारो विनीलो वर्णतः स्मृतः।
वर्णानुसारि सं लीनं तीर्थकृन्मडंलं नमः।।२२।।

ह्रीं बीजाक्षर की नाद कला ओध चन्द्रमा के आकार की है। वह सफेद रंगवाली है। नाद पर जो बिन्दु है वह श्याम रंग का गोले है। मस्तक रूप कला लाल रंग की प्रभावशाली है। सांत अर्थात् सकार के आगे अक्षर हकार चारों तरफ से सोने के समान पीले रंग का है।

सिर से मिला हुआ ईकार नीले रंग का है उस ह्रीं में अपने रंग के अनुसार तीर्थंकर समूह का स्थापन किया जाये उनको नमस्कार है। अब आगे इन पांचों भागों में जो तीर्थंकर स्थित है वह अलग अलग रंग सहित बताते हैं।

चन्द्रप्रभ पुष्पदंतौ नाद स्थिति समाश्रितौ।
बिन्दु मध्य गतौ नेमि सुव्रतौ जिन सत्तमो।।२३।।

चंद्रप्रभजी और पुष्पदंतजी यह दोनों तीर्थंकर जो श्वेत वर्ण के हैं अर्ध चन्द्रमा के आकार की जो ह्रींकार की नाद हैं उसमें स्थापन करने चाहिए। ह्रींकार की बिन्दु गोल श्याम वर्ण की है। उसमें नेमिनाथजी मुनिसुव्रतनाथ जी जिनकी शरीर की कांति श्याम वर्ण है वह दोनों जिनेन्द्र देव बिन्दी में विराजमान महाउत्तम हैं।

पद्मप्रभ वासु पूज्यो कला पद्म मधिश्रितौ।
शिरः ईस्थिति संलीनौ सुपार्श्व पार्श्वौ जिनोत्तमौ।२४।।

पद्म प्रभ वासुपूज्य ही यह दोनों तीर्थंकर लाल वर्ण के हैं। ह्रींकार की कला भी लाल वर्ण की हैं उसमें तिष्ठित हैं मस्तक में ईकार की मात्रा जिसका रंग नीला उसमें श्री पार्श्वनाथजी और सुपार्श्वनाथ जी जिनके शरीर की कांति नीले वर्ण की है। उसमें तिष्ठित है।

शेषा स्तीर्थंकराः सर्वेरहः स्थाने नियोजिताः।
मायाबीजाक्षरं प्राप्ताश्चतुर्विंशतिरर्हंतां।।२५।।

बाकी शेष रहे सोलह तीर्थंकर वह सब हकार और रकार में तिष्ठित है। इस हकार और रकार का रंग सुवर्ण जैसा पीला है। इस प्रकार

श्री ऋषभनाथजी, अजितनाथजी, संभवनाथजी, अभिनंदनजी, सुमतिनाथ जी, शीतलनाथ जी, श्रेंयांस नाथ जी, विमलनाथ जी, अनंत नाथ जी, धर्मनाथजी, शांतिनाथजी, कुंथुनाथजी, अरनाथजी, मल्लिनाथ जी नमिनाथजी, महावीर स्वामीजी, यह सोलह तीर्थंकर माया बीज अक्षर ह्रींकार के हकार और रकार अक्षर में ही तिष्ठित हैं। इस प्रकार चौबीस तीर्थंकर ह्रीं बीजाक्षर में स्थित हैं।

गतराग द्वेष मोहाः सर्वपाप विवर्जिताः।
सर्वदा सर्वलोकेषु ते भवंतु जिनोत्तमाः।।२६।।

वह जिनेन्द्रदेव राग द्वेष मोह से रहित हैं। सब पाप कर्मों से रहित हैं। सर्वकाल विषय अतीत अनागत वर्तमान तथा सर्वलोक विषय पाताल पृथ्वी आकाश में अर्थात् तीनों काल व तीनों लोक में जिन भगवान उत्तम से उत्तम महा उत्तम हैं इनके बराबर और कोई नहीं हैं।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु पन्नगाः।।२७।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकर के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को सर्प जाति के जीव पीड़ा नहीं दे मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु नागिनी।।२८।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को सर्पनी जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु गोहरा।।२९।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को गोहरा जाति के जीव पीड़ा नहीं दे मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु वृश्चिका।।३०।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के सूमह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को बिच्छू जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांग मां मा हिंसतु काकिनी।।३१।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकर के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को कांकनी जाति के जीव पीड़ा नहीं दे मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांग मां मा हिंसतु डाकिनी।।३२।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को डाकिनी जाति के जीव पीड़ा नहीं दे मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु याकिनी।।३३।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को याकिनी जाति के जीव पीड़ा नहीं दे मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु राकिनी।।३४।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को राकिनी जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु लाकिनी।।३५।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को लाकिनी जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु शाकिनी।।३६।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को शाकिनी जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु हाकिनी।।३७।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को हाकिनी जाति के जीव पीड़ा नहीं दे मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांग मां मा हिंसतु राक्षसाः।।३८।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को राक्षस जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिसंतु भैरवा।।३९।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को भैरव जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिसंतु भेषसा।।४०।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को भेषसा जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु कीनसा।।४१।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को कीनसा जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु व्यंतरा।।४२।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को तस्करा जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु वन्हय।।४३।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को वन्हय जाति के जीव पीड़ा नहीं दे मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु श्रृंगिणः।।४४।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को श्रृंगिन जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु दृष्ट्रिणः।।४५।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को दंष्ट्रिण जाति के जीव पीड़ा नहीं दे मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु रेलपा।।४६।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को रेलपा जाति के जीव पीड़ा नहीं दे मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु पक्षिणः।।४७।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को पक्षिण जाति के जीव पीड़ा नहीं दे मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु भजकाः।।४८।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को भजका जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु जृंभिकाः।।४९।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को जृभिका जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावे।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु तोयदाः।।५०।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को तोयदा जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावें।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु सिंहकाः।।५१।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को सि़ंह का जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावें।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु शूकरा।।५२।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को शूकर जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावें।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु चित्रकाः।।५३।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को चित्रका जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावें।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु हस्तिनः।।५४।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को हस्तिन जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावें।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु भूमिपाः।।५५।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को भूमिया जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावें।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु शत्रवः।।५६।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को शत्रु जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावें।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु ग्रामिणः।।५७।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को ग्रामिण जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावें।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु दुर्जनाः।।५८।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को दुर्जन जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावें।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु व्याधयः।।५६।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को व्याधि जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावें।

देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा।
तयाच्छादित सर्वांगं मां मा हिंसतु सर्वतः।।६०।।

देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान तीर्थंकरों के समूह रूपी चक्र की प्रभा से ढ़के हुए मेरे शरीर के सब अंगों को सर्वतः जाति के जीव पीड़ा नहीं दें मुझे न सतावें।

श्री गौतमस्य या मुद्रा तस्या या भुविलब्धयः।
ताभिरभ्यधिकं ज्योतिरर्हः सर्व निधीश्वरः।।६१।।

श्री गौतम स्वामी गणधर का स्वरूप जो मुनिराज से वन्दनीय है जिनकी ज्योति पृथ्वी पर फैल रही है। उस ज्योति से भी अधिक ज्योति प्रकाश अर्हंत भगवान की है। वह भगवान सब विद्याओं का खजाना है।

पातालवासिनो देवाः देवाः भूपीठ वासिनः।
स्व स्वर्गवासिनो देवाः सर्वे रक्षंतु मामितः।।६२।।

पाताल में रहने वाले दस प्रकार के भवनवासी देव पृथ्वी पर रहने वाले व्यंतर ज्योतिष देव कल्पवासी देव स्वर्गवासी देव यह सब देव मेरी रक्षा करें।

येऽवधि लब्धयो ये तु परमावधि लब्धयः।
ते सर्वे मुनयो दिव्या मां संरक्षन्तु सर्वतः।।६३।।

जितने मुनिराज अवधिज्ञान की लब्धि सहित छट्ठे गुणस्थान के

धारी और परम अवधिज्ञान के धारण करने वाले बारहवें गुण स्थान वाले जिनको अन्तर मुहूर्त में केवल ज्ञान उत्पन्न होता है। सो सब मुनिराज छट्टे गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थान तक के मेरी रक्षा करें।

भावेन्द्र व्यंतरेन्द्र ज्योतिषकेन्द्र कल्पेन्द्रेभ्यो नमः श्रुतावधि देशावधि परमावधि सर्वावधि बुद्धऋद्धि प्राप्ता सर्वोषधि ऋद्धि प्राप्ता अनन्त बल ऋद्धि प्राप्त तप्त ऋद्धि प्राप्त रस ऋद्धि प्राप्त विक्रिया ऋद्धि प्राप्त क्षेत्र ऋद्धि प्राप्त अक्षीण महान स ऋद्धि प्राप्तेभ्योनमः।

भवनवासियों के इन्द्र २०, व्यंतरों के इंद्र १६, ज्योतिषों के इन्द्र २, कल्पवासी १२, भवनवासी २०, चमरेन्द्र-वैरोचन- भूतानद-धरणानन्द-वेणु-बेणधारी-पूरण-अवशिष्ट- जलप्रभ- हरिषेण-हरिकांत- अग्नि शिखि-अग्निवाहन- अमितगति- अमितवाहन- घोष- महाघोष बेलांजन-प्रभंजन व्यंतरेन्द्र १६ किन्नर-किंपुरुष-सांतपुरुष- महापुरुष अतिकाय महाकाय- गतिरति-मतिकीर्ति- मानभद्र-पूर्णभद्र भीम-महाभीम-सरूप -प्रतिरूप-काल-महाकाल। ज्योतिषष्केन्द्र सूर्य- चंद्रमा। कल्पवासी १२ सौधर्म-ईशान- सनतकुमार- माहेन्द्र-ब्रह्म- लांतव-शुक्र-सतार-श्रीमत-प्राणत-आरण अच्युत।

यह भेद देश अवधि के हैं।

अनुगामी– भवांतर तक जाय जैसे सूरज के साथ ज्योति जाय। अनुनगामी– साथ नहीं जाय। वर्धमान– असंख्यात लोक बढ़े। हीयमान– घटता जाय। अवस्थित घटे बढ़े नहीं। अनवस्थित– जितना बढ़े उतना घटे। परमावधि– विशिष्ट संयमधारी मुनिश्वर के होती है। १४ राजू उत्तंग ३४३ राजू घानाकार में सूक्ष्म स्थूल–रुप अविभागी परमाणु पर्यंत जानते हैं। सर्वावधि ऋद्धिधारी तीनों लोक के पदार्थ जुदा जुदा जानता है।

ॐ श्रीं ह्रीं श्च धृति लक्ष्मी गौरी चंडी सरस्वती।
जयाअंबा विजया क्लिन्ना ऽजिता नित्या मदद्रवा।।६४।।

कामांगी काम बाणा च सानन्दा नंदमालिनी।
माया मायाविनी रौद्री कला काली कलि प्रिया।।६५।।

एताः सर्वा महादेव्या वर्तंते या जगत् त्रये।
ममसर्वाः प्रयच्छंतु कांति लक्ष्मीं धृतिं मतिं।।६६।।

हिमवत पर्वत पर पद्म द्रह १००० का योजन का है। उसमें १ योजन का कमल है। एक कोस की कर्णिका है। उस वज्र मयी कर्णिका में ह्रीं देवी का मंदिर है।

महाहिमवत् पर्वत पर महापद्म द्रह २०० योजन का है। २ योजन का कमल है। दो कोस की कर्णिका है। उस वज्रमयी कर्णिका में ह्रीं देवी का मंदिर है।

निषध पर्वत पर ४००० योजन का तिगिच्छ द्रह है। चार योजन का कमल है। चार कोस की कर्णिका है। उसमें लक्ष्मी देवी का मंदिर है।

गौरी– चंडी–सरस्वती–जय– अंबिके–विजया–क्लिन्ना–अजिता–नित्या– मदद्रवा–कामांगा–कामबाण– सानन्दा– नन्दमालिनी माया मायाबिनी– रौद्री–कला काली कलिप्रिया।

यह चौबीस जिनशासन की रक्षा करने वाला महादेवियाँ तीनों लोक पाताल–मध्यलोक–आकाश अथवा स्वर्ग लोक गामिनी है। यह सब महादेवी मुझ को कांति लक्ष्मी धैर्य और बुद्धि देवें।

नील पर्वत पर ४००० योजन का केशरिन नाम का ह्रद उस केशरिन द्रह में कीर्ति देवी का मंदिर है। रुक्मिन पर्वत पर २००० योजन का महापुंडरीक नाम का ह्रद है दो योजन का कमल है दो कोश की कर्णिका है महापुंडरीक ह्रद में बुद्धि देवी का मंदिर है। इन सब मंदिरों के भवन सफेद रंग के बने हुए हैं।

दुर्जनाभूत वेतालाः पिशाचा मुद्गला स्तथा।
ते सर्वे उपशाम्यतुं देव देव प्रभावतः।।६७।।

दुष्टजन भूत वैताल पिशाच मुद्‌गल दैत्य यह सब मिथ्यात्वी रौद्र परिणामी जीव देवों के देव श्री जिनेन्द्र भगवान के प्रभाव से शांत होवें।

दिव्यो गौप्यः सुदुष्प्राप्य श्री ऋषिमंडल स्तवः।
भाषित स्तीर्थनाथेन जगतत्राण कृतोऽनघः।।६८।।

यह ऋषि मंडल स्तोत्र बहुत दैदीप्यमान हर एक को दिखालाने योग्य नहीं है। गुप्त रखने योग्य है यह आसानी से मिलने वाला नहीं होने से दुष्प्राप्य है। श्री ऋषि मंडल स्तोत्र को तीन लोक के स्वामी महावीर भगवान ने जगत की रक्षा करने के वास्ते निर्दोष होने के कारण कहा है।

रणे राजकुले वह्नै जले दुर्गे गजे हरौ।
श्मशाने विपिने घोरे स्मृतो रक्षति मानवं।।६९।।

युद्ध संग्राम में राजदरबार में, अग्नि ज्वाला में, पानी में, गढ़ किले में, हाथी भय में, सिंह के भय में, श्मशान भूमि के भय में, निर्जन उजाड़ बन में, भयंकर विपत्ति में इस स्तोत्र मंत्र का स्मरण करने पर मनुष्य की रक्षा करता है।

राज्य भृष्टा निजं राज्यं पदभृष्टा निजं पदं।
लक्ष्मी भृष्टां निजां लक्ष्मीं प्राप्नुवंति न संशयः।।७०।।

राज्य से निकले हुए अपने राज्य को, मंत्री वगैरह पद से रहित हुए अपने पद को, लक्ष्मी धन से रहित हुए अपने धन को पाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं करना।

भार्यार्थी लभते भार्यां पुत्रार्थी लभते सुतं।
धनार्थी लभते वितं नरः स्मरण मात्रतः।।७१।।

स्त्री के वास्ते स्मरण करने से पुत्री, पुत्र के इच्छुक को पुत्र, धन की इच्छावाले मनुष्य को धन की प्राप्ति होती है।

स्वर्णे रूप्येऽथवा कांस्ये लिखित्वा यस्तु पूजयेत्।
तस्यै वेष्ट महासिद्धि गृहि वसति शाश्वतीं।।७२।।

इस यंत्र को सोने चांदी, या काँसे (अथवा तांबे) के ऊपर लिखकर पूजने से उसके घर में वांछित अर्थ की महासिद्धि रहती है।

भूर्जपत्रे लिखित्वेदं गलके मूर्ध्नि वा भुजे।
धारित: सर्वदा दिव्यं सर्वभीति विनाशनं।।७३।।

इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर ताबीज में भरकर गले में या मस्तक में या भुजा में पहनने से हमेशा सर्व आरति चिंता भय से रहित हो जाता है।

भूतै: प्रेतैर्ग्रहै:र्यक्षै: पिशाचैर्मुद्गालै स्तथा।
वातपित्त कफोद्रेकै मुच्यते नात्र संशय:।।७४।।

भूतप्रेत नवग्रह यक्ष पिशाच मुद्गल दैत्य और वात पित्त कफ आदि रोगों के उपद्रव से निस्संदेह छूट जाता है।

भूर्भव: स्वस्त्रयी पीठ वर्तिन: शाश्वता जिना:।
तै: स्तुतै वंदितै र्दृष्टैर्यत्फलं तत्फलं स्मृतम।।७५।।

अधो लोक मध्य लोक स्वर्गलोक में जहां अकृत्रिम जिन चैत्यालय हैं जहां हमेशा जिनेन्द्र भगवान के बिम्ब विराजमान हैं। उनके स्तवन वंदना और दर्शन करने से जो फल मिलता है। उतना ही फल इस स्तोत्र वगैरह के स्मरण करने से प्राप्त होता है।

एतद्गोप्य महास्तोत्रं न देयं यस्य कस्यचित्।
मिथ्यात्व वासिनो देयं बाल हत्या पदे पदे।।७६।।

यह महान स्तोत्र गुप्त रखने योग्य है हर किसी को नहीं देना चाहिए। योग्य पात्र ही को बतलाना चाहिए। सम्यक्त रहित पुरुष को देने पर पद पद पर बाल हत्या के समान पाप का बंध होता है।

आचाम्लादि तप: कृत्वा पूजयित्वा जिनावलिं।
अष्ट साहस्त्रिको जाप्य: कार्यस्तत्सिद्धि हेतवे।।७७।।

आचाम्ल तप अर्थात मांड सहित चावल के भात को और सब रसों का त्याग करके खाने से यंत्र को सामने रखकर पूर्वोक्त ह्रींकार मे विराजमान चौबीस भगवान की पूजन करके, इष्ट कार्य की सिद्धि के लिए स्तोत्र गर्भित मंत्र का ८००० जाप करना चाहिए। (इस कलिकाल में चौगुणा ३२००० जाप करें।)

ऋषि मंडल मंत्र

मंत्रः– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असि आउसा सम्यकदर्शन ज्ञानचारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठंति दिने दिने।
तेषां न व्याधयो देहे प्रभवंति च संपदः।।७८।।

जो भव्य जीव शुद्ध योग से प्रतिदिन प्रातः काल उठकर एक सौ आठ बार की एक माला फेरते हैं और स्तोत्र का पाठ पढ़ते हैं। उनके शरीर में रोग प्रगट नहीं होते बल्कि संपदायें उनके घर में प्रगट होती हैं।

अष्ट मासाऽवधिं यावत प्रातस्तु यः पठेत्।
स्तोत्रमेतेन महातेज स्त्वार्ह द्बिंबं स पश्यति।।७९।।

मन वचनकाय को शुद्ध करके स्थिर होकर हर रोज आठ महिने की अवधि में प्रभात काल में प्रभात ही पहले कही हुई विधि से यह मंत्र पढ़े। यह स्तोत्र महातेज है सो वह अर्हंत भगवान के बिंब का दर्शन अपने ललाट पर कर लेगा।

दृष्टे सत्यार्हते बिंबे भवे सप्तके ध्रुवं।
पदं प्राप्नोति विश्रातं परमानंद संपदां।८०।।

अर्हंत भगवान के बिंब के दर्शन होने से सातवें भव (जन्म) में निश्चिय से परम अतीन्द्रिय स्वाधीन आनन्द का स्थान मोक्ष पद को पाता है।

विश्व बंधोभवे ध्याता कल्याणाऽन्नापि सोक्ष्णते।
गत्वास्थाने परं सोऽपि भुवस्त्वापि निवर्तते।।८१।।
इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं स्तवानां मुत्तमं परं।
पठनात्स्मरणाज्जापात् लभते पदमव्ययं।।८२।।

इस ऋषि मंडल स्तोत्र का जो ध्यान करता है वह संसार का प्यारा होता है। उसका महान कल्याण होता है और संसार से मुक्त होकर अंत में मोक्ष में जाता है।

यह स्तोत्र महान स्तोत्र है सब स्तोत्रों से सर्वश्रेष्ठ है। इसको पढ़ने से याद करने से व इसके मंत्र का जाप करने से प्राणी अविनंश्वर पद को पाता है।

लेखन

कांचनीयेथवा रौप्ये कांस्ये वाभाजने वरे।
मध्य लेख्य: सकारांतो द्विगुणे यांते वित:।।८३।।
तूर्यस्वर मनोहरी विंदु राजार्धमस्तक:।
जिनेशास्तत्प्रभा लेख्या यथा स्थानं तदंतरेयुग्मं।।८४।।

यंत्र सोने चांदी अथवा कांसे या तांबे का गोल बनवाना चाहिए। उसके बीच में सकार के अंत का अक्षर अर्थात् ह वर्ण में यांत अर्थात् य के आगे क अक्षर रकार मिला हुआ दुहरा लिखना चाहिए। उसमें चौथा स्वर इकार लगाना उसके मस्तक पर आधे चन्द्रमा का आकार चिन्ह को बिन्दु ऊपर रखकर बनाना जैसे ह्रीं उस ह्रीं में चौबीस तीर्थंकरों का नाम लिखना चाहिए।

चंद्रप्रभ पुष्पदंतौ मुनिसुव्रत नेमिकौ।
सुपार्श्व पाश्वौ पद्मप्रभवासुपूज्यौ तथा क्रमात्।।८५।।
कलाया तदुपरिष्टा दिकारे मूर्घ्रि च स्फुटं लेख्या शेषा।
जिनागर्भे नमो युक्ता: सुपीतभा: युग्मं।।८६।।

चंद्रप्रभ पुष्पदंताभ्यां नमः ऐसा ह्रीं की अर्ध चन्द्रमा की कला में लिखना। मुनि सुव्रत नेमिभ्यां नमः। ऐसा उस कला के ऊपर बिन्दु स्थान में लिखे। सु पार्श्व पार्श्वभ्यां नमः कहे हुए ह्रीं वर्ण के ईकार में लिखे। उस पूर्व कथित वर्ण (ह्रीं) के मस्तक में पद्मप्रभवासुपूज्याभ्यां नमः ऐसा लिखें और शेष १६ तीर्थंकरों को अर्थात् ''ऋषभाजित संभवाभिनंदन सुमति शीतंल श्रेयांसो विमलांनंत धर्म शांति कुन्थु अर मल्लि नमि वर्धमानेभ्यो नमः'' इस तरह उसके बीच भाग में लिखना चाहिए। यह सब ह्रीं के बीच भाग में सोने के समान पीले रंग के प्रभाव वाले हैं।

ततश्च वलयः कार्यस्तद्वाह्ये कोष्टाऽष्टकं।
तत्रेति लेख्यं विवुधैश्चारू लक्षण लक्षितैः।।८७।।

उसके बाद ह्रीं वर्ण के चारों तरफ आठ कोठों वाला गोला खींचे उन कोठों में सुन्दर लक्षणों वाले विद्वान पुरुषों को यह लिखना चाहिए।

ॐ ह्रीं सूरिभ्यो नमः कालि आदि के नामों के आगे देव्यै नहीं लिखना है। दिग्पाल भी नहीं लिखना है ॐ ह्रीं क्ष्वीं क्षः चारों दिशाओं पृथ्वी मंडल में है।

१. अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ह्म्ल्व्र्यूं

२. क ख ग घ ङ भ्म्ल्व्र्यूं

३. च छ ज झ ञ म्म्ल्व्र्यूं

४. ट ठ ड ढ ण रमल्व्र्यूं

५. त थ द ध न घ्म्ल्व्र्यूं

६. प फ ब भ म झ्म्ल्वर्यूं

७. य र ल व स्म्ल्व्र्यूं

८. श ष स ह ख्म्ल्व्र्यूं

ततश्च वलयः कार्यो लेख्या स्तत्राष्ट कोष्टकाः।
तत्रेति लेख्यं विवुधैश्चातुर्यान्वित, विग्रहैः।।८८।।

इसके बाद फिर उसके चारें तरफ आठ कोठों वाला गोला खेंचना उन कोठों में चतुर शरीर धारी बुद्धिमानों को ऐसा लिखना चाहिए।

(१.) ॐ ह्रीं अर्हभ्यो नमः। (२.) ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः।

(३.) ॐ ह्रीं आचार्येभ्यो नमः (४.) ॐ ह्रीं पाठकेभ्यो नमः

(५.) ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः (६.) ॐ ह्रीं तत्व दृष्टिभ्यो नमः

(७.) ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञानेभ्यो नमः (८.) ॐ ह्रीं सम्यक् चारित्रेभ्यो नमः

ततश्च वलयः कार्यस्तत्र षोडश कोष्टकाः।
लेख्या स्तत्रेति लेख्यं च विद्वद्भिश्चतुरैर्नरैः।।८९।।

इसके बाद सोलह कोठों में ऐसा लिखना चाहिए।

(१.) ॐ ह्रीं भावनेंद्राय नमः
(२.) ॐ ह्रीं व्यंतरेन्द्राय नमः
(३.) ॐ ह्रीं ज्योतिष्केन्द्राय नमः
(४.) ॐ ह्रीं कल्पेन्द्राय नमः
(५.) ॐ ह्रीं श्रुतावधिभ्यो नमः
(६.) ॐ ह्रीं देशावधिभ्यो नमः
(७.) ॐ ह्रीं परमावधिभ्यो नमः
(८.) ॐ ह्रीं सर्वावधिभ्यो नमः
(९.) ॐ ह्रीं बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमः
(१०.) ॐ ह्रीं सर्वोषधि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमः
(११.) ॐ ह्रीं अनंत बल ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमः
(१२.) ॐ ह्रीं तप ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमः
(१३.) ॐ ह्रीं रस ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमः
(१४.) ॐ ह्रीं विक्रिय ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमः

(१५.) ॐ ह्रीं क्षेत्र ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमः

(१६.) ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमः

ततश्च वलयः कार्यः चतुर्विंशंति कोष्टकः।
तत्र लेख्याश्च कर्तव्याश्चतुर्विंशंति देवताः।।९०।।

उसके पीछे चौबीस कोठों वाला गोलाकार बनाने उन कोठों में चौबीस जैन शासन देवताओं को लिखे वह ऐसे हैं।

(१.) ॐ ह्रीं श्री देव्यै नमः	(२.) ॐ ह्रीं ह्री देव्यै नमः।
(३.) ॐ ह्रीं धृति देव्यै नमः	(४.) ॐ ह्रीं लक्ष्मी देव्यै नमः
(५.) ॐ ह्रीं गौरी देव्यै नमः	(६.) ॐ ह्रीं चंडिका देव्यै नमः
(७.) ॐ ह्रीं सरस्वती देव्यै नमः	(८.) ॐ ह्रीं जया देव्यै नमः
(९) ॐ ह्रीं अंबिका देव्यै नमः	(१०) ॐ ह्रीं विजया देव्यै नमः
(११) ॐ ह्रीं क्लिन्नादेव्यै नमः	(१२) ॐ ह्रीं अजितारि देव्यै नमः
(१३) ॐ ह्रीं नित्या देव्यै नमः	(१४) ॐ ह्रीं मद्द्रव्या देव्यै नमः
(१५) ॐ ह्रीं कामांगादेव्यै नमः	(१६) ॐ ह्रीं कामबाणायै देव्यै नमः
(१७) ॐ ह्रीं सानंदायै देव्यै नमः	(१८) ॐ ह्रीं नंदमालिन्यै देव्यै नमः
(१९) ॐ ह्रीं माया देव्यै नमः	(२०) ॐ ह्रीं मायाविन्यै देव्यै नमः
(२१) ॐ ह्रीं रौद्री देव्यै नमः	(२२) ॐ ह्रीं कला देव्यै नमः
(२३) ॐ ह्रीं कालि देव्यै नमः	(२४) ॐ ह्रीं कालीप्रिया दैव्यै नमः

इसके बाद दश दिक्पालों को दसों दिशाओं में लिखकर ह्रींकार के तीन आवर्त लगाकर क्रों से निरोध करें।

फिर इस मंत्र को विधिपूर्वक पूजन पंचोपचारी अष्टद्रव्य से करके सर्व देवों का आदर पूर्वक विसर्जन करें।

घोणा यंत्र साधन विधान

साध्यस्य नामावृत तत्व बाह्मे ऊष्मादि वर्ण विलिखेत्वै लसांतं।
अष्टाब्ज पत्रं कुरु तस्य बाह्ये क्ष्मादि वृतो घोण स मेकपत्रे।।
शेषेषु पत्रे च शेष वर्णान लिखेद्वराद्यक्षर बाह्य भागे।
माया वृत्तं घोणसय सत्प्रसिद्धं करोतिषट्कर्म विधानं सिद्धिं।।१।।

तत्व ह्रीं के अंदर साध्य के नाम को लिखकर उसके बाहर उष्मादि वर्ण ल स तक लिखे उसके बाहर अष्ट दल कमल बनाकर एक पत्र में क्ष्मा आदि से युक्त घोणा मंत्र को लिखे और शेष पत्रों में शेष वर्णों को लिखे उसके बाहर वर विहंगम आदि मंत्र को लिखे फिर उसको ह्रींकार से वेष्टित करें। यह घोणायंत्र का सब छहो कर्मों के विधान की सिद्धि करता है।

यंत्रोद्धारः

इति कर्णिकायां लिखेत तद्वाह्ये क्रौंकार।
निरुद्ध ह्रीं कोरण त्रिधा वेष्टयेत तद्वहि।।२।।

ॐ नमो भगवते श्री घोणसे हरे हरे वरे वरे तरे तरे वः वः वल वल लां लां रां रां रीं रीं रूं रूं रः रः रौं रौं रस रस लस लस इत्यादावार्य वहिरऽष्ट पत्रेषु पूर्वादि पत्रेषु क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमः श्री घोणसे घ घ घ घ घ स स स स स ह ह ह ह ह व व व व व ठ ठ ठ ठ ठ त त त त त ग ग ग ग ग इत्या लिख्यते तद्वाह्यो वलये वर विहंगम भुजे क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ह्रीं शोषय शोषय रोषय रोषय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः जः जः ठः ठः ॐ ह्रीं श्रीं घोणसे नमः इत्येनेन संवेष्टय ह्रीं कारेण वेष्टयेत एतेन षट्कर्म सिद्धिः।

ॐ नमो भगवते श्री घोणसे हरे हरे वरे वरे तरे तरे व व वल वल लां लां रां रां रीं रीं रूं रूं रौं रौं रः रः रस लस लस क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमः श्री घोणसे घ घ घ घ घ स स स स स स ह ह ह ह ह व व व व व ढ ढ ढ ढ ढ त त त त त ग ग ग ग ग वर विहंगम भुजे क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः शोषय शोषय रोषय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः जः जः ज ठ ठ ॐ ह्रीं श्री घोणसे नमः देवदत्तस्य .... शांति तुष्टिं पुष्टिं ग्रहोपशांतिं सर्वजन वश्यं च कुरु कुरु स्वाहा।

यह मंत्र कर्णिका में लिखे।

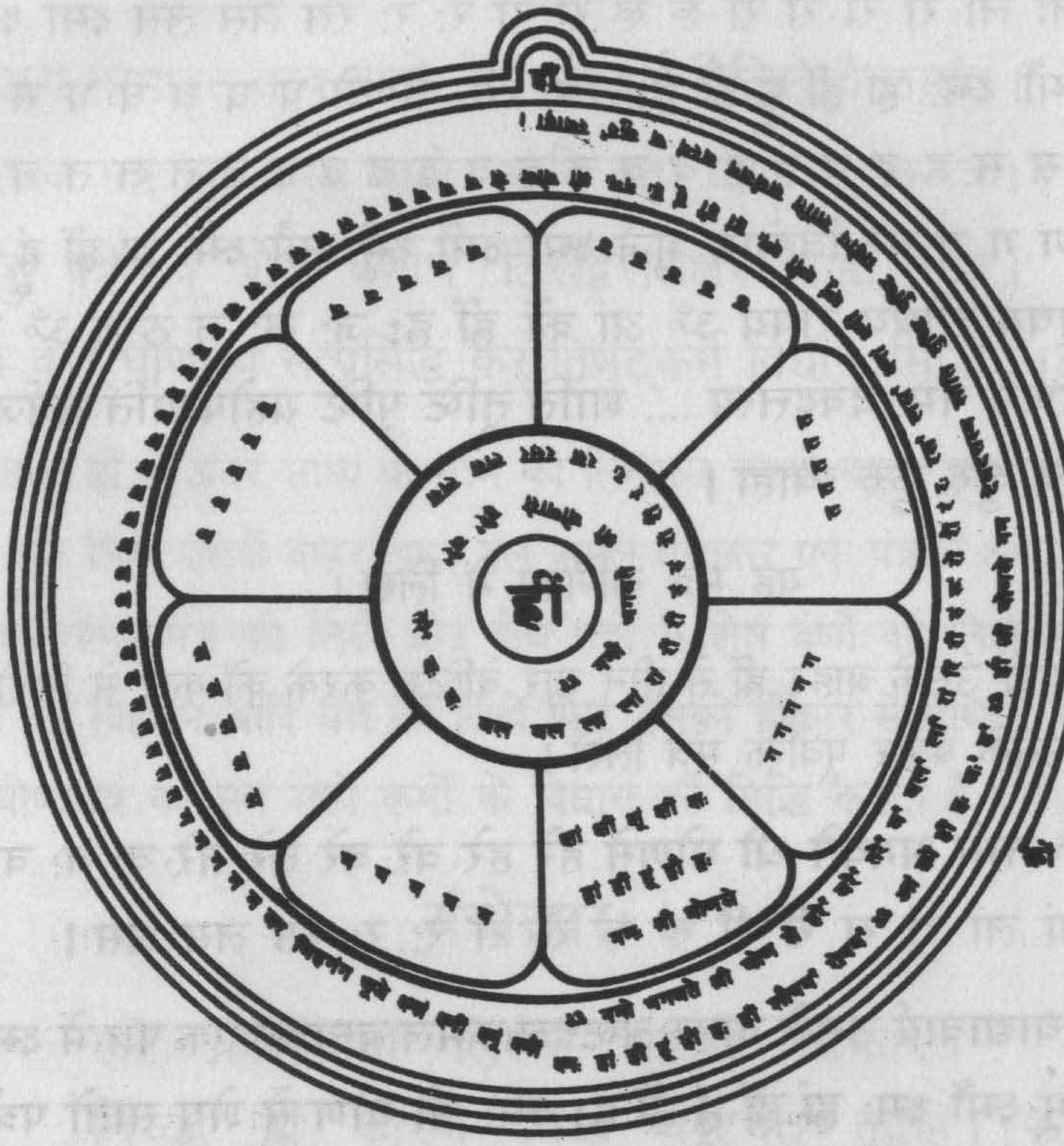
तद्बाह्ये उसके बाहर ह्रीं से तीन बार वेष्टित करके क्रों कार से निरोध करे। उसके बाहर पूर्वोक्त मंत्र लिखे।

ॐ नमो भगवते श्री घोणसे हरे हरे वरे वरे तरे तरे वः वः वल वल लां लां रां रां रीं रीं रूं रूं रौं रौं रः रः रस लस लस।

इत्याद्यावार्य उसके बाहर अष्टदल कमल बनाकर एक पत्र में क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमः श्री घोण से शेष सातों पत्रों में क्रम से घ घ घ घ घ स स स स स ह ह ह ह ह व व व व व ढ ढ ढ ढ ढ त त त त त ग ग ग ग ग पूर्व आदि दिशाओं के पत्रों में उपरोक्त मंत्र को विभक्त करके लिखे। उसके बाहर के वलय में निम्न मंत्र लिखे।

वर विंहगम भुजे क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मः ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः ह्रीं शोषय शोषय रोषय रोषय ॐ आं क्रों ह्रीं झ्वीं क्ष्वीं ह्रः ज ज ज ठः ठः ॐ ह्रीं श्री घोणसे नमः देवदत्तस्य.... शांति तुष्टिं पुष्टिं ग्रहोपशांतिं सर्वजन वश्यं च कुरु कुरु स्वाहा।

इस वलय के पश्चात् ह्रींकार से तीन बार वेष्टित करके क्रौं से निरुद्ध करें इससे छहों कर्मों की सिद्धि होती है।



द्वादश पत्रांबु रूहं मलवरर्यूंकार संयुतं कूटं ।
तन्मध्ये नाम युतं विलिखेत क्लींकार सं रुद्धं ।।

बारह दल के कमल की कर्णिका में क्लींकार से संरुद्ध नाम सहित लिखे। मलवर यूंकार सहित कूटाक्षर क्षकार वाले क्ष्म्ल्वर्यूं में देवदत्त नाम सहित लिखे इस अक्षर की पार्श्व में अर्थात् दोनों तरफ क्लीं लिखे।

विलिखेत् जयादि देवी: स्वाहांतोकार पूर्विका दिक्षु: ।
जभमह पिंडोपेता विदिक्षु जंभादिका स्तद्वत ।।

जयादि चारों देवियों के नाम को ॐ आदि में और स्वाहा अंत में लगाकर चारों दिशाओं में लिखें- ॐ जये स्वाहा पूर्व दल में ॐ विजये स्वाहा, दक्षिण

दल में, ॐ अजिते स्वाहा, पश्चिम दल में ॐ अपराजिते स्वाहा, उत्तर दल में लिखे- ज भ म ह पिंडाक्षरों की विदिशाओं में जंभा आदि चारों देवियों के नाम को पहले की तरह आदि में ॐ और अंत में स्वाहा लगाकर लिखें। ॐ ज्म्ल्व्र्यूं जंभे स्वाहा अग्नि कोण की दिशा में ॐ भ्म्ल्व्र्यूं मोहे स्वाहा नैॠते दल में ॐ म्म्ल्व्र्यूं स्तंभे स्वाहा वायव्य दल में ॐ ह्म्ल्व्र्यूं स्तंभिनी स्वाहा ईशान दल में लिखे।

उद्धरित दलेषु ततो मकरध्वज बीजमालिखेत् चतुर्षु।
गज वशकरण निरुद्ध कुर्यात् त्रिमायया वेष्टयं।।

आठों दलों में लिखने के बाद चारों शेष दलों में मकर ध्वज बीज क्लीं को लिखें, इन बारह दलों के बाहर ह्रींकार के तीन आर्वत बनाकर क्रों से निरुद्ध करें।

भूर्ये सुरभि द्रव्यै र्विलिख्य परिवेष्टय रक्त सूत्रेण।
निक्षिप्य सिल्ह भाडे शर्करा पूर्णे मोहयत्यवलां।।

भोजपत्र पर सुगंधित कुंकुम आदि द्रव्यों से इस यंत्र को लिखकर लाल रंग के डोरे से लपेटकर शक्कर से भरे हुए बिना पके हुए मिट्टी के कुम्हार के कच्चे बर्तन में रखा जाने से स्त्री का मोहन करता है।

मूल मंत्रोद्धार

मंत्रः– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं क्लीं जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे भ्म्ल्व्र्यूं मोहे म्मल्व्र्यूं स्तंभे ह्म्ल्व्र्यूं स्तंभिनी क्रौं क्लीं क्रौं अमुकीं मोहय मोहय् मम् वश्यं कुरु कुरु आं क्रों ह्रीं क्रों क्लीं क्ष्म्ल्व्र्यूं ॐ वषट्।

क्लीं रंजिका यंत्र मंत्र विधि

क्लीं रंजिका यंत्रं क्लीं रंजिका यंत्रं भूर्ये सुरभि द्रव्ये लिखित्वा रक्त सूत्रेण वेष्टियित्वा कांच भांडे शर्करापूर्णे मध्ये घालनीय मोहयत्यऽबलां।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं क्लीं जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे भ्म्ल्व्र्यूं मोहे म्मल्व्र्यूं स्तंभे हम्ल्व्र्यूं स्तंभिनी अमुकीं मोहय मोहय मम् वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

ताम्र पात्रे लिखेद्यंत्रं क्लीं भुवनाधिपं।
त्रिसंध्यं तापयेद्रामा कृष्टि: स्यात्खदिऽराग्निना।।१।।

ताम्र के पत्ते पर यदि पूर्वोक्त यंत्र को क्लीं के स्थान में ह्रीं रखकर (लिखकर) खदिर (खेर) के कोयले की अग्नि में प्रात: मध्यान्ह और सायंकाल की तीनों संध्याओं में तपावे तो स्त्री का आकर्षण होता है।

मंत्र– ॐ क्ष्वल्व्र्यूं ह्रीं जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे भ्म्ल्व्र्यूं मोहे म्म्ल्व्र्यूं स्तंभे हल्व्र्यूं स्तंभिनी अमुकी आकर्षय आकर्षय संवौषट्।

ताम्र पात्रे सुरभि द्रव्यै लिखित्वा।
खदिराग्नि ता तापयेत् रामाकृष्टि भवति।।२।।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्रीं जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे भ्म्ल्व्र्यूं मोहे म्म्ल्व्र्यूं स्तंभे ह्म्ल्व्र्यूं स्तंभिनी अमुकी मम् आकर्षय आकर्षय आं ह्रीं क्रौं क्ष्म्ल्व्र्यूं ॐ वषट्।

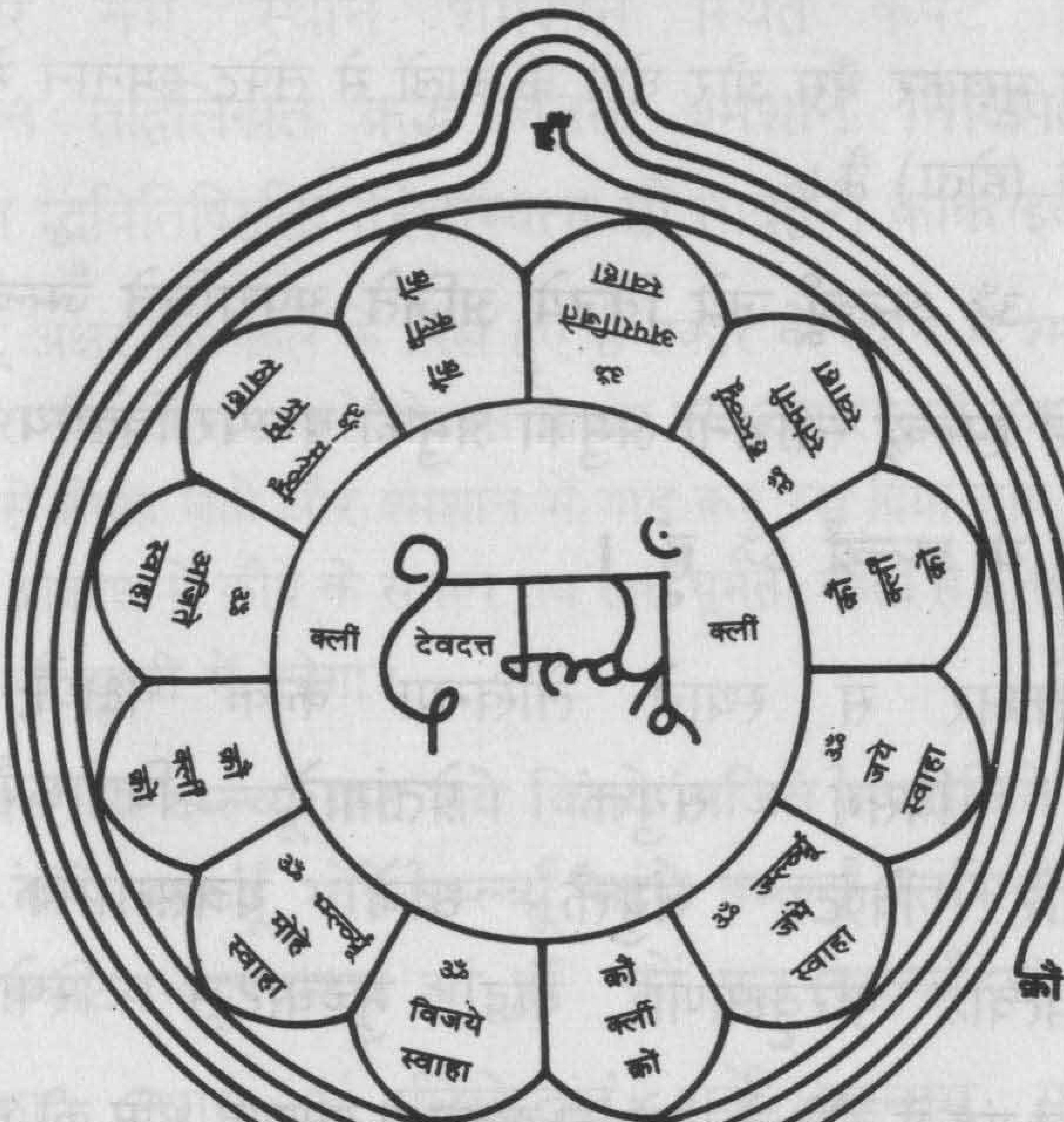
माया स्थाने च हूँकार विलिखेन्नर चर्म्मणि तापयेक्ष्वेड।
रक्ताभ्यां विष गर्दभ रूधिराभ्यां पक्षाहा त्प्रतिषेध कृत।।३।।

यदि इसी यंत्र को ह्रीं के स्थान में हूं लिखकर मनुष्य चर्म पर विष और गधे के रूधिर से लिखकर एक पक्ष तक तपावे तो प्रतिषेध होता है।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं हूं जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्वर्य्रूं जंभे भ्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्वर्य्रूं स्तंभे ह्मल्व्र्यूं स्तंभिनि अमुकं मारय मारय घे घे।

एतत्यंत्रं नर चर्मणि विष गर्दभ रुधिरेण लिखित्वा।
खदिराग्नि ना तापयेत पक्ष दिन मध्ये प्रतिषध्यकारी भवति।।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्रूं जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे भ्म्ल्व्र्यूं मोहे म्म्ल्व्र्यूं स्तंभे ह्ल्व्र्यूं स्तंभिनी अमुकं मम नाशय नाशय ध्वंसय ध्वंसय आं ह्रीं क्रौं ह्रूं क्ष्म्ल्वर्यूं ॐ घे घे।



ह्रूं स्थाने मांत मालिख्य सरेफं नाम संयुतं।
विभति फलके यंत्रं द्वयोरपि च मर्त्ययो:।।

उपरोक्त यंत्र में ह्रूं के स्थान पर विद्वेष कराये जाने वाले दोनों व्यक्तियों के नाम सहित र्यं बीज विभिन्न दो बेहड़ा के पत्तों पर लिखा जाना चाहिए।

वाजि माहिष कैशैश्च विपरीत मुख स्थयो।
आवेष्टय स्थापयेद्द्रूमौ विद्वेषं कुरुते तयो।।

फिर उन दोनों को घोड़े और भैस के बालों में लपेटकर श्मशान भूमि में परस्पर में पीठ से मिलाकर गाड़ने से दोनों व्यक्तियों में विद्वेष हो जाता है।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं मोहे ह्म्ल्व्र्यूं स्तंभिनि देवदत्त यज्ञ दत्तयों विद्वेषं कुरु कुरु हूं।

एतेद्यंत्रं बहेडा फलके विष गर्दभ रूधिरेण लिखित्वा।

विपरीत मुखकर भैंस और घोड़े के बालों से लपेट श्मनान में गाड़े। विद्वेषं भवति (होता) है।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे म्म्ल्वर्यूं मोहे ह्म्ल्व्र्यूं स्तंभिनी अमुका अमुकौ परस्पर विद्वेषय विद्वेषय आं ह्रीं क्रौं य क्ष्म्ल्व्र्यूं ॐ हूं।

पूर्वोक्तक्षर सं स्थाने लेखिन्या काक पक्षयो:।
मांतं विसर्ग संयुक्तं प्रेतांगारें विषारूणै।।
धूकारि विष्टा संयुक्तै ध्र्वजे यंत्रंसनामकं।
लिखित्वो परिवृक्षाणां वद्ध मुच्चाटनं रिपो:।।

उपरोक्त यंत्र में कौवे के पंखों की कलम से श्मशान भूमि की राख और उल्लू की विष्ठ की स्याही से वृक्षों के ऊपर नाम सहित य बीजों को दो बिन्दु की विसर्ग सहित लिखने से शत्रु का उच्चाटन होता है।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं य: जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे भ्म्ल्वर्यूं मोहे म्म्ल्व्र्यूं स्तंभे ह्म्ल्व्र्यूं स्तंभिनि अमुकं मुच्चाटय फट्।

यह यंत्र श्मशान की राख को विष में मिलाकर काक पंख से लिखकर धूकारि विष्टा से लिखकर बहेड़ा वृक्ष पर बांधने से शीघ्र उच्चाटन होता है।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं य: जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं मोहे मल्व्र्यूं स्तंभे ह्म्ल्व्र्यूं स्तंभिनी अमुकं मम शत्रु मुच्चाटय मुच्चाटय आं ह्रीं क्रौं य: क्ष्म्ल्व्र्यूं ॐ फट् फट्।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं ह जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे भ्म्ल्व्र्यूं मोहे म्म्ल्व्र्यूं स्तंभे ह्ल्व्र्यूं स्तंभिनी मम अमुककारि कुलौ उच्चाटं कुरु कुरु आं ह्रीं क्रों हं क्ष्म्ल्व्र्यूं ॐ फट् फट्।

फऽक्षरं नमः स्थाने शमशान स्थित कर्पटे निंबार्क।
जरसेन तद्विलिखेत क्रुद्ध चेतसा श्मशाने निक्षिपेत यंत्रं।
यावत्त द्भुवितिष्ठिति परिभ्राम्यत्य सौ तावद्वैरी काक इव क्षितौ।।

फट् अक्षर को पहले के लिखे हुए छ हकार के स्थान में श्मशान के लिए कपड़े पर नीम और आकड़े के रस से इस फट अक्षर वाले यंत्र को यदि क्रोधित भाव से लिखा जावे और श्मशान में गाड़ कर रख दिया जाये तो इससे शत्रु पृथ्वी में आकाश में कौवे के समान तब तक घूमता रहता है। तब तक यह यंत्र श्मशान की पृथ्वी में रहेगा।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं फट जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे म्मल्व्र्यूं जंभे म्म्ल्व्र्यूं मोहे म्म्ल्व्र्यूं स्तंभे हम्ल्व्र्यूं स्तंभिनी अमुकं मम् शत्रु मुच्चाटय मुच्चाटय आं ह्रीं क्रों फट् क्ष्म्ल्व्र्यूं ॐ फट्।

फट् स्थान मं लिखेद्व्रांतं भूर्जे तन्नाम संयुतं।
विषोपयुक्त रक्तेन नील सूत्रेन वेष्टियेत्।।
मृत्यु त्रिकोदरे स्थाप्यं तत श्मशाने निवेशयेत्।
सप्ताहा ज्जायते शत्रोः छेद भेदादि निग्रहः।।

पहले के अर्थात् उपरोक्त यंत्र में फट् के स्थान में मं अक्षर को नाम सहित भोजपत्र पर श्रृंगी विष से लिखकर, नीले धागे से लपेटकर, श्मशान में दग्ध राख की पुतली के पेट में रखकर, श्मशान में रखने से सातदिन में शत्रु का छेदन भेदन आदि निग्रह हो जाता है।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं मं जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे भ्म्ल्व्र्यूं मोहे म्मल्व्र्यूं स्तम्भे ह्म्ल्व्र्यूं स्तंभिनी मम् अमुकं शत्रु मुच्छेदय मुच्छेदय आं ह्रीं क्रौं मम् क्ष्म्ल्व्र्यूं ॐ घे घे।

तूर्य स्वर लिखेद्विद्वानम् स्थाने नाम संयुतं।
कुकंमागरू कर्पूरैः भूर्ये रोचनयान्वितै,।।
स्वर्ण मठितं कृत्वा वाहौ वा धारये कण्ठे।
करोति इदं सदा यंत्रं तरुणी जनमोहनं।।

उपरोक्त यंत्र में म अक्षर के स्थान में चौथा स्वर अर्थात् ई अक्षर को नाम सहित उसको सोने के जंतर में मंढ़वाकर भुजा या गले में पहने तो यह यंत्र सदा तरुणी जवान स्त्री को मोहित करता है।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं ई जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे भ्म्ल्व्र्यूं मोहे म्म्ल्व्र्यूं स्तंभे ह्म्ल्व्र्यूं स्तंभिनी अमुकी मोहय मोहय मम् वश्यं कुरु कुरु आं ह्रीं क्रों ई क्ष्म्ल्व्र्यूं ॐ वषट्।

वषट् वर्ण युतं कूटं लिके दीकार धामनि।
भूर्जपत्रे सिते त्यंते रोचना कुंकुमादिभिः।।
त्रिलोह वेष्टितं कृत्वा बाहौ वा धारयेत् गले।
स्त्री सौभाग्य करं यंत्रं पुंसां चेतोमि रंजनं।।

उपरोक्त यंत्र में कूटाक्षर क्षकार सहित वषट बीज को अर्थात् क्ष वषट को ई अक्षर के स्थान में अत्यंत श्वेत भोजपत्र पर गोरोचन कुंकुम आदि से लिखे, फिर इस यंत्र को त्रिलोह के जंतर में जिसमें स्वर्ण तीन भाग ताम्र बारह भाग चांदी सोलह भाग हों मंढ़वाकर, भुजा में या गले में धारण करने से यह यंत्र स्त्री के सौभाग्य को बढ़ाता है तथा पुरुषों के वा स्त्री के मन को प्रसन्न रखता है।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं क्ष वषट जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे भ्म्ल्व्र्यूं मोहे म्म्ल्व्र्यूं स्तंभे हम्ल्व्र्यूं स्तंभिनी मम् अमुकं स्त्री नाम चेतो रंजय आं ह्रीं क्रौं क्ष वषट् क्ष्म्ल्व्र्यूं ॐ वषट् वषट।

भैरव पद्मावती कल्प के अनुसार त्रलोह ताम्र द्वादश भाग तार सोलह

भाग में से बारह भाग तांबां एक भाग लोहा और तीन भाग सोना भी त्रिलोह कहलाता है।

क्षाद्यक्षार पदे योज्यं शिलातल संपुटे।
विलिख्यो ह्लींपुर बाह्ये स्तंभनं तालकादिभि:।।

पूर्वोक्त यंत्र में क्ष वषट बीज के स्थान में लं बीज सहित यंत्र को दो पाषाण की शिलाओं के बीच में हड़ताल आदि पीले द्रव्यों से लिखकर रखे जिसके बाहर पृथ्वी मंडल बनाकर उसके बाहर त्रिमूर्ति अर्थात ह्लींकार का वेष्टन करने से क्रोधादि का स्तंभन होता है।

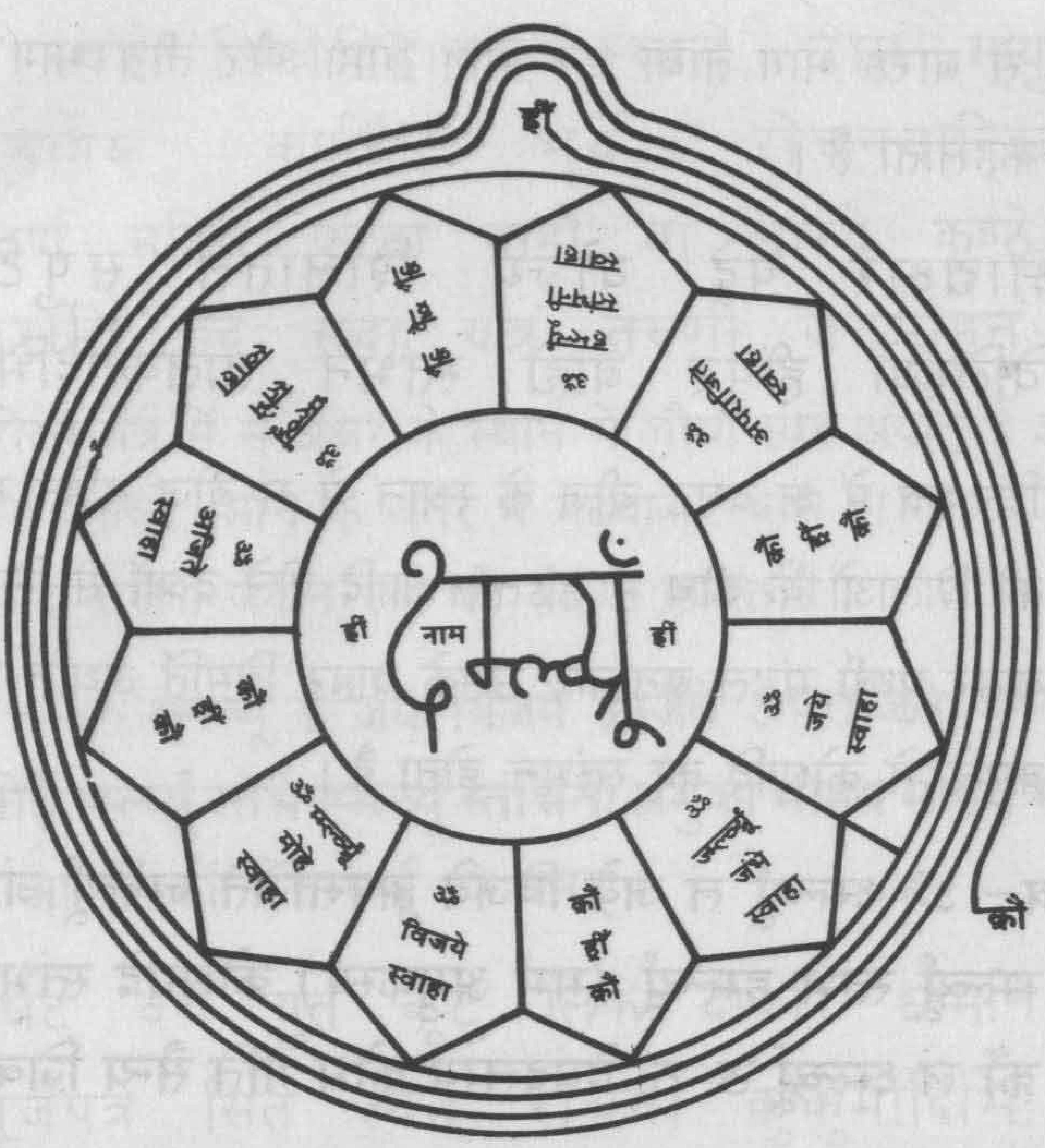
मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं लं जये विजये अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे भ्म्ल्व्र्यूं मोहय म्म्ल्व्र्यूं स्तंभे हम्ल्व्र्यूं (मम अमुकस्य) क्रोधादि स्तंभय स्तंभय आं ह्लीं क्रौं लं क्ष्म्ल्व्र्यूं ठ: ठ: देवदत्तस्य क्रोध गति सैन्य जिव्हां स्तंभय स्तंभय ठ: ठ:।

स्थानेतुमैद्रं श्री निज बीज में द्रं कुंकुमाद्ये।
लिंखितं सु भूर्जे त्रिलोह वेष्टयं विघृतं स्व।
बाहौ करोति रक्षा गृह मारिरुग्भ्य:।।

उपरोक्त यंत्र में लं के स्थान पर ऐन्द्र बीज श्रीं को कुंकुमादि से भोजपत्र पर लिखकर त्रिलोह के जंतर में जड़वाकर अपनी भुजा में पहने तो यंत्र ग्रहमारी और रोगों से रक्षा करता है।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं श्री जये विजये अजिते अपराजिते ज्म्ल्व्र्यूं जंभे भ्म्ल्व्र्यूं मोहे म्म्ल्वर्यूं स्तंभे हम्ल्व्र्यूं स्तंभिनी श्रीं।

मंत्रेषु यंत्रेषु च सम्येगेषु प्रकीर्तितेष्वातनुतेभियोगां।
यो मंत्र वित्स प्रथित प्रभावो रक्षा मणि: स्यात्प्रथित प्रभाव:।।



जो मंत्र शास्त्र का पंडित इन कहे हुए मंत्र और यंत्रों में अपने ध्यान को लगाता है। उसका प्रभाव सब जगह प्रसिद्ध हो जाता है। और वह प्रसिद्ध प्रभाव वाला होने के साथ-साथ उत्तम रक्षा करने वाला भी हो जाता है।

—●—

लोकपाल सिद्धि विधान

मणि विद्या प्रभाव मंत्र

भयंकर सर्प, भयंकर शाकिनी, विषम ग्रह और सब विषमय मनुष्य निर्विष होकर वश में हो जाते हैं और सम्पूर्ण जगत क्षोभ को प्राप्त होता है।

सामान्य मंडल

बुद्धिमान एक वृक्ष के नीचे प्रेत के घर में, श्मशान में, चौराहे पर, गांव

के ठीक बीच में या नगर के बाहर एक मंडल बनावे।

उसका मुख ईशान कोण की तरफ हो और वह मंडल गड्ढ़े जल तथा कंटक रहित समभूमि में आठ हाथ की भूमि में नव खण्ड का बनाया जावे। उसमें पांचों रंगों के श्रेष्ठ चूर्णो से चार दिशाओं में चार दरवाजे बनावे और उनको अनेक प्रकार की ध्वजा पताका दर्पण और घंटिकाओं से सजाकर सुंदर बनावे।

अश्वत्थ पत्र विरचित तोरण सत्पुष्प मंडपोपेतं।
सकल दिक्षु निवेशित मुसलाग्रन्यस्त पूर्ण घटं।।१।।

तस्मिन् प्राच्याधष्ट सुकोष्टे सु इंद्राग्रि मृत्यु नैऋति वरुणान्।
मारूतं धनद ईशान लक्षण युक्तान लिखत मतिमान्।।२।।

उसके द्वार पुरुष के प्रवेश करने योग्य बनाकर, उसको पीपल पत्तों की बन्दनवार बनाकर तोरण लगावे और अच्छे फूलों से उस मंडप को सजावे। उसकी सम्पूर्ण आठों दिशाओं में मूसल के आगे जल से भरे हुए आठ घड़े रख देवे। बुद्धिमान पुरुष उसके पूर्व आदि आठ कोनों में इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत, वरुण, वायु, कुबेर और ईशान देवों को लक्षणों सहित करके लिखें।

शुक्रं पीतं वन्हिं वन्हिं निभं मृत्यु राजमति कृष्णं हरितं।
नैऋतिम परं शशि प्रभं वायु मसितांगं।।३।।

घनदं समस्तं वर्ण सितमीशं मनुक्रमेण सर्वान् विलिखेत्।
गज मेष महिष नर मकरोधन मृग तुरंग वृष वाहानान्।।४।।

इंद्र को पीला, अग्नि को अग्नि के समान, यम को अत्यंत काला, नैऋत को हरा, वरुण को चन्द्रमा के समान सफेद, वायु को मटियाला- जो असित हो सफेद नहीं हो, कुबेर को सब रंगों का और ईशान देव को सफेद रंग का बनावे। यह सब इस अनुक्रम से सबको लिखे। इनके वाहन क्रम से ऐरावत

हाथी, मेढ़ा, भैसा, मनुष्य, मगर, दौड़ता हुआ मृग, घोड़ा और बैल बनावे।

वज्राग्नि दंड शतायसि पाश महातरूंगदात्रि शूलकरान।
परिलिख्य लोक पालान मध्ये भूतादि कृतिं विलिख्येत्।।५।।

इनके हाथ में क्रम से वज्र, अग्नि, दंड, शक्ति, तलवार, नागपाश, बड़ा वृक्ष, गदा, त्रिशूल देकर इन लोकपालों के बीच में भूतादि की आकृति बनावे।

गंधाक्षत कुसुमाद्यै: स्वकीय मंत्रैः प्रपूजयेत्सर्वान्।
सामान्य मंडल मिद भूत समुच्चाटनं प्रोक्तं।।६।।

फिर सबको गंध, अक्षत, पुष्प आदि से अपने-अपने मंत्रों से सबका पूजन करे। यह भूतों का उच्चाटन करने वाला सामान्य मंडल कहा है।

द्वयैक द्वयैक द्वयैक द्वयैकान पूर्वादि दिक्षु विनि युक्तान्।
क्रमसस्तान द्वादश विद्य मंत्रान हे लोक पालानात्म द्वारं।।७।।

रक्ष रक्ष दिव्य गंधं पुष्पं दीपं धूपाक्षतं बलिंचस्कं।
गृहण द्वय होमांतान स्वकीय मंत्रान् बुध प्राहुः।।८।।

दो, एक, दो, एक, दो, एक, दो, एक, इन पूर्व आदि दिशाओं के क्रमश लगाये हुए बारह प्रकार के मंत्रों से हे लोकपालों स्वीकार करो।

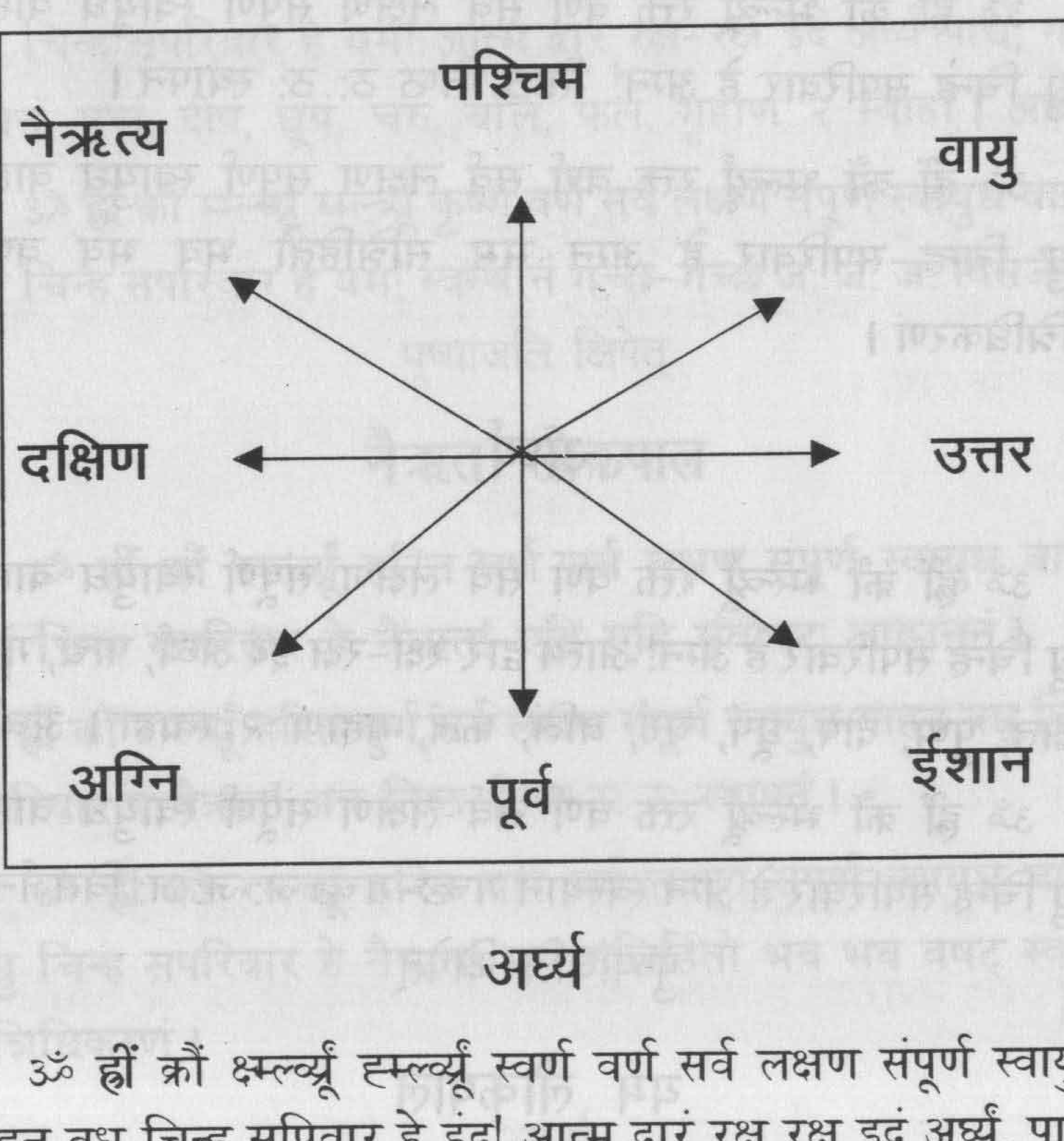
इन दिव्य गंध पुष्प दीप धूप अक्षत बलि नैवेद्य आदि के होम को दो बार गृहण गृहण कहकर दो बार रक्ष रक्ष कह कर ग्रहण कहे ऐसा ज्ञानियों ने कहा।

इन्द्रलोक पाल स्थापना

ॐ ह्रीं क्रौं क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं स्वर्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे इंद्र ! एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं क्रौं क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं स्वर्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपिवार हे इंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं क्रौं क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं स्वर्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपिवार हे इंद्र सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा सन्निधिकरणं।



अर्घ्य

ॐ ह्रीं क्रौं क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं स्वर्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपिवार हे इंद्र! आत्म द्वारं रक्ष रक्ष इदं अर्घ्यं, पाद्यं, गंध, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं, स्वस्तिकं यज्ञ भागं च गृहाण २ स्वाहा। अर्घ्यं

ॐ ह्रीं क्रौं क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं स्वर्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे इंद्र स्वस्थानं गच्छ गच्छ जः जः जः विसर्जनं।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

अग्नि लोकपाल

ॐ ह्रीं क्रौं भ्म्ल्व्र्यूं रक्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे अग्न! एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं क्रौं भ्म्ल्व्र्यूं रक्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे अग्न! तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं क्रौं भ्म्ल्व्र्यूं रक्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे अग्न मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अर्घ्य

ॐ ह्रीं क्रौं भ्म्ल्व्र्यूं रक्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे अग्न! आत्म द्वारं रक्ष-रक्ष इदं अर्घ्यं, पाद्यं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं, गृहाण २ स्वाहा। अर्घ्यं

ॐ ह्रीं क्रौं भ्म्ल्व्र्यूं रक्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे अग्न स्वस्थानं गच्छ-गच्छ जः जः जः विसर्जनं।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

यम लोकपाल

ॐ ह्रीं क्रौं म्म्ल्व्र्यूं य्म्ल्व्र्यूं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे यम! एहि एहि संवौषट् आहवाननं।

ॐ ह्रीं क्रौं म्म्ल्व्र्यूं य्म्ल्व्र्यूं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे यम अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं क्रौं म्म्ल्व्र्यूं यम्ल्व्र्यूं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे यम मम सन्निहितो भव-भव वषट् स्वाहा संन्निधिकरणं।

अर्घ्य

ॐ ह्रीं क्रौं म्म्ल्व्र्यूं यम्ल्व्र्यूं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे यम! आत्म द्वारं रक्ष-रक्ष इदं अर्घ्यं पाद्यं, गंध, अक्षतं, पुष्पं, दीपं, धूपं, चरुं, बलिं, फलं, गृहाण २ स्वाहा। अर्घ्यं

ॐ ह्रीं क्रौं म्म्ल्व्र्यूं यम्ल्व्र्यूं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे यम! स्वस्थानं गच्छ-गच्छ जः जः जः विसर्जनं।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

नैऋत लोकपाल

ॐ ह्रीं क्रौं रम्ल्व्र्यूं हरित वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे नैऋत! एहि एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं क्रौं रम्ल्व्र्यूं हरित वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे नैऋत! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं क्रौं रम्ल्व्र्यूं हरित वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे नैऋत! मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा सन्निधिकरणं।

अर्घ्य

ॐ ह्रीं क्रौं रम्ल्व्र्यूं हरित वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे नैऋत! आत्म द्वारं रक्ष-रक्ष इदं अर्घ्यं, पाद्यं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, चरूं, बलिं, फलं गृन्हाण गृन्हाण स्वाहा। अर्घ्यं

ॐ ह्रीं क्रौं रम्ल्व्र्यूं हरित वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन

वधु चिन्ह सपरिवार हे नैऋत! स्वस्थानं गच्छ गच्छ जः जः जः विसर्जनं।

पुष्पांजलि क्षिपेत

वरुण लोकपाल

ॐ ह्रीं क्रौं घ्म्ल्व्र्यूं झ्म्ल्व्र्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे वरुण! एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं क्रौं घ्म्ल्व्र्यूं झ्म्ल्व्र्यूं श्वेतवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे वरुण! तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं क्रौं घ्म्ल्व्र्यूं झ्म्ल्व्र्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे वरुण! सन्निहितो भव-भव वषट् स्वाहा सन्निधिकरणं।

अर्घ्य

ॐ ह्रीं क्रौं घ्म्ल्व्र्यूं झ्म्ल्व्र्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे वरुण! आत्म द्वारं रक्ष-रक्ष इदं अर्घ्यं, पाद्यं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, चरूं, बलिं, फलं गृहाण-गृहाण स्वाहा। अर्घ्यं

ॐ ह्रीं क्रौं घ्म्ल्व्र्यूं झ्म्ल्व्र्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे वरुण! स्वस्थानं गच्छ-गच्छ जः जः जः विसर्जनं।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

-वायो लोकपाल

ॐ ह्रीं क्रौं ख्म्ल्व्र्यूं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे वायो! एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं क्रौं ख्म्ल्व्र्यूं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे वायो! तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं क्रौं रव्म्ल्व्र्यूं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपिवार हे वायो! सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा सन्निधिकरणं।

अर्घ्य

ॐ ह्रीं क्रौं रव्म्ल्व्र्यूं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे वायो! आत्म द्वारं रक्ष-रक्ष इदं अर्घ्यं, पाद्यं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, चरूं, बलिं, फलं, गृहाण-गृहाण स्वाहा। अर्घ्यं।

ॐ ह्रीं क्रौं रव्म्ल्व्र्यूं कृष्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे वायो! स्वस्थानं गच्छ-गच्छ जः जः जः विसर्जनं।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

धनद लोकपाल

ॐ ह्रीं क्रौं छम्ल्व्र्यूं ठम्ल्व्र्यूं समस्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे धनद! एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं क्रौं छम्ल्व्र्यूं ठम्ल्व्र्यूं समस्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे धनद! तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं क्रौं छम्ल्व्र्यूं ठम्ल्व्र्यूं समस्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे धनद! मम् सन्निहितो भव-भव वषट् स्वाहा सन्निधिकरण।

अर्घ्य

ॐ ह्रीं क्रौं छम्ल्व्र्यूं ठम्ल्व्र्यूं समस्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे धनद! आत्म द्वारं रक्ष-रक्ष इदं अर्घ्यं पाद्यं

गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, चरूं, बलिं, फलं गृहाण -गृहाण स्वाहा। अर्घ्यं

ॐ ह्रीं क्रौं छम्ल्व्र्यूं ठम्ल्व्र्यूं समस्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे धनद स्वस्थानं गच्छ-गच्छ जः जः जः विसर्जनं।

पुष्पांजलि

ऐशान लोकपाल

ॐ ह्रीं क्रौं व्म्ल्व्र्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे ईशान! एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं क्रौं व्म्ल्व्र्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे ईशान! तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं क्रौं व्म्ल्व्र्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे ईशान सन्निहितो भव-भव वषट् स्वाहा सन्निधि करणं।

अर्घ्य

ॐ ह्रीं क्रौं व्म्ल्व्र्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे ईशान! आत्म द्वारं रक्ष-रक्ष इदं अर्घ्यं, पाद्यं, गंधं, अक्षतं, दीपं, धूपं, चरूं, बलिं, फलं, गृहाण-गृहाण स्वाहा। अर्घ्यं।

ॐ ह्रीं क्रौं व्म्ल्व्र्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधु चिन्ह सपरिवार हे ईशान स्वस्थाने गच्छ गच्छ जः जः जः विसर्जनं।

पुष्पांजलि क्षिपेत

--व्यंतर तथा भूतादि बसीकरण साधना मंत्र

मंत्र- ॐ ह्रां ग्रां हूँ फट्।

विधि – मंगलवार को श्मशान में १० हजार मंत्र जाप्य करे तो भूत आदि बस में होते हैं।

व्यंतर बाधा दूर करने का मंत्र

मंत्रः– ॐ णमो भय वदो अरिड्डोणमिस्सामिस्स अरिड्ढेण बंधेण बंधामि रक्षसाणं भूताणं खेयराणं चोराणं डायाणीणां शायिणीणं महोरगांणं बध्धाणं सिहाणं गहाणं अणे विजे दुड्डाः संभवंति तेसिं सव्वेसिं मणं मुहं गईं दिट्ठि सुवोहं जिह्वां बंधेण बंधामि धणु धणु महाधणु महाधणु जः जः जः ठः ठः ठः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ठः ठः ठः ठः ठः ल ल ल ल ल हुं फट्।

तान मुंचति चेन्मंत्री मंत्रयं व्रैर था मुना।
अरिष्टणेमि मंत्रेण तद्विधां छेदयेद्बुधः।।१।।

मंत्री मंत्र और यंत्र से उस ग्रहों को छुडाना चाहे तो इस अरिष्ट मंत्र से उस विद्या को नष्ट करें।

चंडिका मंत्रित श्वेत सर्षपैर्भाग ताडिता।
प्लवतेया जले क्रूरा साध्वी तत्र निमज्जाति।।२।।

निम्नलिखित चंडिका मंत्र से पढ़े हुए सफेद सरसौं के दानों को मारने पर जल में तैरने वाली निर्दय शाकिनी जल में ही डूब जाती है।

चंडिका मंत्र

मंत्रः– ॐ फैं चामुंडै हिलि हिलि विच्चे स्वाहा।

अपयात्यरिष्टणोमि मंत्रेण प्रतिकृति कृते छेदे।
अभिजप्तया खटिकया ग्रह भूत पिशाच शाकिन्यः।।

अरिष्टणेमि मंत्र को खडिया पर जपकर तस्वीर में या पुतले में छेद करने से ग्रह भूत पिशाच शाकिनी दूर हो जाते हैं।

अष्टौलघु पाषाणान दिशा सुपरिजप्य निक्षेपेतेन।
चौरारि रौद्र जीवानन भयं सं जायते नान्यस्मिनं।।

इस मंत्र को आठ छोटे पत्थर के कंकरों पर पढ़कर आठों दिशाओं में फेंकने से चोर, शत्रु और भयंकर जीव तथा दूसरों से भी भय नहीं होता है।

शाकिनी का भय नहीं

नाम झौंकार मध्ये वहि रपि वलयं षोडश स्वस्तिकानां।
आग्रेयं गेह मुद्यन्न व शिखिमथ तद्वेष्टितं त्रिकालाभि:।।

दद्याद्वाह्ये चत्वार्य्य अमरपुर पुराण्यं अतरालस्थ मंत्राण्ये।
एतद्यंत्रं सुतंत्रे लिखिताप हरेत शाकिनीभ्य सुभीतिं।।

झौं के बीज में नाम लिखकर, उसके बाहर चारों तरफ सोलह स्वस्तिक बीज लिखे। उसके बाहर अग्नि मंडल बनाकर तीन बार १६ कलाओं (स्वरों) से वेष्टित करें उसके बाहर पृथ्वी मंडल में चार अमरपुर में अंतराल निम्नलिखित मंत्र लिखे। इस यंत्र को विधि पूर्वक लिखा जाने से शाकिनी से भय नहीं होने देता है।

शाकिनी आदि दूर करने का मंत्र

मंत्रोद्धार

पूर्व दिशा में

ॐ वज्र धरे बंध-बंध वज्र पाशेन सर्व दुष्ट विघ्न विनाशकानां ॐ हूं क्षूं योगिनी देव दत्तं रक्ष रक्ष स्वाहा।

दक्षिण दिशा में

ॐ अमृते धरे धर-धर विशुद्धे ॐ हूं क्षूं योगिनी देवदत्तं रक्ष-रक्ष स्वहा।

पश्चिम दिशा में

ॐ अमृत धरे डाकिनी गर्भ संरक्षणी आकर्षणी ॐ हूं क्षूं फट् योगिनी देवदत्तं रक्ष रक्ष स्वाहा।

उत्तर दिशा में

ॐ रु रु वले ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः सर्व योगिनी देवदत्त.... रक्ष रक्ष स्वाहा।

ज्वालामालिनी सिद्धि

आविष्ट शिरोनीते तजप्तेरर्क तुरगरिपु कुसुमे।
आयाति मंत्रिणो वशमभिमतभि स ग्रहेः कुरुते।।१।।

इस मंत्र को तुरंग रिपु (कनेर) के पुष्पों पर जप कर जगाये हुए ग्रह वाले पुरुष के सिर पर डालने से वह ग्रह मंत्री के वश में हो जाता है। और उसकी इच्छानुसार सभी संग्रह करने के कार्य को करता है।

इत्थं ग्रह निग्रहणे मंत्राः कथिताः प्रसिद्ध शक्ति।
कथ्यते स्तंभदौ मंत्राः पिंड प्रधानाश्च युक्ताः।।२।।

इस प्रकार ग्रहों के निग्रह करने वाले मंत्र प्रसिद्ध-प्रसिद्ध योगों सहित योगी द्वारा कहे गये हैं। अब ग्रहों के स्तंभन आदि में पिंड प्रधान मंत्र कहे जाते हैं।

सकली करणेन बिना मंत्री स्तंभादिनिग्रह विधाने।
असमर्थो स्तनादौ सकलीकरणं प्रवक्ष्यामि।।३।।

मंत्री भूतानि स्तंभन आदि ग्रहों के निग्रह के विधान में सकली करण अर्थात् आत्मरक्षा किये बिना सफल नहीं हो सकता है। अत एव पहले सकली करण क्रिया करना चाहिए।

मंत्री बली भिमत्वा पात्रं मुक्ता ग्रहः प्रायाति यदि।
तत्राप्य दिशा बंद्यं कुर्यात् इच्छं सनापैत्ति।।४।।

यदि मंत्री को बलि जानकर कोई ग्रह उस ग्रह से पीड़ित प्राणी से छूटकर आवे तो दिशा बंधन करने से वह दूर हो जाता है।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ज्वालिनी पादौ च जघन् मुदरं।
वदनं शीर्ष रक्ष द्वय होमांत पर गात्र पंच के स्थाप्या।।५।।

इत्यादि ऊपर के श्लोक के अनुसार इस मंत्र का अपने पांचों अंगों में अर्थात् पांव, जांघ, पेट, मुँह, शिर में ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः बीजों का ज्वालामालिनी शब्द को पांचों अंगों में लगाकर रक्ष रक्ष स्वाहा के साथ स्थापित करें।

रक्षा मंत्र

ॐ ह्रां ज्वालामालिनी पात्रस्य पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनी पात्रस्य जघनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूँ ज्वालामालिनी पात्रस्य उदरं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं ज्वालामालिनी पात्रस्य वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः ज्वालामालिनी पात्रस्य शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा।

क्ष ह भ म य र ध झ कांतै छकार पूर्णेंदुयक्त निर्विष बीजैः।
विदुर्द्ध रेफ सहितैर्मल वरयूं (कार) संयुक्ते द्विषद्वध बीजैः।।६।।
स्तंभं स्तोभ स्तानमांध्य प्रेषण सुदहन भेदन बंद्यं।
ग्रीवा भंगे गात्र छेदन हनन माप्यायनं ग्रहणां कुर्यात्।।७।।

क्ष ह भ म य ल घ झ ख ठ कार पूर्ण चंद्र और निर्विष बीज को अनुस्वार और उर्द्ध रेफ सहित बीजों को म ल व र यू से मिलाकर हु फट् और घे घे पल्लवों से युक्त करके ग्रहों को स्थंभन स्थिर करना अंधा करना, जलाना, भेदना, बांधना, गर्दन भंग करना, अंग छेदन करना, मारना तथा दूरी करना।

हा: स्यान्निरोधं शून्यं स्वरो द्वितीय श्चतुर्थ षष्टौच।
औंकारों बिन्दु युतो विसर्जनीयश्च पंच कला।।८।।
ॐ कूट पिंड पंच स्वर युत कूटं पंचकं सं निरोधं।
दुष्ट ग्रहांस्तथा दिव् स्तंभय च स्तंभमंत्र इति फट घे घे।।९।।

ह्मं के बाद आं क्रों क्षीं हकार को दूसरी, चौथी, छट्टी, चौदहवीं और सोलहवीं को बिन्दु सहित अर्थात् से विसर्जन ह्मं ह्मीं ह्मूं ह्मौं ह्मः से विसर्जन करे। ॐ के बाद कूट पिंड (क्ष्म्ल्व्र्यूं) कूटाक्षर (क्षकार) को पांचो स्वरों सहित अर्थात् क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्ष: और ज्वालामालिनी देवी के पांच बाण (ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं) के पीछे दुष्ट ग्रह के बाद दो बार स्तंभय स्तंभय लगाकर दो स्तंभ अर्थात् ठ: ठ: लगावे। फिर फट् फट् घे घे लगावे।

मत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्ष: हा: दुष्ट ग्रहां स्तंभय स्तंभय ठ: ठ: हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्याज्ञापयति हुं फट् घे घे।

श्रृंखला मुद्रा स्तंभन मंत्रः

यह ग्रहों का स्तंभन मंत्र हैं।

ॐ शुन्यपिंड पंच स्वर युक्तं ह पंचकं च स निरोधं।
स्तोभन मंत्र: सर्वग्रहान्था आकर्षय द्वयं संवौषट्।।

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ह्मां ह्मीं ह्मौं ह्मः सर्वदुष्ट ग्रहान स्थंभय आकर्षय आकर्षय हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति संवौषट्।

यह स्थंभन मंत्र शंख मुद्रा में जपे।

भक्ति भपिंडौ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः सन्निरोध सहितानि दुष्ट ग्रहमथ ताडय हुं फट घे घे।

ताडन मंत्र

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः हाः दुष्ट ग्रहान ताडय ताडय हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति ह्रूं फट् घे घे।

ताडय मंत्र गदा मुद्रा

विनयादिपिंडो म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः स्तथैव।
सं निरोधः हुं फट् घे घे, सर्वेषां ग्रह नाम्रां।।
वज्रमय शूच्चा अक्षिणी द्वि स्फोटयन् दर्शय।
द्विस्तथैव हुं फट घे घे।।

मंत्र– ॐ म्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं म्रां म्रीं म्रूँ म्रौं म्रः हाः दुष्ट ग्रहान हुं फट सर्वेषा दुष्ट ग्रहाणां वज्रमय शूच्या अक्षीणी स्फोटयन् दर्शय- दर्शय हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्याज्ञापयति ह्रूं फट् घे घे।

अक्षि स्फोटन मंत्रः शंख मुद्रां यह ग्रहों का अक्षि स्फोटन मंत्रा है। इसकी शंख मुद्रा है।

प्रेक्षण मंत्र

मंत्र– ॐ य्म्ल्व्र्यूं ज्वालमालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं य य य य याः याः सर्व दुष्ट ग्रहान प्रेषय-प्रेषय घे घे हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्याज्ञापयति हुं जः जः जः।

यह प्रेक्षण मंत्र है।

छुटिका मुद्रा से जाप्य करें।

मंत्र– ॐ रम्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ज्वल-ज्वल र र र र र र रां रां प्रज्वल प्रज्वल हुं ज्वल-ज्वल धगं-धग धूं धूं धूमांध-धूमांध कारिनि ज्वलन शिखे देवान् दह-दह नागान दह-दह यक्षान दह-दह गंधर्वान दह-दह ब्रह्म राक्षसान् दह-दह भूत ग्रहान दह-दह व्यंतर ग्रहान दह-दह सर्वदुष्ट ग्रहान दह-दह शतकोटि देवतान दह-दह सहस्त्र कोटि पिशाच राजानां ग्रहान दह-दह लक्ष कोटि अपस्मार ग्रहान दह-दह धे धे स्फोटय-स्फोटय मारय-मारय दहनाक्षि प्रलय धग पद्धगित मुखि ज्वालामालिनी ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्व दुष्ट ग्रह हृदयं हुं दह-दह पच-पच छिंद-छिंद भिंद-भिंद दह-दह ह ह ह ह ह ह हा: हा: आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्याज्ञापयति ह्रूं फट् घे घे।

होम मंत्र

जुहुयात् त्रिकोण कुंडे मधुरत्रय सर्वधान्य सर्षपलवणै:।
राजपलोशार्क शमीपि चुमंद करंज खादिर काष्टोत्थाग्रौ।।

त्रिकोण होम कुंड में घृत, दुग्ध, शर्करा, सब धान्य, सफेद सरसों, लेकर पलाश, आकड़ा, खेजड़ा, नीम, करंज, खेर, की लकडियों को अग्नि में इन समिधाओं से होम करें।

ग्रह निवारण मंत्र

मंत्र– ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रां हा: सर्व दुष्ट ग्रहान स्तंभय- स्तंभय ताडय-ताडय दह-दह पच-पच भेदय-भेदय हा: हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्याज्ञापयति हूँ फट् घे घे।

गल मंत्र

मंत्र– ॐ रव्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं द्रां द्रीं खां खीं खूं खौं खः हाः फट् घे घे सर्वेषां ग्रह नाम्रा गल भंगं कुरु-कुरु हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति हूँ फट् घे घे।

यह गल भंग मंत्र है। इसकी गल भंग मुद्रा खलिन मुद्रा है।

छेदन मंत्र

मंत्र– ॐ छ्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रौं छ्रः हा सर्वेषां ग्रह नाम्रा मंत्राणि छिंद-छिंद हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति हूँ फट् घे घे।

यह अंत्रा छेदन मंत्र है।

ग्रह हनन् मंत्र

मंत्रः– ॐ ह्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं तडीत्पाषाणैः स्ताडय स्ताडय हाः सर्व दुष्ट ग्रहान् तडिष्पाषाणै ताडय ताडय पातय-पातय हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्याज्ञापयति हुं हुं फट् फट् घे घे।

यह ग्रहों का हनन मंत्र है।

सर्व ग्रहण मंत्र

मंत्र– ॐ क्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं व्रां व्रूं व्रीं व्रौं व्रः हाः सर्व दुष्ट ग्रहान स्तंभय-स्तंभय स्तोभय स्तोभय ताडय-ताडय अक्षिणी स्फोटय-स्फोटय प्रेषय-प्रेषय दह-दह भेदय-भेदय बंधय-बंधय ग्रीवा भंगय-भंगय अंत्राणि छेदय-छेदय हन-हन हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति हूँ फट् घे घे।

यह सर्वकार्मिक मंत्र को तर्जनी मुद्रा में करें।

मज्जन मंत्र

मंत्रः- ॐ ब्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ब्रां ब्रीं ब्रूं ब्रौं ब्रः हा सर्वदुष्ट ग्रहान समुद्रे मज्जय-मज्जय हां आं क्रों क्षी ज्वालामालिन्या ज्ञापयति हुं फट् घे घे।

यह मज्जन मंत्र है।

आप्यायन मंत्र

मंत्रः- ॐ झ्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं द्रां द्रीं सं तं वं मं हं सं सर्व दुष्ट ग्रहान् उत्थापय उत्थापय नट-नट नृत्य नृत्य हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति स्वाहा।

यह आप्यायन मंत्र है। इसकी आप्यायन मुद्रा है।

इस सर्व निरोध आप्यायन मंत्र के द्वारा अक्षत और जल को अभिमंत्रित करने और अक्षत को मारने और जल से धोने से सब ग्रहों का नाश होता है।

इस या अन्य किसी निग्रह मंत्र का प्रयोग करने से ग्रहों का निग्रह हो जाता है। ऐसा ज्वालामालिनी देवी का सिद्धान्त है।

शब्द कशां कुशं चरणैः र्हय नागश्चोदिता यथा यांति बुधैः।
दिव्या दिव्या सर्वेनृत्यंति तथैव मंत्र संबोधनतः।।

जिस प्रकार घोड़े और हाथी को शब्द कोडे अंकुश अथवा ऐडी से आगे चलते हैं उसी प्रकार मंत्री के शब्द पर दिव्य और अदिव्य ग्रह सभी नाचते हैं।

व्यक्ताक्षर वर मंत्रे र्भित्वा दुष्ट ग्रहस्य हृत्कर्णन।
यद्यचिन्तयति बुधः स्तत्त चोपं करोति भुवि।।

विद्धान पुरुष के कहे हुए उत्तम मंत्रों से अक्षरों से दुष्ट ग्रहों के हृदय और कानों में छेदने से मंत्री जो जो सोचता है। वही वही होता है।

दहन छेदन प्रेषण ताडन भेदन सु वंद्य मन्याद्वा पार्श्व जिनाय।

तदुक्ता यद्यति पदं तदेव मंत्रः स्यात्।।

यह पुरुष छेदना जलाना भेदना, काटना, मारना और बाँधना तथा अन्य कर्म की भी श्री पार्श्वनाथ भगवान के लिए हैं। यह कहकर जो पद कहता है वही मंत्र बन जाता है।

दिव्यमदिव्यं साध्यम साध्यं संबोध्यं बीजम बीजं।

ज्ञात्वा यद्वक्ति पदं तदेव मंत्रः स्यात्।।

यह दिव्य अदिव्य साध्य असाध्य कहने योग्य और न कहने योग्य तथा बीज और अबीज को बिना जाने हुए भी जो पद कहता है वही मंत्र बन जाता है।

भुकुटि पुट रक्त लोचना द्भयं कराद्ध प्रहास हा हा शब्दैः।

मंत्र पदं प्रपठन सन् यद्वक्ति पदं तदेव मंत्रः स्यात्।।

वह भौं चढाकर, लाल नेत्र किये हुए, भयंकर अट्टाहस करते हुए हा-हा शब्द करता हुआ अथवा मंत्र पद को पढ़ता हुआ भी जो कुछ कहता है वह मंत्र बन जाते हैं।

यद्धा चोद्यं वांछिति तत् तत् कुरुते द्विषद्विधं बीजं।

ध्यात्वा यद्वक्ति पदं तदेव मंत्रो भवेत्सधोः।।

मंत्री जिस जिस कार्य को करना चाहता है शत्रु को जानने वाला बीज वही–वही कर देता है। इस वास्ते बीज का ध्यान करके द्वेष करने का या बंध करने का जो पद कहा जाता है वहीं मंत्र होता है।

अति वहलाऽज्ञान महांधकार मध्ये परिभ्रमन् मंत्री।

लब्धोपदेश दीपं यद्वक्ति पदं तदेव मंत्रः स्यात्।।

मंत्री पुरुष अत्यंत गहन अज्ञान रूपी महांधकार के बीच में घूमता हुआ जो उपदेश रूपी दीपक को पाकर जो भी कहता है वही मंत्र होता है।

नपठतु माला मंत्रं देवी साधयतु नैव विधिना च।
श्री ज्वालिनी मंतज्ञो यद्वति पदं तदेव मंत्रः स्यात्।।

न तो माला मंत्र के ही मंत्र का पाठ करे ओर न यहाँ देवी की ही विधि पूर्वक साधना करें किन्तु श्री ज्वालामालिनी देवी के मत को जानने वाला जो भी कहता है वही मंत्र हो जाता है।

देव्य चन जप नियम ध्यानानुष्ठान होम रहितोपि।
श्री ज्वालिनी मतज्ञो यद्वक्तिं पदं तदेव मंत्रः स्यात्।।

देवी की पूजा जप ध्यान अनुष्ठान और होम से रहित होने पर भी श्री ज्वालामालिनी देवी के सिद्धान्त को जानने वाला जो पद कहता है वही मंत्र हो जाता है।

विनयं पिंडं देवीं स्व पंच तत्व निरोध बीजं च।
ज्ञात्वोपदेश गर्भ यद्वक्ति पदं तदेव मंत्रस्यात्।।

विनय पिंड देवी के स्व पंच तत्व को निरोध सहित जानकर मंत्री जो पद कहता है वहीं मंत्र हो जाता है अर्थात् निम्नलिखित मंत्र सब काम देता है।

मंत्रः- ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः सर्व दुष्ट ग्रहान स्तंभय-स्तंभय ठः ठः हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति हूँ फट् घे घे।

विशेष मंत्र

विनयादि देवता पिंड तत्व नवकं विरोध शून्य युतं।
वश्या कृष्टो च्चाटन मारण बीजानि मणि विद्या।।

मंत्रः-ॐ ज्वालामालिनी क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं र्म्ल्व्र्यूं ध्म्ल्व्र्यूं झ्म्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं छ्म्ल्व्र्यूं ठ्म्ल्वर्यूं क्ल्व्र्यूं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं हां आं क्रों क्षीं हाः वषट् संवौषट् हु फट् घे घे।

विनयादि देवता पिंड नव तत्व निरोध और शून्य सहित वषट (वशीकरण) संवौषट् (आकर्षण) उच्चाटन (हूँ फट्) मारण के बीजों की उत्तम मणि विद्या होती है।

भूर्जे लिखितै कै क स्वंबीज सहितैः समंत्रोद्येः।
इषान्मंत्रा नलिकांत्रितोहमयी र्वेष्टये द्विधिवत्।।
तैरेतेः सप्तोत्तर विंशति संख्यैजपेत्सुधी मणिभिः।
मंत्री तमैव मंत्र प्रति दिवसं त्रि सुं संध्या सुः।।

इस मंत्र को भोजपत्र के ऊपर वश्य आदि के अपने-अपने बीज मंत्र सहित लिखकर, त्रिलोह की नली में रखकर, विधिवत मंत्री एक सत्ताईस मणियों की माला बनाकर उस पर मंत्र को प्रतिदिन दोपहर और सायंकाल के समय जपे तो इच्छित कार्य सिद्ध होते हैं।

卐

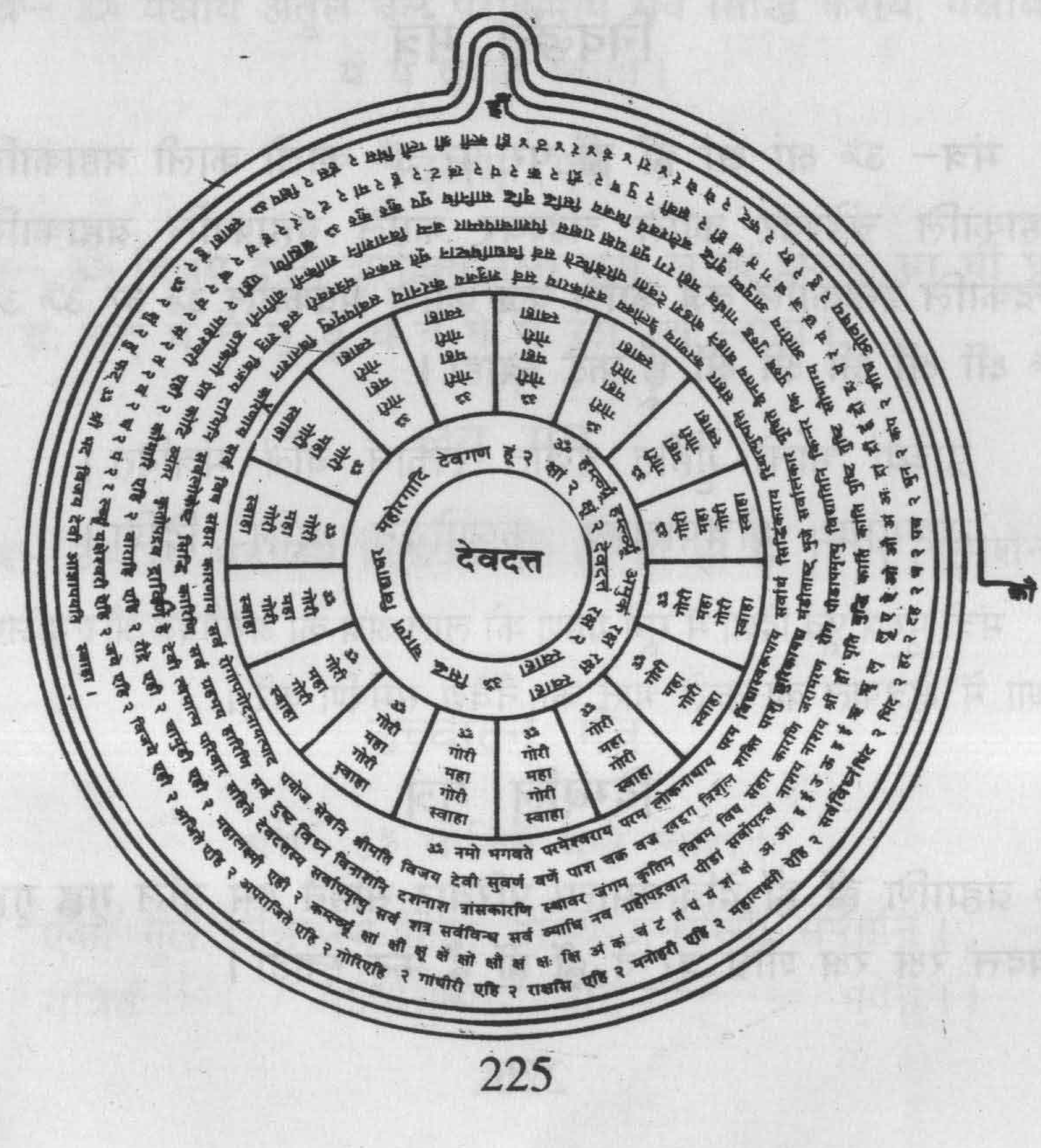
सिद्ध विद्या मंत्र

मंत्र– ॐ सिद्ध चारणा विद्याधर मोह रगादि देवगणाः हूं हूं क्षां क्षां क्षूं क्षूं क्षं क्षं हुं हुं देवदत्त रक्ष रक्ष स्वाहा।

गौरी मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवते परमेश्वराय परमलोकनाथाय परम विद्या स्वरूपाय, सर्वार्थ सिद्धिं कराय, स्थित्युत्पत्ति संहार करणाय, त्रैलोक्य वंशकंराय सर्व शत्रु जय करणाय, सर्व्वापमृत्यु विनाशन करणाय, सर्व विष संहार करणाय सर्व रोगापनोदनाय तत्पाद पयोज सेवनि श्री मति विजयदेवी सुवर्ण वर्णे पाश चक्र वज्र खड्ग त्रिशूल शक्ति परशु छुरिकायुद्य मंडिताष्ट भुजे सर्वालंकार भूषिते वैनतेय वाहने षोडश देवता परिवेष्टिते सर्व विद्याद्यिष्ठा भूते सकल मंत्रेश्वरी सर्व शत्रु

विजयदायिनी सर्व लोकेष्ट सिद्धि कारिणी सर्वग्रह भय हारिणि सर्व दुष्ट विघ्न विनाशिनी दश नाग त्रास कारिणि स्थावर जंगम कृत्रिम विषम विष संहार कारिणि जरामरण रोग पीडापमृत्यु विद्यातिनि किन्नरं किं पुरुष गरुड़ गांधर्व महोरग भूत यक्ष राक्षस पिशाचापस्मार जन्म विनाशिनी शाकिनी योगिनी डाकिनी प्रेतकोटि व्यंतर कृतोपद्रव द्राविणि हे देवि त्वमात्म परिवार सहिते देवदत्तस्य सर्वापमृत्यु सर्वशत्रु सर्व विघ्न सर्व व्याधि नवग्रहोपद्रवान पीडां सर्वोपद्रवं नाशय नाशय श्री ह्री घृति बुद्धि कीर्ति कांति पुष्टि तुष्टि सौभाग्यारोग्य आयुष्य वृद्धि बलैश्वर्य विजय सिद्धि वृद्धि सानिधि भूपं कुरू कुरु ॐ ब्रह्माणि एहि एहि माहेश्वरी एहि एहि कौमारि एहि एहि वैष्णवि एहि एहि वाराहि एहि एहि रौद्र एहि एहि चामुंडि एहि एहि महालक्ष्मी एहि एहि क्म्ल्व्र्यूं **क्षां क्षीं क्ष्वं क्षें क्षां क्षूं क्षौं क्षः क्षि अं कं चं टं तं पं शं क्षं अ आ**



इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः द्रां द्रीं दूं द्रौं द्रः पं रं यं छं जं धं यं ज्ञं तं क्षं ह्रीं ह्रीं ज्वीं ज्वीं पु ष ष द्रीं द्रीं क्र क्र पं पं खं खं टं टं हं हं मां मां दं दं रं रं हं हं थं थं चं चं यं यं सं सं तं तं वं वं चं चं पं पं रुम्ल्व्र्यूं यक्षेश्वरी एहि एहि जय एहि एहि, विजये एहि एहि, अजिते एहि एहि, अपराजितो एहि एहि, गौरी एहि एहि, गांधारी एहि एहि राक्षसी एहि एहि, मनोहरि एहि एहि, महालक्ष्मी एहि एहि, सर्वविघ्नं छिंद छिंद भिंद भिंद हर हर दह दह मम् पच पच धुन धुन कंप कंप शीघ्र शीघ्र आवेषय आवेषय हुं हुं हर फट् फट् घे घे रं रं रं रं रां रां रां रां रुं रुं रुं रुं रं रं रं रं ठं ठं ठं ठं क्लीं श्रीं ग्लौं मिंस मिंस हं स हं स क्षि प ॐ स्वाहा हुं हुं ॐ ॐ क्षुं क्षुं हुं फट् ॐ श्री मद विजय देवी आज्ञपयति स्वाहा।

निवर्द्धन मंत्र

मंत्र– ॐ क्षां क्षां ह्रीं ह्रीं पर पर ॐ काली काली महाकालि महाकालि चंडेश्वर कालि चडेश्वर कालि ब्रह्मकालि ब्रह्मकालि इन्द्रकालि इन्द्रकालि वज्र कालि वज्र कालि भद्रकालि ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं हूँ फट् स्वाहा।

प्राच्यां भानो गृहीत दद्यात रक्तानं बलिं मंत्रवित।
याम्यायां क्षेत्रपालस्य कृष्णोदन बलिं दिशि।।

मंत्री पुरुष पूर्व दिशा में सूर्य ग्रहण को लाल अन्न का अर्घ्य देवे और दक्षिण दिशा में क्षेत्रपाल को काले भात का नैवेद्य समर्पण करें।

दिग्बलि मंत्र

ॐ ब्रह्माणि ह्रीं ह्रीं देवित्वमात्म परिवार सहितै इमं बलिं गृह्ण गृह्ण देवदत्तं रक्ष रक्ष शीघ्रं वर दे ह्रीं ह्रीं हूँ फट् स्वाहा।

अपराजित रक्षा मंत्र

मंत्र– ॐ अपराजिते देवते देवदत्तं रक्ष रक्ष स्वाहा।

शुद्धि मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवते विश्व जन हिताय त्रिलोक शिखर शेखराय विशुद्ध चतुर्मुखाय शुद्धाय शुद्धि करणाय ॐ बं बं यं यं फ्म्ल्व्र्यूं स्वाहा।

अमृत मंत्र

मंत्र– ॐ अमृतधारिणी झ्वीं क्ष्वीं अमृतदायिनी स्थावर जंगम कृत्रिम विष संहरिणी देवदत्तस्य अमृताय स्वाहा।

यक्ष मंत्र

मंत्र– ॐ यक्षाय अतुल बल पराक्रमाय सर्व सिद्धि कराय, यक्षाय यं यं यं ह्रीं स्वाहा।

विजय मंत्र

मंत्र– ॐ विजय देवते त्रैलोक्य रक्षा क्षमे खं खं घ्म्ल्व्र्यूं घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः फट् घे घे घूं घूं व व घे घे रक्ष रक्ष स्वाहा।

जय मंत्र

मंत्रः- ॐ जये महाजये विश्वजये त्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं विघ्न विनाशनं कुरु कुरु स्वाहा।

उच्चाटन मंत्र

मंत्र– ॐ लोजितें मुखे स्वाहा।

एकां गुलं चित्रकस्य कीलं ग्राह्यं पुनर्वस्यौ सप्तानि।
मंत्रितं मोहान्निभिंन्नोच्चाटनं भवेत्।।

पुर्नवसु नक्षत्र से चित्रक की एक अंगुल की कील लेकर इस मंत्र से सात बार मंत्रित करके रखने से उच्चाटन होता है।

मंत्र:- ॐ शिलि शिलि स्वाहा।

स्वात्य ग्रोदंबरं बीजं मंत्रितं चतुरंगुलतं।
यस्य निखनेद गेहे तस्यो च्चाटनं भवेत्।।

स्वाति नक्षत्र में चार अंगुल लम्बी उग्रा (लहसुन) और उदंबर (गूलर) के बीज और कील को इस मंत्र से मंत्रित करके जिसके घर के द्वार में गाड़े उसका उच्चाटन होता है।

मंत्र:- ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्रा करालाय कपिल रुपाय कपि अमुकं सपुत्र वाद्यं वैस्सह हन् हन् पच् पच् शीघ्रं शीघ्रं उच्चाटय उच्चाटय हूँ फट् स्वाहा।

काकोलूकस्य पक्षां सुहुलाह्यष्टाधिकं शतं।
सनाम्ना मंत्र योगे च समस्तो उच्चाटनं भवेत्।।

कौवे और उल्लू के पंख (एक भाग) को नाम सहित इस मंत्र से एक सौ आठ बार मंत्रित करने से उसका पूर्ण रूप से उच्चाटन होता है।

विद्वेषण मंत्र

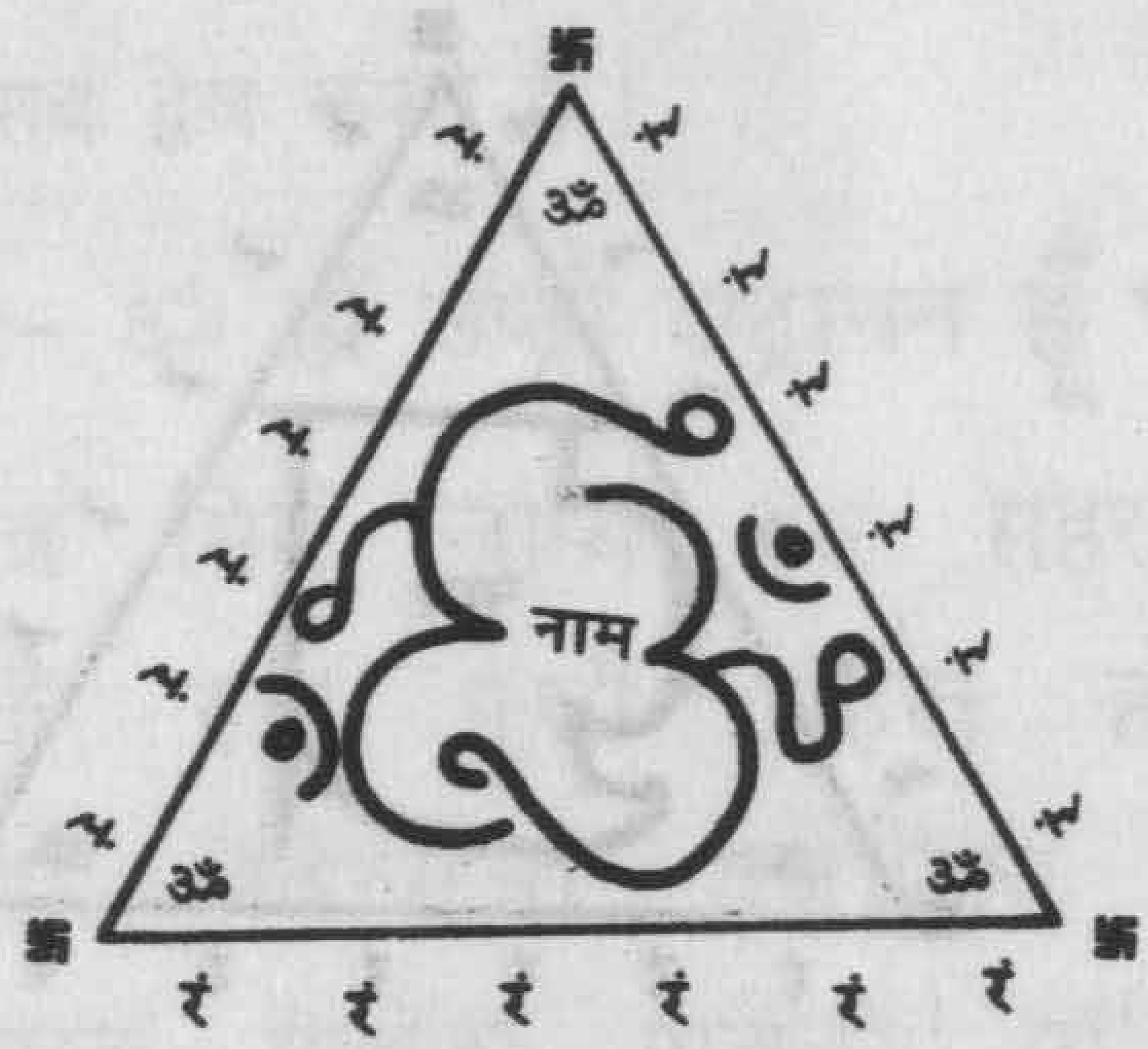
मंत्र– ॐ विद्वेषिणि अति वीर्य्ये उत्सादय उत्सादय स्वाहा।

काकोलूकच्छद युत पाणिभ्यं तर्प्पयेदमुं मंत्र।
काल्या जपं ततः स्यात् विद्वेषः स्निग्धयोस्सुमहान।।

कौवे और उल्लू के पंख युक्त अपने दोनों हाथों से इस मंत्र का पानी से तर्पण कर जप करने के बाद में अत्यंत घनिष्ट मित्रों में भी विद्धेष हो जाता है।

आग्नेय मंडले साध्यमोंकार द्वय वेष्टितं।
अधो मुखं कृतं भूमौ सद्यो विद्वेष कारणां।।

अग्नि मंडल के अन्दर साध्य के नाम को दो ॐ से वेष्टित करके पृथ्वी में उल्टा करके रख देने से तुरन्त ही विद्वेषण हो जाता है।

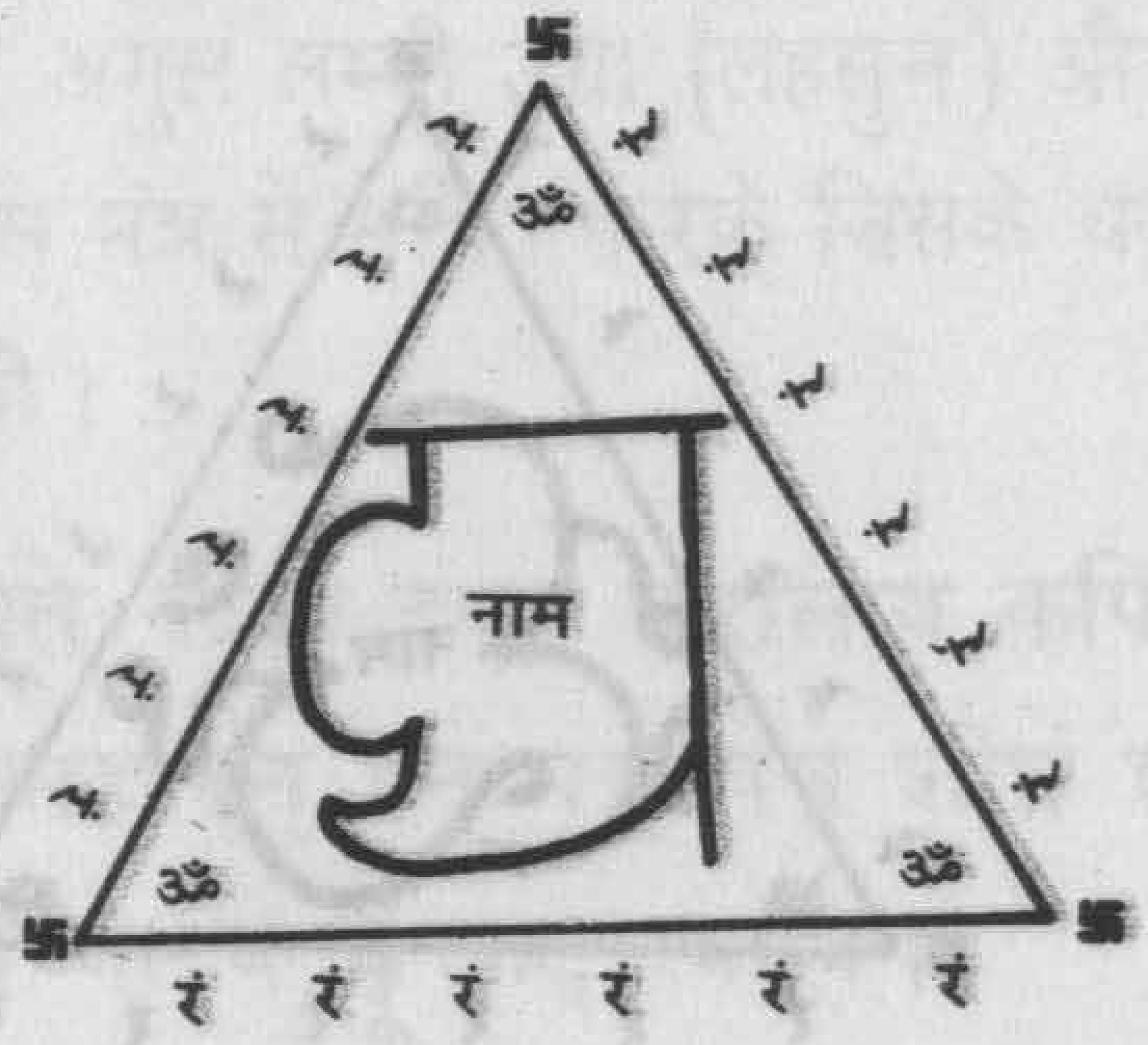


प्रेतमषी कनक रसैर्विलिख्य साध्यं जकार मध्य गते।
अग्निं पुरं प्रेत वने निहितं विद्वेष कर्म्म करं।।

चिता के कोयले की या राख की स्याही और धतूरे के रस से जकार के बीच में साध्य का नाम लिखकर चारों तरफ अग्नि मंडल बनाकर श्मशान में गाड देवे तो विद्वेषण कर्म करता है।

अंगारोन्मत्त रसैर्धकार मध्ये विलिख्य यन्नाम।
प्रेत वने निक्षिप्तं सप्त सुरात्रेण विपरितः।।

अंगारे (कोयल) और उन्मत (धतूरे) के रस से घकार के बीच में नाम में नाम लिखकर श्मशान में गाड़ने से सात रात के अंदर विद्वेषण हो जाता है।



उभयोः प्रतिकृति हृदये भूर्ज्जे संलिख्य तुर्य्यं वर्ग्गांति।
क्षिप्ते स्याद् विद्वेषः प्रेतालये भूमि मध्यगते।।

दोनों मूर्तियों को भोजपत्र पर लिखकर उनके हृदय में चौथे वर्ग के अंतिम अक्षर (न) के अन्दर नाम को लिखकर श्मशान में गाड़ने से विद्वेषण होता है।

काकोलूक गरुत सर्प्पत्वक सर्प्पारि छदैः कृतः।
चूर्णो विद्वेषमाधत्ते शत्रोमूद्‌र्ध्न समर्पितः।।

कौवे और उल्लू के पंख सर्प की कांचली और सर्पारिछद (मोर पंख) के बने हुए शत्रु के सिर पर डालने से द्वेष होता है।

दीर्ग्धकं धर दंत्तेन निंबेन राजिभिः भूँतैः संभूतैः।
मिश्रित श्चूर्णः स्यात् द्वेषाय शिरोर्प्पितः।।

दीर्घ कंघा दंत (बडे हाथी दांत) नीम राई और भूत (बहेड़ा) को मिलाकर बनाये हुए चूर्ण को सिर पर डालने से द्वेष हो जाता है।

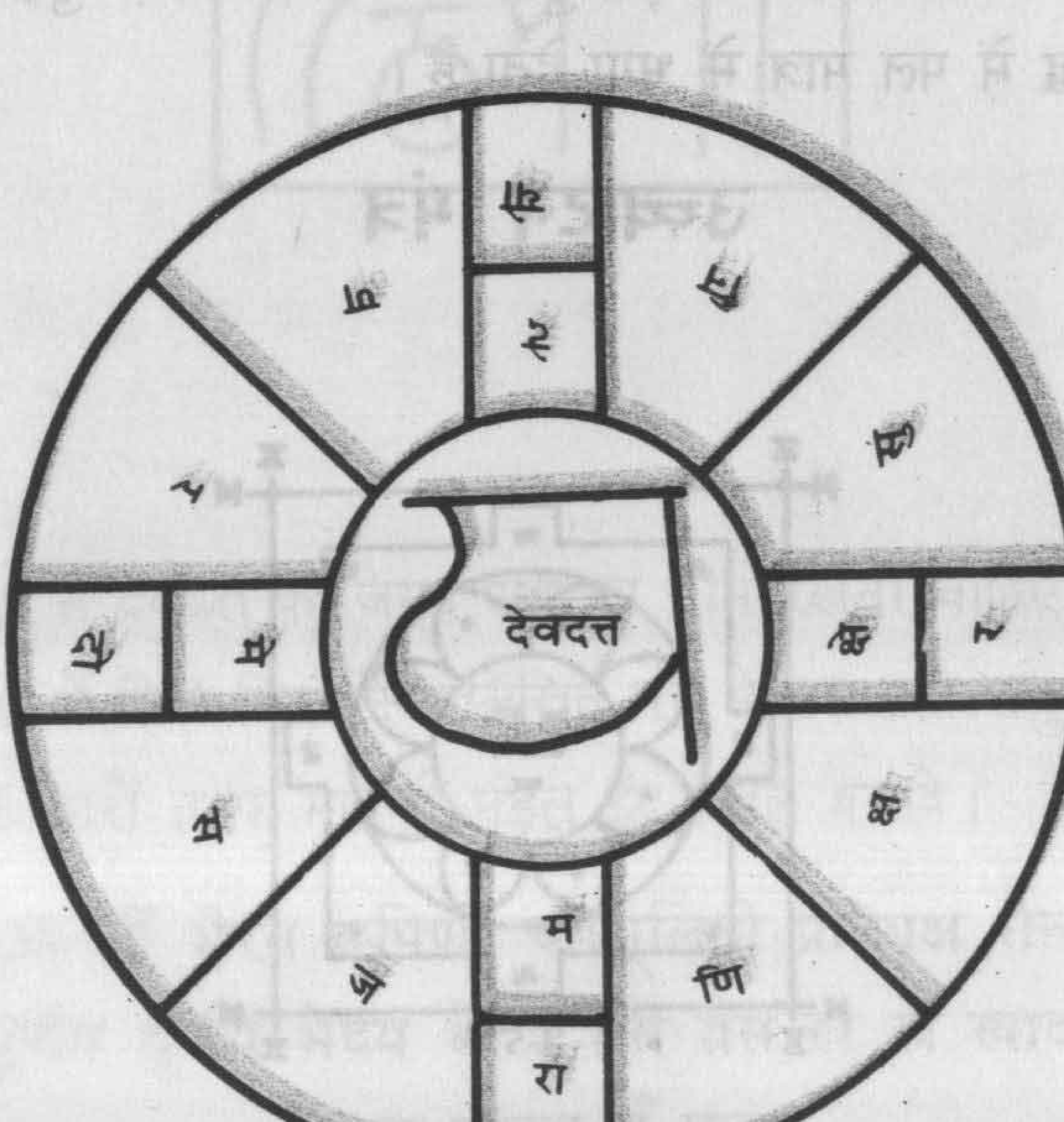
खरेण रेणून सं स्पृष्टान् मध्यान्हे लुठता क्षिपेत्।
युधाय वाम हस्तात्तान विद्वषि जन वेश्मनि।।

दोपहर में लोटे हुए गधे की धूल को बांये हाथ से उठाकर जिसके घ में डाल देवे उससे सब द्वेष करते हैं।

मंत्रः- ॐ ह्रीं उष्ट्री दष्ट्रानन हूँ फट्।

उष्ट्री मंत्र मिमं जाप्य दस सहस्त्र सख्ययो।
मध्वाज्युक्तै रक्त पुष्पै सहस्त्रं होमयेत्ततः।।
तत सिद्धो भवेन्मंत्रो यथेप्सित फल प्रद।
यस्य प्रभाव मात्रेण शत्रवो याति संक्षयं।।

मंत्र का ३२००० हजार जाप्य करें।



सर्व रक्षा मंत्र

मंत्रः- ॐ धणु धणु महा धणु धणु स्वाहा।

प्रणवादि धनु द्विंतयं महाधणुः स्वर्ण वर्ण गगनांतः।
मंत्र कुरुते वर्त्मनि सं जपतश्चोर दृग्वंधं।।

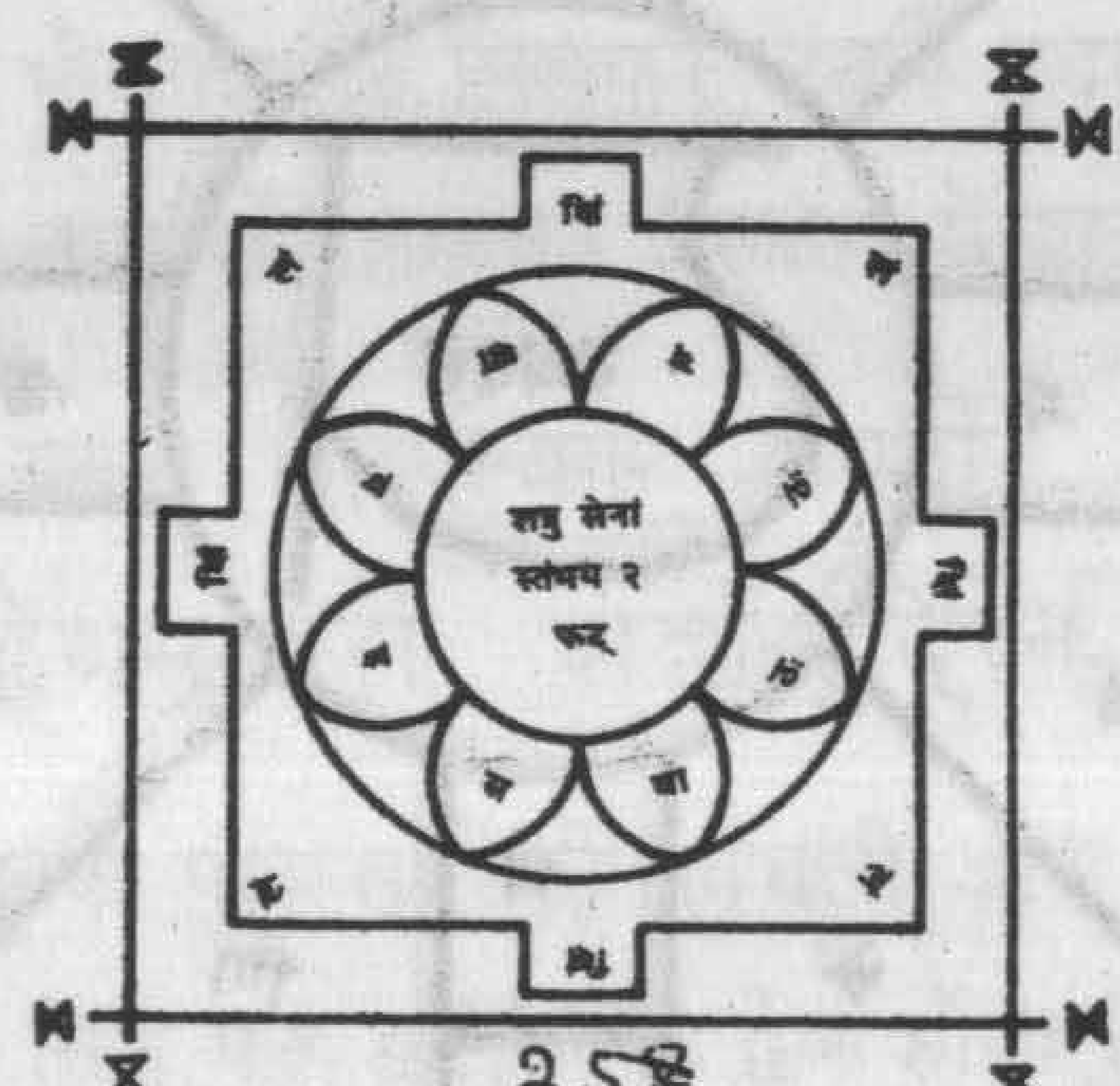
आदि में प्रणव ॐ फिर दो बार धणु धणु फिर महाधणु फिर स्वर्ण वर्ण गगनं (स्वाहा) सहित मंत्र को वर्तमान अर्थात् मार्ग में जपने से चोर की आँखे बंध हो जाती हैं।

रक्षा मंत्र

मंत्रः- ॐ ह्रीं पार्श्वाधिक यक्ष दिव्य रूप रोम हर्षण एहि एहि आं क्रों नमः।

यह पार्श्व यक्ष मंत्र कहा जाता है। यह बड की जड़ में रहने वाला पार्श्वयक्ष दस लाख जप से प्रत्यक्ष होता है। श्याम शरीर वाला और तीन नेत्र वाला है। यह यक्ष अपनी माया से बनाई हुई सेना से आगे खड़ी हुई शत्रुओं की सेना को युद्ध में पल मात्र में भगा देता है।

उच्चाटन मंत्र

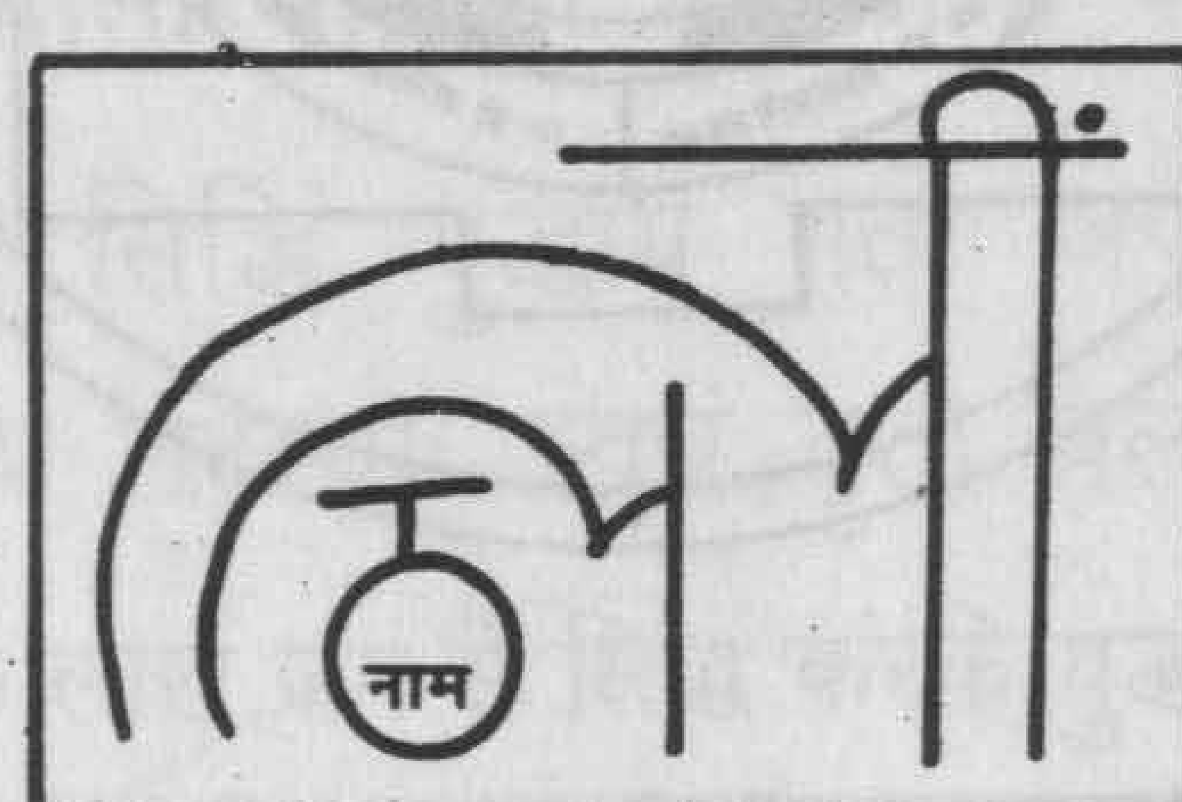


मंत्र– ॐ ह्रीं भरैव रुपिणि चांडालिनी प्रतिपक्ष सैन्यं चूर्णय घूर्णय घूर्णय भेदय भेदय खादय खादय ग्रस ग्रस ख ख मारय हूँ फट्।

७२ बार जाप्य कर यंत्र को काले धागे से लपेटे।

मंत्रः- ॐ ह्रीं भैरव रुपिणी चंडशूलिनी प्रतिपक्ष सैन्यं चूर्णय चूर्णय घूर्णय घूर्णय भेदय भेदय ग्रस ग्रस ख ख षादय षादय मारय हुं फट्।

मंत्रः- ॐ हूं ह्रीं फें ग्लौं स्वाहा ठः ठः देवदत्तस्य पटाश्व ॐ हूं ह्रीं फें ग्लौं स्वाहा ठः ठः देवदत्तस्य फट गज ॐ हूं ह्रीं फें ग्लौं स्वाहा ठः ठः।

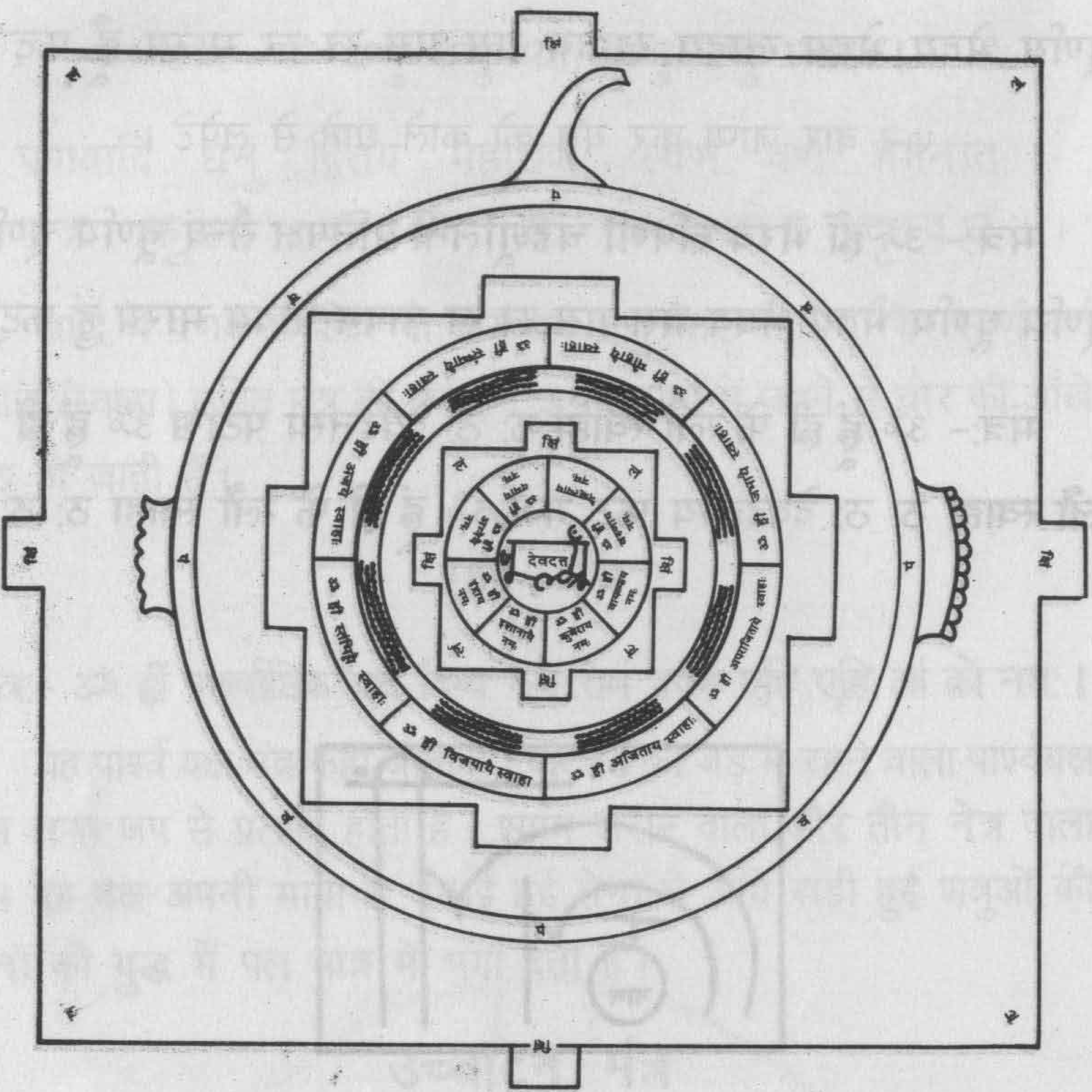


इस मंत्र से देवदत्त की जगह शत्रु का नाम रखना चाहिए इस मंत्र को पूर्वोक्त चित्रों से लिखे फिर निम्नलिखित मंत्र से उस प्रति शत्रु को घेर कर लिखे उसके चारों तरफ माहेन्द्र मंडल इंद्र मंडल बनावे।

मंत्रः- ॐ ह्रीं भैरव रूपिणी चंडशूलिनी प्रतिपक्ष सैन्यं चूर्णय चूर्णय धूर्णय धूर्णय भेदय भेदय ग्रस ग्रस ख ख खादय खादय मारय मारय हूँ फट्।

यह मंत्र आठों दिशाओं के आठों कमलों में लिखें।

अष्ट दिक्पाल मंत्र



मंत्र– ॐ ठ्म्ल्व्र्यूं इंद्र देवते बलिं गृन्ह-गृन्ह ॐ ह्रीं त्रीं लीं ह्रीं स्वाहा।

दिग्पालैः सहितास्व स्वयंत्र मंत्रैः पताकिका।
ध्वज स्याष्टु सु वध्रीया दिक्षु घंटा समायुता।।

फिर अपने अपने यंत्र और मंत्रों सहित पताका और ध्वजों को घंटो सहित आठो दिशाओं में बांध देवें।

शुद्धि मंत्र

मंत्र– ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षणि अमृत श्रावणे ॐ इवीं क्ष्वीं वं मं सर्वांग शुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

ततोश्चमृत मंत्रेण मंडलेन च वारिद्ये:।
एतदेव विलिखितं शुद्धी यंत्र मुदा हृतं।।

गजमंत्र

ॐ नमो भगवते महागजाधि पतये ग्रां ग्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः घ्रं श्लौं श्लौं ह्य (प्ल:) सर्व गजान रक्ष रक्ष स्वाहा।

प्राच्र्यंतु गज मंत्रेण जप्तान्यष्टोत्तरं शतं।
पुष्पाणि निक्षिपेत्तस्य मस्तके स्यात् क्षतादिकं।।

विजय प्राप्ति का मंत्र

ॐ नमो भगवते ज्वाला मालिनी गृद्ध गणां परिवृते ठ: ठ:।

लक्ष प्रजाप्प सिद्धिं युद्धाय गतो जपन्न मुं मंत्रं।
संग्रामं विजय लक्ष्म्या: स्वयं वृतो वल्लभो भवति।।

इस मंत्र को एक लाख जप से सिद्ध करके युद्ध के लिए उस मंत्र को जपता हुआ यात्रा करने वाला स्वयं ही विजय लक्ष्मी का स्वामी होता है।

शत्रु भगाने का मंत्र

ॐ नमो भगवती पिशाची देवी पिशाच वाहिनी केरिकि हुंड केशि शीघ्रं कोलु कोलु मुज मुज घग घग दुष्ट भैरवी ह्रीं स्वाहा।

यह मंत्र कनेर के फूलों से बारह हजार जपे तब दशांश होम करने से सिद्ध होता है। इस मंत्र से नारियल को अभिमंत्रित करके आकाश में फेंकने से यह शत्रु को भगा देता है।

ॐ धरणेंद्र आज्ञापयति स्वाहा।

ॐ सर्व सत्त्व वंशकराय स्वाहा।

ॐ पद्मावती परमार्थ साधिनी स्वाहा।

ॐ पार्श्व तीर्थंकराय स्वाहा।

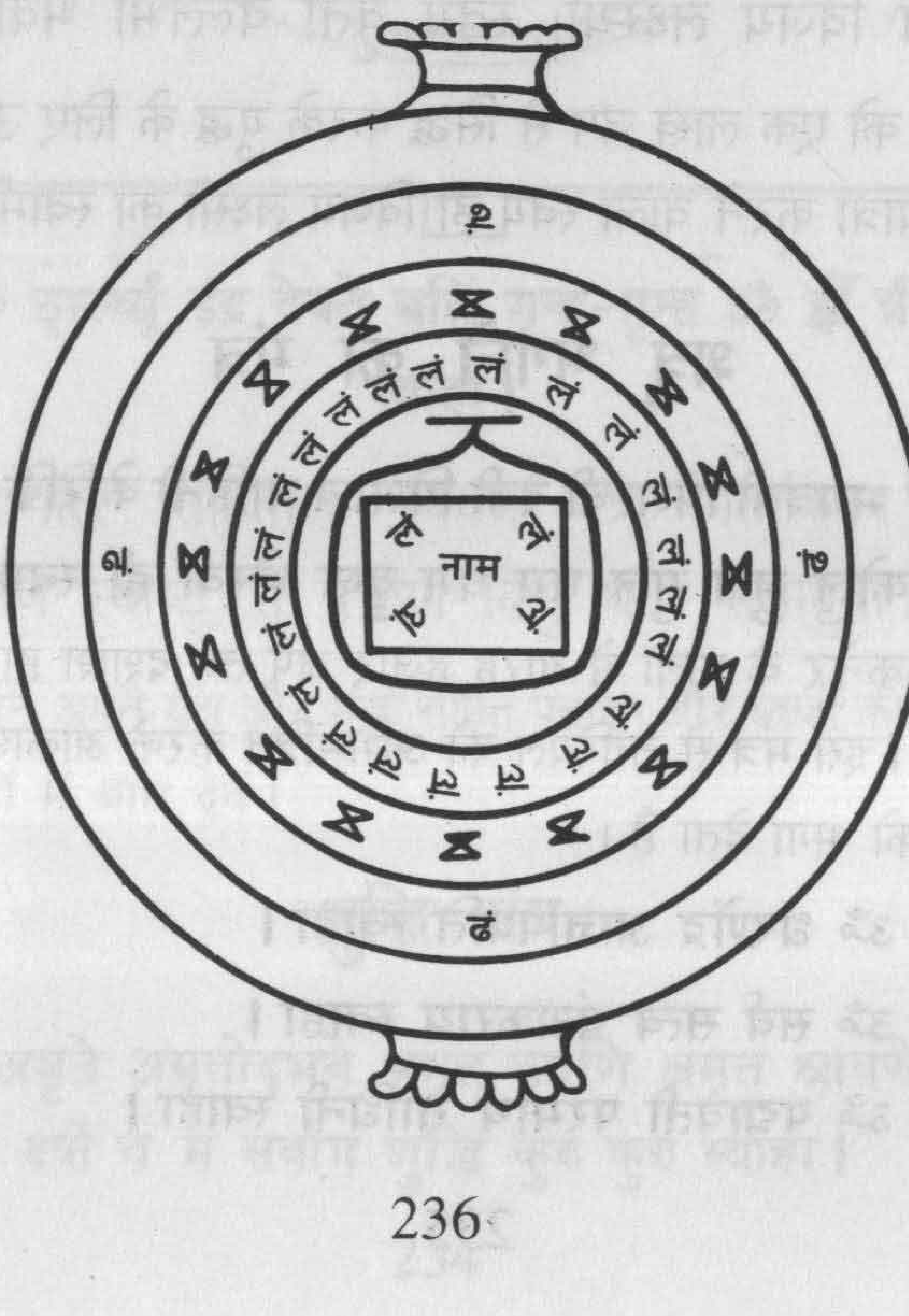
स्तंभय मंत्र

मंत्र – ॐ ह्म्ल्व्र्यूं ग्लौंक्ष्मं ठं अमुकस्य जिह्वां स्तंभय स्तंभय ठः ठः।

मंत्रोद्धार

मंत्र– ॐ अंधे अधिनि मोहे मोहिनि अमुंक शीघ्र अंधय अंधय मोहय मोहय स्वाहा।

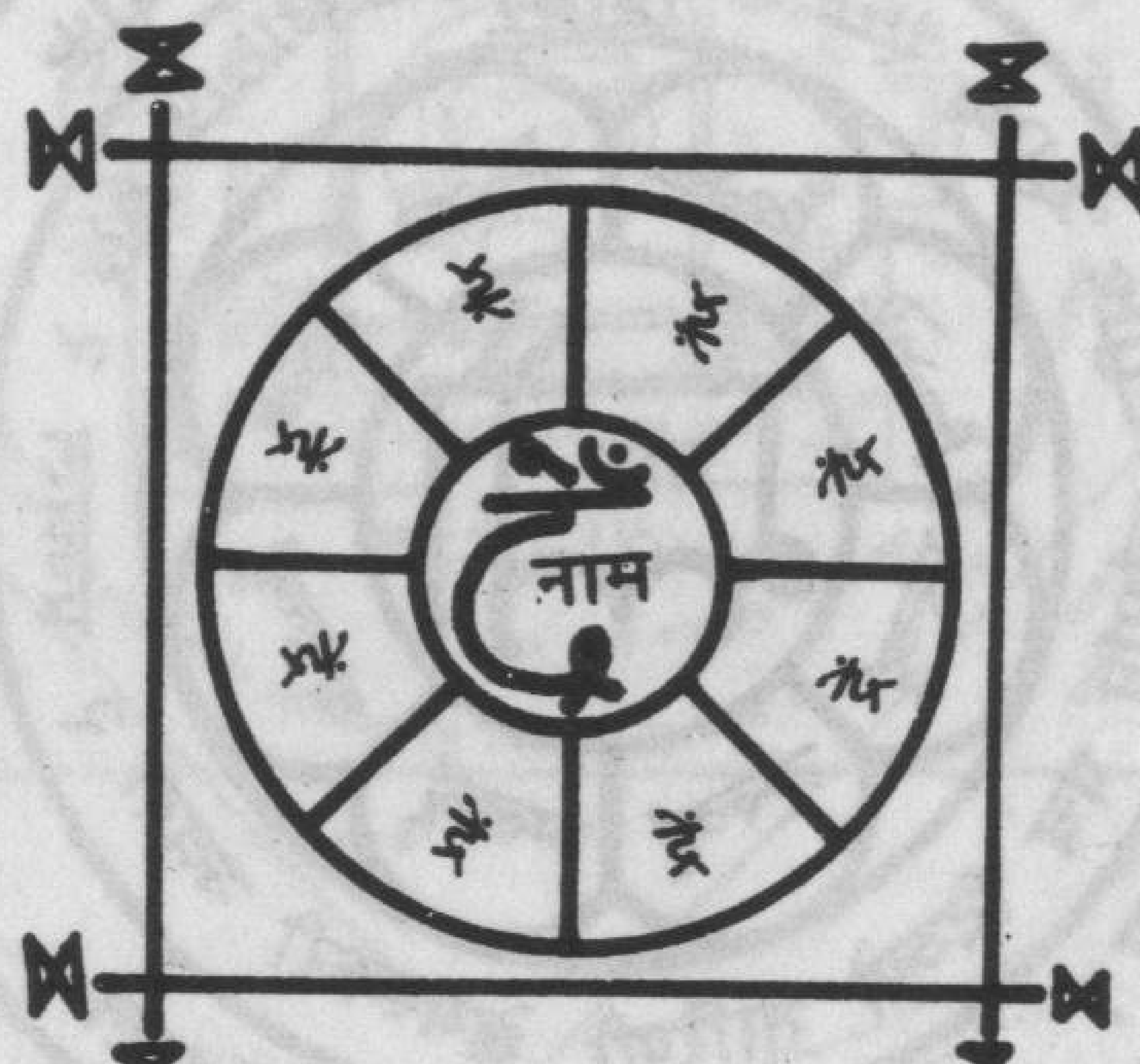
कुम्हार के हाथ की लगी हुई मिट्टी में बेर के पत्तों को पीसकर इसकी मूर्ति बनाए उसके मुंह में मावा से भर दे। उसके हृदय में भोजपत्र पर मंत्र लिखकर तथा इसे उस शत्रु की प्रतिकृति (प्रतिमा) के हृदय में रखकर तथा इसके गले में महावर की जीभ के ऊपर मदन (मेनफल) के कंटक (कांटे) से लिखे। आदि में प्रणव (उँ) और अंत में स्वाहा लगाकर अंधे अंधिनि मोहे मोहिनि अमुंक शीघ्र अंधय अंधय मोहय-मोहय सहित मंत्र बनाता है।



दिव्य मंत्र

मंत्र– ॐ थंभेई अमुकस्य जलं जलणं चिंतये मेतेणा पंचणमो आरो आरो मारि चौर राउल घोरू वसग्गं विणासेई स्वाहा।

आवेष्टन मंत्र



मंत्र– ॐ अनल पिंगलोर्द्ध ॐ केशिनि दिव्याधि पतये स्वाहा।

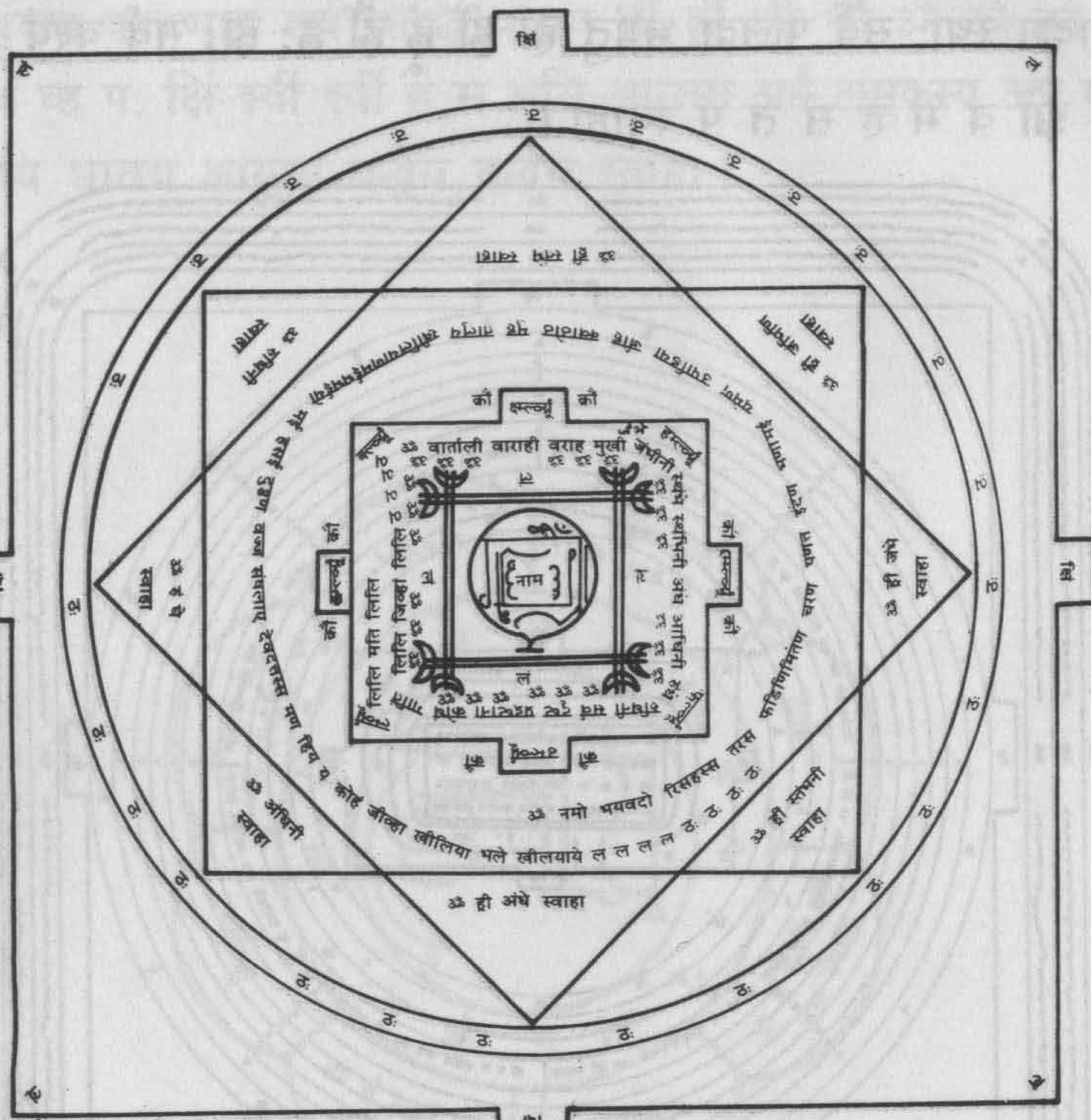
ॐ वार्ताली वाराही वराह मुखी जंभे जंभिनि स्थंभे स्थंभिनि अंधे अंधिनि रूंधे रूंधिनि सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां क्रोधं लिलि मितिं गतिं लिलि जिव्हां लिलि ठ ठ ठ ठ।

उक्षेश मंत्रोद्धार



ॐ नमो भय वदोरसिहस्स तस्स फडिणि मितेण चरण पणत्त इंदेण भणामई यमेण उपाडिया जहि कंठोठ मुह तालुय खीलियाणमई भसई हसई दुट्ठ दिट्ठीण वज्ज संवलाण देवदत्तस्य मण हिययं कोहं जिव्हा खीलिया- मेल खीलयाये ल ल ल ल ठः ठः ठः ठः ।

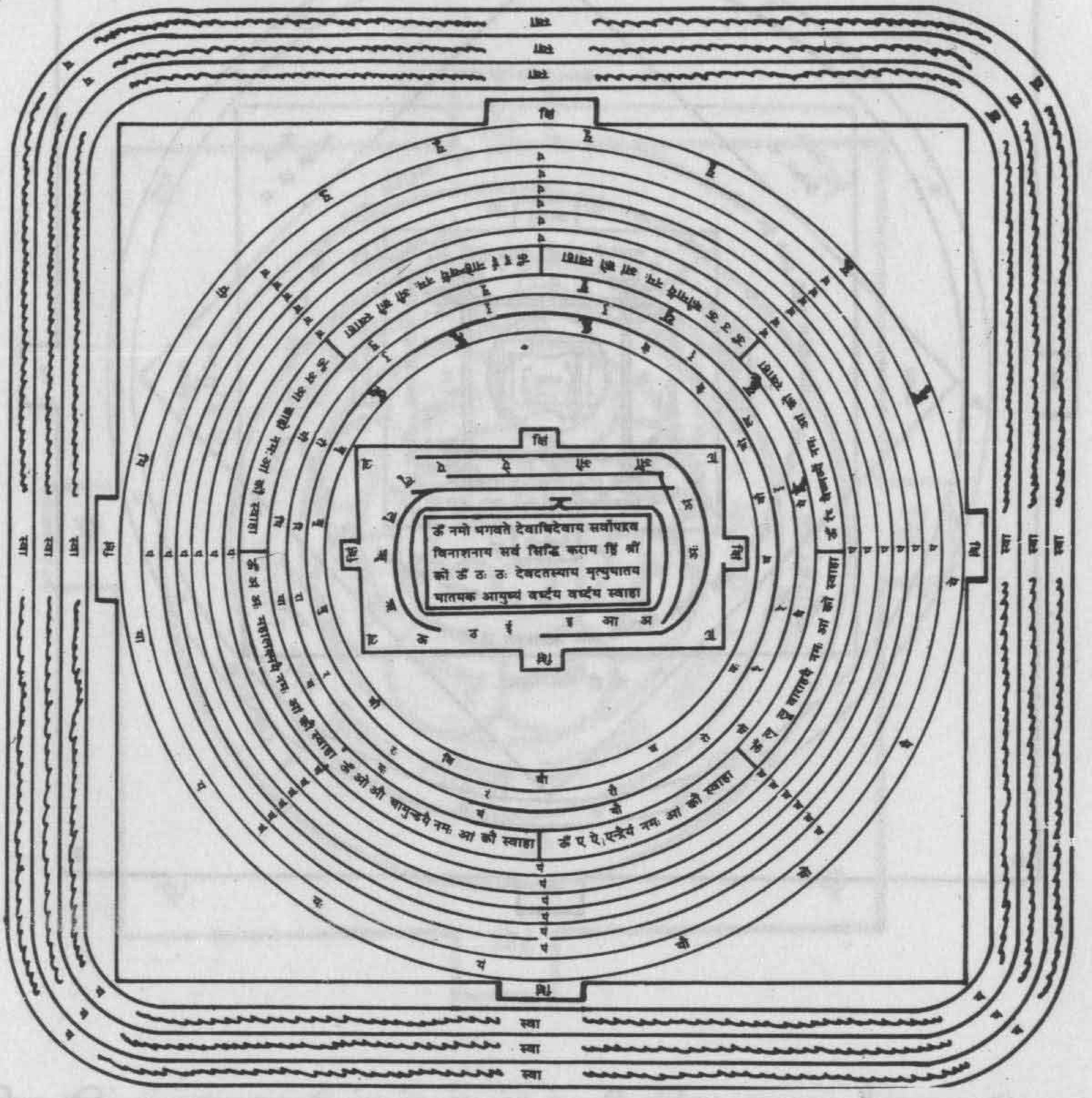
यंत्र को हरताल मेनशिल आदि पीले द्रव्यों से विधि पूर्वक लिखें तो शत्रु का स्तंभन होता है। यंत्र पत्थर या तक्ती पर लिखें।



ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी सं वं मं हुं हुं देवदत्तस्य शांति तुष्टिं कुरु कुरु रक्ष रक्ष हे इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, देवते निज बलिं गृहण गृहण स्वाहा।

मंत्र– ॐ वसुधारा देवते ज्वालामालिनी प्रज्वल-प्रज्वल विजल-विजल सजल-सजल हिम-हिम शीतल-शीतल देवि कोटि प्रभानले चंद्राश्रुं कुरु कुरु त्रिभुवन सं क्षोभिनी क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः देवि त्वमात्म परिवार देवता सहिते देवदत्तस्य तुष्टिं तुष्टिं शीघ्रं शीघ्रं वरं देहि देहि सर्द्धम श्री वलायुरारोगयैश्वर्यामि वृद्धिं कुरु कुरु सर्वोपद्रव

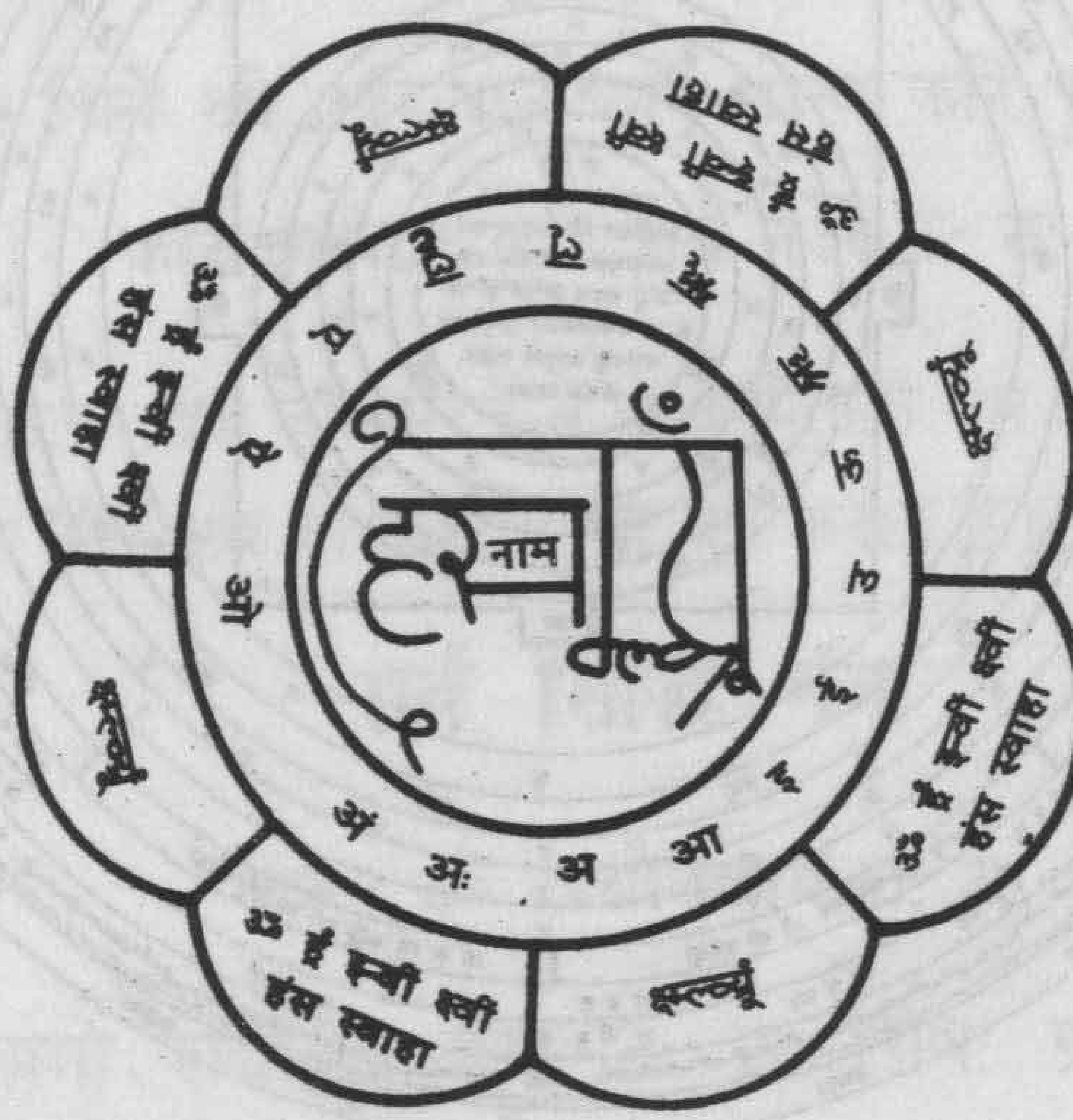
महाभयं नाशय नाशय सर्वापमृत्युन घातय घातय रक्ष रक्ष नवग्रहा एकादश स्था: सर्वे फलदा भवंतु ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ह्राः सर्व वश्यं कुरु कुरु झ्रों वं मं हं सं तं पं स्वाहा।



मंत्र– ॐ ज्वालामालिनी सर्वाभरण भूषिते ग्लौं ग्लौं हस्क्लीं क्ली क्लीं ल ल ल ल सर्वापमृत्यून हन हन त्रासय त्रासय हुं हुं क्षुं क्षुं जूं सः जूं सः फट् फट् घे घे सर्व रोगान दह दह हन हन शीघ्र देवदत्त रक्ष रक्ष नवग्रह देवते निज बलिं गृहण गृहण स्वाहा।

ॐ देवाधि देवाय सर्वोपद्रव विनाशनाय सर्वापमृत्युंजयकारणाय सर्व सिद्धिं कराय ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ॐ ॐ क्रों क्रों ठः ठः देवदत्तस्याप मृत्युं घातय घातय आयुष्यं वर्द्धय वर्द्धय स्वाहा।

ॐ नमोर्हते भगवते देवाधि देवाय सर्वोपद्रव विनाशनाय सर्वाप मृत्युंजय कारणाय सर्व सिद्धिं कराय ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ॐ ॐ क्रों क्रों झं वं व्ह पः क्षिं झ्वीं क्ष्वीं हं स असि आउसा अर्हं अमुकस्य अप मृत्यु धातय धातय आयुष्य वर्द्धय वर्द्धय स्वाहा।

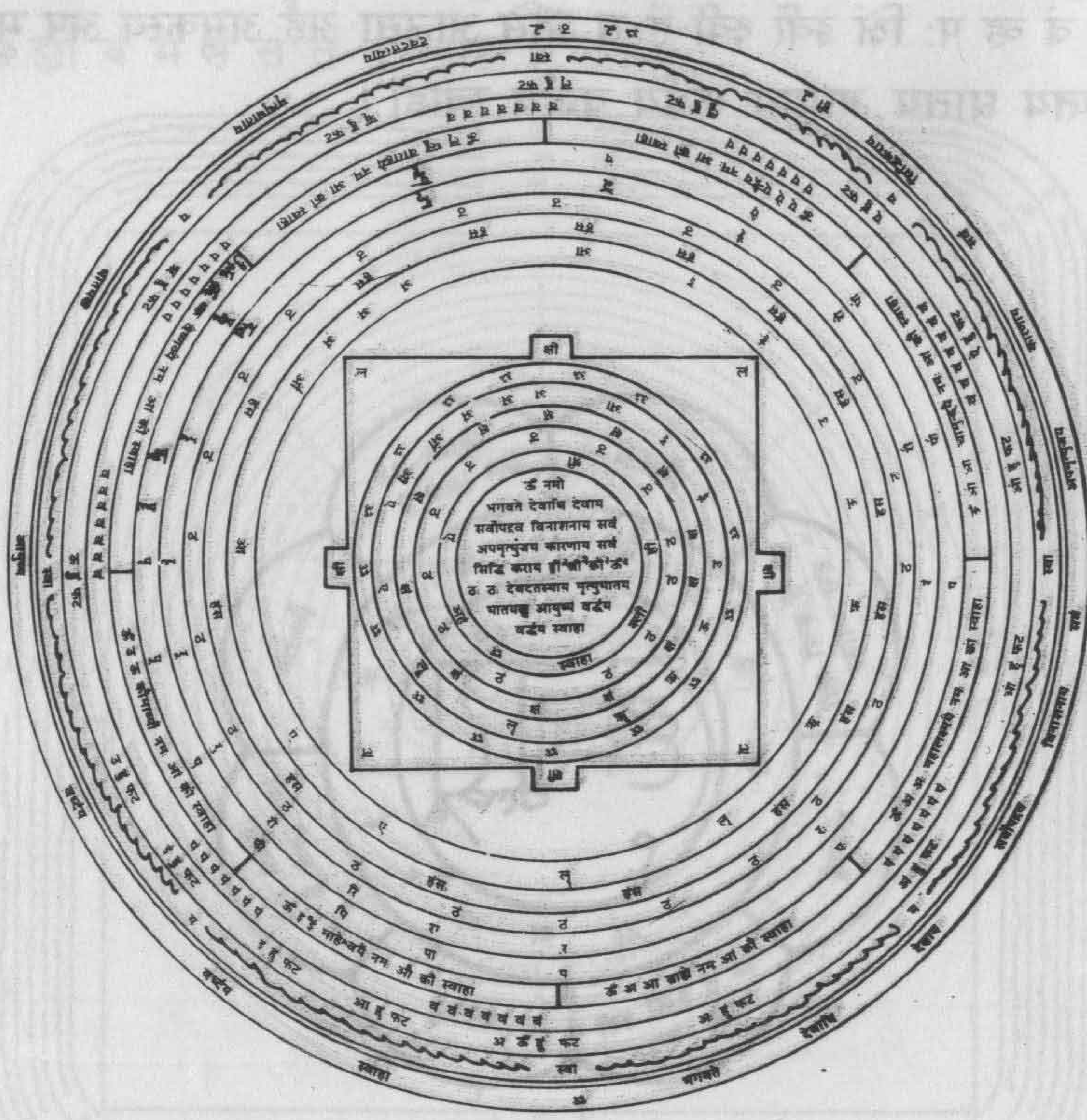


शान्ति पुष्टि दायक यंत्र

ॐ झं वं व्हः पक्षि झ्वीं हं स देवदत्तस्य शांति कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ प क्षि स्वः पक्षि स्वः झ्वीं झ्वः व्हः वं क्षः हर हं सः ज जलं पक्षि स्वाहा सर सुंस हर हु हुः।

अमृत मंत्र



ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षणि अमृतं श्रावय श्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय स्वाहा।

लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र

उष्मणां प्रथमः पूर्वं पुराणं ज्योति रप्य नुक्रमादि।
विंदु मंत्रोयं सांगो लक्ष्म्यै प्रकीर्तितः।।

ॐ श्रिये ठः ठः श्रिये फट् श्रीं नमः श्रियः प्रसाद नमः ठः ठः श्री फट् अंगणिं।

पहले उष्मी के प्रथम (श) पुराण (फ) ज्योति (ई) यह लक्ष्मी के वास्ते अंग सहित विन्दु मात्र कहा गया है।

ॐ पद्मोद्भवे स्वाहा। पद्मोद्भवे नम: पद्मोद्भवे ठ: ठ: श्री नम:।

तीन लाख जाप्य कमल गट्टे की माला से जाप्य करें।

रोग नाश मंत्र

मंत्र– ॐ श्रिये श्री करि धन करि धान्य करि पुष्टि करि वृद्धि करि अविघ्न करि सर्व करि ठ: ठ:।

यह मंत्र एक लाख जप करने से सिद्ध होता है जप और वसुधारा स्नान आदि से दुख और सब दरिद्र रोग को दूर करता है।

सर्व सिद्धि मंत्र

मंत्र– ॐ खद्योतकाय ठ: ठ:

मंत्रोयमो खद्योतत काय ठ: ठ: त्येष: प्रसिद्धपति।
षट लक्ष जापत: सांग: सूर्य दृग सर्व सिद्धि द:।।

इस मंत्र का अंग सहित सूर्य की तरफ देखते हुए छह लाख जपने से यह सब सिद्धियों को देता है।

मंत्र– श्रूष्म रुपाय श्रूष्म तेज से श्रूष्मकराय श्रुष्म वलाय श्रुष्म हूँ फट् अंगानि।

तेन चतु: पंचाशत वारान जप्तै सुगंध कुंभ जलै:।
स्याद भिषे को रविवारे पुष्टि करो हस्त सप्तमी संयुक्तै।।

इस मंत्र से चव्वन बार जपे हुए सुगंधित घड़ों के जल से रविवार के

दिन हस्त नक्षत्र और सप्तमी तिथि को अभिषेक करे तो पुष्टिः करता है।

सर्व संपदा प्राप्ति मंत्र

मंत्र– उत्तिष्ट पुरि हिरि पिंगल देहि देहि द दापय ठः ठः

दशांश होम संयुक्ता लक्ष रूप प्रजापतः।
स्वाहा प्रियतम स्यैष मंत्रः संसिद्ध मृच्छति।।

यह दशांश होम एक लाख जप और दशांश होम से सिद्ध होता है।

गढ़ा हुआ धन दिखे

ॐ नमो ब्रह्माणिप्रपूजिते नमोस्तुस्तेभ्य स्त्रायशीति कपाल श्रूलिनि मयि स्वाहा।

सफेद आकड़ा के रूई की बत्ती बनाकर जलाने से गढ़ा हुआ धन दिखता है।

मणिभद्र यक्ष सिद्धि मंत्र

ॐ नमो यक्ष सेनाधि पतये माणिभद्र किन्नर एहि एहि ठः ठ।

यक्षस्य पंच विंशति सहश्र रूप प्रजाप्यतः।
सिद्धेतत् सर्वै स्तुतो नरे द्रैमंत्रोय माणि भद्रस्य।।

यह उत्तम मनुष्यों से वंदनीय मणि भद्रयक्ष का मंत्र पच्चीस हजार ज़प से सिद्ध होता है।

संजप्तमे क विंशति वारान् यद्दतं धवन मेतेन।
तेन च दंतां धौता स्यात संसिद्धिः कामितान्तस्य।।

इस मंत्र से इक्कीस बार मंत्रित दत्तोन के द्वारा दांत धोने से इच्छित व्यक्ति की प्राप्ति होती है।

जमीन प्राप्ति हेतु मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरणी धरे ठः ठः।

सिद्धि भूभृद यारण्यो लक्षत्रयरूप प्रजापतो मंत्रः।
यांत्ययमनेन धृत चरू होमाद्भूमि समांप्नोति।।

इस पृथ्वी मंत्र का तीन लाख जप करके घृत और नैवेद्य से हवन करने से पृथ्वी की प्राप्ति होती है।

होमादेतेन भवते महती लक्ष्मीः शुभैः कुसुमैः।
मधुरत्रयेन होमात् स्यात् पुष्टीः सर्पिवोदनं सिद्धेत्।।

उत्तम फूलों से हवन से बड़ी भारी लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। त्रिमधुर के होम से पुष्टि होती है, और घृत तथा भात के होम से सिद्धि होती है।

सितवारे होमाद्वि प्रतिपन्नक्षात्र मधुषितेन।
सहस्रं क्षेरणवाथ चरुणातत्स्वीयं स्याद्वली प्रदानात् क्षेत्रं।।

शुक्रवार को झगड़े वाले खेत में दूध या नैवेद्य से एक हजार बार हवन करके आहुति देने वह से खेत अपना हो जाता है।

एकां शकं सं स्थितयो बुंध चंद्रमसौः कृतश्चनक्षत्रं।
लब्धं स्वाद्भवत्यां युगमखिलैर हितं दोषैः।।

चन्द्रमा और बुध के एक अंश पर आने से कोई सा नक्षत्र पाकर यह कार्य करने से बिना विघ्न के पूर्ण होता है।

उच्चस्थे सति सूर्ये तदभिमुखोर्द्धो दयेश्रिश्व तरूकीलं।
मध्ये क्षेत्रं निखिनेत तदपद्रोहं भवेत्श्वत्ः।।

सूर्य उच्च का होने पर उसकी तरफ मुख करके आधा उदय होने पर अश्व (पीपल) की कील को यदि खेत के बीच में गाड़ देवे तो तुरन्त शत्रुता होती है।

रक्षा मंत्र

ॐ नमो भगवति रक्त चामुंडे, अपिच अपिच सुपिच सुपिच भिंद भिंद हंस हंस काली कालीं उच्चाटय उच्चाटय हूं फट्।

अमुना द्विसहस्त्र जप्ताजप्तं सिद्धेन भस्म।
प्रस्यांते प्रदक्षिण्येन विनिक्षिप्तं त्रायेत् मूषिकादेः श्रेत्रं।।

इस मंत्र को दो हजार जंप से सिद्ध करके इससे भस्म को अभिमंत्रित करके यदि दाहिनी तरफ से खेत में डाले तो चूहों आदि के भय से खेत की रक्षा होती है।

कन्या प्राप्ति मंत्र

ॐ कमले भद्र हासे रोहिणी मोचनि कन्येयं मे भार्या भवतु ठः ठः।

यक्षी मंत्रेणयुत जाप्यादेतेन साधु सिद्धेन।
कन्यां लभते होमान्मधुसिक्त सहस्त्रकरवीरैः।।

इस यक्षी मंत्र को दस हजार जप से सिद्ध करके शर्करा में ही किये हुए कनेर के फूलों से एक हजार हवन करनेसे कन्या की प्राप्ति होती है।

वशीकरण साधना मंत्र-यंत्र

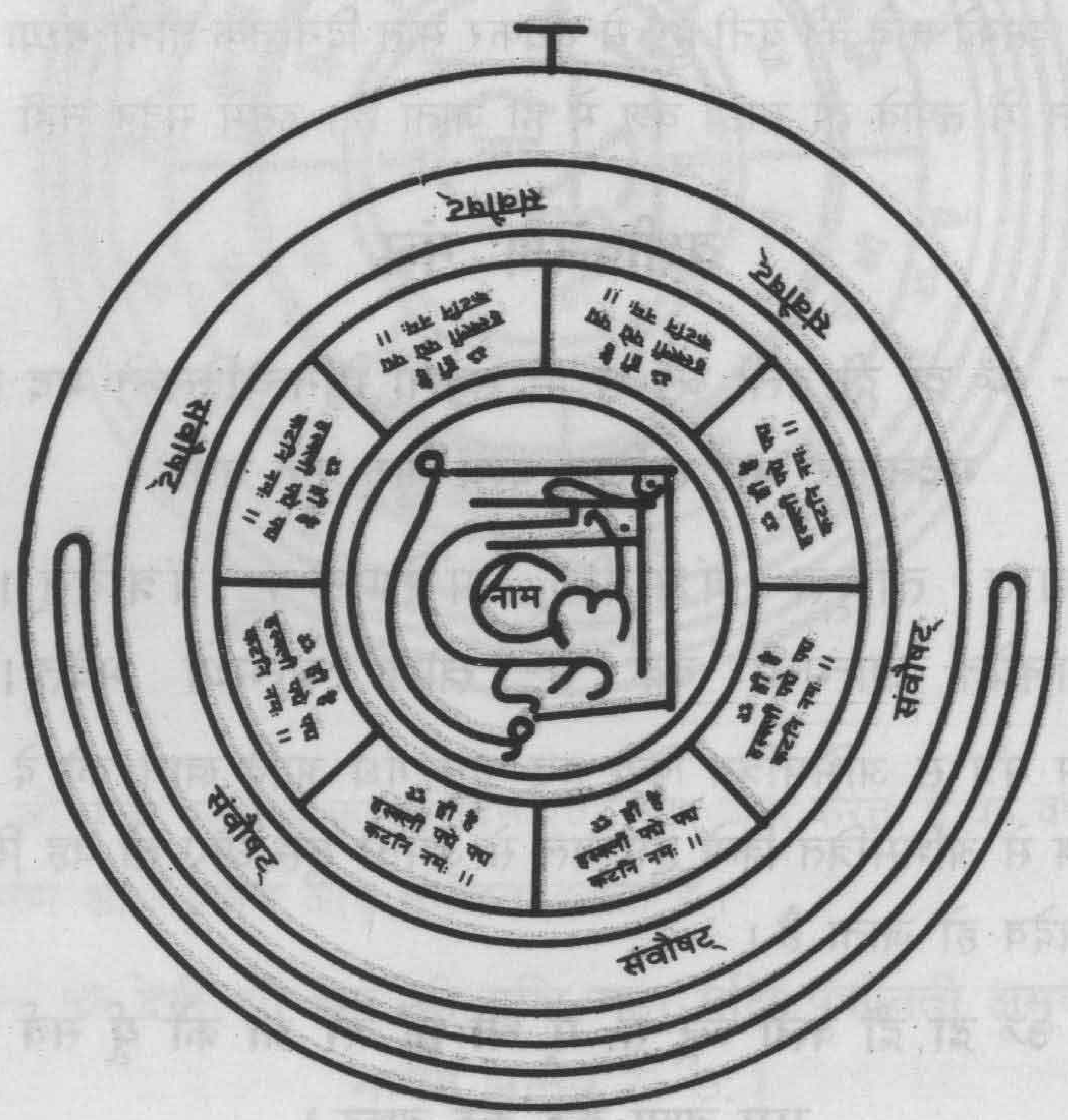
मंत्र– ॐ चामुंडे अमुकं हन हन पच पच वशमानय ठः ठः।

संध्यात्रय त्रयो विंशति दिन मेतेनपूर्व तुल्येन।
विंशति संख्यं लवणैर्होमात् साध्यो वशी भवति।।

इस मंत्र को प्रातः दोपहर और सायंकाल के समय तेईस दिन तक पहले के समान जप करके बीस संख्या प्रमाण अभिमंत्रित किये हुए नमक के होम से साध्य वश में हो जाता है।

ॐ चामुंड़ि निरिति चंड़ालि अमुकं दह दह पच पच शीघ्रं वशमानय वशमानय ठः ठः।

ॐ ह्रीं हैं हस्क्लीं पद्मे पद्म कटिनि अमुकं मम् वश्याकृष्टीं कुरु कुरु संवौषट्।



भूर्जे सुगंधिना लेख्य यन्नाम च छकरायोः।
मध्ये मधु आज्ययोः क्षिप्तं वश्यो भूत्वा स तिष्ठति।।

भोजपत्र पर च और छ के बीच में साध्य के नाम को सुगंधित वस्तुओं से लिखकर मीठा और धृत से भरे बर्तन में रखे तो साध्य वश में होकर बैठे।

मंत्र– ॐ चांड़ालिनी हिती हिली अमुकं वशम आनय ठः ठः।

लक्षजपसिद्धमेनं मंत्रं भूर्जे विलिख्य तन्निक्षिप्ता।
कटु चेतसि कुक प्रतिमाया हृदये निखन्यैतत्।।

गुह्ये च ताम्र सूचिं सप्त दिनं तापयेदिम मग्रौं।
संध्यासु तिसृषु वशः सभवेत्साध्यो न संदेह।।

इस मंत्र को एक लाख जप से सिद्ध करके भोजपत्र पर लिखे। उसको क़टु चेतस (क्रोध के भाव से) कुक की बनी हुई प्रतिमा क़ो हृदय में खोदकर रख दे, इसको तांबे की बनी हुई से गूँधकर सात दिन तक तीनों संध्या काल में अग्नि में तपावे तो साध्य वश में हो जाता है। इसमें संदेह नहीं है।

वशीकरण मंत्र

मंत्र– ॐ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ह संक्ली ऐंनित्येक्लिन्ते मद द्रवे मदनातुरे मम सर्वजन वश्यं कुरु कुरु वषट्।

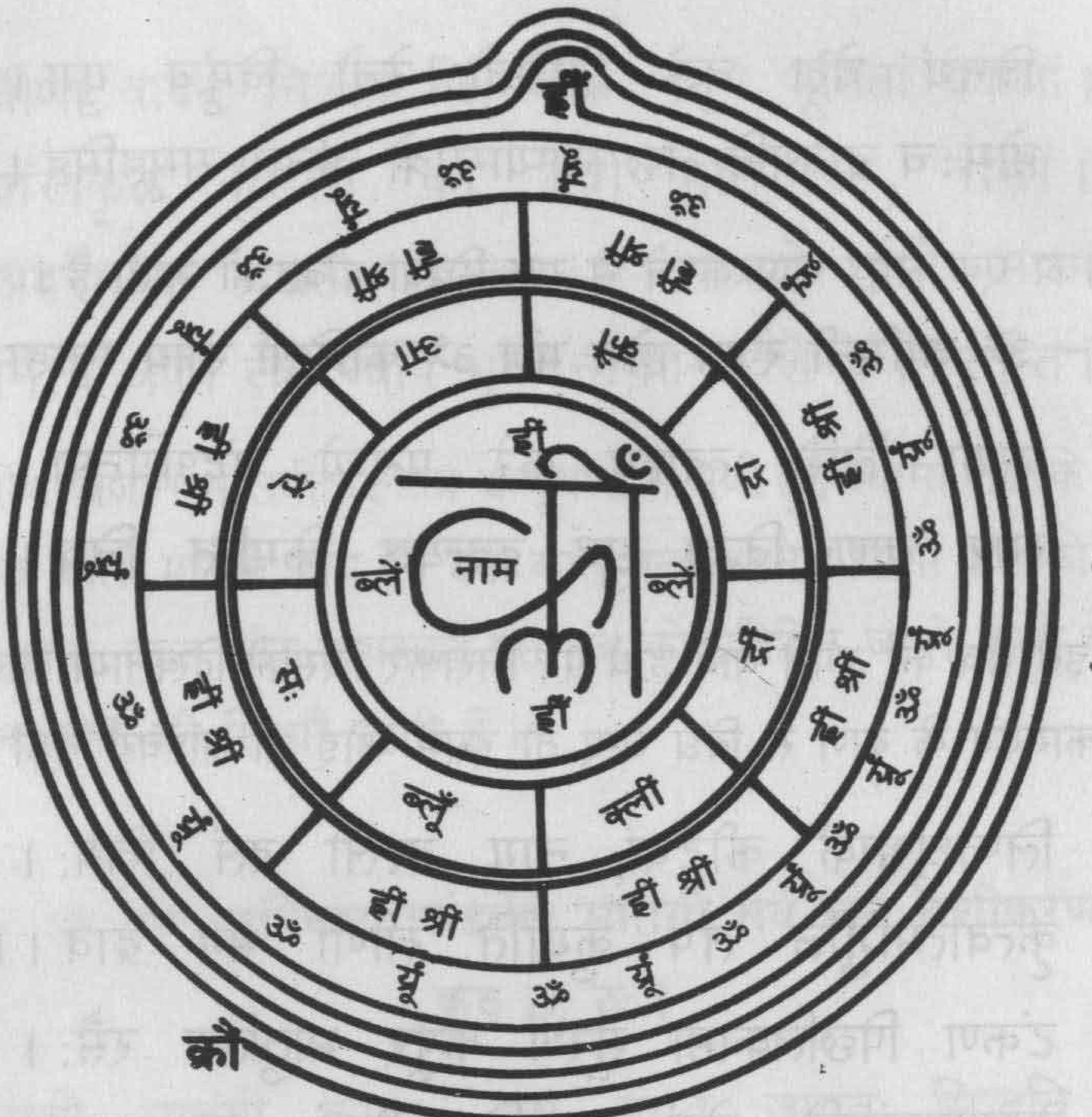
दद्यात तांबूल गंधादीन् मंत्रेणनेन मंत्रवित्।
क्षालयेत आत्मनो वक्रं सः स्त्रीणां मन्मथो भवेत्।।

इस मंत्र से अभिमंत्रित किये हुए पान गंध आदि खाने को दे तथा इस मंत्र से अभिमंत्रित किये हुए जल से अपना मुंह धोए तो वह स्त्रियों में कामदेव हो जाता है।

मंत्र– ॐ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ऐं श्रीं ह्रीं ब्लें आं क्रों यूं सर्व जन मम् वश्य कुरु कुरु वषट्।

अष्टोत्तर शतरूप मंत्रेणनेन योजपेन्नित्यं।
वश्या कृष्टि क्षोम द्रावण संमोहनं भवति।।

कामेंद्र (क्रीं) के ऊपर और नीचे त्रिमूर्ति (ह्रीं) लिखकर उसके दोनों तरफ लें बीज लिखे उसके बाहर पाँच बाण लगाकर और उसके अंतराल में भारती बीज (ऐ) और आं क्रों लिखे। उसके बाहर आठ दल या कमल बनाकर प्रत्येक दल में क्रम से बाहर श्रीं और ह्रीं लिखे। और प्रत्येक दल के बाहर यूं और ॐ लिखकर बाहर तीन बार ह्रीं का वेष्टन करे।



जो पुरुष इस मंत्र का प्रतिदिन १०८ बार जाप करता है वह वशीकरण आकर्षण क्षोभ द्रावण और संमोहन करता है।

मंत्र– ॐ देवी श्री भूत श्री यक्षि महा यक्षि पद्मावती अमुकं वश मानय मानय ठः ठः।

मंत्रं सिद्धं लक्ष प्रजाप्यतः स्व नाम संयुक्तममुं।
युवेतेर्युनो स्युद्रुक फलक द्वं द्वे विलिखेत्।।

इस मंत्र को एक लाख जप करके सिद्ध करके युवति और युवक के नाम को वहेड़ा की दो तख्तियों पर लिखे।

द्रावण मंत्र

मंत्र– ॐ चले चले चुले चुले चित्त रेतो विमुंच विमुंच स्वाहा।

विनयं चेल चुले द्विचितो रेतो विमुंच युग।
होमं च द्रावयति लछ जाप्यान्मत्रो वनिता समूहमिहं।।

मंत्र का एक लाख जाप करने से सब स्त्रियां द्रवित हो जाती हैं।

मंत्र– ॐ कामिनी रंजय होम मंत्र ॐ कामिनीं रंजय स्वाहा।

यस्या लिखि त्वात्म करे पसव्ये संदर्शयेत्सा।
स्मर बाण विद्धा ध्रुवं द्रवत्यत्र किमस्ति चित्रं।।

इस मंत्र को अपने बायें हाथ पर लिखकर जिसको दिखलाया जाए यदि वह कामदेव के बाण से बिंध जाए तो इसमें कोई भी आश्चर्य नहीं है।

लिप्तश्रुभ्रार्क कीटयां नाग वल्ली दलं स्त्रियः।
कृत्वात्मांगुलि लेपं कुर्याति स्त्रीणां भग द्रावं।।
टंकण पिछलिकामा सूरणं कर्पूर मातुलिंग रसैः।
कृत्वात्मांगुलि लेपं कुर्याति स्त्रीणां भग द्रावं।।

टंकण (सुहाग) पीपल, कामा (मेनफल) सूरण (जमीकंद) कपूर मातुलिंग (बिजौरा) के रस से अपनी अंगुली (ध्वज) पर लेप करने से स्त्री द्रवित होती है।

मंत्र– नमः कामदेवाय सर्वजन विजयाय सर्व जन संमोहनाय प्रज्वलिताय सर्व जन हृदयं ममात्मगते कुरु कुरु ठः ठः।

त्रिसहश्र रूप्य जाप्पात् संसिद्धः कामदेव मंत्रोयं।
जाप्पादिभिः प्रयोगैः कुर्प्या द्वश्यं जगन्निरिबलं।।

यह स्त्री वश्य कामदेव मंत्र तीन हजार जप आदि करने से संपूर्ण जगत को वश में करता है।

स्त्री वशीकरण मंत्रः

मंत्र– ॐ नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्व जन मनोहरि सर्व मुख वशंकरि सर्व राज वंश करि अमुंक मे वश्य मानय मानय ठः ठः।

वीणा वादन निरतां निः शेषा भरण भूषितां श्यामां।
शंखकृत कुंडलां कां देवी मातंगिकां नाम्रीं।।
अवरमस्तिं दधती ध्यात्वा मुं संध्ययो र्द्वपो मंत्र।
नित्यं जपत स्त्री ण्यपि भुवननानानि वशे वे तिष्टन्ति।।

वीणा बजाने में लगी हुई सब आभूषणों से सजी हुई श्यामा शंख के कुंडल के चिन्ह वाली मातंगी नाम की देवी काले वस्त्र पहनने वाली देवी को ध्यान करके, प्रातः काल और सायंकाल इस मंत्र को प्रतिदिन जपने वालों के वश में तीन लोक की स्त्रियाँ रहती हैं।

मंत्र– ॐ नमः उच्चिष्ट चांडालि मातंगी सर्व जन वशीकरणं कुरु कुरु ठः ठः।

मंत्रो मातंगी काया, अथ मयुतं जपात् सिद्धति।
व्योमांगां तांध्यात्वा स्वोच्चिष्ट मंत्रं वलिमुपहरतो।।
नेन मंत्रेण तष्यैव प्राप्तस्यै क्यं तयाष्टा प्रतिदिनं।
खिलो वश्येतां याति लोके इष्टादश्यश्च यां वा।
व्रजति परमदः पूज्यत सौ तयापि।।

यह मातंगी का मंत्र दस हजार जप से सिद्ध होता है। आकाश रूपी शरीर वाले उस देव का ध्यान करके उसके लिए उपरोक्त उच्चिष्ट मंत्र से आहुति दें।

उसको सिद्ध हो जाने पर मंत्री के वश में संपूर्ण लोक की स्त्रियाँ हो जाती हैं।

मंत्र– ॐ रूद्र दयिते योगेश्वरी हूँ फट् ठः ठः।

मंत्री गोर्या एषः स्यात् पंचा शत्सहस्त्र सिद्धः।
साध्या संज्ञा मूरौ प्रविलिख्य वामायां।।

नाम पिधायच वामेन पाणिना साधको जपेनमंत्रं।
सा तत् क्षणेन साध्या वनिता वश्यत्वमायाति।।

यह गौरी देवी का मंत्र पचास हजार जप से सिद्ध होता है। साध्य स्त्री के नाम को अपनी बाईं उरू (जंघा) पर लिखकर मंत्र को जपे और उस नाम को बायें हाथ से ढककर जपे तो वह स्त्री उसी क्षण उसके वश में हो जाती है।

मंत्र– ॐ नमो मातंगानां नमो मांतगिनीनां नमो मातंगी कुमारिकानां तद्यथा चरू चरू अस अस कुरु कुरु ठः ठः।

मंत्र– ॐ वश्य मुखि राज मुखि राज वश्य मुखि ठः ठः।

एषः लक्ष जपात्सिद्धौ लक्ष्मी मंत्रः।
प्रशस्येत मुख प्रक्षालनं कुर्वति एतेन वशये जगत्।।

इस लक्ष्मी मंत्र को एक लाख जप आदि से सिद्ध करके उससे अपना मुख धोने से सम्पूर्ण जगत को वश में करे।

गौरी मंत्र

मंत्र– नयन मनोहरि हर-हर नयन मनोहरि ठः ठः।

सिद्धै लक्ष जपादयमनेन सहदेव्या।
भस्महुताया लिप्त गात्रे वशये जगत् निखिलं।।

इस मंत्र को एक लाख जपादि से सिद्ध करके उससे हवन किये हुए सहदेवी के भंस्म को अपने शरीर पर लेप करने से संपूर्ण जगत को वश में कर लेवे।

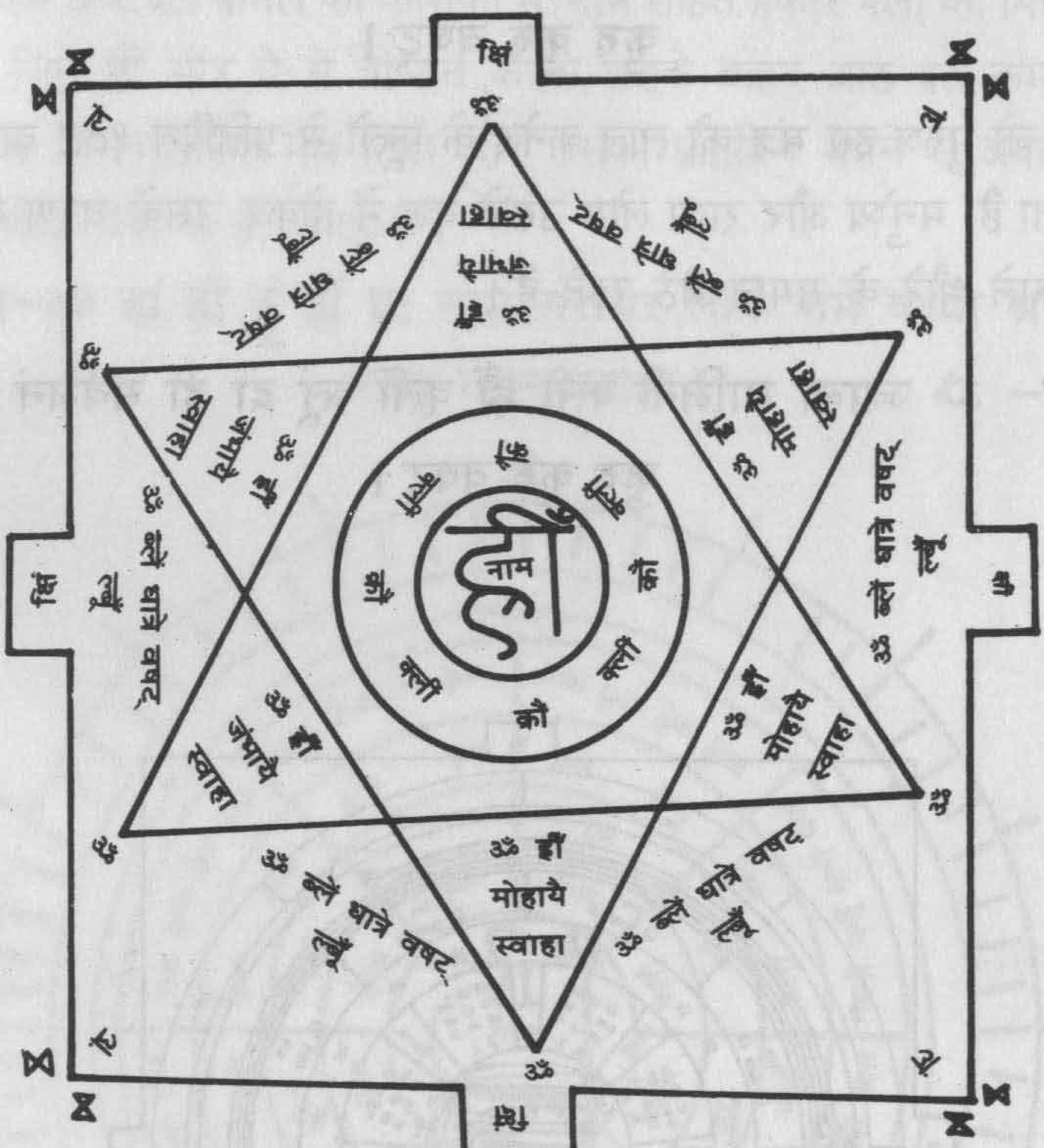
ॐ ह्रीं ऐं क्लीं नित्ये क्लिन्ने मदद्रवे ऐं ह्रीं स्वाहा।

ॐ ह्रीं नित्यं क्लिन्ने मदद्रवे ह्रीं स्वाहा।

ॐ ह्रीं क्लीं नित्ये क्लिन्ने मदद्रवे ह्रीं स्वाहा, अस्त्राय फट्।

बसीकरण मंत्र यंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं जंभे मोहे अमुकस्य अमुकं वशं कुरु कुरु वषट्।



पूजा मंत्र

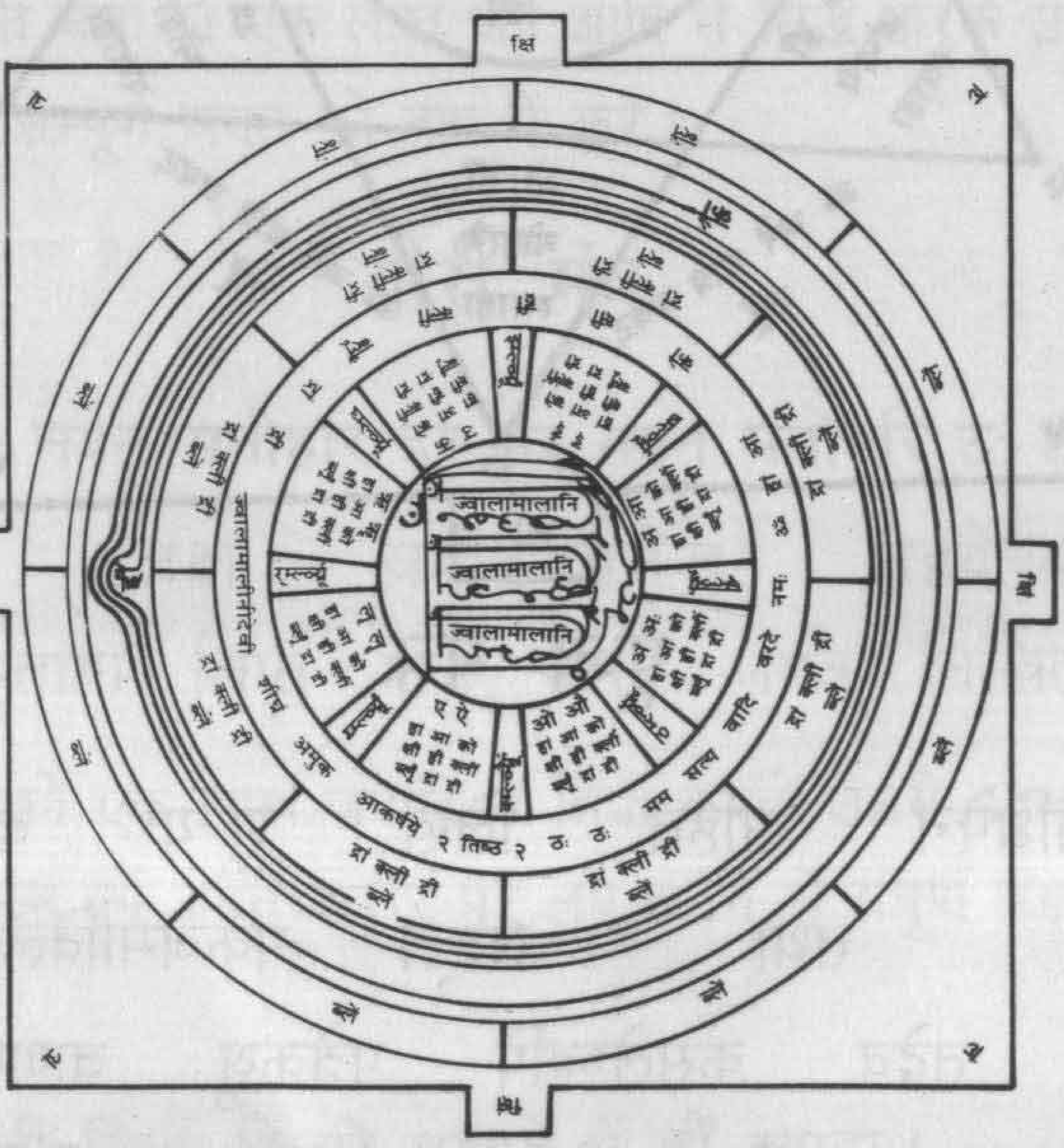
कामाधिपेन सहितं लिख शून्य बीजं।
बाह्ये तथा षट्ल पंकजमाविलेख्य।।
बीजं तदेव कसलेष्वपि पत्रेकषु वाणवृतं।
तदखिलं भुवनो वेष्ट्राअष्टोत्तरं प्रतिदिनं।

सततं जपेद्य पुष्पै स्तथा संवृतैः।।
तद्वश्य मेति मनुजा श्वराश्च तिष्ठंति।
तत्पद सरोज मदालिश्याम्या।।

ॐ ज्वाला मालिनी ह्क्लीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं सर्व जन वश्यं कुरु कुरु वषट्।

जो पुरुष इस मंत्र को लाल कनेर के फूलों से प्रतिदिन १०८ बार जप करता है, मनुष्य और राजा लोग उसके वश में होकर उसके चरण कमलों में काले भौरे के समान बैठे रहते हैं।

मंत्र– ॐ ज्वाला मालिनी क्लीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं सर्वजनं वश्यं कुरु कुरु वषट्।

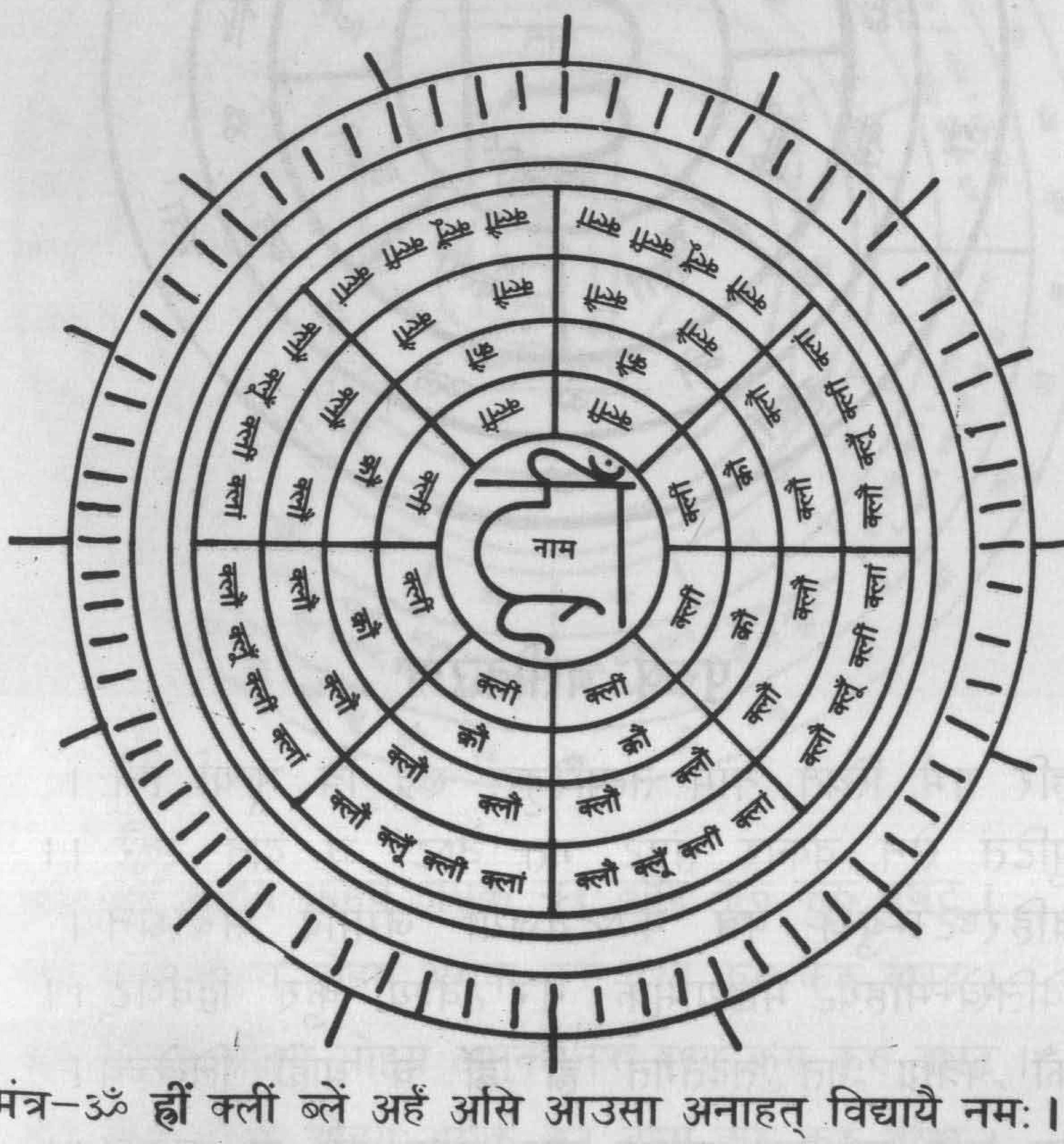


मंत्र– ॐ हां आं क्रों क्षीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ज्वालामालिनी देवी शीघ्र अमुकं आकर्षय आकर्षय तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः मम सत्य वादि वर दे नमः।

मंत्र–ॐ क्लीं ह्रीं ऐं नित्थे क्लीन्ते मदन द्रवे मदनातुरे मम् सर्व जन वश्यं कुरु कुरु वषट्।

एक अष्टदल कमल की कर्णिका में नाम सहित हकार क्लौं को मिलाकर लिखें जिसे ह्रीं और ऐं से वेष्टित करके उसके बाहर आठ दल कमल के पत्तों से निम्नलिखित मंत्र लिखे और उसको प्रतिदिन जपने से अवश्य ही तीन लोक वश में हो जाता है।

मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नाम नरामर लोके मम वश्यो भवतु भवतु वषट् स्वाहा।



मंत्र–ॐ ह्रीं क्लीं ब्लें अर्हं अंसि आउसा अनाहत् विद्यायै नमः।

इस यत्रं को हिम (कूपर) कुंकुम (केशर) अगर चंदन आदि से भोज

पत्र पर बड वृक्ष की तख्ती पर ऐसी शुद्ध भूमि पर प्रति दिन यंत्र के विधान से लाल कनेर के फूलों से जप करने वाले पुरुष के चरण कमलों में तीनों जगत् काल भौरें की तरह वश में रहते हैं।



पुरुष वसीकरण

हरि गर्भ स्थित नाम तत्परिवृत्तं रूद्र त्रि मूर्त्या र्हतैः।
पुटितं सेन वकार संपुट गत वेष्टां च दातं स्वरैः।।
वहिरष्टाम्बुंज पत्र केष्टयेजया जमादि संबोधनं।
विलिखेन्मोहय मोहयामुक नरं वश्यं कुरु द्विर्वषट्।।
क्रौं पत्राग्र गतं तदेतंगर्त ह्रीं ह्रीं च बाह्ये लिखेच्च।
स्त्रा स्त्रीं स्त्रूं पुन रूक्ता मंत्र वलयं स्त्रों स्त्रः प्रकुया।।

द्वहि यंत्रं मोहन वश्य मिदं भूजे विंलिख्यार्चयेत।
धूतरस्य रसेन मिश्र सुरभि द्रव्यै र्भ वेन्मोहनं।।

एक आठ दल कमल की कर्णिका में नाम ह्रें ह्रीं ह्रें स स व व और ठ से घेर कर उस के चारों तरफ गोलाकार में सोलह स्वर छिपे फिर बाहर आठों पत्रों में पूर्व आदि क्रम से नीचे आठ मंत्र लिखे।



अये जये मोहय मोहय अमुक नरं वश्यं कुरु कुरु वषट्।
अये जंभे मोहय मोहय अमुक नरं वश्यं कुरु कुरु वषट्।
अये विजये मोहय मोहय अमुक नरं वश्यं कुरु कुरु वषट्।
अये मोहे मोहय मोहय अमुक नरं वश्यं कुरु कुरु वषट्।

अये अजिते मोहय मोहय अमुक नरं वश्यं कुरु कुरु वषट्।
अये स्तंभे मोहय मोहय अमुक नरं वश्यं कुरु कुरु वषट्।
अये अपराजिते मोहय मोहय अमुक नरं वश्यं कुरु कुरु वषट्।
अये स्तंभिनि मोहय मोहय अमुक नरं वश्यं कुरु कुरु वषट्।

इस यंत्र को गोलोचन कस्तूरी से लिखकर पास रखने से वशीकरण होता है।

वशीकरण तंत्र

गोरभां वर्हि शिखा रोचना मोहिनी वश।
पिष्टाभिः कन्यायै ताभि वंशी कुर्यात् विशेषतः।।

गोरभा वर्हि शिखा (मयूर शिखा) गोरोचना मोहिनी (पोदीना) वश (पोपल) को पीसकर कन्याओं को विशेष रूप से वशीकरण करता है।

रक्ता तगर मंदार मूलै स्तुल्येन कल्कितं।
पुड्राकं चंदन नाश्रु वशी कुर्यात जगत् त्रये।।

रक्ता (चोटली) तगर मंदार मूल (आक की जड़) और चंदन से तीनों लोकों को शीघ्र वशीकरण करता है।

मंदार मूल मंजिष्टा कुष्टचक्रै सरसमैः।
सपं पिष्टं घृतं ललाटादौ वशयेत् रक्त चंदनं।।

आक की जड़ मंजीठ कूठ चक्र (तगर) को बराबर लेकर लाल चंदन के साथ पीसकर मस्तक आदि पर लगाने से वशीकरण होता है।

भृंगनील गजांश्चत्थ वर्षा भून्मत्त चंदनैः।
जलेननालिकेरस्य पिष्टैर्वश्यो विशेषतः।।

भांगरा नील गज (विष्णु क्रांता), अश्वतथ (पीपल) वर्षाभू (साठी) उन्मत (धतूरा) और चंदन को नारियल के जल से पीसने पर विशेष रूप से वशीकरण करता है।

पयो भुग्वाल लाला गोरीचना मधुपैर्गुरो:।
भारायां कन्याया पिष्टैर्लालाम खल मोहनं।।

गाय के बच्चे की लार गोरोचन मधुप (महवा) अगर (भातयां) तुलसी को कन्या के मुख की लार से पीसने से सब मोहित हो जाते हैं।

शंखपुंखी सहदेवी तुलसी कस्तूरिका च कर्पूरं।
गोरोचना गज मदो मन: शिला दमनक श्चैवे।।
जाती शमी कुसुम युग हरिकांता चेति दिव्य तंत्र मिदं।
सम भागेन गृहितं तिलकं कुरु भुवन वश्य मिदं।।

सरसों का सहदेवी तुलसी/कस्तूरी कपूर गोरोचन हाथी का मद में नशिल दमनक चमेली और खेजड़े के फूलों और हरिकांतां (तुलसी) को बराबर लेकर श्रुम उपाय से तिलक किया हुआ सम्पूर्ण लोक को वश में करता है।

मार्कव विष्णुक्रांतां देवीश्वेताग कर्णिका मूलै:।
गोरोजनांबु पिष्टै: तिलको जगद् वशकृत।।

मार्कव (भांगरा) विष्णुक्रांता (शंख पुष्पी) देवी (सहदेवी) श्वेताग कर्णिका मूल (सफेद कोयल की जड़) गोरोचन को पानी से पीसकर तिलक करने से जगत वश में होता है।

सित गिरि कर्णी मूलंशित वात विरोधो मूलमपि तैलं।
मदगज मद मसमुपेतं तिलकं त्रिलोक्य वश्यकरं।।

सित गिरि कर्णी मूल (सफेद कोयल की जड़) सित वात विरोधी मूल (सफेद ऐरंड की जड़) तिली का तेल हाथी का मद और मद (धतूरा) का तिलक तीन लोक को वश में करता है।

जरिली शिखा सहदेवी मोहिनी हरि वल्लभा च गोरंभा।
सिद्ध दिने कृत तिलक: शंकर मपिवश्यतां नयति।।

जरिली (पिलखन) शिखा (मयूराशिखा) सहदेवी मोहिनी (पोदीना)

हरिवल्लभा (तुलसी) और गोरभा का सिद्ध दिन में तिलक करने से सभी वश में हो जाते हैं।

वरकंद पत्र कन्या हिम पद्मोत्पल सुकेशरं।
कुष्टं हरिकांता कलय भवं विकृति स्तिलकां जगद्वश कृत।।

वरकंद के पत्ते घृत कुमारी कपूर और नीला कमल की केशर कूठ (सख हूली) हरिकांता, और चंदन को तिलक जगत को वश में करता है।

कनकसहजात. पुष्पी मलयज नृपरोचना गज मदैश्च।
सम भागेन गृहित स्तिलक स्त्रैलोक्य जन वश कृत।।

कनक (धतूरा) सहा (गंवार पाठा) जाति पुरुष (चेमली के पत्ते) मलयज (चंदन) नृप (ऋभक्षक) गोरोचन हाथी का मद सब बराबर लेकर तिलक करने से तीन लोक के प्राणी वश में होते हैं।

श्वेत जपासित सर्षप सहदेवी देवी भृंगराज कृततिलकः।
युक्तः समरोचनया त्रिभुवन जन वश्य कृत प्रीक्तः।।

सफेद जपा (गुड़हल) सफेद सरसों सहदेवी देवी (मूर्वा) भांगरा ओर गोरोचन का तिलक करने से तीन लोक वश में होते हैं। ऐसा कहा गया है।

नारी गोरचना ब्रह्म डंडी भुजग केशरैः।
सिद्धनेत्रां जनं सद्योजनयेज्जनपं रंजनं।।

नारी (अश्ववला) गोरोचन ब्रह्म डंडी (उंटकरेला) नागकेशर का सिद्ध किया हुआ अंजन वशीकरण करता है।

कुष्टैला लत्ता वक्रेंदु सिंधुनाग ह्मिा गुरुः।
अंजनेन समं वश्यमं समं नयनाजनं।।

कूठ इलायची अलत्तक (महानर) वक्र (तगर) इंदु (कपूर) सिंधु (सेंधा नमक) नाम केशर हिम (कपूर) अगर का अंजन आँखों में लगाने से सब वश में होते हैं।

तगर शिखा हरिकांतां रजनी सर्षय मनाशिला चूर्णः।
नीरजवर्त्युद्धारित कज्जलका लोकवश्यकरं।।

तगर मयूरशिखा हरिकांता (तुलसी) रजनी (हल्दी) सरसों मेनशिल नीरज (कमल) को बत्ती से बनाया काजल लोक को वशीकरण करता है।

नयनांजन मंत्र

मंत्र–ॐ नमो भगवते चंद्र प्रभाय चंद्रेंद महिताय नयन मनोहराय हरि हरि हिरिणि हिरिणि सर्व जनं मम् वशं कुरु कुरु स्वाहा।

कजलोद्धार मंत्र

मंत्र– ॐ भूतग्रहाय समहिताय कामाय रामाय ॐ चुलु चुलु गुलु गुलु नील भ्रमरि भ्रमरि नयन मनोहरि मनोहरि नमः।

कज्जल रंजित नयनां द्रष्ट्वा तां वांछतीह मदनोपि।
रंजित नयनं भूपाद्या यांति तस्य वश्यं।।

पुत्तं जारी (तायभात = अमीरन) कुंकुम, सरफोका मोहिनी (पोदीना) कूठ, गोरोचन, नाग केशर, रूदंती और कूपर चूर्ण का पावक (अग्नि) में डालकर उसको कमल के धागे से लपेट कर उसकी बत्ती बनाए। फिर कारूकं के स्तनों के दूध·ओर तीनों वर्णो की स्त्रियों के दूध में भावित करे। कपिला गाय के घृत से दीपक जलाएँ। इस अंजन को दोनों ग्रहण और दीपावली की रात्रि में गोबर से लिपि हुई तथा मंत्र से धुली हुई पृथ्वी पर ठहर कर खप्पर में काजल पाड़कर नेत्र में यह काजल लगाई हुई स्त्री कामदेव को भी वश में कर लेती है। पुरुष भी उस काजल को लगाकर राजा आदि को वश में कर लेता है।

मंत्र– ॐ हिरिणी हिरिणि स्वाहा।

कर्प्पूररोचनामोहिनी सुनीलांजनं च सम भागं।
पूर्व विधियुक्तमंजन मिद मखिल जग वंशीकरणं।।

केशर, कूट, चंदन, कमल नीलीफर की केशर, सहदेवी, भ्रामक (भ्रमर छल्ली) कन्या (घृत कुमारी) नृप (ऋषभक) हरिकांता (तुलसी) विकृति (सुध ारे हुए) मोर के नाखून कपूर गोरोचन मोहिनी (पोदीना) और नीला सुरमा यह सब बराबर लेकर विधि के अनुसार बनाया हुआ अंजन सम्पूर्ण जगत को वश में कर लेता है।

रुक सिंदूर बचा नाग केशरैः चंद्रा कुसुमैः।
ससिद्धार्थे कृतो धूपः स्यात्सर्वजनवश्य कृत।।

रुक (कूठ) सिंदूर, वच, नाग केशर, चंद्र कुसुम, (सफेद निसोथ) सफेद सरसों के बनी हुई धूप सब को वश में कर लेती है।

वशीकरण मंत्र

मंत्र– ॐ नमो मोहनीये सुभगे लिलि ठः ठः।

गोरमां मोहिनी जारी केकि कूड़ा कृतांजलिः।
दत्ता स्वन्यत भान्न पानादि वशयेन्मल संयुता।।

गोरमां मोहिनी (पोदीना) जारी (पुतंजारी= त्रायमान ममीरन) के कि चूड़ा (मयूरशिखा) कृति (भोजपत्र) अंजलि (लजालू) और अपने मल को मिलाकर देने से वशीकरण करता है।

स्मशान भृंगरिजन मदं पंच मलैर्युतः।
प्रदत मन्त पानादि सर्व संवननं मतं।।

श्मशान में उगा हुआ भृंगराज मद (धतूरा) अपने पांचों मलों, अन्न पान आदि में मिलाकर देने से सबका वशीकरण होता है।

मंत्र– ॐ गवा मयेन यज्ञेन येन यष्ट कृतुः पुराआनंत्यो देव देवस्य वचनानि पशोः स्मरः स्वाहा।

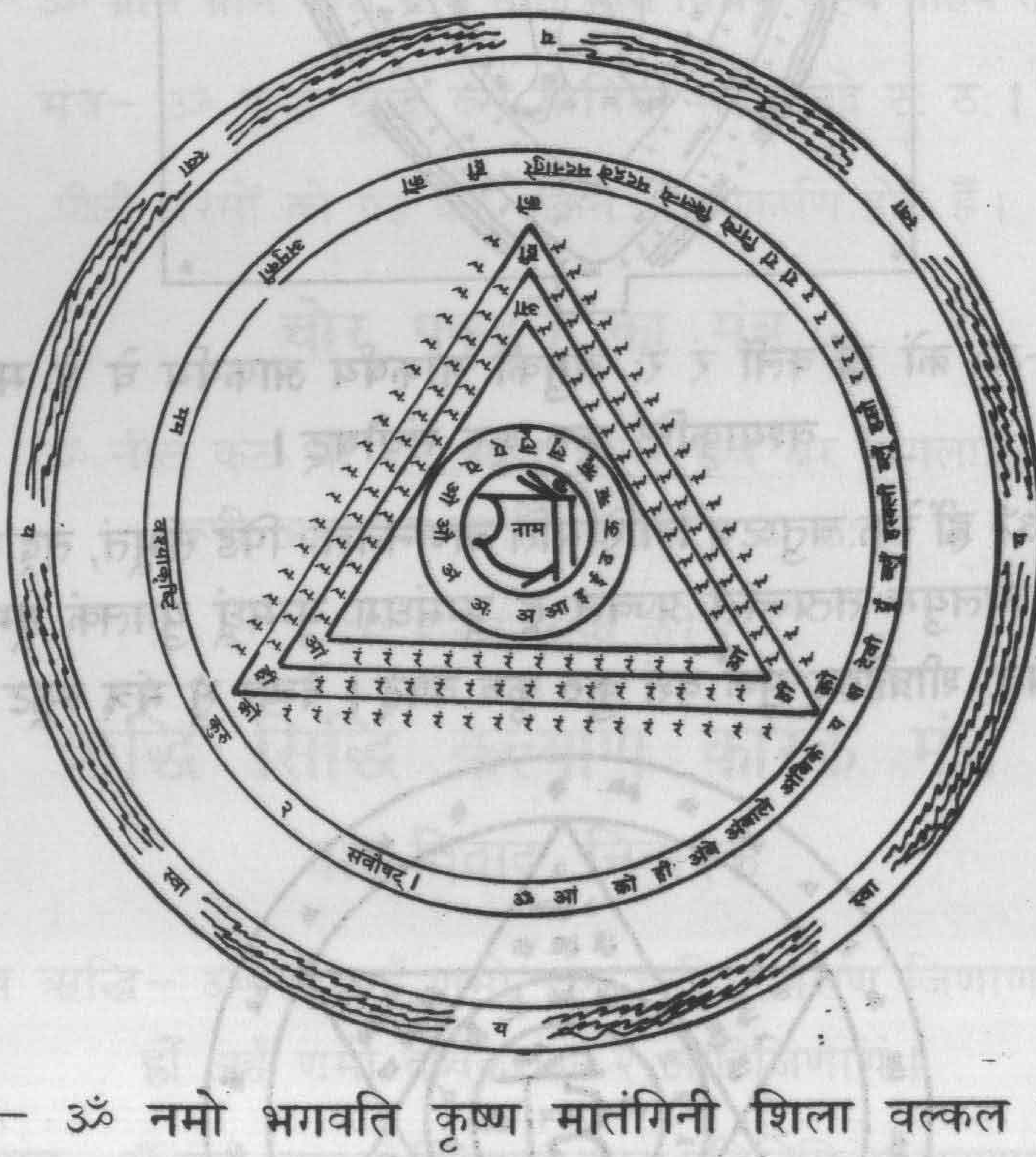
जानवर भी बस में होते हैं।

आकर्षण मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अमुकं आकर्षय आकर्षय सवौषट्।

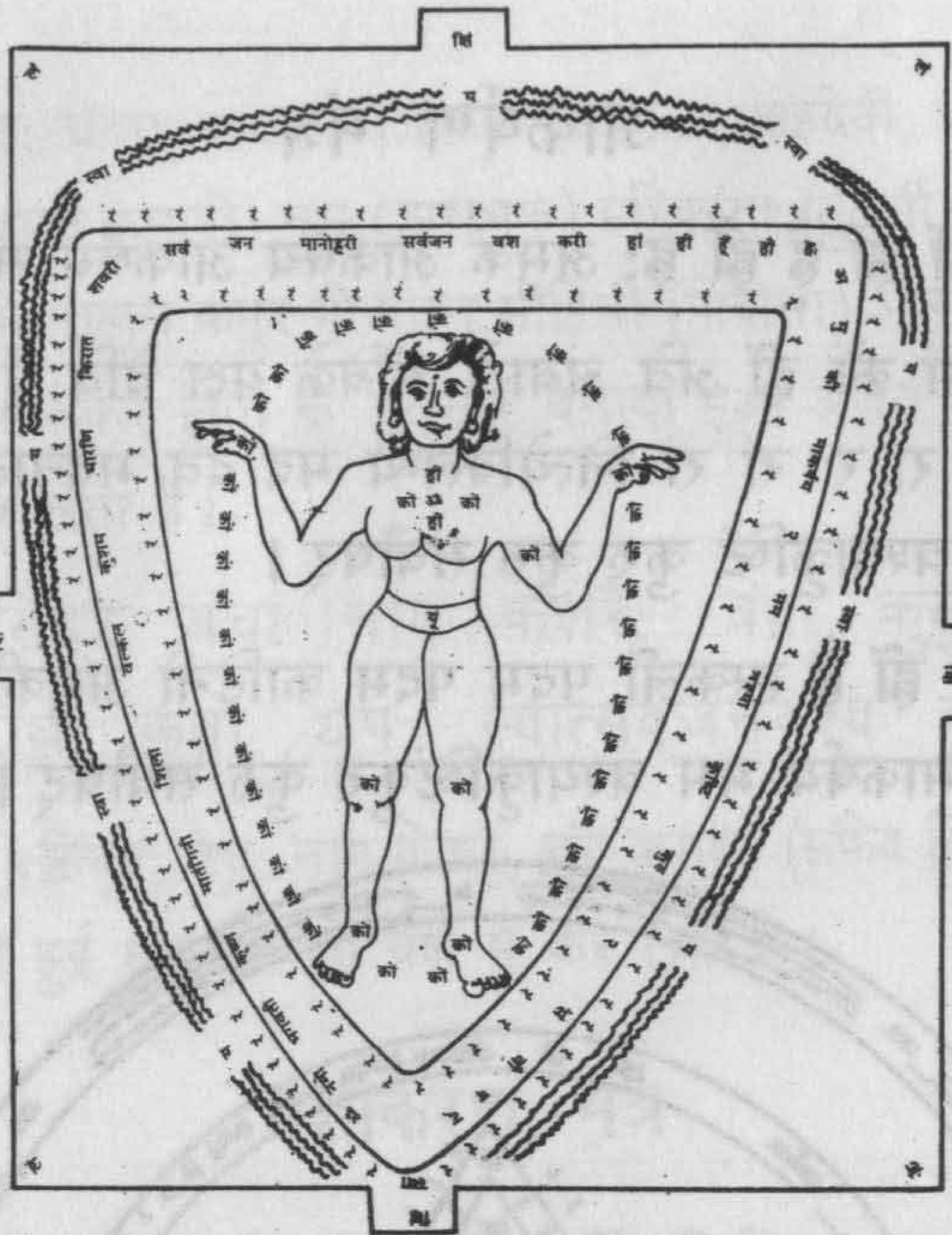
मंत्र– ॐ आं क्रों ह्रीं अंबे अंबाले अंबिके यक्ष देवि यूँ ब्लूं ह्स्वली ब्लूं ह्सौ रः रः रः रां रां नित्येक्लिन्ये मद द्रवे मदनातुरे ह्रीं क्रों अमुकीं मम वश्याकृष्टिं कुरु कुरु संवौषट्।

मंत्र– ॐ ह्रीं है ह्स्कलीं पदम पदम काटिनी अमुकीं मार्कषय् मार्कषय मम वश्याकृष्टिंकुरु कुरु संवौषट्।



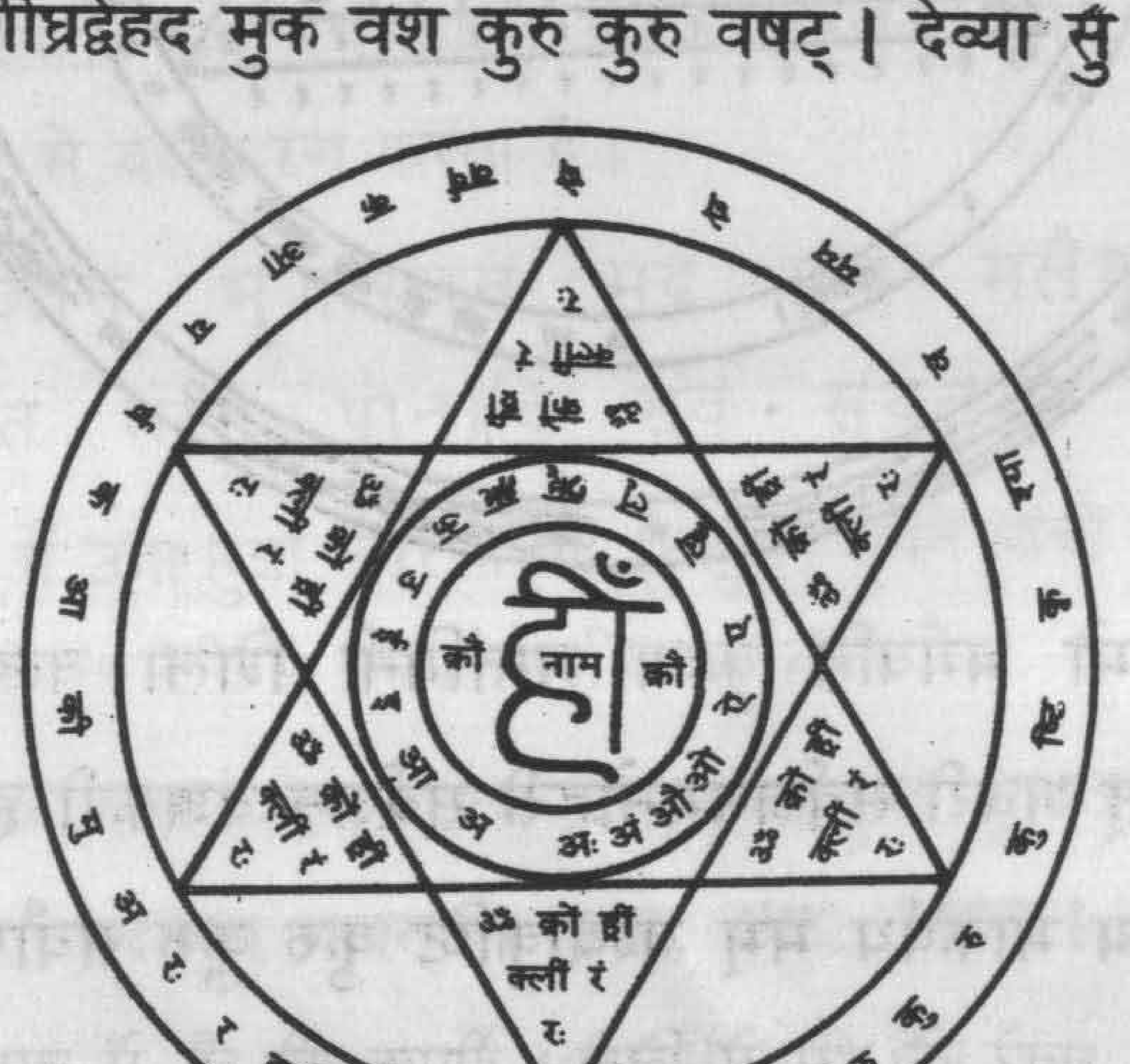
मंत्र– ॐ नमो भगवति कृष्ण मातंगिनी शिला वल्कल कुशम धारिणी किरात् शवरी सर्वजनमनोहरी सर्वजन वंशकरी ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः अमुकीं मार्कषय मार्कषय मम् वश्याकृष्टि कुरु कुरु संवौषट्।

यह मंत्र धतुरे के रस से लिखे। दीपक की लौ में तपावें।



मत्र–ॐ क्रों ह्रीं क्लीं रं रः अमुकी माकर्षय आकर्षय घे घे मम् वश्याकृष्टिं कुरु कुरु संवौषट्।

ॐ ह्रीं रेफ चतुष्टयं शिखिमति वाणननक्तः पिडं संभूतं, तद् वमु पंचंक ज्वलयुगं तत्प्रज्वल प्रज्वल हूं युग्मंधग युग्मधूं युगलकं धूमांध कारिण्यतः शीघ्रद्वेहद मुकं वशं कुरु कुरु वषट्। देव्या सु मंत्र स्फूट।



ॐ ह्रीं र र र ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं हम्ल्व्र्यूं
ॐ ह्रां ह्रीं हूँ ह्रः ज्वल प्रज्वलं प्रज्वल हूं हूँ धन धन घूं घूं धूमांद
कारिणी शीघ्र एहि एहि अमुकं वश्यं कुरू कुरु वषट्।

आकड़े के दूध से लिख कर तपावे।

मंत्र– ॐ बलि बलि महाबलि महाबलि स्वाहा।

तीन हजार जाप्य से सिद्ध होता है।

मंत्र– ॐ भ्रमि भ्रमि केशि भ्रमि माते भ्रमि विभ्रमं मुह्य मोहय स्वाहा।

मंत्र– ॐ शुद्धे श्रुद्धे रूपे योगिनी महा निद्रे ठः ठः।

पीली सरसों को पढ कर फेकने से आकर्षण होते हैं।

चोर पकड़ने का मंत्र

ॐ नील कंठ श्री कंठ अमर भ्रमर छत्र धर पिंगलाक्षि काम
रूपी आमरण्य वासी निरोवर्द्दर ठः ठः।

दस हजार जाप्य करें।

ऋद्धि सिद्धि कल्याण कारक मंत्र

वाद-विवाद निवारक

मंत्र ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो इठ्ठकज्जसिद्धिपराण जिणाणं ऋ
ह्रीं अर्हं णमो दव्वंकराण २ ओहिजिणाणं।

मंत्र– ॐ नमो भगवओ रिसहस्स तस्स पडिनिमित्तेण चरणपण्णत्ति
इन्देण भणामइ यमेण उप्पाडिया जीहा कंठोठ्ठ मुहतालुया खीलिया
जो मं भसइ जो म हसइ दुठ्ठ दिठ्ठीए वज्जसिंखलाए देवदत्तस्स मणं
हियय कोह जीहा खीलिया सेलखियाए ल ल ल ल ठः ठः ठः
स्वाहा।

विधि- श्रद्धापूर्वक उक्त मंत्र को १०८ वार जपने के पश्चात् प्रतिवादी से वाद-विवाद करने पर जप करने वाले की विजय होती है। निश्चय पूर्वक प्रतिवादी का मुख बन्द हो आता है और उसकी पराजय होती है।

जलभय-निवारक

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो समुद्दभय सामण बुद्धीणं परमोहि जिणाणं।

मंत्र- ॐ ह्रीं हरक्लीं बगलामुखी देवी नित्ये! किन्ने! मदद्रवे! मदनातुरे! वषट् स्वाहा।

विधि- पुष्य नक्षत्र के योग में इस महामंत्र का २१ दिन तक १२००० जाप पूरा करने से तीनों लोक वशीभूत होते हैं तथा जल का भय नहीं रहता।

असमय निधन निवारक मंत्र

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो अकाल मिच्चुवारयाणं सब्वोहिं जिणाणं।

मंत्र- ॐ नमो भगवति ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं नमः स्वाहा।

विधि- श्रद्धा पूर्वक इस मंत्र को ९ बर्ष तक हर वर्ष लगातार ४० रविवार के दिन प्रति रविवार को १००० वार मंत्र जपने से गर्भपात और अकाल मरण नहीं होता।

कष्ट निवारक प्रतिदिन जाप्य मंत्र

मंत्र- ॐ ह्रीं सर्व पीड़ा निवारकाय श्रीजिनाय नमः।

प्रच्छन्न धन प्रदर्शक

मंत्र- ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो गोधण वुड्डिकराणं अणंतोहि जिणाणं।

मंत्र- ऋद्धि- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं व्लूँ अर्हं नमः।

विधि- प्रतिदिन श्रद्धा पूर्वक १०८ वार ऋद्धि और मंत्र की जाप जपने से गुमी हुई मवेशी, लक्ष्मी तथा धन का लाभ होता है।

प्रति दिन जाप्य मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं सुख विधायकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।

सन्तान सम्पत्ति प्रसाधक

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुत्त इत्थि कराणं २ कोठ्ठ बुद्धीणं।

मंत्र– ॐ नमो भगवति! अम्बिके! अम्बालिके! यक्षीदेवी यूँ यौं ब्लैं हस्क्लीं ब्लूँ ह् सौं रः रः रः रां रां दृष्टि् प्रत्यक्षं मम् देवदत्तस्य वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से २१ वार दातोन मंत्रित कर उसी से दांत साफ करें पश्चात् २१ वार श्रद्धा पूर्वक मंत्र का जाप जपने से इच्छित मनुष्य वश में होता है।

भय दूर करने का मंत्र

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो अभिठ्ठ साधयाणं बीज बुद्धीणं।

मंत्र– ॐ नमो भगवओ अरिठ्ठ णेमिस्स बंधेण बंधामि रक्खसाणं, भूयाण खेयराणं, चोराणं, दाढाण साईणीणं, महोरगाणं अण्णे जेवि दुठ्ठा संभवन्ति तेसिं सव्वेसिं मणं मुहं गई दिठ्ठीं बधामि धणु धणु महाध्ध णु जः जः जः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।

विधि– गहन वन के कठिन मार्ग पर चलते हुए भय उत्पन्न होने पर इस मंत्र द्वारा कुछ कंकरों को मंत्रित कर चारों दिशाओं में फेंकने से चोर, सिंह, सर्प आदि का भय दूर होता है।

जहर दूर करने का मंत्र

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो उण्हगद हारीणं पादाणुसारीणं।

विधि- श्रद्धापूर्वक उक्त मंत्र को १०८ वार जपने के पश्चात् प्रतिवादी से वाद-विवाद करने पर जप करने वाले की विजय होती है। निश्चय पूर्वक प्रतिवादी का मुख बन्द हो आता है और उसकी पराजय होती है।

जलभय-निवारक

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो समुद्दभय सामण बुद्धीणं परमोहि जिणाणं।

मंत्र- ॐ ह्रीं हरक्लीं बगलामुखी देवी नित्ये! किन्ने! मदद्रवे! मदनातुरे! वषट् स्वाहा।

विधि- पुष्य नक्षत्र के योग में इस महामंत्र का २१ दिन तक १२००० जाप पूरा करने से तीनों लोक वशीभूत होते हैं तथा जल का भय नहीं रहता।

असमय निधन निवारक मंत्र

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो अकाल मिच्चुवारयाणं सब्वोहिं जिणाणं।

मंत्र- ॐ नमो भगवति ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं नमः स्वाहा।

विधि- श्रद्धा पूर्वक इस मंत्र को ९ बर्ष तक हर वर्ष लगातार ४० रविवार के दिन प्रति रविवार को १००० वार मंत्र जपने से गर्भपात और अकाल मरण नहीं होता।

कष्ट निवारक प्रतिदिन जाप्य मंत्र

मंत्र- ॐ ह्रीं सर्व पीड़ा निवारकाय श्रीजिनाय नमः।

प्रच्छन्न धन प्रदर्शक

मंत्र- ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो गोधण वुड्डिकराणं अणंतोहि जिणाणं।

मंत्र- ऋद्धि- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं व्लूँ अर्हं नमः।

विधि- प्रतिदिन श्रद्धा पूर्वक १०८ वार ऋद्धि और मंत्र की जाप जपने से गुमी हुई मवेशी, लक्ष्मी तथा धन का लाभ होता है।

प्रति दिन जाप्य मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं सुख विधायकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।

सन्तान सम्पत्ति प्रसाधक

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुत्त इत्थि कराणं २ कोट्ठ बुद्धीणं।

मंत्र– ॐ नमो भगवति! अम्बिके! अम्बालिके! यक्षीदेवी यूँ यौं ब्लैं हस्क्लीं ब्लूँ ह् सौं रः रः रः रां रां दृष्टिं प्रत्यक्षं मम् देवदत्तस्य वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से २१ वार दातोन मंत्रित कर उसी से दांत साफ करें पश्चात् २१ वार श्रद्धा पूर्वक मंत्र का जाप जपने से इच्छित मनुष्य वश में होता है।

भय दूर करने का मंत्र

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो अभिट्ठ साधयाणं बीज बुद्धीणं।

मंत्र– ॐ नमो भगवओ अरिट्ठ णेमिस्स बंधेण बंधामि रक्खसाणं, भूयाण खेयराणं, चोराणं, दाढाण साईणीणं, महोरगाणं अण्णे जेवि दुट्ठा संभवन्ति तेसिं सव्वेसिं मणं मुहं गई दिट्ठीं बधामि धणु धणु महाध णु जः जः जः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।

विधि– गहन वन के कठिन मार्ग पर चलते हुए भय उत्पन्न होने पर इस मंत्र द्वारा कुछ कंकरों को मंत्रित कर चारों दिशाओं में फेंकने से चोर, सिंह, सर्प आदि का भय दूर होता है।

जहर दूर करने का मंत्र

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो उण्हगद हारीणं पादाणुसारीणं।

मंत्र- ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथ तीर्थंकराय हंसः महाहंसः पद्महंसः शिवहंसः कोपहंसः उरगेश हंसः पक्षि महाविषभक्षि हुँ फट् स्वाहा।

विधि- इस मंत्र को प्रतिदिन १०८ बार जप कर एक वर्ष में सिद्ध करे। पश्चात् सर्प डसे आदमी पर प्रयोग करे। अर्थात् मंत्र पढ़ते हुए झाड़ा देने से जहर दूर होता है।

सर्प विष विनाशक मंत्र

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो विसहर विस विणास याणं संभिण्ण सोदाराणं।

मंत्र- ॐ इंदसेणा महाविज्जा देवलोगाओ आगया दिट्ठिबंधणं करिस्सामि भडाणं भूआणं अहिणं दाढ़ीणं सिंगीणं चोराणं चारियाणं जोहाणं वग्घाणं सिंहाणं भूयाणं गंधव्वाणं महोरगाणं अन्नेसिं दुट्ठसत्ताणं दिट्ठिबंधणं मुहबंधणं करेमि ॐ इंद नरिंदे स्वाहा।

विधि- दीपावली के दिन निराहार रह कर १०८ वार इस मंत्र का जाप करे। पश्चात् मार्ग में चलते हुए इस मंत्र को २१ वार बोलने से सब प्रकार का भय तथा उपद्रवों का नाश होता है।

तस्कर भय विनाशक मंत्र

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो तक्खर भय पणासयाणं उजुमदीणं।

मंत्र- ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी चक्रधारिणी जलजलनिहिपारउतारणि जलं थंभय दुष्टान् दैत्यान् दारय दारय असि वोप समं कुरु कुरु ॐ ठः ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि- गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र का योग पड़ने पर इस मंत्र का शुद्ध हृदय से १०८ बार जप कर सिद्ध करे। पश्चात् कार्य पड़ने पर

२१ बार मंत्र का आराधन करने से हर तरह का भय नष्ट होता है।

जलाग्नि भय विनाशक मंत्र

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो वारियालण बुद्धीणं विउलमदीणं।

मंत्र- ॐ नमो भगवति अग्नि स्तम्भिनि ! पञ्चदिव्योत्तरणि! श्रेयस्करि ! प्रज्वल प्रज्वल प्रज्वल सर्व कामार्थ साधनि! ॐ अनल पिङ्गलोर्ध्वकेशिनि! महाधि व्याधिपतये स्वाहा।

विधि- इस महामंत्र को भोजपत्र पर केशर अथवा हरताल से लिखकर उसे बढ़ती हुई अग्नि में डालने से तज्जन्य उपवद्रव शान्त होता है।

मन वांछित कार्य सिद्धि मंत्र

मंत्र- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा वांछितं मे कुरु कुरु स्वाहा।

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणलभयवज्जयाणं दस पुव्वीणं।

विधि- श्रद्धा पर्वूक इस महामंत्र का १२५००० सवा लाख बार जाप करने से समस्त मनोवांछित कार्यों की सिद्धि होती है।

व्यंतर बाधा दूर करने का मंत्र

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो रिक्खभय वज्जयाणं चोद्दसपुव्वीणं।

मंत्र- ॐ ह्रीं असिआउसा सर्व दुष्टान् स्तम्भय स्तम्भय अंधय अंधय मूकय मूकय मोहय मोहय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि- हरे रंग के कपड़े पहनकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके किसी एकान्त स्थान में बैठकर ८ या २१ दिन तक प्रति दिन मुट्ठी बाँधकर इस मंत्र का ११०० बार जाप करने से सब तरह के दुष्ट-क्रूर व्यन्तरों के कष्टों से मुक्ति होती है।

भविष्य जानने का मंत्र

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो भंसण भय झवणाणं अट्ठंग महाणिमित्त कुसलाणं।

मंत्र– ॐ नमो मेरु महामेरु, ॐ नमो गौरी महागौरी, ॐ नमो काली महाकाली, ॐ इंदे महाइंदे, ॐ जये महाजये, ॐ नमो विजये महाविजये, ॐ नमो पण्णसमणि महापण्णसमिणि अवतर अवतर देवी अवतर अवतर स्वाहा।

विधि– श्रद्धापर्वूक इस मंत्र का ८००० बार जाप करके मंत्र सिद्ध करे। तथा आईना (दर्पण) को उक्त मंत्र से मंत्रित कर सफेद स्वच्छ पवित्र कपड़े पर रखे, फिर उसके सामने किसी कुंवारी कन्या को सफेद वस्त्र पहना कर बिठावे, पश्चात् उससे जो बात पूंछोगे उसका सच्चा उत्तर देगी।

ज्वर उतारने का मंत्र

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खरधणप्पयाण विउव्वग पत्ताणं।

मंत्र– ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं णमो अरिहताणं, एकाहिक, द्वयहिक, चातुर्थिक, महाज्वर, क्रोधज्वर, शोकज्वर, भयज्वर, कामज्वर, कलित रव, महावीरान् बंध बध ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि– इस अनादि निधन महामंत्र का मन में स्मरण करते हुए नूतन श्वेत वस्त्र के छोड़ में गांठ बांधे, उसको गूगल तथा घी को धूनी देवे, तदुपरान्त उस वस्त्र को ज्वर पीड़ित रोगी को उढ़ावे। मन्त्रित गांठ रोगी के शिर के नीचे दबाने से सब तरह के ज्वर दूर होते है और रोगी को सुख की नींद आती है।

४८ दिन तक प्रतिदिन १००० मंत्र जप कर सिद्ध करें।

भय विनाशक

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहण वण भय णासयाणं विज्जाहराण।

मंत्र- ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं पादौ रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं कटिं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं नाभिं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं हृदयं रक्ष रक्ष ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ब्रह्माण्डं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं ऐसो पंच णमुक्कारो शिखां रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं सव्वपावप्पणासणो आसनं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं आत्मरक्षा पर रक्षा हिलि-हिलि मातगिनि स्वाहा।

विधि- श्रद्धा पूर्वक इस महामंत्र का प्रतिदिन जाप करने से सभी प्रकार के भय दूर होते हैं।

विष दूर करने का मंत्र

मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धिणासयाणं चारणाणं।

मंत्र- ॐ य: य: स: स: ह: ह: व: व: उरुरिल्लय रुह रुहान्त ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ दह दह दुष्टनाग विषं क्षिप ॐ स्वाहा।

१०८ दिन तक मंत्र जाप्य कर सिद्ध करें। बाद में

विधि- इस मंत्र से ७ वार जल मंत्रित कर जिस जगह सर्प काटा हो उस जगह छिड़कने से तथा उसी मंत्रित जल को पिलाने से सर्प का विष नाश होता है। अन्य विषैले जन्तुओं के विष का असर भी दूर होता है।

शुभाशुभ जानने का मंत्र

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो फणिसत्तिसोसयाणं पण्हसमणाणं।

मंत्र- ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो सुअदेवाए, भगवईए सव्वसुअमए, बारसंग पवयण जणणीए,

सरसइए, संव्ववाइणि, सुवण्णवणे, ॐ अवतर अवतर देवी, मम् शरीरं, पविस पूव्वं, तस्य पविस, सव्वजणभयहरीए, अरिहंतसिरीए स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को पढ़कर चाक मिट्टी को मंत्रित कर तिलक लगावे। फिर रात्रि के समय सब मनुष्यों के सोने पर हाथ में जल से भरी झारी लेकर एकान्त स्थान में खड़े खड़े लोगों की वार्ता श्रवण करे। जो बात समझ में आये उसी को सत्य समझे। मन में विचारे हुए कार्य का शुभाशुभ फल इसी तरह ज्ञान होता है।

जेल से छूटने का मंत्र

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खिगदणासयाणं आगास गामीणं।

मंत्र- णं हू सव्व सए लोमोण, णंयाज्झावउमोण, णंआरीयआमोण, णंद्धासिमोण, णंताहरिअमोण, हुलु हुलु, कुलु कुलु, चुलु चुलु स्वाहा।

विधि- इस प्रभावशाली महामंत्र को श्रद्धापूर्वक जपने से मत्स्यादिकों की हत्या करने वालों के बन्धन (जाल) में फँसी हुई मछलियाँ तथा जेल की सजा से मुक्त हो जाते हैं।

एक माह तक प्रतिदिन १००० मंत्र जाप्य करें।

बसीकरण मंत्र

ऋद्धि–ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहिल गहणास याणं आसीविसाणं।

मंत्र– ॐ ह्रीं णमो भगवओ, ॐ पासनाहस्स थंभय सव्वाओ ई ई, ॐ जिणा णाए मा इह, अहि हवंतु, ॐ क्षां क्षीं- ह्रीं क्षू क्षौं क्षः स्वाहा।

विधि- इस प्रभावक मंत्र से सफेद फूल को १०८ वार मंत्रित कर उसे राज्यप्रमुख को सुँघाने से वह साधने वाले के वश में होता है और अपराध क्षमा कर देता है।

कार्य सिद्धिमंत्र

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुप्फिय तरु वत्तयराणं दिट्ठि विसाणं।

मंत्र- ॐ अरिहंत सिद्ध आयरिय उवज्झाय सव्वसाहूणं सव्वधम्मतित्थयराणं, ॐ नमो भगवईए सुअदेवयाए शान्तिदेवयाए सव्वपवयणदिवयाणं, दसण्हं दिसापालाणं चउण्हं लोगपालाणं, ॐ ह्रीं अरिहंतदेवाणं नमः।

विधि- श्रद्धापूर्वक इस मंत्र को १०८ बार जपने से सब कार्यों की सिद्धि होती है। जय–जय होती है। चौरादिकों का भय दूर होता है।

मधुर फल प्रदायक मंत्र

ऋद्धि-ॐ ह्रीं अर्हं णमो तरु-पत्तणास याणं उग्गतवाणं।

मंत्र- ॐ हत्थुमले विणुमुहुमले ॐ मलिय ॐ सतुहुमाणु सीसधुणता जेगया, आयासं पायालं गंत ॐ अलिंगजरेस सर्वजरे स्वाहा।

चक्रेश्वरी देवी सर्व रोगं भिंद भिंद ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा

विधि– श्रद्धापूर्वक इस मंत्र का प्रतिदिन १०८ बार जाप करने से स्त्री सम्बन्धी समस्त कठिन रोगों का नाश होता है और सर्व सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

भय नाश मंत्र

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंदिमोअगाणं सव्वसिद्धाय णाणं।

मंत्र- ॐ नमो भगवति। हिडिम्ब वासिनि! अल्लल्मां सप्पियेन हयल मंडल पइट्ठिए तुह रणमत्ते पहरणदुट्ठे आयासमंडि ! पायालमंडि सिद्धमडि जोइणिमंडि सव्वमुइमंडि कज्जलं पडउ स्वाहा।

विधि- अँधियारी अष्टमी के दिन ईशान दिशा की ओर मुख करके इस मंत्र का जाप करे। काले धतूरे के तेल का दीपक जला कर नारियल की खोपड़ी में काजल पाड़े। उस काजल से कपाल पर त्रिशूल का निशान बनाने तथा नेत्रों में लगाने से सब प्रकार के भय नष्ट होते हैं और चित्त की उद्विग्नता शान्त होती।

रोग निवारन मंत्र

ऋद्धि- ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खय सुहदाय गस्स वड्ढमाण बुद्धि रिसिस्स।

मंत्र- ॐ नट्टट्ठ मयट्ठाणे, पणट्ठ कम्मट्ठ नट्ठ संसारे।
परमट्ठ निट्ठि अट्ठे अट्ठ गुणा धीसरं वंदे।।

विधि- राई, नमक, नीम के पत्ते, कड़वी तूमड़ी का तेल तथा गूगल इन पांचों चीजों को एकत्रित कर उक्त मंत्र से मंत्रित करे, पश्चात् पिछले पहर प्रतिदिन ३०० बार हवन करने से रोग, दुश्मन तथा कष्टों का नाश होता है।

विष दूर करने का मंत्र

जलभूमि वन्हि मारूत गगणै: सं प्लावयोपतै:।
भवति च विषापहार स्तर्जन्याश्चालनाद चिरात्।।१।।

जल (प) भूमि (क्षि) वन्हि (ॐ) मारूत (स्वा) गगणै (हा) च पक्षि ॐ स्वाहा सं प्लावय इस मंत्र को बायें हाथ की तर्जनी से चलाने से शीघ्र ही विष दूर हो जाता है।

मंत्र– पक्षि ॐ क्षि स्वाहा संप्लाव्य-संप्लाव्य।

आध्यंते भू बीजं मध्ये जल वन्हि मारूतं योजयं।
स्तंभय युगलं स्तंभो वाम कुरों गुष्ट चालनंतः।।२।।

मंत्रः– क्षिप ॐ स्वा स्तंभय स्तंभय क्षि

इस मंत्र का बायें हाथ के अंगूठे से जपने से विष का स्तंभन होता है।

व्योम जल वन्हि पवन क्षिति युत मंत्राद् भवत्य यावेशः।
स क्षि प हा पक्षि पहः पवनेन कनिष्ट का चालनात्।।३।।

मंत्रः– हा प ॐ स्वा क्षि सं क्षि प हा हा पक्षि प हः।

हा प ॐ स्वा क्षि सं क्षि प हा प क्षि पहः इस मंत्र को बायें हाथ की कनिष्टा उंगली से जपकर चलाने से पुरुष के शरीर में नाग आवेश करता है।

मुरदग्रि वारिधात्री व्योम पदं संक्रम व्रज द्वितयं।
चालितयोऽनाभिकथा नितरां विष संक्रमोभवति।।४।।

मंत्रः– स्वा ॐ पक्षि हां संक्रम-संक्रम व्रज-व्रज ज्वल-ज्वल जय-जय विजय-विजय अनंत ॐ ठः ठः।

इस मंत्र को अनामिका से जपकर चलाने से विष का संक्रमण होता है।

शोषा दीना मयं यंत्रो नियुत त्रय जापतः सिद्धेदे।
तेन शेषादीनाम युक्तेन मंत्र वित्।।५।।

शेषादि नाम वाला मंत्र तीन नियुत (तीस लाख) जाप से सिद्ध होता है। उसे मंत्री का नाम सहित सिद्ध करें।

पाद जंघा मेठर नाभि हंत कंठ मुख मस्तकं।
क्रमेणयोजितं तेषां स्पृष्टवा तत् तद् विषं हरेत्।।६।।

इस मंत्र को युक्त करके पैर, जांघ, इंद्रिय, नाभि, हृदय मुंह और मस्तक

को छूने से उस उस स्थान का विष नष्ट हो जाता है।

अजितेन युतं कूट: पूज्यस्तारोऽग्रि वल्लभा।
ताक्ष्र्य पंचाक्षराणयेष नेत्रा तांगो मनु: स्मृत:।।७।।

मंत्र:-क्षिप ॐ स्वाहा ज्वल-ज्वल महा मति ठ: ठ: हृत गरुड़ चूड़ान ठ: ठ:। शिखा रक्षा।

(अजित (इ) से युक्त कूट (क्ष) पूज्य (प) तार (ॐ) अग्नि (स्वा) वल्लभा (हा) अर्थात् क्षिप ॐ स्वाहा यह पांच गरुड़ के अक्षर है। और इनके अंग नेत्र आदि है। यह मन: द्वारा कहा गया है।

मंत्र:- क्षिप ॐ स्वाहा ज्वल-ज्वल महा मति ठ: ठ: हृत गरुड़ जनन ठ: ठ: हृत गरुड़ चूडानन ठ: ठ:।

इस मंत्र को पढ़कर शिखा को छूवे।

गरुड प्रभंजन- प्रभंजन वित्राशय-वित्राशय विमूर्द्धयर ठ: ठ:। कवचं।

यह कहकर कवच की क्रिया करें।

मंत्र:- ॐ अप्रतिहत वाला प्रतिहत शाखर हुं फट् ठ: ठ:। अस्त्रं।

यह पढ़कर अस्त्र दिखाने की क्रिया करें।

उग्र रूप धारक सर्प भयंकर भीषय- भीषय सर्पान दह-दह भस्मी कुरु भस्मी कुरु कुरु ठ: ठ:। नेत्रं।

इस मंत्र को पढंकर नेत्र को छूवे।

पुरश्चरेण मेतस्य मनोर्लक्ष जपोमत: स्थावरं।
जंगमं चैव कृत्रिम च विषं हरेत।।८।।

यह पुश्चरणमंत्र है। इसको मन लगाकर एक लाख जप करने से स्थावर, जंगम और बनावटी सब प्रकार के विष नष्ट हो जाते हैं।

नेत्रय मंत्रस्य धूपाद्यं वितार स्यास्य संजपात्।
आवष्टिश्च भवेदृष्टं स्व वृतं च निवेदयेत्।।९।।

नेत्र मंत्र को पढ़कर धूप देने से और इस वितार मंत्र का जप करने से नाग आवेशित होकर अपना सब हाल कह देता है।

मंत्रः- ॐ पक्षिराज राजपक्षि ॐ ठः ठः ठीं ठीं यरलव ॐ पक्षि ठः ठः।

एतेन सहस्त्र त्रय जापात् सिद्धेन गरुड मंत्रेण।
यष्टिता भुवि प्रहरणं सर्वे विषापहरणं भवति।।१०।।

इस गरुड मंत्र को तीन हजार जप से सिद्ध करके पृथ्वी में यष्टि (लाठी) मारने से सब विष नष्ट हो जाता है।

तार स्तारेण संयुक्तः प्रज्योति बिंदु संयुतौ।
आर्य रेफा सुधात्सूते मंडलं कलयान्वितं।।११।।

तार (ॐ) को ॐ से युक्त करके उसमें ज्योति (ई) और बिन्दु (अनुस्वार) लगाकर फिर आर्य (ई) में लगा हुआ रेफ (रकार) और कलाओं (स्वरों) से युक्त मंडल अमृत उत्पन्न करता है।

मंत्रः- हर हर ह्रदयाय ठः ठः कुर्द्धिते ठः ठः नील कंठाय ठः ठः काल कूट विष भक्षणाय हुं फट् अंगानि।

मंत्रस्या नील कंठारख्यो लक्ष त्रय जपाद्वयं सांगः।
सं सिद्धि मयाति विष वेग निषुदनंः।।१२।।

उपरोक्त नील कंठ मंत्र का तीन लाख जप करके सिद्ध करे तो विष के वेग को नष्ट करने वाली सिद्धि अंगो सहित प्राप्त होती है।

मंत्रः- ॐ नमो भगवते नील कंठाय ठः ठः।

लक्ष्य प्रजाप्य सिद्धेन प्रयुक्ते र्मनुना मुना।
चराचर विषं विश्वे प्रणश्येदौषधादिभि:।।१३।।

उपरोक्त मंत्र का एक लाख जाप करके सिद्ध करे तो वह मनुष्य प्रयोग करके यह औषध आदि सब प्रकार के चर और अचर विष को नष्ट कर सकता है।

मंत्र:- ॐ नमो भगवती नीलकंठी जमल कंठी सर्मल कंठी क्षिप ॐ स्वाहा ठ: ठ:।

लक्ष जपात् सिद्धो जापाद्यैरेष भवति निर्विष मखिलं।
प्रशमयति नेत्र रोगं विष सर्पकं दंत शूल मपि।।१४।।

उपरोक्त मंत्र को एक लाख जप करके सिद्ध करके प्रयोग करने पर सब प्रकार के विष, सर्प, नेत्र, रोग और दांतों के रोग दूर होते हैं।

मंत्र:- ॐ नमो भगवते नील कंठी निर्मलाक्षी रूपिणि शीघ्रं हर हर पर पर परि परि हुं फट् ठ: ठ:।

द्विगुणीतषड्लक्ष जपाद्रौद्रौ मंत्रोयं भागते: सिद्धिं।
अभिमंत्रणा द्विषार्ति प्रशमयितुम् लक्षणात्सकलां।।१५।।

इस रौद्र नीलकंठ मंत्र की सिद्धि बारह लाख जप से होती है। इस मंत्र से अभिमंत्रित करने से क्षण मात्र में सब प्रकार के विष का कष्ट निश्चय पूर्वक दूर हो जाता है।

तूर्य स्तृतीय वर्गस्य ह्यूद्वग: शून्य शेखर:।
हंसतो मंत्रिभि: प्रोक्त समस्त विष नाशन:।।१६।।

तीसरा वर्ग (च वर्ग) का चौथा अक्षर (झ) में उद्वर्ग व और मस्तक (शिखर र) शून्य बिन्दी अनुस्वार लगाकर अंत में हंस पद अर्थात् झ्वीं हंस: यह मंत्र सब प्रकार के विष को नष्ट करता है।

शून्यं वकार युक्तं स विसर्गं पुंडरीक सं काशं।
वाम करै विन्यस्तं तक्षक दष्टमपि निर्विषं कुरुते।।१७।।

शून्य हकार में वकार और विसर्ग लगाकर अर्थात् ह्वः इस एकाक्षरी मंत्र को बायें हाथ में लगाने से तक्षक और पुंडरीक सर्प के डसे विष की शंका (भय) को भी निर्विष करके दूर करता है।

शादेर्वर्ग्गास्यात्ये पृष्टे दष्टस्य यष्टि संयुक्तं।
विन्य स्यांगुष्टेन तदा क्रम्य जपेत् तद विषाय।।१८।।

यदि सादि वर्ग सवर्ग के अंतिम अक्षर (ह) को पृष्ट अर्थात् आगे यष्टि (अनुस्वार) सहित करके हं बीज को अंगूठे से जपे तो विष के आक्रमण को दूर करता है।

स्वयंभुव स्वरैयुर्कतं न्यस्य सर्वांग संधिषु।
चन्द्र स्थितं तदनु हंसः पदं मंत्रि विषं हरित्।।१९।।

स्वयंभू (ल) में यदि मंत्री वं स्वर सहित और हंस से युक्त करके अंग के सब जोडों में लगावे तो सब प्रकार के विष को दूर करता है।

मंत्र– ॐ लं वं हसः।

ॐ वं पूर्व कटूः सविशर्ग्गोवदन मध्य विन्यस्तः।
त्रिविधं विषमपि हन्त्यु चारितोप्यर्थ दुष्ट दुःखानिः।।२०।।

मंत्रः- ॐ वं क्षः।

उपरोक्त मंत्र के पश्चात् विसर्ग सहित कूटाक्षर ॐ वं हंस क्षः इस मंत्र को मुख में कमल में लगाने से बोलते ही तीनों प्रकार के विष (स्थावर, जंगम और कृत्रिम) और दुष्ट दुःखों को नष्ट करता है।

मंत्रः- ॐ वं क्षः।

ॐ एहि एहि माये भेरूंडे विज्जाभरिय करडे तंतु मंतु औघोषई हुकारेण, विषणासई स्थावर जंगम किट्टिम जंगम किट्टम जं ॐ ह्रीं देवदत्त विषं हर हुं फट्।

सं सिद्धो यस्य भेरूंडा मंत्रोयं श्रवणां तरे।
जप्तोर्दष्ट सन्यसतं निर्विषी कुरुत: नरं।।२१।।

जिसको उपरोक्त भेरूंडा मंत्र से सिद्ध होता है। वह इस मंत्र को डँसे हुए के कान में सुनाकर पुरुष को विष रहित कर देता है।

धात्री समरिणां वर बीजाक्षर जापित सलिलि विन्यास:।
अंगुलि चलनेन नरं निश्चल मपि चलयति स्वैडं।।२२।।

मंत्र:- क्षि स्वाहा।

धात्री (पृथ्वी) क्षि में समरिणा (वायु, अक्षर स्वा) और अंबर (आकाश अक्षर) हा के बीजाक्षरों अर्थात् क्षि स्वाहा इस मंत्र को जल पर पढ़कर उसमें उंगली चलाकर अंग न्यास करने से सर्व विष से निश्चेष्ट पुरुष भी अपनी इच्छानुसार गमन करता है।

भूजल मरुन्नभोक्षर मंत्रेणु घटेंबु मंत्रितं कृत्वा।
पादादि विहित धारा निपादनाद भवति विष नाश:।।२३।।

मंत्र:- क्षि प स्वाहा।

भू पृथ्वी अक्षर क्षि और जल अक्षर प और नभ (आकाश) अक्षर स्वाहा इस मंत्र के घड़े के जल को मंत्रित करके उसकी धारा को सिर से लगाकर पैर तक डालने से विष का नाश होता है।

महीजल समीरणां वर मंत्रित सलिलेन सिक्त वदनोय:।
प्रगटयति श्वास मसौ जीवति खलु ने तरो दष्ट।।२४।।

मही (पृथ्वी) क्षर क्षि, जल (प) समीरणा (वायु) स्वा, अंबर (आकाश)

ह्रा, अर्थात् क्षिप स्वाहा मंत्र से मंत्रित जल से जिसका मुंह सींचा या धोया जाता है वह सांप के विष से मरा हुआ मूर्छित पुरुष भी तुरंत श्वांस लेने लगता है और जी जाता है।

अभिमंत्रितं यद उदकं मणितैः फणिनां पुरा फण मणिभिः।
दष्ट स्यांगे से स्तैन कृतः सकल गरल हरः।।२५।।

इस प्रकार उत्तम सर्पो के प्राचीन मंत्रो से अभिमंत्रित जल से सर्पों के डसे हुए पुरुष का मुख आदि धोने से सींचने से सब प्रकार के विष नष्ट हो जाते हैं।

फणि राजांष्टक मारूत गगनाक्षर जपित तोय धाराभिः।
सिक्त हृदयः स दष्टश्चा तिष्ठति तत्क्षण देव।।२६।।

उत्तम सर्पों के अंक (अर्थात् आठ प्रकार के सर्प कुल) ९ के बीजों कं खं गं घं चों झीं में वायु अक्षर (स्वा) (मारुत अक्षर) और गगन (अक्षर) हा बीज लगाकर उस मंत्र से अभिमंत्रित जल की धारा से हृदय को धोने से डसा हुआ पुरुष उसी क्षण उठ जाता है।

मंत्रः- कं खं गं घं चों छीं जीं झ्वीं स्वाहा।

चचतुर्यं कूट सांतानि प्रणवमुखानि बिन्दु युक्तानि।
दीर्घ ल पर स्थितानि च मारूत गगना व सानानि।।२७।।

इन बीजों से अभिमंत्रित जल से सर्प के काटे हुए शरीर को भिगोने से सब प्रकार के परोक्ष होते हुए भी सब विष को नष्ट कर देता है।

सोद्धाधोर मकारं कूटं बिन्दुवान्वितै स्वरै युक्तं।
वामं ज्योति र्जिष्णाक योग रजोभि र्महामंत्र।।२८।।

ऊपर और नीचे रेफ युक्त मकार बिन्दु और स्वरों सहित कूटाक्षर (क्ष) और वाम अक्षर (ॐ) ज्योति (ई) जिष्णा (ऊ) के योग का रजो महामंत्र बनता है।

वाम करे गुष्टाद्यं गुलि मध्य पर्व सु क्रमांदेवं।
न्यस्यंत लेपिन्यस्यात् संस्यांत कला युतं व्योमां।।२९।।

बाँये हाथ की अंगुलियों के पोखों और जोड़ो और हथेली में उपरोक्त मंत्र को अंत की कल (अः) तथा आकाश (ह) सहित लगावे।

मंत्रेण तेन जप्तं वारि घृतं तेन वारि हस्तेन।
दष्टस्य मुखे विकरेत्सहसैव सयातिच निर्विषतां।।३०।।

इस मंत्र को हाथ में लेकर जपे और फिर हाथ के पानी को डसे हुए के मुख में पानी डाले तो वह तुरन्त ही विष रहित हो जाता है।

मंत्रः- क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः।

सं जप्तैर्वारि भि र्मुखे से कात दष्टस्य।
मानुषस्य स्यान्नि विषताक्षणाहेव।।३१।।

यदि क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षं क्षः मंत्र से जल को अभिमंत्रित करके डँसे हुए के मुख में पाणी डाले तो वह उसी क्षण विष रहित हो जाता है।

कूटस्थ स्वर युक्ता झ भ म य व स ह इमे पृथम सप्तवर्णा।
स्तथा प्रयुक्ताः क्ष्वेडं निखिलं निरस्यंति।।३२।।

कूट अक्षर (क्षकार) में स्थित स्वर सहित कमलबीज झ भ म य व स ह यह सात वर्ण पृथक-पृथक प्रयोग किये जाने से संपूर्ण विष को नष्ट कर देता है।

मंत्रः- ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय क्षिप स्वाहा झ्वीं क्ष्वीं हंसः।

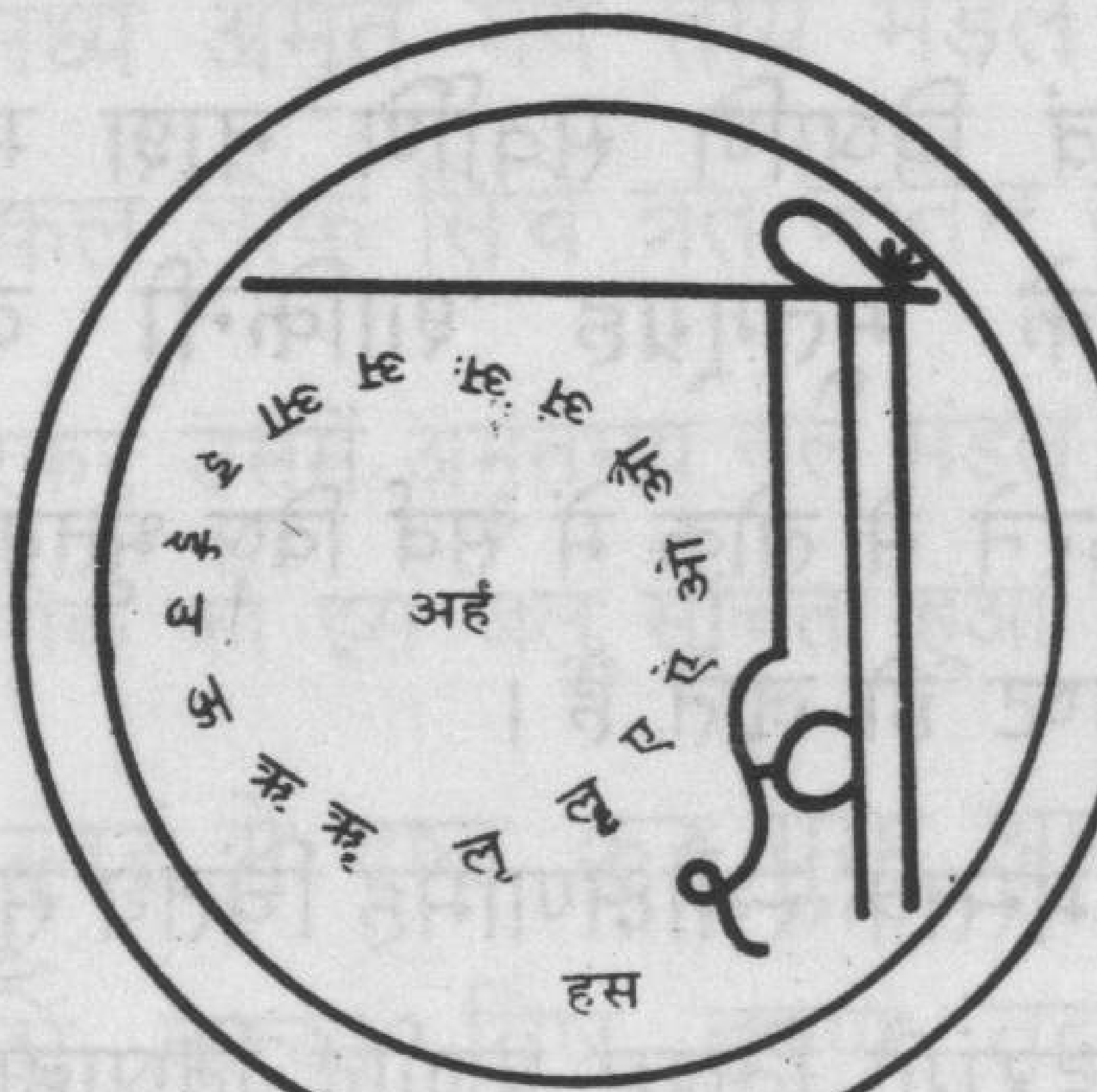
दष्टस्य वदने सिंचेज्जल मेतेणा मंत्रितं ततो।
विषस्य सर्वस्य विष मोक्षः क्षणादभवेत्।।३३।।

इस मंत्र को पढ़कर ड़से हुए के मुख में जल डालने से क्षण मात्र में ही सम्पूर्ण विष नष्ट हो जाता है।

मंत्रः- ॐ सुवर्ण रेखे कुर्कट विग्रह रूप धारिणी स्वाहा।

विद्या सुवर्ण रेखेये मेजज्जप्तेन वारिणा दष्ट स्यांगे।
समा सेकः कृतः स्याद्विष वेग जित।।३४।।

इस सुवर्ण रेखा मंत्र से अभिमंत्रित जल से ड़से हुए पुरुष के अंगों को भिगाने से विष का वेग नष्ट हो जाता है।



वाम हस्ते स्वरैश्चंद्र मंडलेन च वेष्टितं।
ध्यायेत इ्वींकारममृतं श्रवतं ममृत प्रभा।।३५।।

तेन हस्तेन सं स्पृष्टं भस्म वार्योषधादिकं।

वितीर्णं द्रागपा कुर्यात विषरोग ग्रहादिकान्।।३६।।

बायें हाथ में स्वर और चन्द्र मंडल से वेष्टित अमृत के समान ज्योति वाले झ्वीं बीज को अमृत बरसाते हुए ध्यान करे। उस हाथ से छूकर दी हुई भस्मी जल या औषधि आदि विष रोग और ग्रह आदि को तुरन्त ही नष्ट कर देते हैं।

न्यस्य वकारं शीर्षे वर्षत स्वेत ममृत धाराभिः।

स्नपयंतं सकल तनुं भवति सः संपूर्ण शशधर हृदयो।।३७।।

सिर से श्वेत अमृत धाराओं को बरसाते हुए वकार का ध्यान करें। फिर उस अमृत धारा से स्नान किया जाता हुआ ध्यान करने से पूर्ण चंद्रमा के हृदय वाला हो जाता है।

चितं यंतु तर्ण मेवं विषाणि सर्वाणि नाश मुपयंति।

क्षण मात्रादपिलोके भूतग्ग्रह शाकिनी दोषाः।।३८।।

इस प्रकार ध्यान करने से लोक में सर्व विष भूतग्रह और शाकिनी के दोष क्षण मात्र में ही नष्ट हो जाते हैं।

वहिम करौ गिरि राज मस्तक स्थौक्षणमिह चिंतय सुत्सुधां प्रवाहौ।

रजनीकार समान पांडूरांगौ विषम फणींद्रं विषाहार दक्षौ।।३९।।

व और चंद्रबीज ठं को हिमालय पहाड़ के मस्तक पर उत्तम अमृत को बरसाते हुए चंद्रमा के समान अत्यंत श्वेत ध्यान करने से विषम सर्प का विष भी नष्ट हो जाता है।

गरुड तोषित मंत्र

को पं वं झं हंसः सं वं हं झं हंसः झं हंसः इति च वं झं हंसः झं हं हंसः सो विनता सुत तोषितो मंत्रः को पं वं झं हंसः वं हं झं हंसः झं हं हंसः।

शून्यं शून्य शिर स्थं शून्य द्वय संयुतं शिरोहीनं।
शून्य पदे विन्यस्तं सितवर्ण सर्व गरल हरं।।४०।।

शून्यं शून्य अर्थात् बिन्दु सहित शून्य ७ हकार फिर दो बिन्दु सहित सिर रहित हकार लगाकर श्वेत वर्ण के शून्य पद में रखने से संपूर्ण विष नष्ट हो जाता है।

एकादशाक्षरोपेतं मंत्रं मंत्री प्रसाधयेत्।
पूर्व विद्वान् प्रयत्रनेन कुर्यात् कर्म ततोऽग्रिमं।।४१।।

यह ग्यारह अक्षरी मंत्र है। मंत्री इसकी पहले ही साधना करके सिद्ध करे। मंत्री प्रयत्न करके इसको आगे काम में लावे।

मंत्रः- वं हं झं झ्वीं हंसः पक्षिः जः जः जः।

कुंभेषु रंगमध्ये अमृत मयं तोय मंडल समानं।
सं चिंत्य सकल लोकं सिंचे त्रत जप्तेन तोयेना।।४२।।

घड़ों में रंग भरकर उसमें अमृतमय जल मंडल का ध्यान करके जल का जप करने से सब लोक को इस जल सींचता हुआ चिंतन करे।

सं तुर्य्य सप्त स्वरं गे दष्ट कर युग्म आत्मनं स्तेन।
इति रंग विधिं कृत्वा विष हरणं तदनु कुर्वीत।।४३।।

चौथे और सांतवे रंग के घड़ों में सर्प के डसे हुए के दोनों हाथों को रखकर रंग विधि करने से शीघ्र ही विष नष्ट हो जाता है।

आत्मानं तार्क्ष्य रपैण तमादायाहि भक्षितं।
क्षीरां बुनीर पूर्णेदुं गेहे क्षिप्तं विचिंतयेत्।।४४।।

अपने आप को सर्प भक्षण किया हुआ गरुड रूप धारी ध्यान करे फिर घर को दूध, अमृत तथा जल से भरे हुए चंद्रमा से पूर्ण ध्यान करें।

मज्जनोन्मज्जने ध्यायेद् यावद्भवति निर्विषः।
नील नीलाग्रिमं क्ष्वेडं चिंतयेत्सततं च तत्।।४५।।

उस चन्द्रमा में तब तक ध्यान करने तथा फिर निकल आने का ध्यान करता रहे जब तक पूरा विष उतर ना जावे और उस विष को निरन्तर अत्यंत नीला ध्यान करें।

दष्टां क्षतस्य तस्याभि चिंतये द्विष निर्गमं।
यावदन्निंशेषं सर्पोग्र विष ठेदो भवे दिहि।।४६।।

सर्प की डाढ़ से जख्मी उस डसे हुए की तब तब विष निकालने के लिए स्नान करता हुआ ध्यान करे जब तक विष पूर्ण रूप से नष्ट न हो जाय।

वांछेदवयवं यस्य निर्विषीकर्तु मंजसा।
तद्वाराशि मयंध्यायेन्मग्नंवा तत्सुधा द्ह्दे।।४७।।

जिस पुरुष को शीघ्र ही विष रहित करना चाहा जाय उसको ही उस अमृत रूप तालाब में डूबा हुआ ध्यान करें।

शशधरकर निकर समाधाराः सर्वांग रोम कूपेषु।
घ्रंति विषं प्रविशंत्यो ध्यानाद गगनाकलं विन्येः।।४८।।

तब चन्द्रमा की किरणों के समान वह अमृत की धारायें उसके सब रोम रोम के स्थानों में प्रवेश करती हुई विष को नष्ट कर देती है।

वाम भागे चिंत्य नीरं कृत्वा वा वायु निरोधनं।
मार्तडं क्षेत्र मीक्षिण कुर्यात् क्ष्वेड विनाशनं।।४९।।

अथवा श्वास को रोककर बायें भाग में जल का ध्यान करके सूर्य के स्थान को देखे तो विष नष्ट हो जाता है।

स्वर्णांड खंडोच्छित याक्ष पिंत्या भिन्नति भेधः परकीय कंदः।
स्वर्णान वितो नृ भयादि दूरः कदां दि ह्यानिर्विष मातनोति।।५०।।

सोने के टुकड़े से उठा हुआ तेज दूसरे के विष की कन्द (मूल) को छेद डालता है उसी सोने से युक्त होकर मनुष्य सर्वभय से छूट जाता है और उसी से विष जड़ से नष्ट हो जाता है।

अमृतं श्रवता वारुणा बीजैना वष्टितस्य दष्टस्य।
विन्यस्येत्पट मृज्वा उच्छन्नाया स्तनोरूपति।।५१।।

उस सर्प के काटे हुए पुरुष को अमृत बरसाते हुए वारुणी बीज (व) से घिरा हुआ ध्यान करे फिर उसके स्तनों के ऊपर ढ़के हुए वस्त्र को हल्के से उठा देवें।

न्यस्येच पटस्योपर्य्यऽमृत श्रवदिंदुबिंब मध्य गतं।
जातं सभ्य मुखेषु च निर्गलदऽमृतं विद्यो र्बिंबं।।५२।।

फिर कपड़े के ऊपर अमृत चुआते हुए चंद्रमा के मंडल का ध्यान करे उस चंद्रमा को निकलता हुआ अमृत उस पुरुष के मुँह में भी टपकता रहे।

द्विर्म्मुष्टेत्यऽन्यतमं सभ्यानां पाठयन् पठन मंत्री।
आकर्द्दें दुस्तिष्टेऽदृष्टो विष वेग निमुर्त्क:।।५३।।

फिर मंत्री द्विमुष्टि आदि आगे लिखे हुए मंत्र को पढ़ता हुआ ड़से हुए पुरुष के विष के वेग को नष्ट कर देता है।

मंत्र:- ॐ नमोभगवते पक्षि रुद्राय विष सुरप्तमुत्था पय दष्टं कंपय-कंपय जल्पय-जल्पय काल दष्ट मुत्थापय-मुत्थापय चल-चल मोचय-मोचय पातय-पातय वर रूद्र-रूद्र गच्छ-गच्छ वंद्य-वंद्य चट-चट उडु-उडु तोलय-तोलय मुष्टिना संहर विषं ठ: ठ:।

सिद्धौनियुत जपेन धूतादि क्रीडयैष हरति विषं।
आचमन या चनाद्वा पायस भुक्तयाथवा मंत्र:।।५४।।

यह मंत्र एक लाख जप से सिद्ध होता है। इसकी सिद्धि के समय में खीर का भोजन करना चाहिए।

विष दूर करने का मंत्र

मंत्रः- ॐ रूद्र तिष्ट-तिष्ट चिटि-चिटि ठः ठः।

अनेन मंत्रितै वारिभिः कृत्वा सत्सेचन क्रियां।
औषधैर्वा प्रलेयादि विसर्धक विसर्पनुत्।।१।।

इस मंत्र से अभिमंत्रित जल ड़ालने वा सींचने की क्रिया से या औषधि से सर्प का विष नष्ट हो जाता है।

आने वाले के अनुसार फल

सम विषमाक्षर भाषिणि दूते शशि दिनकरो च वहमानौ।
दष्टस्य जीवितव्यं तदविपरीत मृति दद्यान।।२।।

सम विषमाक्षर भाषिणि दूतो समाक्षर भाषिणि।
दूते विषमाक्षर भाषिणि दूतो शशि।।३।।

दिन करौ च वहमानौ चंद्र दिवाकरौ प्रवर्त।
मानौ दष्टस्य जीवितव्यं समाक्षर भाषिणि।।४।।

दूतौ चंद्र वहमाने दष्ट पुरुषस्य संग्रहमस्तीति।
विधात विषमाक्षर भाषिणि दूते।।५।।

सूर्यो वहमान पुरुषस्य संग्रहमस्तीति।
विधात तद्विपरीते मृतिं विधात् समाक्षर।।६।।

भाषिणि दूते सूर्ये वहमानौ विषमाक्षर।
भाषिणि दूते चंद्र वहमाने इति स्वर वर्ण।।७।।

वैपीरीत्य दष्ट पुरुष संग्रह।
न विधते इति विंद्यात जानीयात्।।८।।

यदि सर्प के काटने की खबर लाने वाला दूत चंद्र स्वर में सम अक्षर कहे तो समझना चाहिए कि सर्प से दष्ट पुरुष बच जाएगा, अथवा दूत सूर्य स्वर में यदि विषम अक्षर कहे तो उसकी मृत्यु समझनी चाहिए।

दूत मुखोत्थित वर्णन द्विगुणी कृत्वा त्रिभिर्हरेद्धा।
गं सून्योनो द्वरितेन मृति जीवित माद्वोरोतप्राज्ञः।।९।।

दूत मुखोत्थित वर्णन दूतस्यो द्वात प्रसन्नाक्षरान्।
द्विगुणी कृत्य तदद्वगुणित राशि त्रिभिर्भागं हरेत।।१०।।

तत्रा भागा वशेष जीवितमादिशेत् सून्येन दष्टस्य।
संग्रहाधान मादिशेत एक द्विरूद्धरितेन।।११।।

दष्टस्य संग्रहमस्तीस्या दिशेत सून्य समच्छेदनैक।
द्विरवशिष्टेन च कः प्राज्ञः बुद्धिमान्।।१२।।

बुद्धिमान पुरुष दूत के मुख से निकले हुए अक्षरों को गिनकर उनको दुगुना करके तीन का भाग दे। यदि शेष शून्य हो तो मृत्यु अन्यथा जीवित समझना चाहिए।

ह्रां वं क्षं मंत्रः हां वंक्ष मिति मंत्रः मंत्रित।
तोयेन अनेन मंत्रिणाभिमंत्रितोदकेन।।१३।।
त्राटितेना उद्धुषिति यस्य गात्रं चेत यस्य।
दष्ट पुरुषस्य शरीरं कंपते चेत् स च जीविति।।१४।।
गात्रोद्धुषन मात्र पुरुषो जीवति. च।
अथवा क्षि स्पंदन तः अनेन प्रकारेन।।१५।।

अक्षिरुन्मलिनेन सं दष्टो जीवति नान्यथा।

दष्टायस्य दष्टस्य तदुदकासिंचनेन गात्रो।।१६।।

दुषणं तदक्षि स्पंदनं च न विद्यते तस्य।

दष्टस्य जीवंति न विद्यत इति ज्ञातव्या।।१७।।

हं वं क्षं इस मंत्र से अभिमंत्रित जल, दुष्ट पुरुष के ऊपर डालने से यदि वह कांपने लगे अथवा नेत्र हिलाने लगे तो उसको जीवित अन्यथा मृतक समझना चाहिए।

क्षिप ॐ स्वाहा बीजानि विन्यसेत्पदेनाभि हन्मुख शीर्षे।

पीत सित कांचना सित सुरचाप निभानि परिपाद्या।।१८।।

क्षिप ॐ स्वाहा बीजानि क्षिप ॐ स्वाहेति।

पंच बीजानि विशेषेण स्थापयेत् केषु।।१९।।

पाद द्वयो नाभौ हृदि आस्ये मस्तके।

इत्येतेषु पंच सु स्थानेषु कथं भुतानि।।२०।।

पीतं हरिद्रानि भासित श्वेत वर्ण कांचना।

सुवर्ण वर्णयो असिता कृष्ण वर्ण।।२१।।

सुरचाप इंद्र धनुर्वर्ण सदृश निभानि एवं।

पंच वर्ण सदृश पंच बीजानि परिपाद्या।।२२।।

क्षि बीजं पीत वर्ण पद द्वयो प बीजं श्वेत वर्ण नाभौ।।

ॐ मिति बीजं कांचन वर्ण हृदि स्वा।

बीजं कृष्ण वर्ण मास्ये हा बीजं इंद्र।।२३।।

चाप स्वरूप वर्ण मूर्द्धि एवं क्रमेण पंच सु स्थानेषु।

परिपाद्या विन्यसेत इत्यंग नास क्रमः।।२४।।

क्षिप ॐ स्वाहा इन पांच बीजों को क्रम से निम्न प्रकार से अंगों में स्थापन करे। क्षि बीज को पीत वर्ण का दोनों पैरों में, प बीज को श्वेत वर्ण का

नाभि में, ॐ बीज को कांचन वर्ण का हृदय में, स्वा बीज को कृष्ण वर्ण का मुख में, हा बीज को इन्द्र धनुष के रंग का सिर में स्थापित करें।

रक्षा विधानं

पद्म चतुर्द्दलोपेतं भूतांतं नाम संयुतं।
दलेषुशेष भूतानिमायसा परिवेष्टितं।।१।।

पद्म कमलं कथं भूतं चतुर्दलोपितं चतुः पत्र।
युक्तं भूतांतं भूतानि पूश्चेतजू प तेजो वाय्वा।।२।।

काश संज्ञानि तेषामंतेः आकाश स।
हकारः तं हकारं कर्णिका मध्ये कथं भूतं।।३।।
नाम संयुतं दष्ट नाम गर्भी कृतं दलेषु।
वहि स्थित चतुर्द्दलेषु शेष भूतानि इतर।।४।।
क्षि प ॐ स्वहेति चतुर्वी जानि त द्वलेषु।
मायसा परि रक्षितां तत्पयो परि ह्रीं कार।।५।।

क्षि बीजं पीत वर्ण पद द्वयो प बीजं श्वेत वर्ण नाभौ।

वन्हि जल भूमि पवन व्योंभाग्रे दह दह पच द्वयं योज्यं।
स्तोभय युगलं स्तोभं मध्यमिका चालानाद्भवति।।६।।

वन्हि ॐ कार जला पकारः भूमिक्षिकारः।
पवन स्वाकारः व्योम हकारः अग्रे ऐतषां।।७।।
पंच बीजाक्षराणामग्रे दह दह दह दहेति।
पदं द्वयं पच द्वयं योज्यं तदग्रे पच पचेति।।८।।
पद द्वयं योजनीयं स्तोभय युगलं तदग्रे।
स्तोभय स्तोभयेति पद द्वयं स्तोभं।।९।।

अनेन कथित मंत्रोच्चारेणा चाटिनेन दष्टावेश कथं।
मध्यमिका चलनात मध्यमांगुल्या चालनात भवति जायंते।।१०।।

—०—

स्तंभन मंत्रः

मंत्रः- ॐ प क्षि स्वाहा दह दह पच पच स्तोभय स्तोभय।

इस मंत्र को मध्यमा उंगली पर जपने से दष्ट पुरुष कुछ जगने लगता है।

विष स्तंभन मंत्रः

मंत्रः- क्षिप ॐ स्वाहा स्तंभय स्तंभय क्षि

इस मंत्र को बाँये हाथ के अंगूठे पर जपने से विष का स्तंभन होता है।

जल भूमि वह्नि मारुत गगनै संप्लावयं द्वयो पेतैः।
भवति च विषापहारः स्तर्जन्यां चालनाद् चिरातः।।१।।

जला पकारः भूमि क्षिकारः वह्नि ॐ कारः।
मारुतः स्वाकारः गगनौ हाकारः।।२।।
इति पंच बीजाक्षरै कथं भूतै संप्लावय।
द्वयो पेतैः संप्लावयेति पद द्वयान्वितैः।।३।।
भवति रस्या देवः कः विषापहारः विष।
निर्निषीकरणं कस्मात तर्जन्यश्चाल।।४।।
नया स्व वाम कर तर्जन्या चालन।
तः कथं अचिरात् शीघ्रतः।।५।।

विष नाशन विधानं

मंत्रः- प क्षि ॐ स्वाहा संप्लोवय संप्लावय इति विषापहारः।

इस मंत्र को बायें हाथ की तर्जनी द्वारा चलाने से विष शीघ्र ही दूर हो जाता है।

मरुदग्रि वारि धात्री व्योम पदं संक्रम वज्र द्वितीयं।
चालनया नाभिकयानि तरां विष संक्रमो भवति।।१।।

मरुन स्वाकार अग्नि ॐकार: वारिपकार:।
धात्री क्षकार: व्योम पदं हकार: स्व वाम।
करा नामिका गुल्यां चालनेन नितरां।।२।।

अतिशयेन विष संक्रमो भवति।
पर मन्यं प्रति विषं संक्रमो भवति।।३।।

विष संक्रम मंत्रः

मंत्रः- स्वा ॐ प क्षि ह संक्रम संक्रम व्रज व्रज।

इस मंत्र को बाँये हाथ की अनामिका अंगुली द्वारा चलाने से विष संक्रमण हो जाता है।

व्योम जल वन्हि पवन क्षिति युत: मंत्रो दभवति अथावेश।
सं क्षि प ह: प क्षि प ह पठनेन कनिष्टिका चालनत:।।१।।

व्योम हकार: जला पकार: वन्हि ॐकार: पवन:।
स्वाकार: क्षिति युत: क्षिकार युक्त: मंत्रोदभवति।।२।।

एतत्कथित मंत्र जायते अथ पश्चात्।
आ पुरुष शरीर नागावेश सं क्षि प' हे।
ति पदं पक्षि प हां पक्षि पहेति पठं पठनेन।।३।।

एतन्मंत्र पठनेन कस्मात कनिष्टिका चालनत:।
वाम कर कनिष्टिका चालनात।।४।।

नागावेशन मंत्रः

मंत्रः- हा प ॐ स्वा क्षि सं क्षि प हः प क्षि प ह न।

इस मंत्र को बाँये हाथ की कनिष्ठा अंगुली द्वारा जपने से पुरुष के शरीर में नाग आवेश करता है।

कर्ण जापेन भेंरूड़ा निर्विषं कुरुते नरं विद्या।
सुवर्ण रैषापि दष्टतो या भिषे कतः।।१।।
कर्ण जापेन दष्ट पुरुषस्य कर्ण जापेन।
भेंरुड़ा भेंरुड देव्या विद्या निर्विषं कुरुते।
निर्विषी करणं करोति कं नरं।।२।।
दष्ट पुरुषं विद्द्या सुवर्ण रेखापि अपि।
पण सुवर्ण रेषा विद्या दष्टं दष्ट पुरुषं तो।
याभिषेक्तः सुवर्ण रेषानाम विद्याभि।।३।।
मंत्रितोदकेन अभिषेको निर्विष करोति आवेशा।
दष्ट नर निर्विषी करणे दष्टकरणे जाप्य।।४।।

भेंरुड देव्या मंत्र

मंत्रः- ॐ पक्षि ऐहि भेमाय भेंरुड़े विज्जा भरिय करंडे तंतु मंतु आद्यो सह हुंकारे विषु नाशई स्थावर जंगम कृत्रम अंगुज ह्रीं देवदत्तस्य विषं हर हर हूँ फट्।

ॐ सुवर्ण रेषे कुकुट विग्रह रुपिणी स्वाहा।

उपरोक्त लिखित देवी के मंत्र को दष्ट पुरुष के कान में जपने और उसको उपरोक्त सुवर्ण रेखा मंत्र से अभिमंत्रित जल से स्नान कराने से दष्ट पुरुष का विष उतर जाता है।

भू जल मरुन्न मोक्षर मंत्रेण घटाम्बु मंत्रितं कृत्वा।
पादादि विहितः धारा निपात नाद भवति विष नाश।।१।।

भू क्षि जल प परुन स्वा नभोक्षरा हा मंत्रेण क्षिप।
स्वाहेति अक्षर चतुष्टयं मंत्रेण घटाम्बु मंत्रितं कृत्वा।।२।।

कलशोद कमलेन मंत्रेणाभि मंत्रितं कृत्वा।
पदादि विहित धारा निपात नात।।३।।
अपाद मस्तकाधि कृत जल धारा निपात।
नात भवति स्यात विषनाशन।।४।।

निर्विषी करण मंत्रः

मंत्र– ॐ नमो भगवती वृद्ध गरुड़ाय सर्व विष नाशिनि सर्व विषं छिंद छिंद भिंद भिंद गृन्ह गृन्ह एहि एहि भगवती विधे हर हर हूँ फट् स्वाहा।

इस मंत्र से घड़े के जल को मंत्रित करके सिर से पैर तक डालने से विष नष्ट होता है।

विष को दूर करने के लिए उपरोक्त मंत्र को एक सौ आठ बार पढ़कर दुष्ट पुरुष के सामने खूब बाजे बजावें।

तं समाहन्य पादेन या ही त्युक्ते स धावति।
उच्छापयति तं शीघ्र मंत्र सामर्थ्य मीद्धशाम।।१।।
तं समाहन्य पादेन तं दष्ट पुरुषं मंत्रिणा।
स्व पादेना हन्यात् याहीत्युक्तेन।।२।।
गच्छ गच्छे त्युक्ते स धावति सदष्ट पुरुष।
धावनं करोति उच्छापयति तं शीघ्र तं।
दष्ट. पुरुषं चंतित्यु स्थापयति मंत्र सामर्थ्य मीद्धशां।।३।।
भगवत्या मंत्र माहात्म्य मेव विधं क्रोश।
पटं हा त्राटनेन दष्टो स्थापन विधान।।४।।

फिर उस दष्ट पुरुष को पेट से मार कर कहे जा भाग जा इस मंत्र की सामर्थ्य ऐसी है कि वह सुनते ही भागने लगता है।

नियुत जपात् स सिद्ध्यति दशांश होमेन फणि समा।
कृष्टिः प्रणवादि स्वाहांतश्चिरि चिरि शब्दादि को मंत्रः।।५।।

नियुत जपात लक्ष जप्पात सं सिद्ध्यति सम्यक।
सिद्धिं प्रारप्नोति कथं भूतेन दशांश होमेन।।६।।

दश सहस्त्र हवनेन का फणि समाकृष्टिः।
नागाकृष्टि प्रणवादि स्वाहातः।।७।।

ॐ करामादि स्वाहा शब्दं अंतं चिरि चिर विधिर।
शब्दादि को मंत्रः चिरि चिरि रि ठि शब्द माद्यो मंत्रः।।८।।

नाग आकर्षण मंत्र

मंत्रः- ॐ चिरि इन्द्र वारुणी एहि-एहि कह-कह स्वाहा।

यह नाम आकर्षण मंत्र के एक लाख जप और दशांश हवन से सिद्ध होता है।

नाग प्रेषणा मंत्र शीति दश सहश्र दशांश होमेन।
सिद्ध्यति जाप्पेन पुनः शोषित कणवीर पुष्पाणां।।१।।

नाग प्रेषण मंत्रः

नागानं क्षुद्र कर्म करण स्थापन मंत्र अशीति सहश्र।
अशीति सहश्र प्रमाण जाप्पेन कथं भूतेना दशांश होमेन।।२।।

अष्ट सहश्र हवनेन सिद्ध्यति सिद्धि प्राप्नोति।
पुनः जपेन युतः केषं शोषित कणवीर पुष्पाणां।
रक्त कणवीर पुष्पाणां नाग प्रेषाण मंत्रः।।३।।

मंत्रः- ॐ नमो नाग पिशाची रक्ताक्षी भृकुटि मुखी उच्चिष्ट दीप्ति तेज से एहि-एहि भगवती हूँ फट् स्वाहा।

वह नाग छोटे-छोटे कार्यों में लगाने का मंत्र, सहश्र जप और लाल कनेर के फूलों के दशांश होम से सिद्ध होता है। इस अनुष्ठान को घृत, दूध और शक्कर मिलाकर बाल्मीक सर्प की बांबी के पास करे। जब मंत्र होने पर नाग आवे तो उसे इच्छित स्थान पर भेजे।

प्रेषितो हवनेनेति मा कस्यापि गुरो वदेत।
अन्य मंत्रेण मागच्छ मानवं भक्षया मुकं।।४।।
प्रेषितः प्रस्थापितः कः अहं नाग के अनेन मंत्र।
वादिना एवं मा कस्यापि पुरोवेदते कस्यापि।
पुरुष स्थापग्रे मात्र देशे मा भाषय।।५।।
अन्य मंत्रेण मागच्छ एतन्मंत्रं विहायान्य मंत्रेण त्वमा।
गच्छा मानवं भक्षया मुकं अमुक पुरुषं भक्षय।।६।।

और उससे कहे तू इसके अतिरिक्त दूसरे मंत्र से मत जा और अमुक व्यक्ति को भक्षण कर किन्तु इस प्रकार उसको हवन के द्वारा भेजने का वृतांत किसी से नहीं कहे।

फणि दष्टस्यशरीरान्त स्वाहा मंत्र तो विषं हत्वा।
सोम श्रवललांटात मंत्रं पातयेत् फणि दष्टस्य।
शरीरात् सर्प दष्टस्य पुरुषस्य देहात् ॐ स्वाहा मंत्रतः।।७।।

ॐ स्वाहेत्यादि वक्ष माण मंत्रात विषं दष्ट पुरुष।
देह स्थ विषं हृत्वा कथं सोम श्रवण अमृतं श्रवण।।८।।
माण कस्मात ललाटान भल स्थलात दूतं।
प्रेषकं मंत्रेण पातयेत पातयितव्यं।।९।।

दूत पातन मंत्र

मंत्रः- ॐ नमो भगवते वज्र तुंडाय स्वाहा रक्ताक्षी कुनखीद्धूतं पातय पातय मर मर धर धर हूँ फट् घे घे।

कृत्रिम विषस्य

कांचना रेणु मुडिन्यां कंटकार्य्या च कल्किता।
खातो हं ति विषं स्त्रीभिर्वश्यार्थोषधि साधितं।।

कांचना (नागकेशर) रेणु (रेणुका) मुंडिनी और कंटकारि के कल्क को खाते ही कृत्रिम विष नष्ट होता है। यह स्त्रियों को वश्य करने वाले औषधि के रूप में भी प्रयोग किया जाता है।

विष रहित होने का मंत्र

मंत्रः- ॐ नमो भगवते गरुडाय महेन्द्र रुपाय पर्वत शिखाराकार स्वरूपाय संहर संहर मोचय मोचय चालय चालय पातय पातय निर्विष निर्विष विष ममृत महारय सदृश मिमं भक्षयामि मधुर लल लल वव व व क्षि प हः हः ठः ठः।

स्थावर विषं निहन्यादमुनालक्ष प्रजाप्प सिद्धेन।
तत् स्वयमद्यादन्यांश्चि भोजे निर्विकारः स्यात।।

इस मंत्र को एक लाख जाप से सिद्ध करके स्थावर विष को नष्ट करे। इस मंत्र से स्वयं विष खाने और दूसरे को खिलाने से कोई भी विकार नहीं होता है।

मंत्रः- ॐ नमो भगवती वृद्ध गरुडाय सर्व विष विनाशिनि भिंद-भिंद छिंद छिंद गृन्ह-गृन्ह एहि एहि भगवती विधे हर हर हूँ फट् स्वाहा।

मंत्र को एक सौ आठ बार पढ़कर पटहं (ढोल) को सर्प के काटे हुए के पास बजावे।

मंत्रः- ॐ नमो भगवते वज्र तुंडाय स्वाहा।

विष नष्ट करने वाला यह मंत्र है।

विष नष्ट मंत्र

मंत्रः- ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय उग्र चंडी महा चंडी छिंद छिंद भिंद भिंद स्तोभय स्तोभय उच्चाटय उच्चाटय आकर्षय आकर्षय धग धग दिव्य योगिनि ललाटं मुंच मुंच उदरं मुंच मुंच कटिं मुंच मुंच पृष्टिं मुंच मुंच जंघ मुंच मुंच जानु मुंच मुंच पादौ नखं मुंच मुंच भूमिं गच्छ गच्छ महा ज्वरं हूँ फट्।

मंत्र पढ़कर पीली सरसों ऊपर डालने से विष नष्ट होता है।

ज्वर शान्ति मंत्र

मंत्रः- ॐ नमो भगवते रत्नत्रयाय ज्वर हृदय मावर्त्तयिष्यामि भो भो ज्वरं श्रृणु श्रृणु हन हन मर्द्द मर्द्द गर्ज गर्ज छर्द छर्द मुंच मुंच सर्व ज्वर आपत आपत वज्र पाणि राज्ञापयति मम शिरो मुंच मुंच कंठं मुंच मुंच उरो मुंच मुंच हृदयं मुंच मुंच उदरं मुंच मुंच कटिं मुंच मुंच उरूं मुंच मुंच जंघे मुंच मुंच पादौ मुंच मुंच वज्रपाणिराज्ञापयति हूँ फट् ठः ठः।

कृत्वा गुग्गुलना धूपं मंत्रमेतं शुचि र्जपेत्।
त्रिसप्त कृत्वा शाम्यति ज्वराः सर्वेऽपि तत्क्षणात्।।

गूगल की धूप देकर इस मंत्र को पवित्र होकर इक्कीस बार जपे तो सर्व ज्वर उसी क्षण शांत हो जाता है।

शत्रु को ज्वर लाने का मंत्र

मंत्रः- ॐ नमो भगवते रुद्राय श्मशान वासिने खड्वांग डमरूक हस्ताय नृत्य प्रियाय ह ह ह अदहासाय मुरु प्रवेशाय घुनु घुनु कंपय कंपय ज्वरेण आवेशय आवेशय फट् घे घे।

८५ हजार ज़ाप करें।

मंगलवार बुधवार कृष्ण अष्टमी अथवा चतुर्दशी को।

शत्रु को बुखार आवे

ॐ ह्रीं ष्ट्रीं विकृतानन हूँ शत्रुन्नाशय नाशय स्तंभय स्तंभय हूँ फट् ठः ठः।



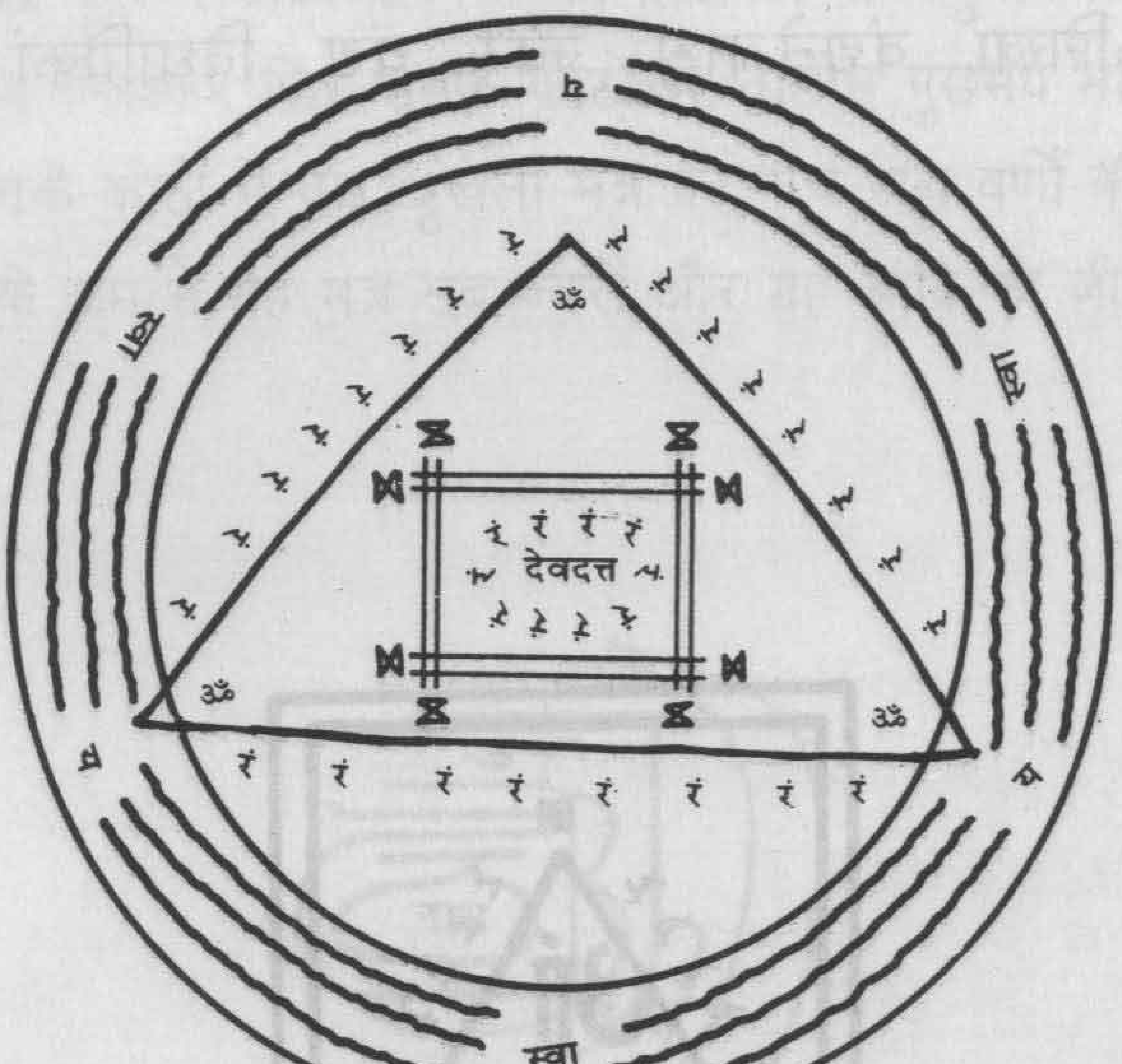
त्रि सहस्त्र जाप्प सिद्धं काली मंत्रं जपेद्रिपु देशात्।
चातुर्थितो ज्वरः स्यात् शूलार्तिर्वा रिपौः सद्यः।।

इस काली मंत्र का यदि तीन हजार जप से सिद्ध करके शत्रु के उद्देश्य से जपे तो शत्रु को तुरन्त ही चोथिया बुखार या दर्द का कष्ट होगा।

संताप हरने का मंत्र

मंत्र– ॐ गृह्ल गृह्ल बाहि सुभगे ठः ठः।

नाम षष्टम स्वर स्यांत लिंखेत् प्रेतस्थ खर्प्परैः।
कांजिरा रूण निंबेन द्वारे संताप कृद भवेत।।



नाम को छठे स्वर ॐ के मध्य में श्मशान के खप्पर पर लाल रंग की कांजी और नीम के रस से लिखकर दरवाजे पर रखने से संताप करने वाला है।

ज्वर नष्ट मंत्र

मंत्रः– ॐ नमो भगवते गर्ज्जे गर्ज्जे भस्म भस्म ज्वल ज्वल महा भैरव सर्व ज्वर ज्वर विनाशनं कुरु कुरु सिद्ध विसिद्धि हूँ फट् ठः ठः।

अभ्यर्च्य सितैः कुसुमैः शिव माकैरष्टमी चतुर्दश्यां।
लक्षं प्रजप्पनं मंत्र स्त्रायान्मंत्री ज्वरान्नश्येत।।

इस मंत्र को एक लाख जप से सिद्ध करना चाहिए अष्टमी चतुर्दशी को आक के सफेद फूलों से पूजन करके स्नान करावे तो ज्वर नष्ट होगा।

मंत्रः- ॐ नमो भगवते रुद्राय वंद्य वंद्य ज्वर हुं फट् ठः ठः।

सहस्त्र बार जाप्पेन सिद्धं रौद्र मिदं रहः स्था।
शिखा वंद्यनेनाश्रु ज्वर वंद्य विधायिकां।।



इस रौद्र मंत्र का एक हजार जप से सिद्ध करके चोटी बांध देने से ज्वर नष्ट भी बंद हो जाता है।

वज्रश्रृंखला मंत्र

मंत्र:- ॐ नमो रत्नत्रयाय वज्र श्रृंखलाय अग्नि प्रकार दर्शनाय तिष्ठ तिष्ठ बंद्य बंद्य महा बंद्य महा बंद्य ठ: ठ:।

सर्प की पूंछ में साध्य के नाम को लिखकर पांच घुमाव देकर सिर में झ्रौं बीज लिखकर फिर उसके कोठों में चालीस पुछमय महिमा को लिखे। उनके कोठों में वज्र श्रृंखला मंत्र को पांच पांच वर्णों की चढ़ावें व उतार के क्रम से यह मंत्र सब ज्वरों और ग्रह आदि को जीतता है।



मंत्रः- ॐ नमो भगवते पार्श्व चंद्राय चंद्राय छिंद छिंद चंद्रहास खडगेन जिन वचनमनुस्मरामि।

दर्द को बढ़ाने के लिए

मंत्रः- ॐ नमः पार्श्वनाथाय घर घर विध्वंशय विध्वंशय छिंद छिंद तीक्ष्ण हस्त खड्गेन् रेन्।

मंत्रः- ॐ नमो भगवते पार्श्व रुद्राय ज्वल ज्वल छिंद छिंद सुदर्शन ज्वाला माला सहस्ताया।

मंत्रः- ॐ नमो भगवते जिन रुद्रया जिन वसुदेवाय शंख चक्र मुद्गर हस्ताय वन माला घर देहाय सुदर्शन चक्रेण छिंद छिंद नमः स्वाहा।

मंत्रः- ॐ नमो भगवते जिनेन्द्राय छिंद छिंद चंद्रहास खड्गेन स्वाहा।

मंत्रः- ॐ नमो जिनरुद्राय महाकालाय कडु कडु छिंद छिंद चंद्रहास खड्गेन स्वाहा।

मंत्रः- ॐ नमो जिन रुद्राय हन हन छिंद छिंद चंद्रहास खड्गेन स्वाहा।

मंत्रः- ॐ नमो भगवते रुद्राय छिंद छिंद चंद्रहास खड्गेन घे घे समन्विताय हूँ फट् ठः ठः ठः ठः।

२१ बार कपूर चंदन को पीस कर लेप करें शान्ति मिले।

मंत्रः- ॐ नमो भगवते रुद्राय छिंद छिंद चंद्रहास खड्गेन घे घे समन्विताय हूँ फट् ठः ठः।

१०८ बार जाप्य करने से सुख शान्ति होती है।

विघ्न बाधा दूर करने का मंत्र

मंत्रः- ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय कमठ दर्प्प विध्वंसनाय धरणेंद्र फणामणि ज्वाला प्रभावनाय अस्य गर्दभस्य शिरः छिंद छिंद गतिं छिंद छिंद मतिं छिंद छिंद हस्तौ छिंद छिंद दिशः छिंद छिंद विदिशः छिंद छिंद संकीर्त्तनाय स्वाहा।

खड़िया से लिखकर जाप्य करने से विघ्न बाधा दूर होती है

मंत्रः- ॐ नमो भगवते श्री घोणस हरे हरे चरे चरे तरे तरे वः वः बल बल लां लां रां रां रीं रीं रुं रुं रौं रौं रः रः रस रस लस लस क्ष्मां क्ष्मीं ह्मां ह्मीं ह्मूं ह्मौं ह्मः नमः घोणसे घ घ घ घ घ स स स स स ह ह ह ह ह व व व व व ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ द द द द द ठः ठः ठः ठः ठः ग ग ग ग ग वर विहंग भुजे क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मः ह्मां ह्मीं ह्मूं ह्मौं ह्मः ह्मीं शोषय शोषय रोषय रोषय ॐ आं क्रौं ह्मीं झ्वीं क्ष्वीं ह्मः जः जः जः जः जः ठः ठः ठः ठः ठः श्री घोणसे नमः।

मंत्र का जाप्य करने से फोड़े फुन्सी दूर होते हैं।

मंत्र– ॐ नमः श्री घोणसे हरे हरे वरे वरे वः वः वः वल वल वल लां लां रां रां रीं रीं रों रों रस रस क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षूं क्ष्वीं क्ष्वं ह्मं ह्मां भगवती श्री घोणसे घ घ घ घ घ घं सः घं सः घं सः घं सः घं सः घं सः घं सः सहः सहः सहः सहः सहः सहः सहः सहः हः वः स्व क हः वः स्व क हः वः स्व क हः वः स्व वः क हः वः स्व क हः वः स्व क हः व स्व कं हः व स्व क हः वः स्व क क ङः क ङः क ङः क ङः क ङः क ङः क ङः ङः ङः ङः ङः ङः ङः ङः ङः वगः वगः वगः वगः वगः वगः वगः वगः वर वर वर वर वर वर वर वर स्वविहंगम भुजे क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मः क्ष्वै ॐ रे रि स्तोभय स्तोभय ॐ ठः ठः ग ग श्री घोणसे स्वाहा।

एक हजार बार मंत्र को जाप करें।

अनेक प्रकार के फोड़े फुन्सी आदि ठीक होते हैं।

पीलिया नाशक मंत्र

मंत्रः- ॐ कामले ब्रह्मणे सत्य वादिनि भविष्यसि दधि तक्रे विरूपे अंतर कामं कामिले फुः ठः ठः।

सिद्धेन सहस्त्र जपात् कामिल मंत्रेण मत्रितैर मुना।

शालिलैः शशिरै र्विहितिः पानादि कामलां हरति।।

एक हजार जप से सिद्ध किये हुए इस मंत्र से अभिमंत्रित जल को शिशिर (गिलोय) के द्वारा पीने से कामला (पीलिया) रोग नष्ट हो जाता है।

श्वास रोग नाशक मंत्र

मंत्रः- ॐ किन्नर किं पुरुष गरुड़ गंधर्व यक्ष राक्षस निश्वासोपद्रवं हर पितृ पिशाचाय ठः ठः।

रौद्रेण सहस्त्र जपात्सिद्धेनानेन वेष्टितं सहसा।

वज्रं साख्यं भूपुर मध्य स्थं स्वाशहृद्भवति।।

एक हजार जप से सिद्ध किए हुए रौद्र मंत्र से पृथ्वी मंडल के बीच में वज्र को घेरने से श्वास दूर हो जाता है।

सिर रोग नष्ट

मंत्र-ॐ वज्र राज कामेश्वरी राज अमुकं शाधि हूँ फट् ठः ठः।

मदीरीत्र मिदं सिद्धं शिरो रोग हरं रहः।

त्रिसहस्तस्त्र प्रजापात् स्यात् सिद्धिदां मंत्र वादिनां।।

यह मंत्र मंत्र वादियों को सिद्ध होता है, तीन हजार बार जप करने से सिर के रोग नष्ट होते हैं।

मंदाग्नि नाशक मंत्र

मंत्रः- ॐ भिंद भिंद यम धम कंपय कंपय ह्रूँ फट् ठः ठः। ॐ वरं करे करे वरं विष करे ठः ठः।

त्रि सहस्त्र जाप्प सिद्धौ मंत्रो वैश्वानरस्य पृथगतौ।
कथितौ प्रथमो जीर्णं हरति परो दीपते महदग्निं।।

यह दोनों वैश्वानर मंत्र पृथक पृथक तीन हजार जाप करने से सिद्ध होते हैं। इनमें पहला बदहजमी दूर करता है तथा दूसरा बड़ी भारी मंद अग्नि दूर करता है।

मंत्रः- ॐ बष्टिं लि ठः ठः

मंत्रो हव्याशस्यायं त्रिलक्ष जप साधितः।
अपानो पान मुद्राभ्यां छर्दितीसार हृद्भवेत।।

इस हव्यासन मंत्र को अपान और उपान मुद्रा से तीन लाख जप कर सिद्ध करने से यह वमन और अतिसार को दूर करता है।

स्तंभन मंत्र

मंत्रः- ॐ चले चल चित्ते चपले चपल चित्तेः रक्तः स्तंभय स्तंभय ठः ठः।

सिद्धेय त्रिसहस्त्र जपात् मंत्रोऽयं तेन शर्कराः।
सप्त जप्त्वा श्रीरांतस्था योनि स्थां रुंद्यते प्रदरं।।

यह मंत्र तीन हजार जप करने से सिद्ध होता है। इस मंत्र से शक्कर की ७ कंकरियों को सात बार जपकर अभिमंत्रित करके योनि में रखने से प्रदर रुक जाता है।

रोग नाशक मंत्र

मंत्रः- ॐ ह्रां क्लीं हुं क्लीं हां हुं क्लीं हस्क्लीं क्लीं ठः ठः।

अष्ट चत्वारिंश दिनानि संध्या सु नित्यमषेमनुः।
सिद्धस्त्रि सहस्त्र जपादिना भवेत् सर्व रोग हरेः।।
अभिमंत्रमेतेन वितेराद्विश्वमौषधं।
मंत्री विश्वेषु रोगेषु वांछन्नातुर रक्षणं।।

इस मंत्र का अड़तालीस दिन तक प्रतिदिन संध्या के समय तीन हजार जप करके सिद्ध करने से यह सब रोगों को नष्ट करता है। मंत्री इस मंत्र से अभिमंत्रित की हुई सब औषधियों को देवे तो यह मंत्र सभी रोगों से दुखी पुरुष की रक्षा करता है।

रक्षा मंत्र

मंत्रः- ॐ नमो भगवते वज्र हुंकार दर्शनाय चुलु चुलु मिलि मिलि मेलि मेलि सेलि सेलि गोमारि वज्र हूँ फट् अस्मिन् ग्रामे रक्षां कुरु कुरु ठः ठः।

सहस्त्र जप सिद्धोयं रोद्रो विलिखितो मनुः।
पत्रादो गोर्गाले वद्धस्तां मा पद्म्योऽभि रक्षति।।

एक हजार जप से सिद्ध किया हुआ यह मंत्र पत्ते पर लिखकर गाय के गले में बांधने से यह उनकी आपदाओं से रक्षा करता है।

पिचास करने का मंत्र

मंत्र— ॐ उन्मत्त कारिणि पिशाची पिछे ठः ठः।

तालं रैबीजयोश्चूर्णा धुणा चूर्ण मूधर्न्यरैः।
अनेन मंत्रितं दद्यात्स पिशाची भवेत् ध्रुवं।।

इस मंत्र से हड़ताल और रै बीज के चूर्ण को शत्रु के सिर पर रख दे तो वह पिशाच निश्चय पूर्वक हो जाता है।

यम विद्या

मंत्र– ॐ काल दष्ट्रं भयं करि दर दर मर्द्द मर्द्द संहर संहर हूँ फट् ठः ठः।

अंगानि यम विद्यां लक्ष जपात् सिद्धामेनां जपन्नि रिपो र्विध्यत्।
प्रतिमाया नूतन चिता मृन्मयाः स्वांऽध्रि रेणु रेणुँ सिक्तायाः।।

इस यम मंत्र को एक लाख जप से सिद्ध करके चिता की नयी मिट्टी में अपने पैर की धूल मिलाकर उससे शत्रु की मूर्ति बनावे।

शत्रु को रोग होने का मंत्र

रक्त कुसुमार्चिताया पत्रा वरुणमलयजात लिजाप्तायाः।
अंगे कंटकैः स्यात् तेषु द्विषतो महान्व्याधिः।।

लाल फूलों से पूजन करके तथा लाल चंदन आदि से लेप करके उसके जितने अंगों मे कांटे से छेद किया जाय तो शत्रु के उसी अंग में महान रोग हो जाय।

मंत्र–ॐ नमो भगवते रूद्राया भ्रमः भ्रमः भ्रामय भ्रामय अमुकं विभ्रामय विभ्रामय उदभ्रामय उदभ्रामय रुद्र रौद्र रूपेण हूँ फट् ठः ठः।

उनमत्त रुद्र मंत्रं जपन् त्रिलक्ष प्रजाप्य सिद्धममुं।
धत्तूर रस समिद्भि र्जुहुयात् चितिकाऽनलैः भ्रमये।।

इस उन्मत्त रुद्र मंत्र को तीन लाख जप से सिद्ध करके धतूरे के रस की समिधाओं में से चिता की अग्नि में शत्रु को भ्रम करने के लिए होम करे।

शत्रु को घुमाने का मंत्र

मंत्र – ॐ नमो भगवते महाकालाय दह दह पच पच भंजय भंजय उत्सारय उत्सारय स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय उन्मादय उन्मादय एवं रूद्राज्ञापयति ।

मंत्र– ॐ वर वज्र पाणि पातय वज्रं सुरपति राज्ञापयति हूँ फट् ठः ठः ।

अमुना राज्याज्यर्प्पित साध्याख्या ख्या युक्त निबंदल ।
हो मात गुलिका दिषु सप्ताहान्मरणं तद्वेषिणो भवति ।।

राई और घृत से अर्चना कर साध्य अर्थात् शत्रु का नाम रहित नीम के पत्तों की गोली का होम करने से सात दिन में शत्रु का मरण होता है ।

मारण मंत्र

मंत्र– ॐ नमो काली मार स्वाहा ।

अनेन शत्रो परितस्य पादरजः पतनं ।
तेनैव सो भमन्सतुं मरणं प्राप्नोति न संशयः ।।

इस मंत्र से शत्रु के पावों की मिट्टी को मंत्र कर शत्रु पर डालने से उच्चाटन तथा उसका मरण होता है। इसमें सन्देह नहीं है ।

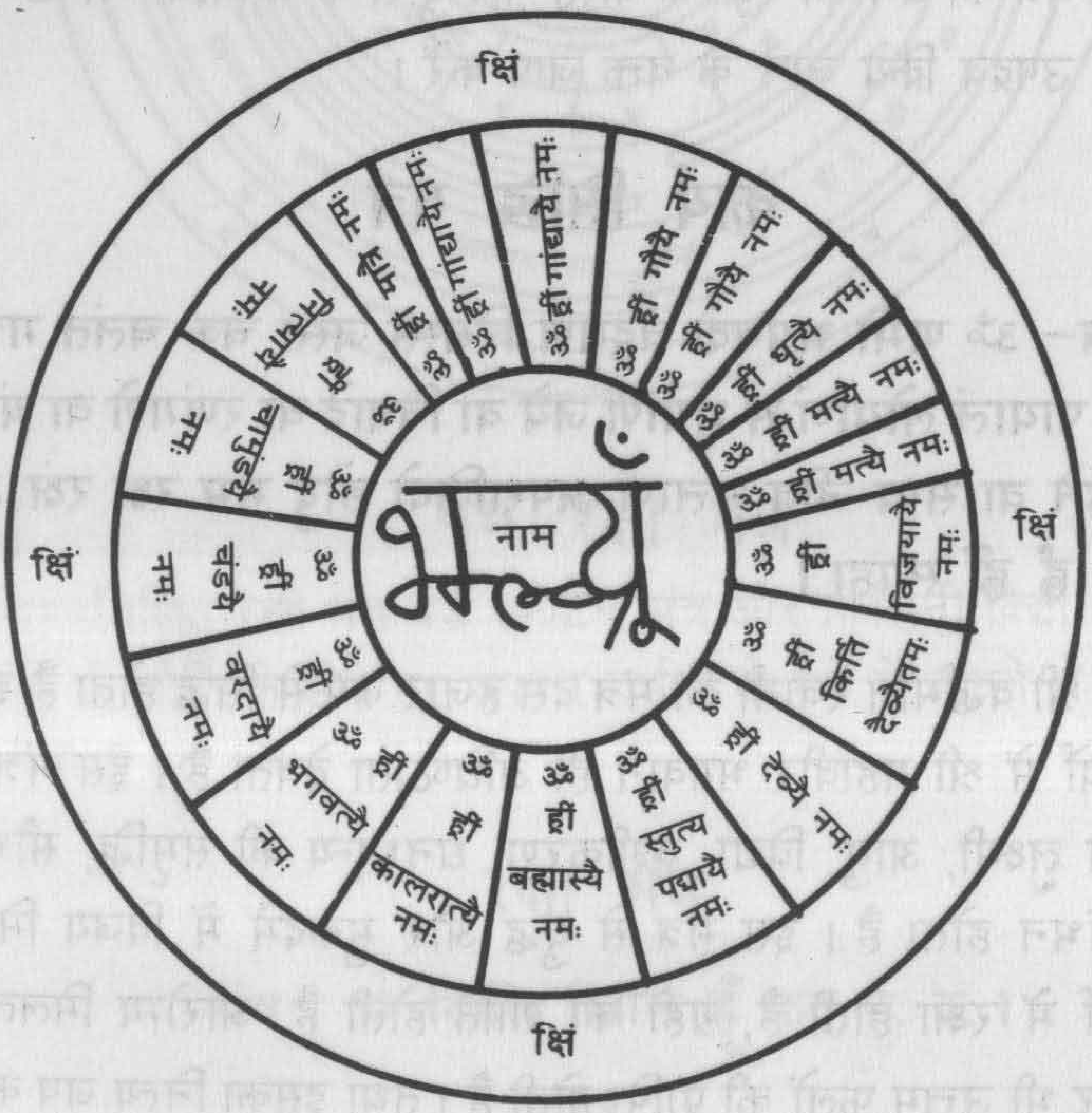
शत्रु भय नहीं करे

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं प्रां प्रौं क्लीं क्लौं पदमावती धरणेंद्र सहिताय क्षां क्षीं क्षूं क्षः नमः स्वाहा ।

इस मंत्र को हस्तार्क मूलार्क पुष्पार्क दिन पंच विंशति सहस्रेण २५००० जाप दक्षिण दिशा में साधन करके कृष्ण पुष्पों से काली माला से काले आसन पर बैठकर काले कपड़े पहनकर जाप करे तथा होम करे उसको शत्रु से भय

नहीं होवे संग्राम में जय होवे अष्ट द्रव्य से पद्मावती जी का पूजन करे यंत्र पास में रखे।

मंत्र– ॐ नमो भगवती महामाये अजिते अपराजिते त्रैलोक्य माते विद्ये से सर्व भूत भयावहे माणे माणे महामाणे अजिते वस्य करिणी भ्रम भ्रमणि शोषिणि ध्रुव करणी प्राण हरणी जये विजये जृंभणि खरे खगे प्राक्षे हर हर प्राण खिं खणी खणी विद्युत वज्र हस्ते शोषय शोषय निस्तृंशिनि दुष्टान हर हर प्राणानि मपि छेदिनि सहस्त्र शीर्षे सहस्त्र वाहवे सहस्त्र नेत्रे ज्वाला मुखी महामाणे इलमिते तिलमिते हे हुं हुं हे हे ष ष ग ग धुत धुत व व जी जी ह्रौं ह्रौं त्रिर त्रिर ख ख हसनि त्रैलोक्य वासिनि वासिनि त्रैलोक्योदर समुद्रेषे मे क्षे ले सि हुं रक्ष रक्ष फट् दे दे हे हे हु हु हन हन माणे माणे भूत प्रसवोपरे सिद्ध विधे हूँ फट् स्वाहा।



मंत्र– ॐ णट्ठठ मय ठाणे पणठ्ठ कम्मठ्ठ णढ्ढ संसारे परमिट्ठ णिठ्ठ

अठ्ठे अठ्ठ गुणाधी सरं वंदे।

श्मशान के कोयले से काले किये हुए नमक को नाम के पत्र धूम के साथ सरसों का तेल और गुगुल का होम करने से शत्रु मरण को प्राप्त होगा इस मंत्र का रोज दो हजार फूलों से जाप करें। एक वर्ष तक।

उपद्रव शांत करने का मंत्र

मंत्र– ॐ नमोरि हनन रजो हनन रहस्य हनन जिनार्हद्भ्यो नमः।
मंगलवार को करें।

मंत्रमेकं धर्म रक्षायां मतं घोर दुःखके।
मलेच्छादिभिरुपद्रव समये जाप्प मे वचः।।

इस मंत्र का धर्म की रक्षा के वास्ते घोर दुःख के समय या म्लेच्छ लोगों के द्वारा उपद्रव किये जाने के वक्त जाप करें।

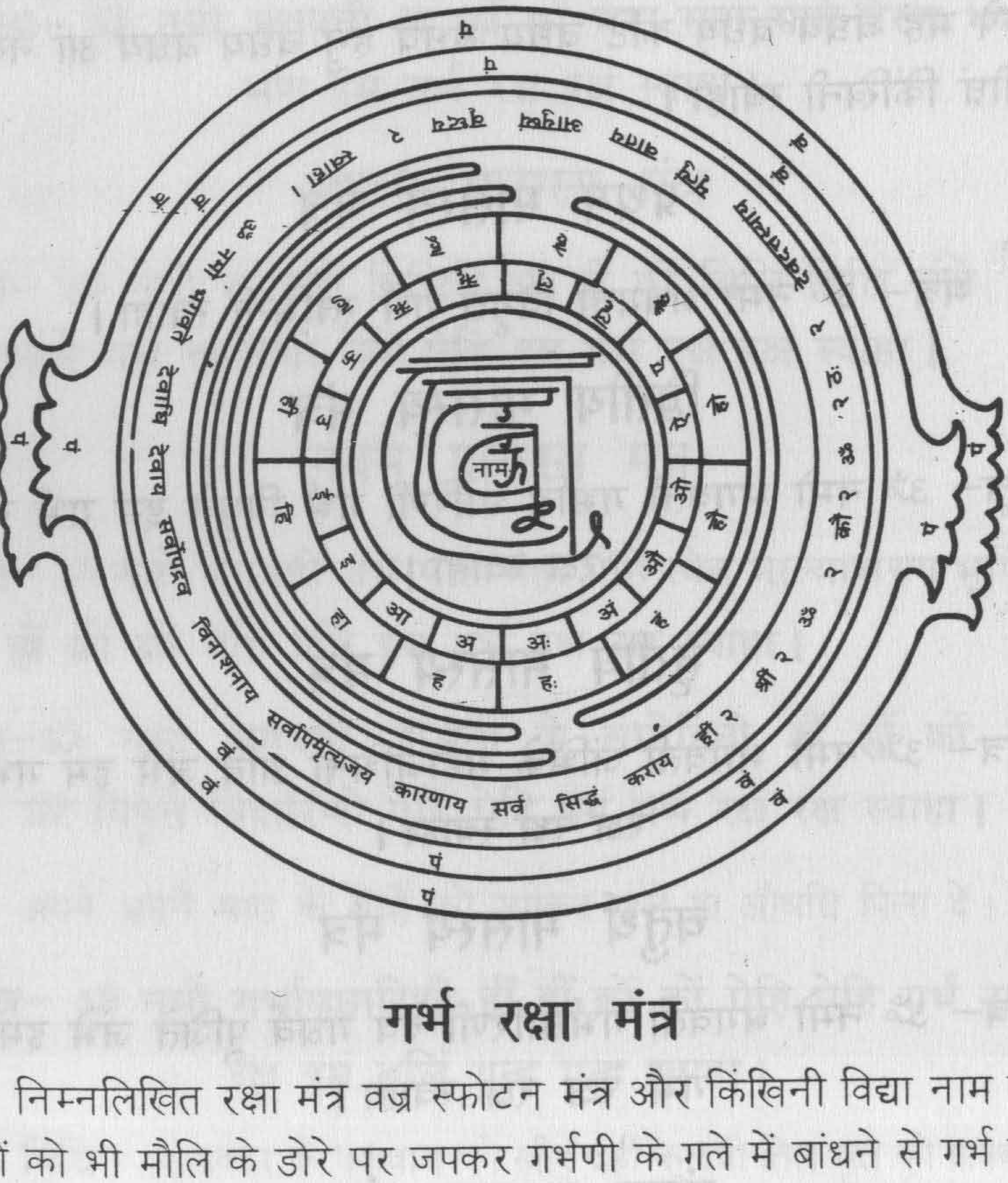
कार्य सिद्धि मंत्र

मंत्र– ॐ णमो भयवदो वड्ढमण रिसस्स जस्स चकं चलंतं गच्छई आयासं पायालं लोयाणं सं भूयाणं जये वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहने वा सव्व जीव सत्ताणं अपराजिदो होदु मम रक्ष रक्ष असि आउसा र्हं ह्रीं स्वाहा।

यह श्री वर्द्धमान स्वामी का मंत्र दस हजार जप से सिद्ध होता है इसके सब कार्यों में श्री महावीर भगवान ही अधिष्ठाता देवता है। इस मंत्र को जपने से लक्ष्मी, आयु, विद्या, वशीकरण, धनधान्य की समृद्धि, सौभाग्य और स्तंभन होता है। इस मंत्र से युद्ध और मुकदमे में विजय मिलती है। मार्ग में रक्षा होती है, ग्रहों की शांति होती है, आरोग्य मिलता है तथा और भी उत्तम फलों की प्राप्ति होती है। तथा इसका नित्य जप करने से सब संपत्तियां आती है।

मृत्युञ्जय मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवते देवाधिदेवाय सर्वोपद्रव विनाशनाय सर्वापमृत्युंजय कारणाय सर्व सिद्धि कराय ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ॐ ॐ क्रौं क्रौं ॐ ॐ ठः ठः देवदत्तस्यापमृत्युं घातय घातय आयुष्यं वृद्धय वृद्धय स्वाहा।



गर्भ रक्षा मंत्र

निम्नलिखित रक्षा मंत्र वज्र स्फोटन मंत्र और किंखिनी विद्या नाम की मंत्रों को भी मौलि के डोरे पर जपकर गर्भणी के गले में बांधने से गर्भ की रक्षा होती है।

रक्षा मंत्र

मंत्र– ॐ खिलि खिलि हूँ फट् ठः ठः।

वज्र स्फोटं मंत्र

मंत्र– ॐ वज्र स्फोटं ह्रीं ख: फट् स्वाहा।

किंखिनी विद्या मंत्र

मंत्र– ॐ नमो किंखिनी विद्ये असिता सिते उग्र चंडे महाचंडे भैरव रूपे महं बंधय बंधय कटिं बंधय बंधय हनु बंधय बंधय आं नयेति शीघ्रं किंखिनी स्वाहा।

प्रथम मासस्य मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भवगती विघृत गर्भ स्तंभिनी स्वाहा।

द्वितीय मासस्य मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवती गर्भाव धारिणी गर्भं विघृते इमं गर्भं रक्ष रक्ष स्वाहा।

तृतीय मासस्य मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवती जंभिके महाजंभिनी अति जंभे इमं गर्भं रक्ष रक्ष स्वाहा।

चतुर्थ मासस्य मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवती गर्भधारिणी देव गंधर्व पूजिते जंभे इमं गर्भं रक्ष रक्ष स्वाहा।

पंचम मासस्य मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवती विकट जंघी जंभिनी सर्व दुष्टनिवारणी ऐहि ऐहि इमं गर्भं रक्ष रक्ष स्वाहा।

षष्ट मासस्य मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवती आं ह्रीं क्रों धर धारिणी वरदे ऐहि ऐहि इमं गर्भं रक्ष रक्ष स्वाहा।

सप्तम मासस्य मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवती आं ह्रीं क्रों महा महा माये पेरण भण भण इमं गर्भं रक्ष रक्ष स्वाहा।

अष्टम मासस्य मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवती विछिके आं ह्रीं क्रों विलि विलि जंभे महाजंभे गर्भ स्राविणी ऐहि ऐहि इयं गर्भ रक्ष रक्ष स्वाहा।

नवम मासस्य मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवती जंभे मोहे महा मोहे स्वेत माल्याभरण भूषिते ह्रीं ह्रीं क्रों क्रों ऐहि ऐहि इमं गर्भं रक्ष रक्ष स्वाहा।

मंत्र–ॐ नमो भगवती जंभिनी के संमोहिनी ह्रीं ह्रीं क्रों क्रों धर धर विघृते विदारिणी ऐहि ऐहि इमं गर्भं रक्ष रक्ष स्वाहा।

अपने अपने मास के मंत्रों को जपकर जल या औषधि पिला दें।

मंत्र– ॐ नमो गर्भावधारिणी ह्रीं ह्रीं क्रों क्रों ऐहि ऐहि गर्भ रक्ष रक्ष इमं बलिं गृन्ह गृन्ह स्वाहा।

विधि– ५ प्रकार के पकवान को खीर दही कुलथी तिल घृत को शक्कर सहित दीपक तथा पुष्पों से सहित सामग्री को तीन बार गर्भणी स्त्री पर उतार कर दक्षिण दिशा में रख दें।

मंत्र– ॐ नमो भगवती जंभिके महा जृंभिनी अति जंभृ गर्भ रक्षिणी ह्रीं ह्रीं क्रों क्रों ऐहि ऐहि इमं बलिं गृन्ह गृन्ह स्वाहा।

पश्चिम दिशा में

मंत्र– ॐ नमो भगवति विकट जंघे जृंभिनी सर्वदुष्ट निवारणी ह्रीं ह्रीं क्रों क्रों ऐहि ऐहि इमं बलिं गृन्ह गृन्ह स्वाहा।

उत्तर दिशा में

मंत्र– ॐ नमो भगवती दर धारिणी ह्रीं ह्रीं क्रों क्रों ऐहि वरदे इमं बलिं गृन्ह गृन्ह स्वाहा।

पूरब दिशा में

मंत्र– ॐ नमो भगवती जंभेनिके महामाये रण रण भण भण ह्रीं ह्रीं क्रों क्रों ऐहि ऐहि गर्भ रक्ष रक्ष इमं बलिं गृण्ह गृण्ह स्वाहा।

अग्नि कोण में

मंत्र– ॐ नमो भगवती विलि विलि विछिके महाजंभे गर्भ श्राविणी ह्रीं ह्रीं क्रों क्रों ऐहि ऐहि गर्भ रक्ष रक्ष इमं बलिं गृन्ह गृन्ह स्वाहा।

दक्षिण पश्चिम दिशा में सायंकाल रखें।

मंत्र– ॐ नमो भगवती जंभिनि के संमोहिनी घर घर विदारय विदारय विघृते विदारिणी ह्रीं ह्रीं क्रों क्रों ऐहि ऐहि गर्भ रक्ष रक्ष इमं बलि गृन्ह गृन्ह।

उत्तर दिशा में रखें

सुख प्रसूति मंत्र

मंत्र– ॐ फणि फणि उत्पदहथ मुंच मुंच ठः ठः।

इस मंत्र का १०००० जाप्य कर पानी या औषधि पिलाने से बच्चा शीघ्र हो जाता है। तथा इस मंत्र से अभिमंत्रित जल से गर्भ को सींचने से विषम

कष्ट तुरन्त दूर हो जाते हैं।

मंत्र– ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः।

इस मंत्र से अभिमंत्रित औषधि अथवा जल पिलाने से आसानी से बच्चा हो जाता है।

पद्मावती देवी मंत्र

मंत्र– ॐ आं क्रों ह्रीं नित्ये कलन्दे मदद्रवे हूं क्लीं हसौं हसौं पद्मावती देवी त्रिपुराजि त्रिपुरशोभिणी त्रैलोक्यं शोभय २ स्त्रीवर्गं आकर्षय २ ब्लूं ह्रीं नमः।

मंत्र– ॐ आं क्रों ह्रीं ऐं क्लीं हसौं पद्मावती नमः।

विधि– जाप एक लाख करने से देवी प्रत्यक्ष आवे।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं पद्मे पद्मासने श्री धरणेंद्र प्रिय पद्मावती श्रियं मम् कुरू २ दुरितानि हर २ सर्व दुष्टानाम् मुखं बंधय २ ह्रीं स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को २१ बार स्मरण करने से सब प्रकार की सिद्धी हो।

मंत्र–ॐ क्लीं ब्लीं लीं घीं श्रीं कलि कुण्ड भगवती स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के जाप १०८ जेठ के महिने में करे तो पद्मावती प्रसन्न हो।

मंत्र– ॐ अं ह्रीं अं श्रीं अं श्री पार्श्वनाथाय धरणेंद्र पद्मावती सहिताय मम् चिंतितं पूरय २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के नित्य १०८ जाप करे।

मंत्र– ॐ नमो ह्रीं श्रीं भगवते पार्श्वनाथाय धरणेंद्र पद्मावती सहिताय अद्रे मद्रे षिद्रे कपटे शुद्रान् दुष्टान डाकनी शाकनी स्थंभय २ चूरय २ मनोवान्छित पूरय २ स्वाहा।

विधि– नित्य १०८ बार जपने से बराबर ६ माह में लक्ष्मी लाभ।

चिन्तामणी पार्श्वनाथ मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं णमिउण पास विष हर वसह जिण फुलिगं सर्व कामदाय ह्रीं श्रीं नमः।

विधि– इस मंत्र के १२००० जाप चावल से करें।

धरणेन्द्र का मंत्र

ॐ नमो पार्श्वनाथाय श्री कलिकुण्डनाथाय सप्त चतुर्दश दंष्ट्रा करालाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती देवी सहिताय, महा अचिन्त बल पराक्रमाय, अनेक मुद्रा सहिताय, सहस्त्र विस्फोटनायः वज्र शंकर भेदनायः सर्व आत्मना पर मंत्र रक्षणाय सर्वस्व कार्य साधनायः सर्व रोग विनाशनायः कमठ मान भंजनायः, किन्नर किंपुरूष, महोरग, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी प्रमर्दनाय एहि २ किल महाकाली, पद्मावती देवी, एकाहिकं, द्वाहिकं, त्रहिकं, चतुर्थका, वात कफ, पित्त कफ, श्लेष्मक, सन्निपातक, लूतादि, स्फोटक, द्वाला, गर्दभा रोगान, बेलां, भूतग्रहान, दहः दहः पाचय पाचय, ध्बुन २, धुस्त २ कंपय २ ॐ पद्मावती देवी सर्व कर्म करोयं ॐ ह्रीं ह्रीं जां जीं जूं जः श्री शेखराजाय नमः हुं हुँ हं हं च ॐ च ॐ स स स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं राजा वाशिकरणी त्रिलोचन क्षोभनी महा बेताल महाकाल चौसठ योगनीयं रक्षपाल मोहि २ आकर्षय २ अमुका माणसही मोहि वा देवी पद्मावती की शक्ती फुर मंत्रो वाचा।

विधि– इस मंत्र के सवा लाख जाप कीजे सर्व कार्य सिद्ध हो।

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्व जिनचंद्राय सप्त फणा मंडप विभूषिताय क्षय २ विक्षय २ भ्रमर २ महा भ्रमर सर्व भूतान्, सर्व प्रेतान, सर्वज्वरान, सर्व रोगान, सर्व ग्रहान सर्व शाकिनी आं क्रों ह्रीं नाशय

२ छिंन्द २ भिन्द २ क्रों ह्रीं हूं फट् स्वाहा।

मंत्र– ॐ ऐं क्लीं ह्रौं पद्मावती मम् सर्व जग वश्यं कुरू कुरु ह्रीं वषठ् स्वाहा।

विधि– मंत्र को १०८ बार जपने से राज सन्मान हो।

मंत्र–ॐ आं ई ॐ क्रैं ह्रीं नमः श्री पद्मावत्यै महादेव्यै मम चिन्तित कार्यं कुरू कुरू स्वाहा।

विधि: मंत्र का १०८ बार दीप धूप से जपे तो संपत्ति बढ़े।

मंत्र– ॐ ह्रां हूं क्लीं श्री श्री सकल भय चूरक पद्मावती देवी सदा नमोस्तुते।

विधि– मंत्र २१ दिन तक २१ बार रोजाना पढे तो भय नाश हो व संम्पदा बढे।

मंत्र– ऐं क्लीं ह्रौं पद्मावती नमः।

विधि– इस मंत्र के जाप रक्त कनेर के फूलों से ३९००० हजार करे।

मंत्र– ॐ ह्रीं क्लीं अर्हं श्री कलिकुण्ड दंड स्वामिन् ! अतुल बल वीर्य पराक्रमाय सर्व शान्ति कराय, सर्व विघ्न विनाशनाय दुष्टोपद्रव नाशनाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय ममाभिष्टं सिद्धि कुरू २ स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रैं स्फ्रौं स्फ्रः ह्रीं फट् ठः ठः स्वाहा।

विधि– १०८ फूल पर मंत्र जाप करें तो सर्व सिद्धि होती है।

मंत्र– ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अट्ठे मट्ठे शूद्र विघट्टे दुष्टान भंजय २ मम् वान्छितं कुरू २ स्वाहा।

विधि– जाप्य १२००० सफेद माला। सफेद आसन। सफेद वस्त्र। दुग्ध चावल भोजन करे।

मंत्र– ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्व जन मोहिनी विघ्न संकट हरणी मम् मनोरथ पूरणी मम् चिन्ता चूरणी ॐ नमो पद्मावती नमः स्वाहा।

विधि– दीप, धूप, शुद्ध वस्त्र, सफेद माला, पूर्व मुख, कर के सवा लाख मंत्र जाप्य करें।

मंत्र– ॐ मुखी, राजा मुखी प्रजा वश्य मुखी सर्व वश्यं कुरू २ पद्मावती क्लीं फट् स्वाहा।

विधि– पानी की चुल्लू लेकर इस मंत्र से २१ बार मंत्र कर या १०८ बार मंत्र कर मुख धोवे तो कार्य सिद्ध हो, राज दरवार में जय और सभी वश हो।

मंत्र– ॐ ह्रां आं क्रौं क्षां ह्रीं क्लीं ब्लूं ह्रां ह्रीं पद्मावत्यै नमः।

विधि: श्वेत फूलों से १० दिन १००८ जाप करे तो सर्व सिद्धिकारक हो।

मंत्र– ॐ आं क्रों ह्रीं ऐं ह्रीं ह्रां देवी पद्मावती त्रिपुर साधनी दुर्बुद्धी विनाशनी त्रैलोक्य क्षोभणी श्री पार्श्वनाथाय क्लीं ब्लूं मम् सर्व कार्य सिद्धि ह्रूं फट् स्वाहा।

विधि: मंत्र को सोते समय ७ बार पढे। तो स्वप्न में जबाब मिले।

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेंद्र पद्मावती सहिताय सर्व विघ्न विनाशकाय सर्व मनोरथ पूरकाय अट्टे मट्टे शूद्र विघट्टे श्री पद्मावती देवी सर्व भूतान ब्रह्मराक्षसान सर्व मारीन सर्व शत्रुन् छिन्द २ भिन्द २ स्तंभय २ सर्व भूपादि सर्व श्रेष्ठी जनान वश्यान कुरू २ स्वाहा श्रीं ह्रीं क्लीं देवी पद्मावती नमः।

विधि:– नित्य २ माला जपे।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अट्टे मट्टे क्षं क्षं विघट्टे विघट्टे शूद्रान स्थंभय स्थंभय चूरय चूरय मम मनोवांछित पूरये पूरये स्वाहा।

विधि: मंत्र १०८ बार नित्य जाप करने से लक्ष्मी लाभ हो।

मंत्र– ॐ पार्श्वनाथाय ह्रीं नमः।

विधि– ● १ लाख जाप्य करने से मंत्र सिद्ध होता है।

● २० दिन तक आराधना करने से स्त्री, पुरूष, राजा आदि वश होते हैं।

● पद भ्रष्ट होने वाला व्यक्ति १० दिन तक प्रति दिन १०००

● जाप करने से जल्दी ही पद की प्राप्ति होती है।

मंत्र– ॐ आं क्रौं ह्रौं, क्लीं ह्रौं पद्मावत्यै मम् सर्वकार्य सिद्धं कुरु कुरु नमः।

विधि– एक लाख मंत्र का जाप्य करे तथा दशांग धूप से आहुति देवें। सभी कार्यो की सिद्धि होगी।

मंत्र– ॐ ह्रीं नमः।

विधि– एकाक्षरी पद्मावती देवी के मंत्र सात लाख जाप करें। तथा दशांश आहुति दें। तो सोचे हुए सभी कार्य सिद्ध होंगे।

मंत्र–ॐ आं क्रों ह्रीं धरणेन्द्राय ह्रीं पद्मावती सहिताय क्रौं हैं ह्रीं नमः

विधि– नवरात्रौं में एक लाख जाप करने से देवी की सिद्धि होगी तथा सोचे हुए कार्य सिद्ध होंगे।

मंत्र– ॐ आं क्रौं ह्रीं क्लीं ऐं देवी पद्मावती त्रैलोक्य क्षोभिणी सर्व जन वश्यं करी सर्व स्त्री पुरुष आकर्षणीय मन वान्छित पूरणी ॐ ह्रीं श्री पद्मावत्यै नमः।

विधि– प्रातः व संध्या समय १ माला जपे। एकान्त स्थान पद्मावती देवी की स्थापना करे। भूमि प्रक्षाल करे। शुक्रवार के दिन साधर्मियों को भोजन करावें। सवा लक्ष जाप करे। दशांश होम करे। सुगन्धित धूप खेवें। लाल पुष्प से जाप करें। सर्व कार्य सिद्ध हो।

मंत्र– ॐ नमो पद्मावती पद्म हस्ते राज मंत्री क्षोभय २ राजा वश्यं प्रजा वश्यं मंम सर्व जनवश्यं कुरू २ स्वाहा।

विधि– २१ बार बोल कर मुंह पर तीन बार हाथ फेरे। सर्व सिद्धि हो।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्री धरणेन्द्र पद्मावती ह्रीं श्रीं नमः।

विधि- इसके जाप्य से उच्चाटन होता है।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्री धरणेन्द्र पद्मावती बल पराक्रमाय नमः।

विधि- पीत आसन, पीत वस्त्र पहिन पूर्व मुख कर २००० जाप करें। लक्ष्मी लाभ हो।

मंत्र- ॐ ह्रीं पद्मवज्रे नमः।

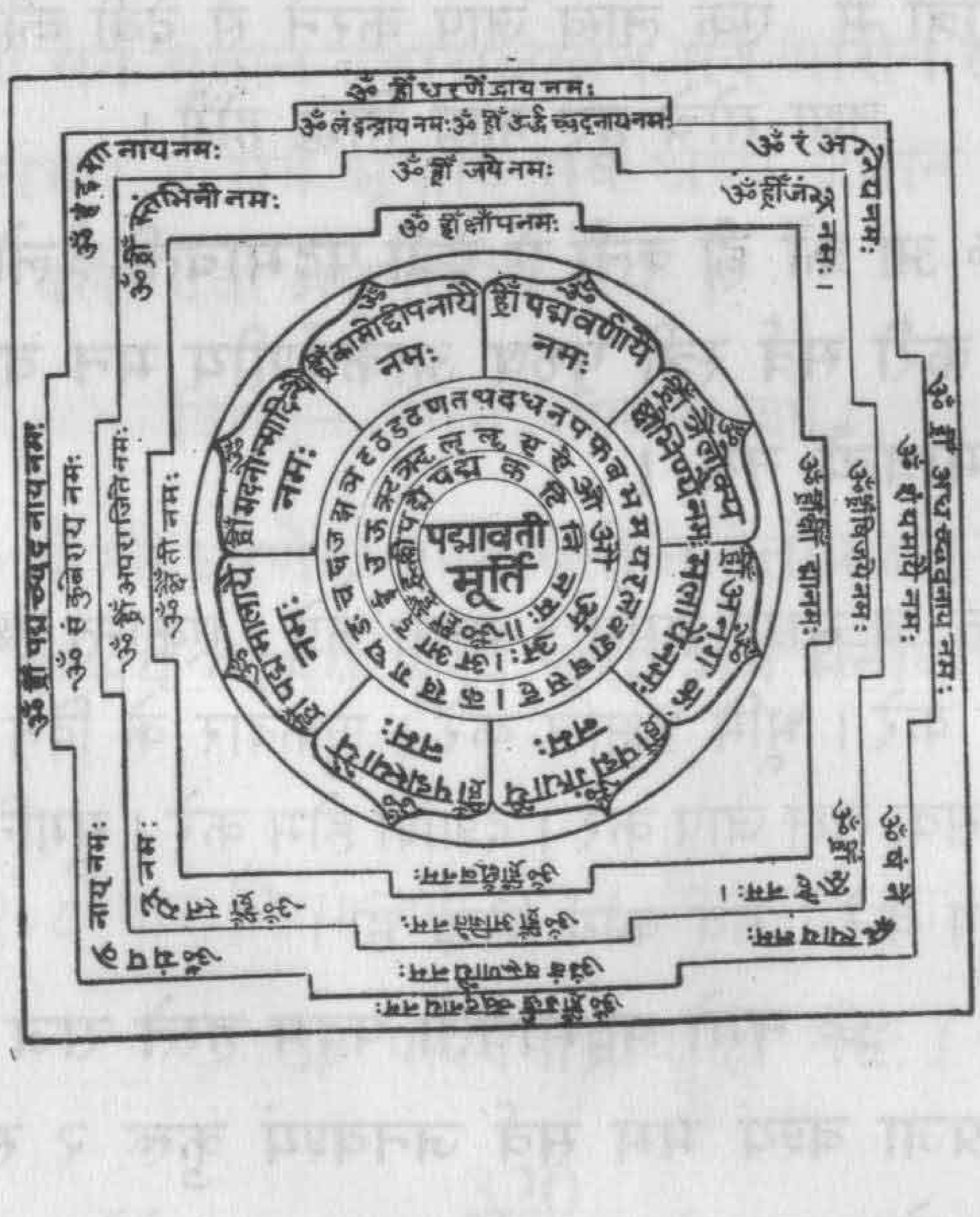
विधि- १ माला रोज फेरे तो घोरोपसर्ग व भय मिटे।

मंत्र- ॐ नमो पद्मावती सर्व कामना सिद्धि ह्रां ह्रीं नमः।

विधि- पूर्व या उत्तर मुख कर लाल आसन लाल माला से २००० जाप करे तो बुद्धि प्रखर हो। सौभाग्य बढे विद्या लाभ हो।

मंत्र- ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय ॐ अट्टे मट्टे शूद्र विघट्टे शूद्रान स्थंभय २ घे घे हूँ फट् स्वाहा।

विधि- १ माला रोज फेरे।



रक्षा मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ह्रां हृदयं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहाः।

ॐ णमो सिद्धाणं ह्रीं शिरो रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

ॐ णमो आइरियाणं ह्रूँ शिखा रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

ॐ णमो उवज्झायाणं ह्रौं एहि एहि भगवती वज्र कवच व वज्रिणि रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहाः।

ॐ णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः क्षिप्रं साधय साधय वज्र हस्ते शूलिनिं, दुष्ठान् रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहाः।

ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढ़मंहवइमंगलम्

ॐ ह्रीं हूँ फट् स्वाहा।

ॐ णमो अरहंताणं । नाभौ - यह पद नाभि में धारण करें।

ॐ णमो सिद्धाणं । हृदि - यह पद हृदय में धारण करें।

ॐ णमो आइरियाणं । कण्ठे - यह पद कण्ठ धारण करें।

ॐ णमो उवज्झायाणं । मुखे - यह पद मुख में धारण करें।

ॐ णमो लोए सव्व साहूणं । मस्तके- यह पद मस्तक में धारण करें।

मंत्र- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः श्रीं ह्रीं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन् सर्व रक्षाधिपतये रक्षां कुरू कुरू स्वाहाः।

मंत्र- ॐ णमो भय वदो अरिट्ठणेमिस्स अरिट्ठेण बंधेण बंधामि, रक्षसाणं भूयाणं खेयराणं चोराणं डायणीणं, सायणिणं महोरगाणं, बग्घाणं, सिंहाणं, आणेविजेट्ठासं भवति तेसिं सव्वेसिं मणं मूहं गईं दिट्ठिं

सुवोहं जिव्हा बंधेण बंधामि धणु धणु महाधणु जे जे ठः ठः **ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ढ ढ ढ ढ ल ल ल ल ल ह्रूँ फट् स्वाहा।**

विधि– इस मंत्र से कंकरियों को मंत्रित कर चारों दिशा में फेकें तो कोई प्रवेश न करे।

मंत्र–ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे मम रक्ष रक्ष शांति कुरू कुरू स्वाहा।

विधि– यह मंत्र आत्म रक्षा, शरीर, मस्तक, गोडां ऊपर हाथ फैरें और पीछे झाड़ा देने से ठीक होता है।

**मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ वृषभ शान्ति, धृति, कीर्ति, कान्ती,
बुद्धि लक्ष्मी ह्रीं अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।**

विधि– पहिले भक्तामर स्तोत्र की ७ वे काव्य को (त्वसंस्तवेन) पढ़े, फिर इस मंत्र की जाप्य करे तो शांति व सर्वकार्य की सिद्धि होती है।

मंत्र– ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी रक्ष रक्ष स्वाहा।

विधिः इस मंत्र का सवा लाख जाप्य करने से सिद्धि होती है।

मंत्र– ॐ थंमेय जलं जलणं कोऽहं मनंतहाय अग्गि दुहं इदि धीर उव सग्गं मम् (अमुक्स्य वा) पणासेउ स्वाहा।

विधिः पंच परमेष्ठिी की पूजा कर नमोकार मंत्र स्मरण कर रक्षा मंत्र की १०८ बार जाप्य करें।

मंत्र– **ॐ थंमेई जलं जलणं चिंतय मित्तेण पंच णवक्कारो अति मारि चोर राउल घोरुवसग्गं ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः विणसेई स्वाहा।**

विधिः इस मंत्र को सुगंधित द्रव्यों से वस्त्र पर लिख कर णमोकार मंत्र की पहले १०८ मंत्र जाप्य कर अष्ट द्रव्य से पूजा करें इससे सर्व प्रकार के भय दूर हो जाते हैं।

मंत्र– गहाणं अणेवि जे दुट्ठा संभवति तेसिं सव्वेसिं मणं मूहं गईं दिट्ठिं सुवोहं जिह्वां बंधेण बंधामि धणु धणु महाधणु २ जे ३

ठः ठः ठः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ढ ढ ढ ढ ढ ल ल ल ल ल हं फट् स्वाहा।

विधिः इस मंत्र से कंकड़ियों को मंत्रित कर चारों दिशा में फेंके तो कोई प्रवेश न करें।

मंत्र– ॐ नमो आकश बांधू। पाताल बांधू। धरती बांधू। पंच जना की आंख बांधू। मेरी भक्ती महावीर हणुवत्त की शक्तीं।

विधि– इस मंत्र से पानी २१ बार मंत्र कर पिलावे या छीटें दें।

मंत्र– ॐ क्षीं क्षीं क्षीं क्षः क्षः क्षः यः यः यः वः वः वः हूं फट् स्वाहा।

विधिः १०८ बार पीली सरसों मंत्र कर घर में चारों कोनों पर डाले। तो व्यंतरादिक दोष दूर हो।

मंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं। ॐ णमो सिद्धाणं। ॐ णमो आइरियाणं। ॐ णमो उवज्झायाणं। ॐ णमो लोए सव्व साहूणं। सर्व दुष्टान् स्तंभय २ मोहय २ अंधय २ मूकवत् कराय कुरू २ ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः ठः।

विधिः इस मंत्र को २१ हजार जाप कर सिद्ध करे। वक्त पर १०८ बार झाड़ना मुष्टी बांध कर मंत्र बोलना। और झाड़ा देते समय मुष्टी खोल कर झाड़ा देना चाहिये।

मंत्र- ॐ ह्रीं असिआउसा सर्व दुष्टान् स्तंभय २ मोहय २ अंधय २ मूकवत् कराय कुरू २ ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः ठः।

विधिः– यह मंत्र १०८ बार मुठ्ठी बांध कर जाप करें तो शत्रु भाग जावे। बालक या स्त्री पुरुष को भूत पिशाच डायन सतावे तो मुट्ठी बांध कर १०८ बार संध्या और प्रातः झाडा दें।

मंत्र– ॐ नमो भैरवाय शाकिन्यादि रूपं आकर्षय आकर्षय स्वाहा।

विधि– मंत्र ७ बार तेल मंत्र कर तेल क्षेपे तो दोष आदि से मुक्ति हो।

मंत्र– ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय धर्णेन्द्र पद्मावती सहिताय आत्म चक्षु शाकिनी चक्षु डाकिनी चक्षु भूत चक्षु प्रेत चक्षु व्यंतर चक्षु मोगा चक्षु वन कोडि कात्याईनी चक्षु चौसठ योगिनी चक्षु बावन क्षेत्रपाल चक्षु थल देवी चक्षु जल देवी चक्षु आकाश देवी चक्षु पाताल देवी चक्षु अपर सर्व दुष्ट चक्षु दह २ पच २ मथ २ हूँ फट् स्वाहा।

विधि: इस मंत्र से ७ बार या २१ वार पानी मंत्र पीवे।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदौ श्रेयांस सिज्झि- धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर श्रेयांसकरे भयंकरै स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार जाप्य करने से चतुष्पदों का रक्षण होता है।

मंत्र– ॐ नमो भगवते अरहंत सिद्ध आइरिय उवज्झाया साधु रक्षा, चतुर्विंशति तीर्थंकर रक्षा, ब्रह्म रक्षा, विष्णु रक्षा, श्वेत शतकोटि पिशाच रक्षा, गायस्त्रिरादिंद्र रक्षा, ह्रां ह्रीं ह्रः ह्रौं ह्रः क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को पढ़कर स्नान करने से कार्य सिद्ध होता है।

मंत्र– झ्राँ झ्रों झ्रूँ झ्रें झ्रौं झ्रः अस्त्राय फट्।

मंत्र– ॐ णमो भयवदो वड्ढ़माण सानिस्स जस्स चक्कं चलं तं गच्छई आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं गणे वा विवादे वा रणे वा रंभणे वा मोहणे वा सव्वजीव सत्ताणं अपराजिदो होदु मम् रक्ष रक्ष अ सि आ उ सा अर्हं ह्रीं स्वाहा।

विधि पूर्वक १०८ बार जाप करें।

मंत्रः–एसो पंच णमोकारो– वज्रशिला प्राकारः।

सव्वपावप्पणासणो– अमृतमयी खाई।

मंगलाणं च सव्वेसिं– महाव्रजमय शिला।

पढमं होई मंगलं– ऊपर वज्रशिला।

महावीर कवच ऐह, आत्मरक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

- ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं पादौ रक्ष रक्ष।
- ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं कटि रक्ष रक्ष।
- ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं नाभिं रक्ष रक्ष।
- ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं हृदयं रक्ष रक्ष।
- ॐ ह्रीं णमो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं आत्मचक्षुः परः चक्षु रक्ष रक्ष।
- ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं ब्रह्मांडं रक्ष रक्ष।
- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रीं ह्रीं कलिकुंड दंड स्वामिन् सर्वरक्षाधिपतये मम् रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।
- ॐ णमो अरिहंताणं । शिखायां।
- ॐ णमो सिद्धाणं । मुखावरणे।

ग्रह नाशक मंत्र

मंत्रः– ॐ ह्रीं सर्वे ग्रहाः सोम सूर्यांगारक बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनिश्चर, राहु, केतु, सहिता सानुग्रहा मे भवन्तु। ॐ ह्रीं असिआउसा स्वाहा।

विधिः– अस्यां स्मृतायां प्रतिकूला अपि गृहा अनुकूला भवन्ति।

नव ग्रहमंत्र

रवि महाग्रह मंत्र

मंत्र–ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्मप्रभतीर्थंकराय कुसुम यक्ष मनोवेगा यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह्रः आदित्य महाग्रह (मम् कुटुंबवर्गस्य) सर्व दुष्ट ग्रह रोग कष्ट निवारणं कुरु सर्वशांति कुरु कुरु सर्व समृद्धिं कुरु कुरु इष्ट संपदा कुरु अनिष्ट निरसनं कुरु कुरु धनधान्य समृद्धिं कुरु कुरु काममांगल्योत्सवं कुरु कुरु हूँ फट्।

सोम महाग्रह मंत्र

मंत्र–ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चंद्रप्रभतीर्थंकराय विजय यक्ष ज्वालामालिनी यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह्रः सोम महाग्रह मम् दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शान्ति च कुरु हूँ फट्।

इस मंत्र का ११००० जप करें।

मंगल महाग्रह मंत्र

मंत्र– ॐ नमोऽर्हते भगवते वासुपूज्यतीर्थंकराय षण्मुख यक्ष गांधारी यक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः मंगलकुंज महाग्रह मम्-दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्वशान्ति च कुरु कुरु हूं फट्।

इस मंत्र का जप १०००० करें।

बुध महाग्रह मंत्र

मंत्र– ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मल्लीतीर्थंकराय कुबेरयक्ष अपराजिता यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह्रः बुध महाग्रह मम् दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शान्ति च कुरु कुरु हूँ फट्।

इस मंत्र का जाप १४००० करें।

गुरु महाग्रह मंत्र

मंत्र– ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्धमान तीर्थंकराय मातंग यक्ष सिद्धायिनी यक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः गुरुमहाग्रह मम् दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शान्ति च कुरु कुरु हूँ फट्।

ग्रह की शान्ति के लिए इस मंत्र का जप १९००० करें।

शुक्र महाग्रह मंत्र

मंत्र– ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पुष्पदंत तीर्थंकराय अजित यक्ष महाकाली यक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः शुक्र महाग्रह मम् दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शान्ति च कुरु कुरु फट्।

इस मंत्र का जप १६००० करें।

शनि महाग्रह मंत्र

मंत्र– ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनिसुब्रत तीर्थंकराय वरुणयक्ष बहुरुपणी यक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः शनिमहाग्रह मम् दृष्टग्रह रोगकष्ट निवारण सर्व शांति कुरु कुरु हूं फट्।

इस मंत्र का २३००० बार जाप करें।

राहु महाग्रह मंत्र

मंत्र– ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते नेमितीर्थंकराय सर्वाण्हयक्ष कुष्मांडी यक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः राहुमहाग्रह मम् दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूँ फट्।

इस मंत्र का जप १८००० बार करें।

केतु महाग्रह मंत्र

मंत्र– ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय

धरणेंद्र यक्ष पद्मावती यक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्ः केतु महाग्रह मम् दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु फट्।

इस मंत्र का ७००० जाप करें।

नोट– प्रत्येक ग्रह के जितने जप लिखें हों उतना जप करके नवग्रह विधान करें। दशमांस होम करके तो ग्रह की शान्ति होती है।

नवग्रहों का जाप्य

• ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय नमः शांति कुरु कुरु स्वाहां।। ७००० जाप्य।।

• ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्रीं चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय नमः शांति कुरु कुरु स्वाहां।। ११००० जाप्य।।

• ॐ आँ ह्रीं क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं भौमारिष्टनिवारक श्रीं वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः शांति कुरु कुरु स्वाहां।। ११००० जाप्य।।

• ॐ ह्रीं क्रौं आँ श्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक श्री विमलअनंतधर्मकांति कुन्थुअरह नमिवर्धमान अष्टजिनेन्द्राय नमः शांति कुरु कुरु स्वाहां।। ८००० जाप्य।।

• ॐ औं क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गुरुअरिष्टनिवारक श्री ऋषभश्रा अजितसंभव अभिनंदनसुमतिसुपार्श्वशीतल श्रेयांसनाथ अष्टजिनेन्द्रभ्यों नमः शांति कुरु कुरु स्वाहा।१९०० जाप्य।।

• ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं शुक अरिष्टनिवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः शांति कुरु कुरु स्वाहा।। ११००० जाप्य।।

• ॐ ह्रीं क्रौं ह्ः श्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः शांति कुरु कुरु स्वाहा।। २३००० जाप्य।।

• ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ह्रूं राहुग्रहारिष्टनिवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः शांति कुरु कुरु स्वाहा।। १८००० जाप्य।।

• ॐ ह्रीं क्लीं ऐं केतु अरिष्टनिवारक श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः शांति कुरु कुरु स्वाहा।। ७००० जाप्य।।

कुल जाप्य १ लाख चौदह हजार हैं जो यथाशक्ति लोंग से करना चाहिये।

नवग्रह शांति स्तोत्रम

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम्।
ग्रहशांतिं प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे।।
जिनेन्द्र: खेचरा ज्ञैया पूजनीया विधिक्रमात्।
पुष्पैर्विलेपनं धूपैनेर्वैद्यस्तुष्टिहेत्वे।।
पद्मप्रभस्य मार्तंडश्चन्द्रप्रभस्य च।
वासूपूज्यस्य भूपुत्रौ, बुधश्चाष्टजिनेश्नां।।
विमलाननतधर्मश, शांतिकुन्थुर्नमस्तथा।
वर्धमानजिनेन्द्रस्य, पादपद्म बुधो नमेत्।।
ऋषभाजितसुपार्श्वा: साभिनन्दनशीतलौ।
सुमति: सम्भवस्वामी, श्रेयांसेषु बृहस्पति:।
नेमनाथो भवद्राहो: केतु: श्रीमल्लिपार्श्वयों:।।
जन्मलग्नं च राशिं च, यदि पीडयति खेचरा:।
तदा संपूजयेत् धीमान् खेचरान् सह नान् जिनान्।।
आदित्यसोममंगल, बुधगुरुशुक्रे शनि:।
राहुकेतु भरेवाग्रेया, जिनपूजा विधायक:।।
जिना नमोग्न तपोहिं, ग्रहाणां तुष्टिहेतवे।
नमस्कारशतं भवक्त्या, जपे दृष्टोत्तरं शतं।।
भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी, पंचम: श्रुतकेवली।
विद्याप्रसादत: पूर्व ग्रहशांतिविधि: कृता।।
य: पठत् प्रातरुत्थाय, शूचिर्भूत्वा समाहित:।
विपत्तितो भवेच्छांति:, क्षेमं तस्य पदे पदे।।

ग्रह शान्ति

मंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाण।

णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि— इस मंत्र की प्रतिदिन ५ माला जाप्य करने से मन में शान्ति की प्राप्ति होती है।

मंत्र— ॐ ह्लीं णमो सिद्धाणं

विधि— इस पद के जाप्य दस हजार करे तो **सूर्य** पीड़ा दूर हो।

मंत्र— ॐ ह्लीं णमो अरिहंताणं

विधि— इस पद के जाप्य दस हजार करे तो **चन्द्र** पीड़ा दूर हो।

मंत्र— ॐ ह्लीं णमो सिद्धाणं

विधि— इस पद के जाप्य दस हजार करे तो **मंगल** पीड़ा दूर हो।

मंत्र— ॐ ह्लीं णमो उवज्झायाणं

विधि— इस पद के जाप्य दस हजार करे तो **बुध** पीड़ा दूर हो।

मंत्र— ॐ ह्लीं णमो आइरियाणं

विधि— इस पद के जाप्य दस हजार करे तो **गुरु** पीड़ा दूर हो।

मंत्र— ॐ ह्लीं णमो अरहंताणं

विधि— इस पद के जाप्य दस हजार करे तो शुक्र पीड़ा दूर हो।

मंत्र— ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं

विधि— इस पद के जाप्य दस हजार करे तो **शनि** पीड़ा दूर हो।

मंत्र— ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं

विधि— इस पद के जाप्य दस हजार करे तो **राहू, केतू** पीड़ा दूर हो।

संकट नाशक मंत्र

मंत्र— **ॐ नमो भयवदो बडढ़माणस्य, रिसहस्य, चक्कं, जलं तं, गच्छई, आपासं, पायालं, लोयाणं, भूयाणं, जये वा विवादे वा थंभणे वा रायंगणे वा, मोहेण वा, सव्व जीव सत्ताणं अपराजितो मम् भव दुक्ख, रक्ष २ स्वाहा।**

विधि— जब भय आनेवाला हो या आ गया हो तो सरसों मंत्रित कर हाथ

में लेकर चारों दिशा में फैके तो संकट दूर होता है।

मंत्र– ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय क्षेमं कराय ह्रीं नमः।

विधि– अचानक संकट आया हो तब इस मंत्र का जाप्य करें।

मंत्र– ॐ पार्श्वनाथाय ह्रीं स्वाहा।

विधिः– इस मंत्र के जाप करने से सर्व संकट टलें।

सल्लेखना के समय पर किया जाने वाला मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असि आउसा श्री मुनि ......

सागरस्य सर्व शान्तिं कुरू कुरू नमः स्वाहा।

शरीर रक्षा मंत्र

मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चक्रेश्वरी मम् रक्षां कुरू २ स्वाहा।

विधि– पांच माला सोते समय नित्य फेरे।

शान्ति मंत्र

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो शांतिस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झामहाविज्झा शान्तिहूकम्पमे स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार जप करने से सर्व शान्ति होती है।

शान्ति के लिए

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अनंतानन्त परम सिद्धेभ्यो सर्वं शांतिं कुरु कुरु ह्रीं फट् नमः।

• ॐ ह्रीं श्रीं अनंतानंत परमसिद्धेभ्यो नमः।

- ॐ ह्रीं श्री असि आ उ सा नमः सर्व विघ्नरोगोपद्रव विनाशनाय सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।
- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः। सर्व विघ्नरोगोपद्रव विनाशनाय सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।
- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा नमः। सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
- ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

शान्ति दायक

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ अर्हं नमः।

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा सर्व शान्तिं तुष्टी पुष्टी कुरु कुरु स्वाहा।

क्षेत्रपाल साधन मंत्र

मंत्र– ॐ आं क्रौं ह्रीं क्लीं ह्रौं क्षेत्रपालाय अस्मिन् स्थाने आगच्छ
२ मम चिन्तित् कार्य स्वप्ने
कथय कथय ह्रौं वषट् स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को २१ बार पढना चाहिये।

क्षेत्रपाल मूल मंत्र

मंत्र– ॐ नमो मणिभद्र जिन शासन वत्सलाय भव्य जन हितं कराय दुष्ट जन प्रमर्दनाय हिलि २ किलि २ चालय २ जल गंधाक्षत पुष्पै नैवेद्यं, दीपं, धूपं, फलं गृहाण २ मुंच २ भयंकर रूपेण धुन २ आं क्रों ह्रीं अजयपाल देवाय पराज्ञया नाग पाशेन बंधय २ हल्व्र्यूं ह्रः सर्व ग्रहान्न आकर्षय आकर्षय स्थंभय २ मारय २ ह्रूँ फट् स्वाहाः।

मंत्र– ॐ क्षां क्षीं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः बन्दी मोक्षं कुरू २ स्वाहाः।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार जाप करें। बंधन छूटे।

मंत्र– ॐ ह्लीं आं क्रों विजय भद्र क्षेत्रपाल दातुर्विघ्नान् हन २ शुभं कुरू २ वषट् स्वाहा।

विधि– मंत्र को लाल रंग के पुष्पों से जाप्य करने से कार्य सिद्धि हो।

मंत्र– ॐ आं क्रों मणिभद्राय भवंत्पूजकस्य विघ्नान् हन २ शुभं कुरू २ वषट् स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के जाप्य लाल पुष्प से करे।

मंत्र– ॐ आं क्रौं श्रीं ह्लीं वीर भद्र क्षेत्रपालाय दातारं शुभं कुरू २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के जाप लाल पुष्प से करे।

मंत्र– ॐ ह्लीं आं क्रौं भैरव क्षेत्रपालाय तवमेवकं शुभं कुरू २ वषट् स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के जाप रक्त पुष्प से करे।

मंत्र– ॐ ह्लीं आं आं क्रौं अपराजित क्षेत्रपालय भवद् भक्त्या अस्य विघ्नान् हन् २ सौख्यं कुरू २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के जाप्य लाल पुष्प से करे।

मंत्र– ॐ नमो महेश्वराय उमापतिये सर्व सिद्धाय नमो रेवार्चनाय यक्ष सेनाधिपतये इदं कार्य निवेदियात् तदयथ कहि २ ठः ठः।

विधि– यह मंत्र १०८ बार क्षेत्रपाल के आगे पूजा के पहिले जपें। इस के बाद २१ बार गुगल मंत्र कर खेवे। तो स्वप्न में शुभाशुभ कहे।

मंत्र– ॐ मणिभद्र कालमेघ रत्नपाल क्षेत्रपालाय स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से १०८ कनेर के फूलों से जाप करें और फूल सिरहाने रख कर सोवें। जो कुछ बात हो वह स्वप्न में हो।

मंत्र– ॐ आं क्रौं क्रीं क्ष्वीं क्लीं ब्लूं ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवतो मणिभद्र क्षेत्रपालाय कृष्णरूपाय चतुर्भुजाय जिनशासन भक्ताय हिल २ मिलि २ किलि चक्षुमायु स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को लाल फूलों से ७००० जाप करने से मंत्र सिद्ध होता है। काले-श्वेत पुष्प ५४, रक्त पुष्प ५४ कुल १०८ जाप करने से स्वपन में सूचना प्राप्त होती है।

मंत्र– ॐ नमो खोडिया क्षेत्रपाल हाथ कपाल माथै मस्तकबाल उभय प्रत्यक्षं आकाश फाल, पाताल काल, रवि कीर तहां जहां भेजूं आवे मनवांछितं देहि २ शीघ्र आगमनं कुरू २ स्वाहा।

विधि– जाप २७००० करें। लोभान खेवे। जो कहे सो करे। राजा प्रजा वश करे। स्त्री वंशीकरण हो।

मंत्र– ॐ नमो भगवते मणिभद्राय क्षेत्रपालाय कृष्णा रूपाय चतुर्भुजाय जिन शासन भक्ताय हिल हिल मिल मिल फल फल मम प्रत्यक्ष भुय मम् मनोवन्छित पूरिय पूरिय यक्ष कुमाराय स्वाहा।

विधि– जाप्य १२००० लाल कनेर पुष्प पर मंत्र जाप्य करें। लाल वस्त्र। लाल आसन। उत्तर दिशा में मुख करें। गेहूं, मसूर, की दाल का भोजन करें। दीपक, घृत, को जलावें।

ज्ञान व विद्या प्राप्ति मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवती महा विद्ये चक्रेश्वरी ऐहि ऐहि शीघ्रं द्वां तिष्ठहु २ ॐ ह्रीं सहस्त्रवदने कुमार शिखंड वाहने शुक्ले, शुक्ल गात्रे ह्रीं सत्यवादिनी नमः।

विधि– प्रातः काल चुल्लू में जल लेकर इस मंत्र से सात बार मंत्रित कर पीवे तो ज्ञान वृद्धि हो।

मंत्र– ॐ नमो ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वद २ वाद वादिनी बुद्धि वर्धनी ह्रीं नमः।

विधि– इस मंत्र को सूर्य ग्रहण में १०८ बार जपे।

मंत्र– ॐ नमो भगवती सरस्वती परमेश्वरी वाक्वादिनी मम विद्यां देहि, भगवती हंसवाहिनी समरूढा बुद्धिं देहि–२ प्रज्ञां देहि–२ विद्यां देहि २ परमेश्वरी सरस्वती स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को रविवार में शुरू करे और २१ दिन तक नित्य पढ़े। ब्रह्मचर्य से रहें। एक वक्त भोजन करे।

मंत्र– ॐ नमो यक्षिणी आकर्षिणी घटाकरणी पिशाचनी विशल्ला मम् स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को २१ दिन प्रातःकाल जपने से वचन सिद्धि होती है।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं कीर्ति मुख मन्दिरे स्वाहा।

बार बार स्मरण करने से बुद्धि बढ़ती है।

सरस्वती बीज विद्या स्तोत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं णमो बुद्धिणं कवित्वं पाण्डित्वं च भवतु।

मंत्र– ॐ ह्रीं दिवस रात्रि भेद विवर्जित परम ज्ञानार्क चन्द्रातिशयाय श्रीं प्रथम जिनेन्द्राय नमः।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमोऽर्हं वादिनी सत्यावादिनी वद वद मम वक्त्रे व्यक्त वाचया सत्य ब्रूहि सत्य ब्रूहि अस्खलित प्रचारं तं देव मनुजासुर सहसो अर्हं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

मंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं वद वद वाग्वादिनि स्वाहा।

विधि– माल कागनी मंत्रित कर २ महीने तक देना। व्याख्यान समय २१ बार जपने से वचन शक्ति आती है।

मंत्र– "ह्रीं"

विधि– ह्रीं का ७ लक्ष्य जाप करने से सरस्वती की सिद्धि होती है।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वद वद वाग्वादिनेभ्यो नमः।

विधि– सूर्यग्रहण में कुंकुम कर्पूर से मंत्र जीभ पर लिखें तो वाग्वादिनी प्रसन्न होती है।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं वाग्वादिनी भगवती सरस्वती ह्रीं नमः।

विधि–- प्रथम १२ हजार जाप श्रद्धा से करना (दशांश जाप सूर्यग्रहण में देना) बाद में मालकांगनी या मिश्री या बच पर १०८ बार जाप देकर बच्चों को देने से बुद्धि की वृद्धि होती है।

उपदेश देते समय में श्रोतृवंद आकर्षण मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंडदंडस्वामिनि अप्रतिचक्रे जये विजये अपराजिते अजिते जंभे स्तंभे मोहे स्वाहा।

बुद्धि और वैभव वृद्धि मंत्र

मंत्र– ॐ अर्हन्मुख कमल वासिनी पापात्मक्षयंकरी श्रुतज्ञानज्वाला सहस्त्र प्रज्वालिते सरस्वती मम् पापं हन् हन् दह दह पच पच क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीरवरधवले अमृत संभवे अमृतं स्त्रावय स्त्रावय वं वं वं वं हूँ फट् स्वाहा।

विधि– केशर घिसकर ३६० गोलिया बनाये, शरद पूर्णिमा के दिन बनाना या दीपावली के रोज बनाना। यह सब अरहंत प्रभु की प्रतिमा के समक्ष करना चाहिए। बाद में प्रत्येक गोली पर १०८ बार मंत्र से मंत्रित कर प्रतिदिन १-१ गोली खाना। नमक और खटाई त्याग करना चाहिए। निरन्तर ३६० दिन तक खाना चाहिए। बुद्धि पठन पाठन में मेधावी होती है।

दूसरा प्रयोग– **विधि–** शरद पूर्णिमा के दिन कांसे की थाली में उपरोक्त मंत्र सुगंधित द्रव्य से लिखें। थाली के पास ही, मिठाई, नैवेद्य आदि रखें और १००८ सुगंधित पुष्प लें, हर एक फूल पर मंत्र बोलकर वह फूल उसी कांसे की थाली में डालते जाए।

दूसरे दिन वही मेवा मिठाई आदि रखे हुए पदार्थ खावें। दूसरा कुछ न खावे। इससे सरस्वती प्रसन्न, बुद्धि प्रबल, विद्या अवगत होती है।

विघ्न निवारक मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय सप्त फण विभूषिताय अपराजिताय ॐ भ्रं परम् २ वज्र २ आकट्ठ २ अमुकस्य सर्व ग्रहान् सर्व ज्वरान्, सर्व भूतान्, सर्व वातान सर्व उपद्रवान्, समस्तविडाकिन्यो हन् २ त्रासय २ क्षोभय २ विक्रमय २ श्री पार्श्वनाथो आज्ञापयति।

विधि– इस मंत्र के १०८ जाप करने से सर्व विघ्न नाश होते हैं।

मंत्र– ॐ शान्ति प्रदे जगत जीव हित शान्ति करे ॐ ह्रीं भयं प्रशम २ भगवते शान्ते मम् शान्ति कुरू २ शिवं कुरू २ निरूपद्रवं कुरू कुरू ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रः शान्ते स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का (तीन समय) जाप करे तो सभी प्रकार के उपद्रव दूर होते हैं।

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं णमो।

विधि– १०८ बार प्रतिदिन जाप्य करें।

मंत्र– ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रः ठः ठः स्वाहा।

विधि– १०८ बार जाप करें।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं क्रौं ह्रीं णमो अरहंताणं नमः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् वषट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

विधि– १०८ बार जाप करें।

सर्व सिद्धि

मंत्र– ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं ज्म्ल्व्र्यूं नमः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्म्ल्व्र्यूं नमः।

ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं म्म्ल्व्र्यूं नमः।

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं हल्व्र्यूं नमः।

ॐ ह्रीं णमो लोऐ सव्वसाहूणं क्ष्म्ल्व्र्यूं नमः।

विधि– इस मंत्र के १०८ जाप नित्य करे तो सर्व सिद्ध हो।

भय निवारक मंत्र

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो सुपारिसस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर हंसे सुपासि सुमतिपासे स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार जाप्य करने से सर्व वृश्चिक भय का नाश होता है।

मंत्र– **ॐ ह्रीं नमः अर्हं क्षीं स्वाहा।**

विधि– इस मंत्र को मन में जाप्य करने सें दुष्ट पुरुष, तस्कर का भय मिटता है। मंत्र जाप्य ६१ हजार।

मंत्र– **ॐ ह्रीं अर्हं नमः क्षीं स्वाहा।**

विधि– नो बार णमोकार मंत्र पढ़कर इस मंत्र की ९ बार माला फेरे। २१ दिन जाप करने से सब प्रकार का राज्य संबन्धी व अन्य भय संकट दूर हो।

निर्विघ्न कार्य संम्पन्न हो

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं असिआउसा अनाहत विद्यायै णमो अरिहंताणं पाप क्लेशहरं निर्विघ्न कार्य समाप्ति करणाय वषट्।

विधि– इस मंत्र के १०८ जाप्य करने से निर्विघ्न कार्य सम्पंन्न होता है।

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुंड दंड पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय, घातिकर्मक्षयंकराय, अतुलबलवीर्य पराक्रमाय, सर्व चिंता विघ्न बाधा विनाशनाय स्क्रां स्क्रीं स्क्रूं स्क्रः ह्रूं फट् स्वाहा।

विधि– १०८ बार जाप करें।

मंत्र– ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षं क्षः नमोअर्हते! सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

विधि–- ७ बार जाप करें।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कलिकुंडदंड चंडोपग्रह शांतिकराय, धरणेंद्र पद्मावती संसेविताय, अतुलबल वीर्य पराक्रम, श्रीमते, भगवते, चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नमो नमः मम् उपरि समागतं, राज्याभियोगं, यथाशीघ्रं निवारय निवारय श्रीं आत्मविद्यां रक्ष रक्ष श्रीं ह्रीं ऐं ह्रूं फट् स्वाहा।

कार्य सिद्धि मंत्र

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो मलिस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर मल्लि मल्लि अरिपायस्य मल्लि स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का १०८ बार जाप्य करने से चिन्तित कार्य की सिद्धि होती है।

पाप शमन करने का मंत्र

मंत्र– ॐ अर्हन्मुख कमलवासिनी पापात्मंक्षयंकरि श्रुतज्ञान ज्वाला सहस्त्र प्रज्वलिते सरस्वति मत्पापं हन् हन् दह दह क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीरवरधवले अमृत संभवे वं वं हूँ हूँ स्वाहा।

आत्म शुद्धि

मंत्र– ॐ नमो अर्हन्ते केवलिने परमयोगिने अनंत शुद्ध परिणाय विस्फुरु दुरु शुक्ल ध्यानाग्नि निर्दग्ध कर्म बीजाय प्राप्तानंतचतुष्टाय सौम्याय शान्ताय मंगलाय वरदाय अष्टादशदोषरहिताय स्वाहा।

अरिष्ट निवारक श्री चक्रेश्वरी मंत्र

मंत्र– ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं असि आउसा भूर्भूवः स्व चक्रेश्वरी देवी सर्व रोगं भिन्द २ ऋद्धि वृद्धि कुरू २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र की १ माला रोज जाप्य करें। स्त्री संबन्धी समस्त कठिन रोगों का नाश होता है।

लाभांतराय निवारक मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मम लाभान्तराय कर्म निवारणाय स्वाहा।

विधि– जिनेन्द्र प्रभु के समक्ष धूप देते हुए रोज एक माला जपें।

क्लेश नाशक

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं..... अमुकं दुष्टं साधय २ अ सि आ उ सा नमः। ॐ चिकी २ ठः ठः स्वाहा।

विधि– १० हजार जाप विधि पूर्वक करें।

मृत्युञ्जय मंत्र

मंत्र– ॐ नमो धर्मराजाय मृत्यु स्थाने शुभं कराय काक रूपीयेण ठः ठः स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का नित्य ३ बार जाप करे। छै महिने आयु बढ़ती है।

मंत्र– ॐ हां णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं मम् सर्व ग्रहारिष्टान निवारय २ अपमृत्युं घातय २ सर्व शान्तिं कुरू २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के १२५००० या ३१००० जाप करे और दशांश आहुती दें।

मंत्र– ॐ नमो वृषभाय मृत्युञ्जयाय सर्व जीव शरणाय परम ब्रह्मणे अष्ट महा प्रतिहार्य सहिताय नाग, भूत, यक्ष वशं कराय सर्व शान्ति कराय मम् सुखं कुरू २ स्वाहा।

विधि– २१ बार जप करने सें वांछित लाभ होता है।

अपमृत्युजय मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवते देवाधि देवाय सर्वोपद्रव विनाशनाय सर्वापमृत्युं जय कारणाय सर्व मंत्र सिद्धि कराय ह्रीं त्रीं त्रीं श्रीं २ ओं २ क्रौं २ ओं ठः ठः देवदत्तस्य मृत्युं घातय २ आयुषं २ वर्द्धय २ स्वाहा।

साठ हजार जाप्य करने से अकाल मृत्यु का नाश होता है।

कर्ण पिशाचनी मंत्र

मंत्र– ॐ कर्ण पिशाची अमोघ सत्यवादनी मम कर्णे अवतर २ अतीत अनागत वर्तमान् दर्शय २ ऐहि ह्रीं कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के १०८ जाप करे शुद्ध होकर रात्री को जपे और रात्री को केशर से अंग पूजा करे। जाप्य के बाद किसी से न बोले। तीन दिन एक बार भोजन करे।

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से चन्दन को १०८ बार मंत्र कर हाथ पर लेप करें। रात्री में स्वप्न में शुभ अशुभ की जानकारी हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं स्वप्ने चक्रेश्वरी! मम कर्णे अवतर अवतर सत्यं वद सत्यं वद स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के १०८ जाप करें।

मंत्र– ॐ झां झीं झूं काली कालका देवी महामाया आकर्षय २ भ्म्ल्व्र्यूं नमः।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार जपने से स्वप्न में दर्शन हो। इसमें संशय नहीं।

मंत्र– ॐ नमो भगवते कर्ण पिशाचिनी देवी अमोघ वागेश्वरी सत्यवादिनी सत्यं दर्शय सत्यं दर्शय २ सप्त समुद्राभ्यंतरे या काठी वारताम् मम् कर्णे कथय २ ह्रीं नमः।

विधि: इस मंत्र के दस हजार (१००००) जाप करे। २१ गूगल गुटका धूणी आग में डालें। स्वप्न में चिन्तित कार्य विशेष शुभाशुभ ज्ञात होगा।

मंत्र– ॐ नमो कर्ण पिशाचिनी सर्व दोष निवारणी कर्णेश्वरी विमल केवल मूर्तिरूप धारणी मम् कर्णे अवतर अवतर आगच्छ २ अतीत अनागत वर्तमान वस्तु कथय २ ह्रीं कर्णेश्वरी देवी कथय २ स्वाहा।

विधि– चमेली के फूल १०८, कमल के फूल १०८ लेकर दीपावली को घृत का दीपक जलाकर एक एक फूल पर मंत्र जाप करें और फूल इकट्ठे

कर कर्णपूजा कर सोवें तो शुभाशुभ कहे।

मंत्र– ॐ नमो कर्ण पिशाचिनी मम् कर्णे प्रवेश्य २ अतीत अनागत वर्तमान सत्य वचनेन कथय २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के १०८ जाप्य करके नये पाटे पर यह मंत्र लिखकर सिरहाने रख कर सोवे तो स्वप्न में ज्ञान हो।

मंत्र– ॐ नमो अरिहंताणं स्वप्ने शुभाशुभ वद वद कुष्मांडिनी स्वाहा।

विधि– रविवार के दिन १०८ बार इस मंत्र का जाप्य कर सोवे तो स्वप्न में फल मालूम होगा।

मंत्र– ॐ विश्वमालिनी विश्वप्रकाशिनी मध्य रात्रौ सत्यं अमुकस्य वद वद प्रकट्य प्रकट्य श्रीं ह्लां ह्रूं फट् स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को रविवार या मंगलवार को जाप्य करें। फिर सिंगरफ, कालीमिर्च और स्याही एकत्र कर कागज पर यह मंत्र लिखें, यह लिखा हुआ कागज सिरहाने तकिये के नीचे रक्खे तो स्वप्न में शुभाशुभ मालूम हो।

मंत्र– ॐ जोगे मग्गे तच्चे भूदे भव्वे भविस्से अक्खे पक्खे जिन पार्श्वे श्रीं ह्लीं स्त्रीं कर्णपिशाचिनी नमः।

विधि– उपरोक्त मंत्र को जाति पुष्प द्वारा १२००० जाप करने से और होम करने पर महाविद्या सिद्ध होती है।

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं ह्रीं क्ष्वीं नमः स्वाहा।

विधि– चिन्ता के समय रात में सोते समय कान पर चन्दन लगाकर सूखने के पीछे इस मंत्र के १०८ बार पढ़ कर सो जावें। स्वप्न में उत्तर मिलेगा। गुरुवार को ११०० जाप करना शुरू करे।

मंत्र– ॐ बाहुबली प्रचण्ड बाहुबली क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः उर्ध्व भुजां कुरू २ सत्यं ब्रूहि २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का खड़े होकर (कायोत्सर्ग की तरह) १०८ बार जाप करे शुभा शुभ जानना।

मंत्र– ॐ ह्लीं बाहुबली महा बाहुबली प्रचण्ड बाहुबली उर्ध्व बाहुबली शुभाशुभं कथयते स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का १ जाप्य प्रात: काल और एक जाप्य सोते समय करें। जमीन पर सोवे। जब कोई प्रश्न पूछना हो तो दहिने कान की लो पर कस्तूरी, चन्दन घिस कर लगाकर काम विचार कर सोवे। जो बात पूछोगे उत्तर मिलेगा।

मंत्र– ॐ ह्लीं रुद्राय कर्णपिशाचाय स्वाहा।

विधि– रात को इस मंत्र को १०८ बार जपें स्वप्न में जबाब आवे, ३ दिन या ६ दिन जपे। तांबे की कटोरी में तेल तिल्ली का होवे। मोली की १२ तार की बत्ती जोवे। संमुख बैठे। धूप खेवे।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कर्ण पिशाचिनी पद्मावती देव्यै मम् शुभाशुभं कथ्य कथ्य स्वाहा।

• चक्षुरोग निवारक मंत्र •

मंत्र– ॐ ह्लीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं सूर्यावर्तं शिरोर्द्धं सर्वमस्तकाक्षिरोगं नाशय नाशय स्वाहा।

मंत्र– ॐ नमो भगवते आदित्याय सर सर आगच्छ २ अमुकस्य चक्षुरोगं नाशय नाशय स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से सात बार जल मंत्रित कर आंख में डाले।

मंत्र– ॐ अम्बे अम्बो सिद्ध बाणे २ अक्षी रोग दोष विनाशाय ह्रीं ठं ठं ठं स्वाहा।

विधि– १०८ लूण की डली को १०८ बार मंत्रित कर रात को अपने पास रख ले तो आंख दुखती दूर हो।

मंत्र– ॐ चन्द्रमालिनी अक्षी रोग हरं स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से ७ लूण की कांकरी से आंख को झाड़े।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं सर्व संकट निवारणेभ्यो श्री पार्श्वनाथ यक्षेभ्यो नम स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं अक्षिरोग विनाशनं भवतु।

उल्टी बंद होने का मंत्र

यदि उलटी होती हो तो लाल कपडे की पट्टी (नई हो) पर ९ बार णमोकार मंत्र पढ़कर पट्टी को दोनों भुजाओं के बांधे तो उलटी बंद हो।

सर्व रोग नाशक

मंत्र– ॐ सः सं सः हं सः।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार गोघृत पर पढकर मरीज को पिलावे। इस तरह ३ दिन पिलावें तो सर्व रोग जाय।

पेट दर्द नाशक मंत्र

मंत्र–ॐ नमो इटि मिटि भस्मी कराई स्वाहा।

विधि– यह मंत्र पढता जाय और जमीन चाकू से काटता जाय तो पेट दर्द जाय। १०८ बार जल मंत्र कर पिलावे मंत्र ॐ इटि मिटि भस्मं करि स्वाहा।

पेट पीड़ा आधासीसी

मंत्र– ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आइरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्व साहूणं ॐ नमो णाणाय

ॐ नमो दंसणाय ॐ नमो चारित्राय ॐ ह्रीं त्रैलोक्य वश्यं करी ह्रीं स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से जल को १०८ मंत्र कर पिलावे तो पेट पीड़ा व आंधासीसी जाय।

सिर दर्द नाशक मंत्र

मंत्र– ॐ नमो चक्रेश्वरी, चक्रदेवी, चक्रधारिणी, शंख गदा पद्म धारिणी कपाल भार उतारिणी, धारणी चक्र वेगेण सलिलं तो हर हर स्वाहा।

विधि– भस्मी २१ बार मंत्र कर माथे के लागावे।

सिर दुःखी

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं परमोहिजिणाणं शिरोरोग विनाशनं भवतु।

ज्वर नाशक मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं सर्व ज्वरं नाशय २ ॐ णमो सर्वोषधि वताणं ह्रीं नमः।

विधि– इस मंत्र से १०८ बार या २१ बार पानी मंत्र कर पिलाने से सर्वज्वर भूतादि ज्वर जाय।

मंत्र– ॐ नमो भगवती पद्मावती सूक्ष्म वस्त्र धारिणी पद्म संस्थिता देवी प्रचण्ड दोर्दंड खंडित रिपुचक्रे किन्नर किंपुरूष, गरुड, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच, महोरग, सिद्धनाग मनुपूजिते, विद्याधर सेवित, ह्रीं पद्मावती स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से सरसों २१ बार मंत्रित कर बाये हाथ में बाधे। तो सब प्रकार का ज्वर भूत प्रेत बाधा ज्वर नष्ट होता है।

मंत्र– ॐ नमो लोए सव्व साहूणं ॐ नमो उवज्झायाणं ॐ नमो आइरियाणं ॐ नमो सिद्धाणं ॐ नमो अरिहंताणं गण घीं।

विधि– सफेद चादर पर मंत्र पढ़ता जावे और चादर के कोने को गांठ देने की तरह मोडता जावे। इस तरह मंत्र १०८ दफा पढ़े और गाठ देता जावे। यह चादर बुखार वाले को उढ़ावे तो सोमवार के बाद बुखार नहीं आवे।

रोग निवारण मंत्र

मंत्र– ॐ णमो अरहंताण, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ॐ णमो भगवति सुअदे! वदाणवारसंग एव यणजधणीयं सरवस ईए सव्व वाईणि सवणवणे ॐ अवतर देवी मम शरीरं वपिसमुंद्द अरिहंत सिरि सिरिए स्वाहा।

विधि– इस यंत्र को १०८ बार लिख रोगी के हाथ में रखें तो सर्व प्रकार के रोग जाऐं।

मंत्र– ॐ ह्रीं सकलरोगहराय श्री सन्मति देवाय नमः।

विधि– २१ दिन सवा लाख जप

घंटाकर्ण महामंत्र

मंत्र– घंटाकर्णो महावीरः सर्व व्याधि विनाशकः।
विस्फोटकभयं प्राप्ते रक्ष रक्ष महाबल।
यत्रत्वं तिष्ठसे देव लिखितोऽक्षरपंक्तिभिः।
रोगास्तत्र प्रणश्यंति वातपित्तकफोद्भवाः।
तत्र राजभयं नास्ति यांति कर्णे जपाः क्षयं।
शाकिनी भूत वेतालाः राक्षसाः प्रभवंति न।

नाकाले मरणं तस्य न च सर्पेण दश्यते।

अग्नि चोर भयं नास्ति ह्रीं घंटाकर्ण! नमोस्ते ते ठः ठः स्वाहा।

प्रतिदिन पाठ करने से धन धान्य की वृद्धि होती रोग शोक दूर होता है।

सर्वरोग नाशक

मंत्र– ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं ॐ णमो खेलोसहिपत्ताणं।
ॐ णमो जल्लोसहिपत्ताणं ॐ णमो विप्पोसहिपत्ताणं।
ॐ णमो सव्वोसहिपत्ताणं।

विधि– इस मंत्र का १०८ बार ४८ दिन जप करें तत् पश्चात् जिस रोगी को ठीक करना हो तो १०८ बार मंत्र कर जल पीलावे ठीक हो।

चर्म रोग नाशक

मंत्र– ॐ णमो जिणाणं जावयाणं पूसोणिअं एएण सव्वा वगएण वणं मापच्चचउ माफूरकउ माफुट्टउ ॐ ठः ठः स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का प्रतिदिन जाप करने से दाद, खाज, फोड़ा खुजली, कोड़ आदि रोग दूर हो जाते हैं।

रोग नाशक

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं, ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं, ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं, ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोस्सहि पत्ताणं ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वो सहि पत्ताणं मम् सर्व रोग विनाशनं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय एहि-एहि भगवती दह दह हन हन चूर्णय चूर्णय भंज भंज कंड कंड मर्द्दय मर्द्दय ह्म्ल्व्र्यूं आवेशय आवेशय ह्रूँ फट् स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का ४००० पुष्पों से जाप्य करने से सर्व रोग नष्ट हो जाते हैं।

रोग निवारक

मंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा।

विधि– सवा लाख जाप्य करें।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः सर्व ज्योतिष्केन्द्रार्चित परमपुरुषाय सर्वाग्रहारिष्टं नाशय नाशय शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

१०८ बार जपे।

मंत्र– ॐ णमो भगवते पार्श्वनाथाय एहि एहि ह्रीं ह्रीं भगवती दह दह हन हन चूर्णय भंज भंज कंड कंड मर्द्दय मर्द्दय ह्म्ल्व्र्यूं आवेशय आवेशय ह्रूं फट् स्वाहा।

मुख रोग

मंत्र– ॐ नमो अरहउ भगवउ मुखरोगान् कंठरोगान जिह्वारोगान् तालुरोगान् दन्तरोगान् ॐ प्रां प्रीं प्रूं प्रः सर्वरोगान् निवर्तय निवर्तय स्वाहा।

विधि–- जल मंत्रित करके कुल्ला किए जाने से मुख का रोग दूर होते हैं।

कर्ण रोग नाशक

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं कर्णरोगविनाशनं भवतु।

श्वास रोग नाशक

मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोदराणं रोग विनाशनं भवतु।

पादादिरोग नाशक

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व जिणाणं पादादि सर्वरोग विनाशनं भवतु।

बंदी मुक्ति

मंत्र– ॐ तारे तारणी मोचनी मोक्षणी जीवं वरदे स्वाहा।

विधि– उत्तर दिशा की ओर बैठ कर यह मंत्र लिखकर दीपक को ७ बार जलावें। इस तरह सात दिन करे। तो बन्दी मुक्त हो।

मंत्र– ॐ नमो अरहंताणं ज्म्ल्व्र्यूं नमः। ॐ नमो सिद्धाणं झ्म्ल्व्र्यूं नमः। ॐ नमो आइरियाणं स्म्ल्व्र्यूं नमः। ॐ नमो उवज्झायाणं ह्म्ल्व्र्यूं नमः। ॐ नमो लोए सव्व साहूणं क्ष्म्ल्व्र्यूं नमः। अमुकस्य बंदी मोक्षं कुरू कुरू स्वाहा।

विधि– जिस किसी का कोई कुटुम्बी, रिश्तेदार या मित्र बंदीगृह में कैद हो जावे तो उसके लिऐ उसी के कुटुम्बी या मित्र यह प्रयोग करें। श्री पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा एक कागज पर बना कर ५०० लाल फूल लेकर मंत्र पढता जावे फूल उस पर चढ़ाता जावे। जहां फूल चढ़ावे उसी कागज पर ही ५०० बार उंगली से ठोकता जावे। ऐसे ५०० बार करें। अमुक की जगह उसका नाम लेवें। इधर तो यह कार्य करें। उधर अपील आदि करना हो तो करें। बंदी-खाने से फोरन छूटे। चित्र के सम्मुख खड़ा होकर जाप्य करे। और खड़ा ही फूल चढावें। स्वप्न में भी शुभाशुभ कहे।

बेड़ी जंजीर टूटे

मंत्र– ॐ आँ क्रों त्रां कट कट स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को गोधूलि से समय २१ दिन जाप्य करें।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं कलि कुण्ड दण्ड स्वामिन् कष्ट मोक्षं कुरू २
ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्वाहा।

विधि– ३००० मंत्रों जाप्य करने से संकट दूर हो।

बंदी गृह से छुड़ाने का मंत्र

मंत्र– णं हू साव्व सए लोमोण।

णं याज्झावउ मोण।

णं यारिय आमोण।

णं द्वासि मोण।

णं ता हं रि अ मोण।

विधि– इस मंत्र का २१ हजार जाप्य करने से कितना ही बड़ी सजा क्यों ना हो उसे मुक्ति मिलती है।

मंत्र– ॐ. ह्रीं अर्हं असिआउसा अनाहत विद्यायै अर्हं नमः।
विधि– १०८ दिन तक १०८ बार मंत्र जाप्य करें।

ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं, झिलु झिलु कुलु कुलु चुलु चुलु मुलु मुलु स्वाहा।

प्रतिदिन ५ माला जाप करने से बंधन से छुटकारा मिलता है।

विजय प्राप्ति मंत्र

मंत्र– ॐ भगवते ज्वालामालिनी गृद्व गण परिवृत्ते ठः ठः।

विधि– इस मंत्र को एक लाख जाप से सिद्ध होता है।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो अरहस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर अरणे अपजि ग्रहति स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का १०८ बार जाप्य करने से जुआ आदि में जय प्राप्त होती है।

सरस्वती मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं ४ हं ॐ ह्रौं २ हः २।

विधि– मंत्र के २१ बार जाप करने से बुद्धि बढ़ती है।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं हं सं क्लीं वद २ वाग- वादिनी भगवती बुद्धि वर्धनी ऐं ह्रीं नमः।

विधि– मंत्र २१ बार जाप्य करे तो विद्या की प्राप्ति हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं झं झं वद वद वागेश्वरी स्वाहा।

विधिः मंत्र २१ बार जपे और चांदी की थाली में केशर दूध से लिखें, पीछें घोल कर पीवे तो विद्या आवे।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनी नमः स्वाहा।

विधि– बच तथा मालकांगिनी के चावल पर २१ बार मंत्र जाप करके उसकी खीर खिलावे विद्या आवे।

मंत्र– ॐ ह्रीं २ हः वद वद वाग्वदिनी नमः।

विधि– १०८ बार मालकांगनी का तेल पर जाप्य करें और पिलावें तो विद्या शीघ्र आवे।

मंत्र– ॐ श्रीं ह्रीं अर्हं नमः ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनी भगवती सरस्वती ह्रीं नमः।

विधि– मंत्र के जाप करने सें वचन स्फुट होते हैं।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वागवादिनी भगवती सरस्वत्यै ह्रीं ऐं नमः स्वाहा।

विधि: सूर्य ग्रहण तथा चन्द्र ग्रहण में एक रंग की गाय का दूध लेकर। मालकांगनी तेल को मंत्र कर। कमर तक पाणी में नग्न खड़ा होकर। और बालक को नग्न कर। जीभ ऊपर तेल से मंत्र लिखना। और दूध पिलाना। पीछे २१ बार जाप करना। सर्व विद्या सिद्ध।

मंत्र– ॐ सरस्वती भगवती बुद्धि वर्धनी स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं, हंस वाहिनी मम् जिह्वाग्रे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं वाग्वादिनी भगवती सरस्वती ह्रीं नमः।

मंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा।

इस मंत्र को १०८ बार मालकांकिणी को मंत्र कर खाने से बुद्धि की वृद्धि होती है।

विधि– तीन चुल्लु जल २१ बार मंत्रित कर प्रातः नित्य पीवे।

परीक्षा में उत्तीर्ण हो

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं नमः ..... मम् इष्ट कार्य सिद्धि भवतु परीक्षायां उत्तीर्णं च कुरू २ स्वाहा।

कार्य सिद्धि मंत्र

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अजितस्स सिञ्झि धम्मे भगवदो विज्झाण

महाविज्झाणं। ॐ णमो जिणाणं ॐ णमो परमोहि जिणाणं ॐ णमो सव्वोहि जिणाणं भगवदो अरहंतो अजितस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर अजिते अपराजिते पाणिपादे महाबलें अनाहत विद्यायै स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का १०८ बार जाप्य करने से सर्व कार्य की सिद्धि होती है। राज दरबार में प्रवेश करते समय इस मंत्र का स्मरण करने से सर्व वश्य होता है।

इस यंत्र को ताम्र पत्र अथवा सुवर्ण या चांदी के पत्रे पर लिखकर प्राण प्रतिष्ठा करे, फिर अजित तीर्थंकर भगवान की मूर्ति को, यंत्र के ऊपर स्थापन करके पंचामृतअभिषेक करके यंत्र पूजा करे। इसके बाद १००८ बार पुष्पों से मंत्र का जाप्य करें तो यह सिद्ध होता है।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदौ शंभवस्स अनाहत विज्जंई सिज्झि धम्मे भगवदो महा विज्झाण महाविज्झा शंभवस्स शंभवे महा शंभवे शंभवाणं स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से १०८ जाप्य पूर्णिमा या अमावस्या के दिन जाप्य करने से कार्य सिद्ध होता है। इस यंत्र को चांदी या सोना अथवा ताम्र पत्र पर लिखकर प्राण प्रतिष्ठा करके यंत्र के ऊपर संभव नाथ भगवान की मूर्ति की स्थापना करके पंचामृताभिषेक करें। फिर १०८ बार पुष्पों से जाप्य करने से कार्य सिद्ध हो जावेगा।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहंतो सुमतिस्स सिज्झि-धम्मे भगवतो विज्झर सुमति सामिणंवानंगे स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार त्रिकरण शुद्धि पूर्वक जाप्य करने से पुरुष वश्य होता है। सुमतिनाथ भगवान के अनाहत का १०८ बार जाप्य करना चाहिए।

इस यंत्र को सोना, चांदी अथवा ताम्र के पत्रे पर लिखवाकर प्राण प्रतिष्ठा करें, फिर यंत्र के ऊपर सुमतिनाथ भगवान की मूर्ति स्थापित कर, पंचामृताभिषेक, पूजा करके १०८ बार पुष्पों से जाप्य करने से मंत्र सिद्ध हो जावेगा। कार्य पड़ने पर मंत्र का स्मरण करें, अवश्य ही कार्य सिद्ध होगा।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो पोमे अरहतस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महा विज्झर पोमे महापोमे महापोमेश्वरी स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार तीनों संध्याकाल में जाप्य करने से लक्ष्मी सम्पत्ति की वृद्धि होती है। (पद्मप्रभ अनाहत) यंत्र को पूर्वोक्त कोई भी ६ ाातु के पत्रे पर खुदवाकर प्राण प्रतिष्ठा करें, फिर यंत्र के ऊपर पद्मप्रभ भगवान की मूर्ति स्थापित करके पंचामृमताभिषेक पूजा करके १०८ बार मंत्र का जाप्य पुष्पों से करें तो सिद्ध होगा।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो पुष्पदंतस्स सिज्झ -धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर पुष्फे पुष्फेसरि सुरि स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार जप कर पानी मंत्रित करे। उस पानी से मुख प्रक्षालन करने से अचिन्त्य फल की प्राप्ति होती है।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो वासुपूज्य सिज्झ धम्मेभगवदो विज्झर महाविज्झर पुज्ज महापुज्जे पुज्जायै स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का ध्यान करने से सर्व कार्य सिद्ध होता है।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो मलिस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर मल्लिमल्लि अरिपायस्य मल्लि स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का १०८ बार जाप्य करने से चिन्तित कार्य की सिद्धि होती है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं कलिकुण्ड स्वामिने अप्रतिचक्रे जये विजये अपराजिते जंभये स्थंभ्ये मोहे स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को रोजाना २१ बार जपे तो सर्व कार्य सिद्ध हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं मम् मुक्ति कुरू २ मनोवान्छितं पूरय २ स्वाहा।

विधि– नित्य ६ माह तक १०८ बार पढ़े।

मंत्र–ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथाय गोमुख चक्रेश्वरी सहिताय अतुल बल पराक्रमाय मम् मनोवान्छित पूरय २ सर्व सौख्यं देहि २ ह्रीं नमः।

विधि: इस मंत्र की एक माला प्रतिदिन करें।

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा स्वाहा।

विधि–– नित्य माला फेरने से मनवान्छित कार्य सिद्ध हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः।

विधि: यह मंत्र संध्या के समय जाप्य करें सर्व कार्य सिद्ध हो।

मंत्र– ॐ ह्रां अर्हद्भ्यो स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धेभ्य स्वाहा। ॐ ह्रूं सूरेभ्य स्वाहा। ॐ ह्रौं पाठकेभ्य स्वाहा। ॐ ह्रः सर्व साधुभ्य स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा मम् सर्व शान्तिं कुरू २ स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं तुष्टी कुरू २ पुष्टिं कुरू २ स्वाहा।

विधि: सवा लाख जाप्य करें तो मनोवान्छित कार्य सिद्ध हो।

मंत्र– ॐ णमो अरहंताणं। ॐ णमो सिद्धाणं। ॐ णमो आइरियाणं। ॐ णमो उवज्झायाणं। ॐ णमो लोए सव्व साहूणं। हुल २ कुल २ चुल २ मम् गृहे......... निवास मोचनं कुरू २ स्वाहा।

विधि– नित्य जाप्य करे।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं ब्लूँ अर्हं नमः।

विधि– इस मंत्र का जाप्य करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं।

मंत्र– ॐ णमो अरहंताणं सिद्धाणं सूरीणं उब्झायाणं साहूणं मम् ऋद्धिं वृद्धि समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को तीनों समय स्नान करके जाप्य करें तो सर्व कार्य सिद्धि होगी।

मंत्र– ॐ ह्रीं क्लीं नमः।

विधि– इस मंत्र के ७ लाख जाप्य करें। सभी प्रकार के कार्य सिद्ध होते हैं।

मंत्र– ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

विधि– ॐ का ध्यान करने से सातों ऋद्धियां प्राप्त होगीं।

ॐ अरिहंत सिद्ध आयरिय उवज्झाय सव्व साहू सव्व धम्म तित्थयराणं ॐ नमो भगवईएसुय देवयाणं सांति देवयाणं सव्व पवयणं दंसणहं दिशा पालाणं पंच लोग पालाणं।

मंत्र– ॐ ह्रीं अरिहंत देवं नमः।

मंदिर में बैठकर १०८ बार जाप्य करें सर्व कार्य सिद्ध होवे। विजय होवे।

मंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आरियाणं ॐ णमो उव्वझायाणं ॐ णमो लोए सव्व साहुणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का जाप्य प्रतिदिन १०८ दिन करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं।

मंत्र–ॐ णमो विपरीत-कज्ज-विमुखाणं सिद्धाणं णमो।

विधि इस मंत्र को जपने से सब कार्यों में सिद्धि मिलती है।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड स्वामिने नमः।

विधि– २१ दिन में सवा लाख जाप्य करने से कार्य सिद्ध होता है।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पद्मावती देव्यै नमः।

विधि– २१ हजार मंत्र विधि पूर्वक करने से कार्य सिद्ध हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा नमः।

विधि– २ लाख मंत्र जाप्य करने से कठिन से कठिन कार्य की सिद्धि होती है।

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असिआउसा नमः।

विधि– १२५००० जाप्य करने से सभी कार्य सिद्ध होते धूप खेकर के जाप्य करें। चिन्तित कार्य सिद्ध होवे।

मंत्र– **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ ऐं अर्हं नमः।**

विधि– ३ लाख मंत्र जाप्य करें तो कार्य करें।

मनोरथ पूरक मंत्र

मंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्व साहूणं ॐ णमो दंशणाय ॐ णमो णाणय ॐ णमो चारिताय ॐ ह्रीं त्रिलोक्य वंशकरी ह्रीं स्वाहा।

सभी मनोरथ को पूर्ण करने वाला है। इस मंत्र से जल मंत्रित कर पिलाने से अनेक प्रकार के रोग शान्त हो जाते हैं। २१ नमक की डली मंत्र कर रोगी के ऊपर से उतार कर पानी में डालने से सभी प्रकार की पीड़ा दूर होती है।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं असि आउसा चुलु २ हुलु२ मुलु २ मे कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र को चमेली की २४ हजार पुष्पों पर जाप्य करने से इष्ट कार्य की सिद्धि होती है।

मंत्र– **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं ब्लूँ अर्हं नमः।**

इस मंत्र का भक्ति पूर्वक जाप्य करने से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं।

मंत्र– **ॐ असि आ उ सा नमः।**

विधि– ब्रह्मचर्य पूर्वक सवालक्ष जाप देने से सिद्धि।

मंत्र– **ॐ धणु धणु महाधणु स्वाहा।**

विधि– ब्रह्मचर्य पूर्वक सवालक्ष जाप देने से सिद्धि।

मंत्र– ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं श्रीं क्लीं नमः

क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः स्वाहा

विधि– श्वेत पुष्प से २४ हजार जाप देवें। जाप देते समय बायें ओर धूप और दाहिनी ओर दीप रखें।

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः।

विधि– सवा लाख जाप से सिद्ध होता है।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः।

विधि– त्रिकरण शुद्धि से जपना चाहिए।

ॐ ह्रीं नमः।

इस मंत्र का पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा के दक्षिण बाहु के समीप पद्मासन से बैठकर दो हजार जप करने से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

कार्य साधक मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अरहंताणं हम्ल्व्र्यूं ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः असि आ उसा मम् चिंतित कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

दश लाख जाप्य कर सिद्ध करें।

मंत्र– ॐ नमो भयवदो वड्ढमाण रिसस्स जस्स चक्कं जलं तं गच्छई आयासं पायाणं लोयाणं भूयाणं जये वा विवादे वा रणंगणे

वा रायंगणे वा थंमणे वा मोहेण वा सव्व जीव सत्ताणं अपराजितो होदू मम् रक्ष रक्ष असिआउसा अर्हं ह्रीं स्वाहा।

दस हजार मंत्र जाप्य करने से सिद्धि होती है। इस मंत्र के जाप्य से यश, आयु, विद्या, धान्य, धन सौभाग्य तथा ग्रहों की शान्ति होती है। अशुभ का नाश तथा शुभ की प्राप्ति होती है।

सर्प बिच्छू नाशक मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं गरुड ह्रीं हं सा: सर्व सर्प जातिनाम मुख बंधन कुरू कुरू स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के ७ बार जाप करे तो एक वर्ष तक सर्प का उपसर्ग नहीं होता।

मंत्र– ॐ नमो भगवते पार्श्वतीर्थंकराय हंस: महाहंस: पदम हंस: शिव हंस: कोहंस: झरेज्ज हंस: पक्षि महा विषं भक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को धीरे धीरे जपने से सर्प विष अपने स्थान से इस प्रकार दूर होता है। कि सर्प के काट लेने पर भी विष नहीं चढता। यह मंत्र गंडमाला, विषबेल नासूर, दुष्ट ब्रण को भी नष्ट करता है। और बहुत प्रभावशाली है।

मंत्र– ॐ नमो ॐ ह्रीं गरुड कृष्ण वाहनं सर्प अहारं विष हरं विष निरविष कुरू २ स्वाहा।

विधि– २१ बार पानी मंत्र कर पिलावे तो जहर उतरे।

मेश राशी के सूर्य में १ मसूर का दाना और २ नीम के पत्ते साथ खाने से साल भर तक सर्प का भय नही रहता।

निद्रा आने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं निशोज्ये स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से जल १०८ बार मंत्रित कर मुंह पर छिड़के तो नींद आवे।

मंत्र— ॐ निल नित्यनि निल स्वाहा।

विधि— इस मंत्र को आंख पर हाथ रख कर १०८ बार पढ़े तो निद्रा आवे।

रोग दूर करने का मंत्र

ॐ नमो भगवते पार्श्वचन्द्राय अष्ट महा सिद्धि कराय लूति ज्वाला गर्द्दभ सर्व शूल मूल व्याधि दुष्टः ब्रण विनाशाय अनेक विधि विष संहाराय छिन्द २ भिन्द २ ज्वाला ग्रह संतापं हर २ रण २ रूण २ सिलि २ चिलि २ मिलि २ कलि २ ॐ ह्रां हं सः। ॐ ह्रूं हं सः। ॐ ह्रौं हं सः। ॐ ह्रः हं सः। ग्लौं क्ष्म ठः ठः स्वाहा।

विधि— सर्व व्याधि को हरने वाला एवं कष्टों से मुक्ति देने वाला। १०८ वार जाप्य करें।

मंत्र— ॐ नमो जल्लोसही पत्ताणं। सव्वोसहिपत्ताणं स्वाहा।

विधि— इस मंत्र को १०८ बार जपे तो रोग जाय।

फौजदारी मुकदमें में जीत का मंत्र

मंत्र— ॐ नमो सिद्धाणं स्वाहा।

विधि— रोज ११५ जाप करे।

मंत्र— ॐ श्री वीराय नमः।

विधि— इस मंत्र का २४ घंटे जाप करे।

मंत्र— ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं अमुकं मम् वश्यं कुरू २ स्वाहा।

विधि— कपडें पर २१ बार पढ़ कर गांठ लगाकर पास रखे कोर्ट में मुकदमें की जीत हो।

वचन चातुर्य

मंत्र– ॐ नमो सवराणं हिल २ मिलि २ वाचाय स्वाहा।

विधि– जो महानुभाव प्रवचन देनेवाला हो वह इस मंत्र को १०८ बार पढ़े। तो वचन सिद्धि प्राप्त होती है।

मंत्र–ॐ ब्रह्मी ब्रह्मपुत्री सरस्वती मम वचन सिद्धिं कुरू २ स्वाहा।

विधि– प्रातः १०८ बार जपे तो विद्या आवे।

वाद विवाद में जीतने का मंत्र

मंत्र– ॐ हं सः ओं ऐं श्रीं असिआउसा नमः।

विधि– सवा लाख जाप्य कर सिद्ध करें पीछे १०८ बार जाप्य कर जावे तो जीत होगी।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा अनाहत विद्यायै अर्हं नमः।

विधि– यह मंत्र दिन में ३ बार जाप्य करें तो सर्वत्र जय हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अमुकं... दुष्ट साधय २ असिआउसा नमः।

विधि– २१ दिन तक १०८ बार मंत्र का जाप्य करें तो शत्रु का भय दूर हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं हन् हन् लूं कां दह दह ॐ बंकार हन् हन् ॐ वं हन् हन् ॐ ह्रीं ठ ठ स्वाहा।

विधि– १. गोलोचन को २१ बार मंत्र जाप कर तिलक करें सभी वश हो।

२. मस्तक पर हल्दी का तिलक करे तो स्त्री वश हो।

३. हाथ में करे तो सिंह, व्याघ्र का भय न लागे।

४. जंघा में करे तो सांप पास नही आवे।

५. पग में करे तो चोर वश हो।

६. अंगुष्ट में करे तो सर्व विद्या आवे।

७. जिह्वा में करे तो संगीत विद्या आवे ।

शुभ शकुन होने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं शासन देवते भगवति सिद्धाय सत्यं दर्शय २ कथय २ स्वाहा।

विधि– मार्ग जाता अपशकुन होय तो पग ४ अथवा ५ पग पीछे जाकर खड़ा हो पुनः यात्रा शुरु करें।

शुभाशुभ सूचना

मंत्र– ॐ ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं नमः।

विधि– १२००० जाप्य करने से सिद्ध होता है। शुक्रवार के दिन धरणेन्द्र पद्मावती सहित पार्श्वनाथ भगवान के समक्ष जाप्य करने से स्वप्न में शुभाशुभ की सूचना मिलती है।

मंत्र–ॐ णमो अरिहऊ भगवऊ बाहुबलिस्स पणसमणस्स अमले विमले णिमलणाण पयासणि।

विधि– १०८ बार जपे।

मंत्र– ॐ णमो सच्चम भासिई अरिहा सच्चम भासई केवलिए सणं सच्चवेयणेण सव्वं सच्चं होउ मे स्वाहा।

विधि– १०८ बार जपें।

मंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं णमो अरहंते भगवते वृषभजिनेन्द्राय

गोमुख चक्रेश्वर्यार्चित पादारविंदाय, अनंतज्ञानदर्शनवीर्य सुखात्मकाय ह्रीं श्रीं अर्हं स्वाहा।

विधि- १०८ बार जपें।

स्वप्न फल

मंत्र- ॐ ह्रीं स्वप्ने चक्रेश्वरी! मम कर्णे अवतर २ सत्य वद वद स्वाहा।

विधि- इस मंत्र के जाप १०८ बार करे।

मंत्र- ॐ ह्रीं ॐ श्री चक्रेश्वरी मम् रक्षा कुरू २ ह्रीं अरहंताणं सिद्धाणं सूरीणं उवज्झायाणं साहूणं मम् ऋद्धिं वृद्धिं समीद्धितं कुरू २ स्वाहा।

विधि- नित्य १०८ बार जाप्य करें तो धन धान्य वृद्धि हो।

मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्वीं स्वाहा।

विधि- यह मंत्र किसी मुकदमें में या चिन्ता में शुभा शुभ के जानने के लिये रात को मस्तक पर चंदन लगाकर और चंदन सूख जाने पर १०८ बार यह मंत्र पढ़कर सो जावे। जैसा कुछ होनहार हो वह स्वपन में मालूम हो।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चक्रेश्वरी मम् रक्षां कुरू २ स्वाहा।

विधि- पांच माला सोते समय नित्य जाप्य करें।

मेघ आगमन मंत्र

मंत्र- ॐ नमो भगवते जलदेवते प्रत्यक्षं भव मेघं ध्रुवं आकर्षय ३ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के १०००० जाप करें सिद्ध हो। कार्य बेला के समय २००० बार स्मरण करें। सफेद वस्त्र पहिने। भूमि शुद्ध करके उत्तर दिशा मुख होय धूप खेता रहे और जाप करता जावे। ॐ जल देवते नमः। यह मंत्र अच्छे मोटे कागज पर लिखे और उस पर सरसों रखे। तो मेघ आकर्षण हो।

मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं मेघं आनय २ मेघं मोचय २ स्वाहा।

विधिः स्नान कर सफेद वस्त्र पहिन कर सरसों को १०८ बार मंत्र से मंत्रित कर आकाश की तरफ फैकें और कागज पर "ॐ जल देवते नमः" लिख कर रखे और धूप खेते जावें।

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं क्लीं मेघं आनय २ मेघं मोचय २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से १०८ बार मंत्रित कर सफेद सरसों ऊपर फैंके। मेघ आने के पहिले इस मंत्र के सवा लाख जाप करे।

मंत्र– ॐ नमो भगवते जल देवते प्रत्यक्षं भूवेद्रतं।

विधि– इस मंत्र के १००००० जाप करे तो मेघ आवे।

मंत्र– ॐ नमो ह्म्ल्व्र्यूं मेघ कुमाराय ॐ ह्रीं श्रीं नमो स्म्ल्व्र्यूं मेघ कुमाराय वृष्टिं कुरू २ ह्रीं संवौषट्।

विधि– इस मंत्र के २१००० जाप करे तो वृष्टि हो।

मंत्र– ॐ नमो आगास गमण ज्रौं स्वाहा।

विधिः २४ दिन भोजन बिना नमक के करें। मंत्र २४९ बार जाप्य करें।

वस्तु बढ़ोतरी का मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवते श्री गौतमाय सिद्धि २ वृद्धि-२ लब्धि लब्धि निधानाय मम् गृहे अवतर २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से चावल २१ बार या १०८ मंत्रित कर रखे तो वस्तु बढ़े। पवित्र होकर मंत्र जाप करे।

मंत्र– ॐ नमो अर्हं ह्रां ह्रीं श्रुतदेवते अस्मिन् गुटकां मध्याम् आगच्छ २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से १०८ बार चांवल मंत्रित करें। जहां रखे वहां अटूट भण्डार हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लूं ह्रीं नमः।

विधि– १०८ बार सुगंध, फल, फूल मंत्रित करें। अक्षत जीमणवार की वस्तु में रख देंवे चीज अटूट होती है।

मंत्र– ॐ नमो गोमयस्वामी भगवद ऋद्धि समी अक्खीण समी आण २ भरि २ पुरि २ कुरू २ ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि– २१ बार या १०८ बार मंत्र से सुपारी चावल आदि जिस वस्तु में डाले मंत्र से मंत्रित कर भंडार में रखे। मंत्र जाप्य करते समय दीपक जलावें, धूप खेवें। शुद्ध वस्त्र पहिन कर एक आदमी भंडार के भीतर जावे।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अन्नपूर्णे स्वाहा। कामाक्षी, कामरूपी रक्तनयनी, सिरखेदनी, जगत्रयशोभित आगच्छता परमेश्वरीं क्लीं नमः।

विधि– अखंड चावलों को केशर से रंगकर उन पर १ लाख मंत्रों का जाप करके उन्हें भण्डार में रखें और नीचे जो मंत्र बताया है उसे भी रखे।

मंत्र– ॐ ह्रीं अप्रतिचक्रे फट् विचझक्राय क्षां क्षीं स्वाहा।

मूठ मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरू कूं आकाश की देवी पाताल का नाग चल २ आज्ञा वीर बेताल नहीं चाले तो तेतीस कोड देवता की आण चौसठ योगनी की आण बाचा छांडि कुबाचा करे तो तोतिला चमारी की कूंडी मे पडै मेरी भक्ती गुरू की शक्ती फुरो मंत्र इश्वरो वाचा।

मूठ उतारने का मंत्र

अट फेरूं पट फैरू चौसठ योगिनी पांय पडूं नो सौ वीर फेरूं चक्र पर चक्र फैरूं चौसठ योगिनी आगे लगान ईश्वर की कूंचीं ब्रह्मा का ताला मूठ अपूठी नहीं फिरे तो जती हणवन्त वीर इस पिण्ड का रखवाला गुरू की शक्ती मेरी भक्ती चलो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि: इस मंत्र से उड़द मंत्र कर उल्टा जावे, और धूप खेवे तो मूठ उल्टी फिरे।

गौतम गणधर मंत्र

मंत्र– ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भगवान सर्व लब्धि सम्पन्न इन्द्र भूति गौतम गणधराय सह सर्व परिकर देव देवीभ्यः ऐं सरस्वत्यै क्लीं महालक्ष्मी सदा सहाय ऋद्धिं वृद्धिं कुरू २ नमः स्वाहाः। ह्रीं स्वाहाः।

अग्निशमन मंत्र

मंत्र– ॐ नमो ॐ अर्हं असिआउसा णमो अरहंताणं नमः।

विधि– इस मंत्र से पानी चुल्लू में लेकर १०८ बार मंत्र के और अग्नी में आड़ी लीक दीजे अग्नी शमन हो।

पुत्र प्राप्त, सुख प्रसव मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं पुत्र सुख प्राप्ताय श्री आदि जिनेन्द्राय नमः।

विधि– इस मंत्र की रोजाना एक माला फेरे और प्रति सोमवार पांच बादाम चढ़ावे।

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः फट् स्वाहा काल क्षप्यते स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से तेल मंत्रित कर नाभि पर लेप करे।

प्रसूति संकट निवारक मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंड स्वामिन्.......... अमुकस्य गर्भं मुंच, मुंच स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से तेल मंत्रित कर लगाने से सुख से प्रसूति होगी।

मंत्र– ॐ ह्रीं स्त्री रोग विनाशनाय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः।

विधि– प्रतिदिन ७ माला जाप जपें।

शीघ्र प्रसूति

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः.......... अमुक्या गर्भ मुंच गर्भ मुंच स्वाहा।

विधि– १००८ बार मंत्र जाप्य करें।

भय नाशक

मंत्र– ॐ णमो सिद्धाणं।

विधि– दीपावली के दिन रात्रि के समय १०८ बार जपे।

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं नमः क्षीं स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विजये अर्हं नमः।

राज्य भय निवारक मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं नमः क्षीं स्वाहा।

विधि– प्रथम एक बार णमोकार जपकर अनंतर उपरोक्त मंत्र की एक माला जाप देना। इस प्रकार २१ दिन जाप देना।

चोर भय नाशक

ॐ णमो अरिहताणं धणु धणु महाधणु स्वाहा। अथवा

ॐ णमो अरिहंताणं अभिणि मोहिणि मोहय २ स्वाहा।

विधि– विधि पूर्वक कोई भी एक मंत्र की जाप करें।

भय दूर करने का मंत्र

मंत्र– **ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं। ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं।**
ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं। ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं।

विधि– इस मंत्र का जाप्य करने से भय दूर हो जावे।

यंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं अभिणि मोहिणी मोहय २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को रास्ते चलते चलते स्मरण करे। तो रास्ते में चोर नहीं मिले।

दोष विचार

मंत्र– ॐ ह्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय अमुका के पिण्ड अवतर अवतर स्वाहा।

विधि– १०८ सफेद सरसों लेकर एक एक सरसों पर यह मंत्र पढ़े और पानी में डालते जावे। एक दाना तिरे तो भूत दोष। दो दाने तिरें तो क्षेत्रपाल दोष। ३ तिरें तो शाकिनी दोष। ४ तिरें तो व्यंतर दोष। ५ तिरें तो जल देवी दोष। ६ तिरें तो आकाश देवी दोष। ७ तिरें तो बीजासण दोष। ८ तिरे तो कुल देवता का दोष। और एक भी न तिरे तो कर्म दोष जानये।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं असि आउसा चुलु २ हुलु २ मुलु २ इच्छियं मे कुरू २ स्वाहा।

विधि: मंत्र जप के समय धूप जला कर खेवे तथा २४००० हजार मंत्र जाप्य करें। चौवीस हजार फलों पर मंत्र जाप करें। एक फल पर एक मंत्र जपे। तो घर में पुत्र प्राप्ति। इस के अलावा धन, स्त्री, पुत्र, मकान आदि सम्पदा प्राप्त हो।

घड़ा चलाणे का मंत्र

मंत्र– ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्र वेदनी अचल चलाई चलाई घट घट मे भ्रमई २ स्वाहा।

विधि: यह मंत्र चन्दन से नागर बेल के पान पर लिखे। कलश ऊपर मनुष्य बैठाये। घड़ा चले।

वी	ॐ	वं
दे	चक्रेश्वरी	च
री	स्व	क

शुद्ध होय चांवल पढ़ पढ़ कर कलश पर मारे। कलश फिरे। सवा करोड़ मंत्र जाप करें सिद्ध करें।

चोर पकड़ने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं फट् स्वाहा।

विधि– शनिवार की शाम को चांवलों को इस मंत्र से २१ बार मंत्र कर खिलावे। चोर कें मुंह से सही बात कहता है।

मंत्र– ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी चक्र धारणी चक्र वेगेन करोति भ्रमय २ चोर गृहाणं २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से २१ बार चांवल मंत्र कर जहां से वस्तु गई हो वहाँ के लोगों को चावल खाने को देवें। चोर के मुंह से रक्त पडे।

मंत्र– ॐ नमो इन्द्र अग्नि मुखबंधो ॐ सारा अग्नि मुखबंधों स्वाहा।

विधि– जितने आदमियों का भ्रम हो उतनी ही जनों के नाम की चिट्ठी लिख २१ दफा इस मंत्र से एक एक चिट्ठी मंत्र कर आग में डाले। चोर के नाम की चिट्ठी जलेगी नहीं।

तंत्र

रविवार की रात्रि पूर्णमासी हो उस रात काजल उपाड़े और इस काजल से अंजन करे। तो अद्रष्ट हो। तथा गढ़ा हुआ धन देखे।

देव दर्शन मंत्र

मंत्र– ॐ क्लीं ठः ठः नमः।

विधि– इस मंत्र के ५००० जाप्य करने से देव दर्शन होते है।

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असि आउसा मध्य लोक संबन्धित चतुः शताष्ट पंचाशत् श्री जिन चैत्यालयेभ्यो नमः।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप सम्बन्धी जिन चैत्य चैत्यालयभ्यो नमः स्वाहा।

विधि– अष्टाहिनका पर्व में आठ दिनों में ८० माला जपनी चाहिए।

अंगूठी तांबा की पेट ठीक करने की

मंत्र– ॐ नमो आकाश पाताल धरी बल धरी नल धरणी वेग मंत्र लाय गुरू की शक्ति......वाचा।

विधि– एक तोले तांबे की तीन आंटे (गोल) की अंगूठी बनवावें उसे इस मंत्र से २१ दफा मंत्रित कर उंगली में पहिने तो पेट ठीक रहे।

ज्वाला मालिनी मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं ज्वाला मालन्यै ह्रों आं क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं नमः स्वाहा।

विधि– १०८ लाल पुष्प से जाप्य करे। ज्वाला मालिनी यंत्र के आगे आम आदि फल चढ़ावे। चन्द्र प्रभु की पूजा करे। पंचामृत अभिषेक करे। सिंदूर से २१ साथिये व १ त्रिशूल दीवाल में करना तो शत्रुओं का व्यंतर देवों का असर दूर हो।

लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं नमः।

विधि– इस मंत्र को प्रातः काल जपे तो लक्ष्मी लाभ हो।

मंत्र– ॐ नमो भगवउ गोयमस्सः बुद्धस्स अक्षीण महाणस्स भगवान भास्कर ह्रीं श्री आनय २ पूरय २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के १२०० जाप दीपावली के दिन चावलों पर करना।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं आं क्रों ह्रीं उचिष्ट चांडालिनी ह्रीं नमः।

विधि– भोजन करते समय इस मंत्र के जाप करे। तो द्रव्य लाभ हो।

मंत्र– ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम् गृहे धनं चिन्ता दूर करोति स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड स्वामिने नमः।

विधि– इस मंत्र को २१ दिन में १००००० जाप करे। फिर नित्य एक माला फेरे। तो द्ररिद्रता दूर कर कार्य सिद्धि, लक्ष्मी प्राप्ति, कराने वाला मंत्र है।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं महालक्ष्मी मम् गृहे आह्वाननं तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा ॐ।

विधि– इस मंत्र को १००८ बार कुंकुम से लिखे तो लाभ हो।

मंत्र– ॐ ह्लीं वरे सुवरे असिआउसा नमः।

मंत्र– ॐ णमो भगवती पद्म पद्मावती ॐ ह्लीं श्रीं पूर्वाय, पश्चिमाय, उत्तराय, दक्षिणाय सर्व अनावश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि विधि पूर्वक १०८ बार जपकर १० फूंक दे)

मंत्र– ॐ ह्लीं ला ह्वः पः लक्ष्मीम् झ्रीं क्ष्वीं हूँः पार्श्वनाथाय नमः।

विधि– सर्व कार्य सिद्धि के लिये १२००० हजार जाप फूलों से करे तो लक्ष्मी लाभ हो शाकिनी दोष दूर हो। इस मंत्र के स्मरण से सभी प्रकार का ज्वर मिटे, तीन लाख जाप करने से महा लक्ष्मी की प्राप्ति हो ७००००० सात लाख जाप करने से मन की इच्छा पूरी हो।

मंत्र– ॐ नमो भगवते चन्द्र प्रभाय महिताय चन्द्र कीर्ति मुख रंजनी स्वाहा।

विधि– चन्द्र प्रभु भगवान के सामने १०००० दस हजार जाप करे। यह मंत्र अनेक सिद्धि का दाता है। खोटे ग्रह का उपद्रव नहीं होता।

मंत्र– अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उवज्झाय, सव्व साहू।

विधि– इस मंत्र को नित्य जपे द्रव्य की प्राप्ति हो।

मंत्र–ॐ णमो अरहंताणं, सिद्धाणं, सूरीणं, आइरियाणं, उवज्झायाणं, साहूणं, मम्ऋद्धिं वृद्धिं संमीतं कुरू २ स्वाहा।

विधि– यह मंत्र स्नान कर पवित्र हो। प्रभात मध्याहन् सांयकाल ३ माला जाप करें धन लाभ हो।

मंत्र– ॐ नमो भगवयगोयमस्सामि। सिद्धस्स बुद्धस्स। अक्षीण महाणस्स। लब्धि संपन्नस। मम गृहे लक्ष्मी आणय २ पूरय २ ॐ ह्लीं श्रीं भस्करी अवतर २ ठः ३ स्वाहा।

विधि– सवा लाख जाप दीपमालिका के समय करे। तेला उपवास से करें। पारणा के दिन चावलों की खीर का भोजन करें।

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रूं नमो अरहंताणं ह्रां नमः।

विधि– नित्य एकान्त में १०८ बार जपें तो सर्व लक्ष्मी आवे।

मंत्र– ॐ नमो इंद्र भूति गणधरस्य सर्व लब्धि करस्य मम् ऋद्धिं, वृद्धिं, कुरू २ स्वाहा।

विधि– काले रंग से यंत्र बना कर। आग्नेय दिशा की ओर मुंह कर १०८ बार जपे।

मंत्र– ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्रौं ह्रौं नमः।

विधि– पीली माला से रोज जपे। पीले वस्त्र ५ हजार माला। सर्व सिद्धि सर्व अभिलाषा पूर्ण करें।

मंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा।

विधि– पुष्य नक्षत्र पर एकांत में जाप शुरू करना। वस्त्र, आसन, माला पीली होनी चाहिए। सवा लाख जाप करना तो मंत्र सिद्ध होगा। एक भुक्ति, भूमि शयन, ब्रह्मचर्य पालन, सप्त व्यसन त्याग तथा पांच पापों का त्याग होना चाहिए। दीपक जलता रहे। तथा धूप भी स्वाहा बोलते समय चढ़ाते रहना, सवा लक्ष जाप्य पूर्ण होने पर भी रोजाना १०८ बार मंत्र जाप देते रहना चाहिए। धन वृद्धि होती है।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम गृहे धनं पूरय पूरय चिन्तां दूरय दूरय स्वाहा।

(१०८ बार जाप)

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा।

(१४ दिन में १/१ माला) जाप

मंत्र–ॐ ह्रीं लक्ष्मी सुख विधायकाय श्री महावीराय नमः।

विधि– विधिपूर्वक सवा लाख जप करें।

मंत्र– ॐ नाना लक्ष्मी विभूति विराजमानाय श्री वृषभदेवाय नमः।

विधि– विधि पूर्वक सवा लाख जप करें।

मंत्र– ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं लक्ष्मी कलिकुंडस्वामिने मम् आरोग्यं ऐश्वर्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– प्रतिदिन १०८ बार जाप करें।

मंत्र– ॐ सकलानिः कला अशरीरा जिना सिद्धा।

विधि– इस मंत्र को जपने से सुख व धन प्राप्त होता है।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं ॐ घन्टाकर्ण महावीर लक्ष्मी पूरय पूरय सुख सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– धन तेरस की रात को ४० माला चौदस को ४२ माला और दिवाली को ४३ माला उत्तर दिशा की ओर मुख करके लाल माला से लाल वस्त्र पहन कर जाप करें तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं।

मंत्र– ॐ ह्रीं ह्रः णमो अरहंताणं ह्रीं नमः।

इस मंत्र का तीन बार प्रतिदिन जाप्य करें।

मंत्र– ॐ वार सुवेर असिआउसा नमः।

प्रतिदिन १०८ बार जाप्य करें १०८ दिन।

मंत्र– ॐ ह्रीं ह्रूं णमो अरहंताणं ह्रूं नमः।

६५ दिन प्रातः एवं सायंकाल जाप्य करें।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः।

४८ दिन जाप्य करने से धन धान्य की वृद्धि होती है।

धन धान्य वृद्धि

मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं मम् अक्खय ऋद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से २७ बार अन्न को मंत्र करके खाने से आठवें दिन लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

इसी मंत्र को रात्रि को १०८ बार जपने से लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

मंत्र- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा पद्मप्रभ जिनेन्द्राय सर्व शांन्ति कुरु कुरु स्वाहा।

विधि- प्रतिदिन १०८ बार जाप करें।

मंत्र- ॐ ह्रां ह्रौं श्रूं ह्रः कलिकुंड स्वामिने जये विजये अप्रतिचक्रे अर्थ सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि- यह मंत्र भस्म में लिखकर द्रव्य (पैसे के भंडार) में रखे तो धन बढ़े बिक्री होवें।

मंत्र- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा स्वाहा।

विधि- विधि युक्त सवा लाख जाप देने से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

मंत्र- ॐ ह्रीं ला हः यः लक्ष्मी क्ष्वीं क्ष्वीं कुरु कुरु स्वाहा।

मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं णमो णमो अरिहंताणं ह्रीं नमः।

विधि- प्रतिदिन १०८ बार जपे।

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं श्रिये धनकारि धान्यकारि ह्रीं श्रीं कलिकुंड स्वामिने- मम् वांछित कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– गतिदिन १०८ बार जपे।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंड दंड स्वामिन् आगच्छ आगच्छ आत्ममंत्रादन् रक्ष रक्ष परमंत्रान् छिंद–२ मम् सर्व समीहितं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।

विधि– १२ हजार जाप सफेद तथा लाल फूलों से देनी है।

मंत्र– ॐ पद्मावती पद्मे जंभे मोहे स्तंभे स्तंभनि किमन्ने नित्ये भद्वद्रवे स्वाहा।

विधि– एक लाख आठ मंत्र जाप्य कर दशांश होम आहुति दे। तो धन लाभ होगा।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्म्यै नमः।

लक्ष्मी प्राप्ति की अन्य विधि

ॐ णमो रत्नत्रयाय ॐ नमो भगवते वज्रधर सागरनिर्घोषाय तथा गतायार्हते सम्यक् संबुद्धाय तद्यथा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीसुरुपे सुवदने भद्रे सुभद्रे भद्रवति मंगले सुमंगले मंगलवति अग्रले अग्रलवति चंद्रे सुचंद्रवति अले अचले अचपले उद्‌वातिनि उद्भेदिनि उच्छेदिनि उद्‌द्योतिनि शिष्यवति धनवति धान्यवति उद्योतवति श्रीमति प्रभवति अमले विमले निर्मले रुरमे सुरूपे विमले अर्चनस्ते अतनस्ते वितनस्ते अनुनस्ते अवनतहस्ते विश्वकेशि विश्वनिशि विश्वनंशि विश्वरूपिणि विश्वनखि विश्वशिरे विशुद्ध शीले विगूहनीये विशुद्धनीये उत्तरे अनुत्तरे अंकुरे मंकुरे नंकुरे प्रभंकुरे ररमे रिरिमे रुरूमे खखमे खिखिमे खुखुमे विधमे विधिमे वुधुमे ततरे २ तुत्रे २ तर २ तत्र २ तारय २ मां सर्व सत्वांश्च वज्रे २ वज्रगर्भे वज्रोपमे वज्रिणि वज्रवति उक्के बुक्के तुक्के दुक्के दक्के धक्के टक्के वरक्के आवर्तिनि निवर्तिनि प्रवर्तिनि निवर्षिणि प्रवर्षिणि वर्द्धनि प्रवर्द्धनि निष्पादिनि वज्रधर सागर

निर्घोषं तथागत मनुस्मर २ स्मर २ सर्व तथागत सत्यमनुस्मर २ संघ सत्य मनुस्मर २ अनिहारि २ तप २ रुढ २ पूर २ पूरय २ भगवति वसुधारे मम सपिरवारस्य सर्वेषां च सत्वानां च भर २ भरणि २ शांतिमति जयमति सुमहामति सुमंगलवति पिंगलमति सुभद्रमति शुभमति जयमति चंद्रमति आगच्छ २ संयम मनुस्मर स्वाहा आधार मनुस्मर स्वाहा आवरण मनुस्मर स्वाहा प्रभाव मनुस्मर स्वाहा स्वभाव मनुस्मर स्वाहा धृति मनुस्मर स्वाहा सर्व तथा गतानां विनय मनुस्मर स्वाहा ह्रदय मनुस्मर स्वाहा। उपह्रदय मनुस्मर स्वाहा जय मनुस्मर स्वाहा विजय मनुस्मर स्वाहा सर्व सत्य विजय मनुस्मर स्वाहा सर्व तथागत विजय मनुस्मर स्वाहा। ॐ श्रीं वसुमुखी स्वाहा ॐ श्रीं वसु श्री स्वाहा ॐ श्रीं वसुश्रिये स्वाहा ॐ वसुश्रियै स्वाहा ॐ वसुमति स्वाहा ॐ वमुमति श्रिये स्वाहा ॐ वश्वे स्वाहा ॐ वसुदे स्वाहा ॐ वसुधारे स्वाहा ॐ धरणि धारिणि स्वाहा।

ॐ समये सौमये समयंकरि महासमये स्वाहा। ॐ श्रिये स्वाहा। ॐ श्री करि स्वाहा ॐ धनकरि स्वाहा ॐ धान्य करि स्वाहा।

मूल मंत्र

मंत्र– ॐ श्रिये श्रीकरि धनकरि धान्य करि रत्न वर्षिणि स्वाहा।

साध्य मंत्र

मंत्र– ॐ वसुधारे स्वाहा। ह्रदयं। ॐ लक्ष्मी करि स्वाहा। उपह्रदय ॐ लक्ष्मी भूतल निवासिन्यै स्वाहा, तद्यथे दं ॐ यान पात्रवहे स्वाहा, मादूरगामिनि अनुत्पन्नानां द्रव्याणामुत्पादिनी उत्पन्नानां द्रव्यानां वृर्द्धि करि उं टिलि २ टेलि २ इभ २ आगच्छ २ भगवति वा विलंवय मनोरथं मे पूरय २ दशेभ्यो दिग्भ्यो यथोदक धाराभिः परि पूरयंति महीं तथा तमांसि भास्करो रश्मिना विदारयंति विध्यापयते चिरंतनानि यथा शशि शीतांशुना निष्पादत्यौषधिः इंद्रो वैभवस्व

तश्चैव वरुणो धनदोपि च मनोनुगामिनीं सिद्धिं चिन्तयंति सदानृणां तथा मानिय यथा कामं चिंतितं सततं मम प्रयच्छंतु प्रसिद्धयंतु सर्व मंत्र पदानिहि तद्यथा खुट २ खट २ खिटि २ खुटु २ सुरु २ मुरु २ मुंच २ मरूंच २ पर्पिणि तर्जिणि कामानि देहि २ दापय २ उतिष्ठ २ हिरण्यं स्वर्ण प्रदापय २ स्वाहा अन्नपानाय स्वाहा वसुनिपातिनि स्वाहा गौ स्वाहा सुरभये स्वाहा वसुवे स्वाहा वसुपतिये स्वाहा इंद्राय स्वाहा, यमाय स्वाहा वरुणाय स्वाहा वैश्रमणाय स्वाहा दिग्भ्यो विदिग्भ्यः स्वाहा।

एतद भगवत्युत्पादयंतु मे काक्षां विरहं अनुमोदंयंतु इमे मंत्र पदाः ॐ ह्रीं ह्रीं पद्येहि भगवति धनं ददाय स्वाहा एतद् भगवत्या आर्य वसुधाराया ह्रदय महापाप कारिणोपि सुद्धयंति पुरुष प्रमाणश्च भोगान् ददाति ईप्सितं च मनोरथं पूरि पूरयंति सर्वकामदुहान् यान् कामान् कामयंति तां तस्तानीप्सिताश्च परि पूरयंति।

मूल विद्या ॐ णमो रत्नत्रयाय नमोदेवि धनद दुहिते वसुधारे वसुधारा धन धारां पातय २ धनेश्वरि धनदे रत्नदे हेमधन रत्न सागर महा निधाने निधान कोटि शत सहस्त्र परिवृते एह्येहि भगवति प्रविश्य मत्पुरं मद्भवनं महा धनधान्यधारां पातय २ कुरु २ ॐ ह्रीं त्रुट् कैलाश वासिन्यै स्वाहा। महाविद्या।

ॐ वसुधारे सर्वार्थ साधने महावृष्टि निपातिनि वसु स्वाहा (मूल ह्रदयं) ॐ वसुधारे सर्वार्थ साधनि साधय २ उद्धर २ रक्ष २ सर्वार्थ निधि यंत्रं ववटट २ दंड स्वाहा (परम ह्रदयं)

ॐ णमो भगवति आर्य लेवडिके यथा जीवसंरक्षिणि फलहस्ते दिव्यरूपे धनदे वरदे शुद्धे विशुद्धे शिवंकरि शांतिकरि भय नाशिनि भय दूषिणि सर्व दुष्टान् भंजय २ मोहय २ जृंभय २ स्तंभय २ मम शांतिं पुष्टिं वश्यं रक्षां च कुरु २ स्वाहा।

यह उपरोक्त वसुधरा स्तोत्र लक्ष्मी देने वाला है। इस स्तोत्र का धन-त्रयोदशी से आधी रात के बाद ४ बार उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके

पाठ करे तथा जल धारा देवे सुगन्ध धूप खेवे तो शीघ्र धन प्राप्ति होय।

मंत्र– ॐ श्रिये श्री करि धनकरि धान्य करि पुष्टि करि वृद्धि करि अविघ्न करि सर्व करि ठः ठः।

यह मंत्र एक लाख जप करने से सिद्ध होता है। जप आदि से दुःख और सब दारिद्र रोग को दूर करता है।

धन व क्रय विक्रय लाभ

मंत्र– ॐ नमो भगवउ गोयमस्स, सिद्धस्स, बुद्धस्स, अक्षीण महाणस्स अवतर अवतर स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से चावलों पर ५०० जप कर गल्ले में रखें। तो क्रय विक्रय में लाभ हो।

मंत्र– ॐ नमो भगवो गोयमस्स, सिद्धस्स, बुद्धस्स, लहस्स, अक्षीण महाणस्स भगवत् भास्करीयं ह्रां श्रीं, आनय २ पूरई २ मम वान्छितं ऋद्धिं, वृद्धिं कुरू २ स्वाहा।

विधिः अखण्ड चावल १०८ मंत्र से मंत्रित कर घृत खाण्ड में क्षेपण करें एकान्त स्थान में रखें।

मंत्र– ॐ नमो भगवते श्री गौतम स्वामिने सर्व लब्धी संपन्नाय मम सर्वाभीष्टं कुरू २ स्वाहा।

विधिः नगर में प्रवेश करते समय इस मंत्र को १०८ बार जपने से इच्छा पूर्ण होती है।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्री कलिकुण्डदंड स्वामिन् रक्ष रक्ष पर मंत्रान् छिन्द २ मम् सर्व समीहितं कुरू २ हूँ फट् स्वाहा।

विधिः सफेद व लाल फूलों से १२००० जाप करें। तो धन संपदा प्राप्त हो।

मंत्र– ॐ नमो भगवते श्री गौतमाय सिद्धिं २ बुद्धिं २ लब्धीं २ निधानाय मम् गृहे अवतर २ स्वाहा।

विधि: २१ बार या १०८ बार इस मंत्र से चांवल को मंत्रित कर गल्ले में रखे तो धन आदि बढ़ें।

मंत्र– ॐ अरहंताणं, सिद्धाणं, आइरियाणं, उवज्झायाणं, साहूणं मम् ऋद्धिं वृद्धिं समाहितं कुरू २ स्वाहा।

विधि: स्नान कर पवित्र होकर प्रातः, दोपहर सायंकाल तीनों समय यह मंत्र २१ दिन जपे तो द्रव्य लाभ हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं असिआउसा अनाहत विद्यायै अर्हं नमः।

विधि: इस मंत्र को तीन माला जाप्य करें सब जगह विजय लाभ हों।

मंत्र– ॐ ह्रीं ह्रः णमो अरहंताणं ह्रां नमः।

विधि: यह मंत्र १०८ बार जाप्य करें।

गर्भ रक्षा

मंत्र– ॐ ह्रीं भगवती भगमालिन्यै चल २ भ्रामय २ पुष्पं विकाशय विकाशय स्वाहा।

विधि: इस मंत्र से जल ७ बार मंत्र कर पिलावे तो सुख से प्रसूती हो।

मंत्र–ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय धरणेंद्र पद्मावती सहिताय अट्ठे मट्ठे शूद्र विघट् दुष्टान् भंजय २ मम् वान्छितं कुरु २ स्वाहा।

मंत्र–ॐ नमो शान्तिक शन्ति जिन नाथाय अतुल बल पराक्रमाय ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नारी सौख्यं कुरू २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से मीठा तेल २१ वार मंत्र कर स्त्री के पेट के लगाने से स्त्री कष्ट से छूटे।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं असि आउसा चुलु २ हुलु २ मुलु २ इच्छियं मे कुरु २ स्वाहा।

विधि– यह मंत्र दीप धूप जलाकर २४००० फूलों से जाप करे तो पुत्र प्राप्ति हो।

मंत्र–ॐ ह्रीं पुत्र सुखप्राप्ताय श्री आदि जिनेन्द्राय नमः।

विधि– रोज एक माला व प्रति सोमवार ५ बादाम चढ़ाना।

नारियल कल्प तेल

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्मी मम् सर्व सिद्धिं कुरू २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से नीचे लिखे यंत्र पर नारियल स्थापित कर पूजा करें तो लक्ष्मी की प्राप्ति हो।

मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिनेत्राय भगवते विश्वरूपाय सर्वयोगेश्वराय त्रैलोक्य नाथाय सर्व काम प्रदाय नमः।

विधि– ताम्रपत्र पर यह यंत्र बनावे मंत्र सहित। नारियल रखे निश्चय सर्व कार्य सिद्ध हो।

भूत, प्रेत, डाकिनी, नजर इत्यादि का झाड़ा मंत्र

मंत्र– ॐ दृष्टि विकु दृष्टि स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से २१ बार जल मंत्र कर पिलाने से नजर दोष दूर हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं चन्द्रमुखी दुष्ट व्यंतर कृत रोगोपद्रवं नाशाय ह्रीं स्वाहा।

विधि– सफेद चावल मंत्र कर घर में डाले तो दुष्ट व्यंतरों का किया हुआ रोग नाश हो।

मंत्र– ॐ नमो भगवते क्रोध रुद्राय हन २ दह २ पच २ हूँ हः सूत्रेण गृहं नाशय नाशय स्वाहा।

विधि– इस मंत्र के साथ उस व्यक्ति का नाम बोल कर ५ गांठ लगाकर बांधे तो शाकन्यादि दोष हो तो दूर हो।

मंत्र– ॐ ॐ सं सा हं महणंवा चोकी सेज पांव देई जैरे भूत प्रेत इण पिण्ड रहे: जः जः जः।

विधि– इस मंत्र से २१ बार झाडो दीजे भूत प्रेत लागयो होय तो अच्छा होय।

मंत्र– ॐ ह्रीं भूतप्रेत बाधा निवारकाय श्री पद्मप्रभु देवाय नमः।

विधि– १०८ बार जाप करें।

भूत पिशाच भय निवारक मंत्र

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो शीतलस्स अनाहत विज्झा विज्झारइ सिज्झ धम्मे भगवदो महा विज्झर महा विज्झ शीयलस्स सिवो सस्सि अणुमहि अणुमाणमो भगवदो नमो नमः स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार पानी मंत्रित कर मुख प्रक्षालन करने से सर्व प्रकार की पिशाच वृत्ति का भय नाश होता है।

मंत्र– ॐ अरहंताणं जिणाणं भगवंताणं महापभावाणं होउ नमो ॐ माई साहिं तो सव्व दुःक्खहरौ जोहि जिणाणं पभोवों पर मिट्डीणं च जैव माहण्पं संघं मि जोणु भावो अवयर उज्लं मिसोइथ।

विधि– इस मंत्र से २१ बार मंत्रित कर पिलाने से डाकिनी, भूत प्रेत आदि शान्त हो जाते हैं।

व्यंतर बाधा विनाशक मंत्र

मंत्र– ॐ णमो अर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

मंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्व साहूणं सर्वदुष्टान् स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय अंधय अंधय मूकवत् कारय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः ठः।

विधि– २१ हजार जाप देकर विधि युक्त सिद्ध करना। १०८ बार झाड़ना। मुट्ठी बांधकर मंत्र बोलना। और झाड़ा देते समय मुट्ठी खोलकर झाड़ना।

मंत्र–ॐ णमो अरिहंताणं भूतपिशाच शाकिन्यादिगणान् नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा।

विधि– १०८ बार जाप करें।

सर्व उपद्रव नाशक

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं नमः सर्व व्यंतरेद्रार्चित पाठपीठाय सर्वारिष्ट निवारणाय, क्षुद्रोपद्रव सर्वक्षामडाम विनाशनाय, परकृतमुद्रां विध्वंसनाय, सर्वदुष्टदोष शाकिनी डाकिनी निकंदनाय नमः दृष्टि दोषं नाशय नाशय स्वाहा।

सर्वज्वर और भूत पिशाच ज्वर पर मंत्र

मंत्र– ॐ नमो भगवती पद्मावती सूक्ष्मवस्त्र धारिणी पद्मसंस्थिता देवी प्रचंडदोदंडखंडित रिपुचक्रे किन्नर किंपुरुष गरुड़ गंधर्व यक्ष राक्षस भूत प्रेत पिशाच महोरग सिद्धि नागमनुपूजिते विद्याधर सेवित ह्रीं पद्मावती स्वाहा।

विधि:– इस मंत्र से सरसों को मंत्रित कर (२१ बार मंत्र पढ़कर मंत्रित कर) बाएँ हाथ में बांधे, तो सब प्रकार का ज्वर तथा भूतप्रेत-बाधा ज्वर नष्ट होते हैं।

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्वरं नाशय नाशय ॐ णमो सर्वोषधिवंताण ह्रीं नमः।

विधि– १०८ या २१ बार पानी मंत्रित करके पिलावे तो सर्व ज्वर और भूतादि पीड़ा भी जाए।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ कलिकुंड स्वामिन्! सकलकुटुंब रक्ष रक्ष भूतप्रेत विनाशनाय नमः।

मंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं भूतपिशाच शाकिन्यादि गणान् नाशय हुं फट् स्वाहा।

मंत्र– ॐ णमो भगवते पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय, आत्मचक्षु प्रेतचक्षु पिशाच चक्षु, शाकिनी-डाकिनी चक्षु, सर्वग्रह नाशाय, सर्व ज्वर नाशाय, त्रासाय त्रासाय ह्रीं नाथाय स्वाहा।

विधि:– एक हजार जप करें।

आकर्षण मंत्र

मंत्र–ॐ नमो आदि रूपाय अमुकस्य आकर्षण कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– गुरु पुष्प नक्षत्र में १२५०० जाप्य होने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध होने के बाद २१ बार किसी भी वस्तु को मंत्र कर खिलाने से आकर्षण होता है।

मंत्र– ॐ णमो अरहंताणं अरे अरणि मोहणि....... अमुकं मोहय मोहय स्वाहा।

विधि– १०८ बार जाप करें।

मंत्र– ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रिलोक महिताय सर्वजन मनोरंजनाय सर्वराजाय वशीकरणाय नमः।

विधि– प्रतिदिन १०८ बार जाप करें।

मंत्र– ॐ ह्रीं नमोऽर्हं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा।

विधि– प्रतिदिन १०८ बार जाप करें। त्रिलोक वश में हो।

वशीकरण व उच्चाटन मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं महासंमोहिनीं महा विदये मम दर्शनेन अमुकं जंभय स्तंभय मोहय मुर्छय मुर्छय आकर्षय पातय ह्रीं महा संमोहिनी ठः ठः स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को स्मरण कर ध्यान करे। तो वाक्यों की पकड आ जाती है। और सभी मोहित होते हैं।

मंत्र– ॐ ह्रीं क्लीं पद्मे पद्मावती पुरं भोजय २ राजानं शोभय २ मंत्रेण शोभय २ रूं फट् स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का जाप १२००० रक्त कनेर के फूल और रक्त अक्षत से जाप करे तो वशीकरण हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं चिलि मिलि ऐं नमः।

विधि– यह मंत्र जिसका नाम लेकर १०८ बार जपे तो वश हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं वद वदेउ गजे त्रिभुवन मोहे रूं फट् स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से सात बार फूंक देकर जिसका नाम लेकर तिलक करे वही वश हो।

मंत्र– ॐ भूर्भूव ज्वाला मालिनी जात विदेशे.... (अमुक) मम् वश्यं कुरू २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को २१ या १०८ बार चावल मंत्र कर मस्तक पर डाले तो स्त्री मोहित होती है।

मंत्र– ॐ नमो श्री पार्श्वनाथाय काम रूपणि कामाक्षा देवी राजा प्रजावशी करणी सर्व विश्वं वा अमुकं वश मानय स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से सुपारी मंत्रकर दे। सर्व नारी वश में होती हैं।

मंत्र– ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ह्रों त्रिलोक वशी करणी अमुकिं... आकर्षणी २ काढि काढि म्हारी पांयतले घालि स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से तांबूल सुपारी को २१ बार मंत्र कर देवे।

मंत्र– ॐ संमोहिनी महा विद्ये जंभय स्तंभय मोहय आकर्षय पातय महा संमोहिनी ठः ठः ठः।

विधि– इस मंत्र के स्मरण मात्र से वश हो।

मंत्र– ॐ तारे मटाविधे राज मोहनं कुरू कुरू स्वाहा।

विधि– थूक से काली हल्दी का सात वार मंत्र कर तिलक लगावे राजा वंश में होवें।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं कुष्मांडनी देवी मम् सर्व शत्रुं वशं कुरू २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का १०८ बार स्मरण करने से सर्व वश हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं क्रों ह्रीं हूँ फट् स्वाहा।

विधि– इस मंत्र सें सुपारी फल मंत्रित कर दे तो वश हो।

मंत्र– ॐ अरे अरूणी मोहय २ देवदत्तं वश्यं कुरू २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को आम के पाटे पर लिख कर १०८ जाप लाल कनेर के फूलों से जाप करे।

मंत्र– ॐ भं भं भं भं देव दत्त वश्यं कुरू २ नमः।

विधि– इस मंत्र के ३६० जाप करे। जाप करते समय दीपक जलावे। गुगल की धूप खेवे।

राजामोहिनी व शत्रु निवारक मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं क्लीं ब्लूँ श्री पार्श्वनाथाय धरणेंद्र पद्मावती सहिताय, चिंत चिंतामणि राजाप्रजामोहिनी सर्वशत्रुनिवारिणी कुरु कुरु स्वाहा।

वशीकरण

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असि आ उ सा अमुं राजानं वश्यं कुरु कुरु वषट्।

विधि– बायें हाथ से मंत्र जाप्य करें लाल पुष्पों से पूजा करें उत्तर दिशा की ओर मुख करें। लाल आसन, लाल कपड़े, लाल माला से जाप करे वश्य व कार्य सिद्धि होते हैं। सवा लाख जाप जपे।

मंत्र– ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपति में वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– शुभ दिन, शुभ लाभ में उत्तर की ओर मुख कर सूर्योदय के बाद १ माला (मूंगे की माला से) जाप्य करें। ५१ दिन तक।

मंत्र– ॐ सर्व लोक वश्यं कराय कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– इस मंत्र की सवा लाख जाप्य करें।

मंत्र– ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं, ॐ ह्रीं णमो णाणस्स, ॐ ह्रीं णमो दंसणस्स, अमुकं..... मम् वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को अमृत सिद्ध योग में मंत्र जाप्य शुरू करें तथा सवा लाख जाप्य कर मंत्र सिद्ध करें। मूंगे की माला से जाप्य करें।

मंत्र– ॐ नमो महायक्षिण्यै मम् पति मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– दस हजार मंत्र जाप्य कर सिद्ध करें। सभी बस में हों।

मंत्र– ॐ ऐं पूरं क्षोभय भगवती गम्भीरा ब्लूँ स्वाहा।

विधि– पुष्य नक्षत्र होने पर मंत्र जाप्य बीस हजार करें तो सिद्ध होगा। पीले, कपड़े, पीला आसन, पीली माला तथा पूर्व दिशा की ओर मुख कर जाप्य करें। स्त्री वशीकरण मंत्र है।

मंत्र– ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपति मे वश्यं कुरु कुरु नमः।

विधि– उत्तर दिशा की ओर मुंह करके २१ दिन तक जाप्य करें। राज्याधिकारी वश में होते हैं।

मंत्र– ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं अरे अर णिमोहिणी अमुकं मोहय मोहय स्वाहा।

विधि– मंत्र जाप्य सफेद पुष्पों पर करें तथा पुष्पों को जिसके सिर पर डाले वह वश में होता है। ४७ दिन करें।

मंत्र– ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं.... अमुकं मम् वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि-- २१ हजार जाप कर मंत्र सिद्ध कर लेवें। अनन्तर जिसको वश करना हो उससे मिलने जाते समय सिर पर के वस्त्र को ६१ बार जप देकर वह मन्त्रित वस्त्र सिर पर रखकर जावें।

मंत्र- **ॐ नमो रुद्राय अगिधगि रंगि स्वाहा।**

विधि- सफेद सरसों को ६० बार मंत्र कर जिसके घर पर डाले वो वश हो।

मंत्र- **ॐ नमो भगवते मम् शत्रून बंधय २ ताडय २ उन्मूलय २ छिन्द २ भिन्द २ स्वाहा।**

विधि- इस मंत्र के जपने से दुष्ट पुरुष का बल निर्बल होता है। और शत्रु के शस्त्रादि विद्या का जोर नष्ट होता है।

मंत्र- **ॐ ह्रीं श्रीं कुष्मांडनी देवी मम् सर्व शत्रु वश्यं कुरू २ स्वाहा।**

मंत्र- **ॐ ह्रीं क्लीं सर्व दुष्टेभ्यो मां रक्ष २ स्वाहा।**

विधि- इस मंत्र से मिट्टी या सरसों मंत्र कर डाले।

मंत्र- **ॐ ह्रीं हन् हन् ॐ ह्रीं हन् ॐ ह्रीं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रों ह्रौं ठः ठः ठः स्वाहा।**

विधि- गोरोचन की टिकिया बनावें और २१ बार मंत्र कर रख लें। जरूरत होने पे ललाट पर तिलक लगाने से कार्य सिद्धि हृदय पर लगाने से मनो कामना सिद्धि स्त्री के पास जावे तो वश हो। माथे पर तिलक करे, तो रास्ते में किसी भी प्रकार का भय न हो।

मंत्र- **ॐ नमो भगवती गंगे काली महा काली स्वाहा।**

विधि- बाये पांव के नीचे की मिट्टी बाये हाथ से उठा कर उस मिट्टी को इस मंत्र से ७ बार मंत्र कर मुंह पर लगावे। तो जैसा कहे वैसा करे।

मंत्र- **ॐ ह्रीं श्रीं कीर्ति मुख मंदिरे स्वाहा।**

विधि– उपदेश देते समय प्रथम इस मंत्र को स्मरण करें। तो श्रोता गणों को आकर्षण हो।

मंत्र– ॐ नमो कट विकट घोर रूपिणी अमुकं... मे वशमानय स्वाहा।

विधि– भोजन करते समय एक-एक ग्रास के साथ यह मंत्र पढता जावे और खाता जावे तो ५-७ ग्रास में वशी करण हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं क्लीं अर्हं असि आउसा अनाहत विद्यायै नमः।

विधि– इस मंत्र से शाकिनी, डाकिनी, ततकाल क्षय हो।

- कुष्ट, कोड़, गलगण्डमाला, भगन्दर, आदि असाध्य रोगों का नाश हो।
- मूठ आदि रक्षा हो। उपद्रव मिटे।
- तिल, तुश, सरसों, लवण, इन से त्रिकुण्ड में हवन करें। तो ७ दिन में स्त्री वश हो और लाल फूल से जाप करे सभी वश में होते हैं।

मंत्र– ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रीं सर्व राजा सर्व श्रीः सर्व लोक वश्यं कुरू २ स्वाहा।

विधि– जाप करने से सर्व कार्य सिद्ध हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं महाकाली क्रां क्रीं क्रूं कालवर्णस्यां सो वश्यमानय २ स्वाहा।

विधि– २१ बार या ७ बार काजल मंत्र कर अंजन करें। पुरुष वश में होता है।

मंत्र– **ॐ णमो जिणाणं च, णमो ओहि जिणाणं च, णमो परमोहि जिणाणं णमो सब्बोहि जिणाणं ॐ णमो अणंतोहि जिणाणं ॐ वृषभस्स भगवदो, सिझ्झधम्मे भगवदो वृषभ स्वामि, धत्त वियराणि अरिहंताणं विभभझाणं महाविझ्झाणं अणमिप्पदेयिक्कम्मियाणि जम्भिर्केशविस के अनाहत विद्यायै स्वाहा।**

विधि– इस यंत्र को सोने अथवा चांदी के पत्रे पर खुदवाकर यंत्र की

प्रतिष्ठा करें। वृषभ तीर्थंकर की मूर्ति को स्थापन कर अनाहत मंत्र से १०८ बार पुष्पों से जाप्य तीन दिन प्रातः काल करें। कार्य पड़ने पर उपरोक्त मंत्र का १००० बार जाप्य करें तो सर्वजन वश्य होते हैं। राज दरबार में जाने पर उत्तम आकर्षण होता है। पहले मंत्र अवश्य ही सिद्ध कर लेना चाहिए।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो अभिणदणस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर महाविज्झर अभिणन्दणे स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का १०८ बार जाप्य करने से सिद्ध होता है। पानी को मंत्रित करके मुख प्रक्षालन करने से सर्वजन स्वाधीन रहते हैं।

इस यंत्र को सोना चांदी अथवा ताम्र के पत्रे पर लिखकर प्राण प्रतिष्ठा करें, फिर यंत्र के ऊपर भगवान अभिनन्दन प्रभु की मूर्ति को स्थापित कर अभिषेक पूजा करके मंत्र का १०८ बार पुष्पों से जाप्य करना चाहिए।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो चन्दप्पहस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर चंदे चंदप्पहस्सपूर्व स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार पानी मंत्रित कर मुख प्रक्षालन करने से स्त्री पुरुष वश में होते हैं।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो धम्मस्स सिज्झ धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर धम्मे सुधर्मेण धम्माइं वा सुहते भंते-धम्मे अंगमे मे अपदि धम्मे स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से १०८ बार ताम्बुल मंत्रित कर खिलाने से सभी वश में होते हैं।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो मुनिसुवयस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर सुब्बिदेतद्दवद्दे स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को स्मरण करने से द्विपद चतुष्पद वशी होते हैं।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो णमिस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर णमि णमि स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से पुष्प अथवा ताम्बुल (पान) मंत्रित कर जिसको भी दिया जाय, वह वश में रहेगा।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो महति महावीर वड्ढमाण बुध्दस्स अणाहत विज्झाइ सिज्झ धम्मे भगवदो महाविज्झ महाविज्झ वीर महावीर सिरिसणमदिवीर जयतां अपराजिते स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को जपने से युद्ध भूमि में युद्ध करने के लिए आया शत्रु, साधक के आधीन हो जाता है और शत्रु सेना से जीत हो जाती है।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो अरिठ्ठ णेमिस्स महाविज्झर सम्मति महारति अरति ददिरसति महति स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का जाप्य करने से शत्रु के हाथ में रहता हुआ शस्त्र नीचे गिर जाता है।

मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं कलिकुंडस्वामिनी सिद्ध जगत् वश्यं आनय आनय स्वाहा।

विधि–- प्रातः ९ बजे २१ बार या १०८ बार जपें।

मंत्र– ॐ भगवते मातंग कुमाराय देवदत्तस्य......वशी कुरू २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से १०८ बार हींग मंत्र कर साग में खिलावे तो पति वश्यं एवं सर्वजन वश्यं।

मंत्र– ॐ ह्रीं क्लीं ह्रीं हूं फट् फट् स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से फूल १०८ बार मंत्र कर दे तो वश हो।

मंत्र– ॐ नमो भगवते ते त्रिलोचने अमुकी...मे वश्य मानय २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से सुपारी १०८ बार मंत्र कर खिलावे तो स्त्री वश में होती है।

मंत्र– ॐ नमो ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मातंगे सरस्वती सर्व जन मोहिनीं

सर्व मुख रंजनीं सर्व राजा वश्यं करी सर्व स्त्री पुरुष वश्यं करि सर्व लोक वश्यं करि ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अमुके ... वश्ये मानय स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार जपने से सर्वजन वश में होते हैं।

मंत्र– ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथ पद्मावती सहिताय सप्त फण माणि मंडिता चर्चिताय ॐ ह्रीं क्लीं ब्लीं द्रां द्रीं द्रूं ह्रां ह्रीं ह्रूं अमुका... वश्यं कुरू २ अमुको.... क्षोभय २ आणय स्वाहा।

विधि– इस मंत्र का नित्य १०८ बार जपने से वशीकरण हो।

मंत्र– ॐ नमो भगवते भैरवी महा भैरवी पद्मावतीं सर्वजन वश करीं सर्व विघ्न प्रहारणीं सर्वजन गति मति मोहनी ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः क्ष्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं हम्ल्व्र्यूं क्म्ल्व्र्यूं सर्व कार्य प्रसाधिनी महामाई कुरू २ स्वाहा।

विधि– कुंकुम, कपूर, श्री खंड, कस्तूरी, गोरोचन सब एकत्र कर मंत्रित करे फिर तिलक करे सभी वश में होते हैं।

मंत्र– ॐ नमो भगवती भगमालिनी ह्रीं कामेश्वरी स्वाहा।

विधि– फूल, पान आदि पर एक हजार मंत्र कर दे तो वश हो यह कार्य नग्न हो कर करे।

मंत्र– ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को ७ अंगुल की आंधीझाड़ा की कलम से केशर से लिखे। तो देव दानव वश हो।

मंत्र– ॐ णमो अरहंताणं अरे अरनि मोहनी अमुकं... मोहय २ स्वाहा।

विधि: इस मंत्र को फूल पर १०८ बार जप कर सर पर राखे या चावल मंत्र कर पकाकर गुड़ मिला कर खिलावे।

मंत्र– ॐ फुं ल्वीं ह्लीं ऐं नमः ठः ठः स्वाहा।

विधि– इस मंत्र की २१ माला नित्य जपे और मुंह पर हाथ फेर कर जहाँ भी जावे। सर्व वश में होवे।

इस मंत्र को स्त्री के कपड़े पर लिख कर जलावे फिर इस राख को किसी चीज में खिलावे तो स्त्री वश हो।

मंत्र– ॐ ह्लीं ह्लीं ह्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ग्रीं ग्रीं ग्रीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं रीं रीं रीं ज्रीं ज्रीं ज्रीं ल्रीं ल्रीं ल्रीं क्षीं क्षीं क्षीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्रूं:।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार पढ़ कर भोज पत्र पर यह मंत्र लिखकर हाथ में बाधें तो राजा-प्रजा वश में हो।

मंत्र– ॐ ह्लीं ठः ठः।

विधि– इस मंत्र से सात बार सिन्दूर मंत्र कर ललाट पर लगावे सरतिलक करे। इस तिलक को जो देखे। वही पुरुष वश हो कर मोहित होगा।

मंत्र– ॐ नमो संमोहिनी महाविद्ये जंभय २ स्थंभय २ मोहय २ आकर्षय २ अमुकी... वश्यं कुरू २ स्वाहा।

विधि– मंत्र ३००० जप करे सिद्ध हो। जिस को वशीकरण करना चाहे नाम लेता जाये।

मंत्र– ॐ ह्लीं श्री चन्द्रप्रभाय नमः।

विधि– हथेली में केशर लेकर १०८ बार मंत्रित कर तिलक लगाकर जावे। सर्वजन वश्यं।

मंत्र– ॐ नमो भगवती पांडूरे अमुकी मे वश्य माणय ह्लीं स्वाहा।

विधि– १०८ बार मंत्र कर पान दीजे।

मंत्र– ॐ भ्रम गुमु गुमु स्वाहा।

विधि– पुष्प अभिमंत्र कर जिसे दे सर्व वश में होते हैं।

मंत्र– ॐ नमो भगवते काम देवाय महानुभावाय कामेश्वरे ईश्वरे स्वाहा।

विधि– २१ बार पान मंत्र कर देने से वश में होता है।

मंत्र– ॐ नमो अरहंताणं ॐ नमो भगवईणचंदाईए सत्तगण गिरि मोहर २ हुल २ चुलु मयूर वाहिनि।

विधि– दस हजार मंत्र जाप्य कर सिद्ध करें। २१ मंत्र का जाप्य करके ग्राम में प्रवेश करें तो व्यापार में लाभ हो।

उच्चाटन

मंत्र– ॐ नमो काक जंघा वरदे सर्व कामार्थनी अमुकं ...उच्चाटये २ उत्पातये २ सपुरुष बांधनी उमिया देवीजी जिह्वा कट फट् स्वाहा।

विधि– १०८ बार मंत्र जाप्य कर शत्रु गृह पर लिख कर रखने से ७ दिन में उच्चाटन हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं अमुक.... द्रह २ पच २ मथ २ ग्रह २ खाई २ खारी २ बलांतक बलांतक स्वाहा... उच्चाटय २ स्वाहा।

विधि– दस लाख जाप करें तो उच्चाटन आदि हो।

मंत्र– ॐ ह्रीं विकृत दंष्टानने ह्रूं फट् स्वाहा।

विधि– इस मंत्र शमशान के कोयले से १००० बार मंत्रित कर शत्रु के मकान में डाले तो उच्चाटन होता है।

विद्वेषक मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा अनाहत विद्यायै ह्रीं ह्रूं अमुकयो विश्लेषं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि-- इस मंत्र का ५ लाख जाप करने के बाद दशांश हवन करे इस से आपस में फूट हो जावेगी।

विद्वेश करने का मंत्र

मंत्र- ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा-देवदत्त ....परस्पर मतीय विद्वेशं कुरू २ हूं।

विधि- काले रंग से यंत्र बनाकर आग्नेय दिशा की ओर मुंह कर १०८ बार जपें।

विरोधक विनाशक

मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादानुसारीणं परस्पर विरोध्र विनाशनं भवतु।

सौभाग्य वृध्दि

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिध्दि रिध्दि वृध्दि कुरू २ स्वाहा।

विधि-सुबह उठते ही मन में ७ बार मंत्र पढे। तो सौभाग्य बढै।

विवेक प्राप्ति मंत्र

मंत्र- ॐ ह्रीं णमो कोट्ठ बुध्दीणं बीजबुध्दीणं मम् आत्मानि विवेक ज्ञानं भवतु।

संपदा प्राप्ति मंत्र

मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं हर हर स्वाहा।

विधि- इस मंत्र की तीन दिन १०८ पुष्पों से पार्श्वनाथ स्वामी के सामने जाप करें तो सर्व सम्पत्ति होती है तीनों दिन १०८.-१०८ पुष्प होने चाहिये।

अद्रष्ट सिद्धि मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं
ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं।

रविवार की रात्रि पूर्णमासी को उस रात काजल उपाडे और इस काजल से अंजन करे। तो अद्रष्ट हो और निधि देखे।

विधि– इस मंत्र का जाप्य करने से भय दूर हो जावे।

मंत्र– ॐ णमो अरिहंताणं अभिणि मोहिणी मोहय २ स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को रास्ते चलते चलते स्मरण करे। तो रास्ते में चोर नहीं मिले।

सिद्धि, ऋद्धि मंत्र

मंत्र– ॐ णमो जिणाणं

विधि– प्रतिदिन २१ या १०८ बार जाप करें।

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रौं ह्रः अक्खीण महानसी लद्धि सम्पन्न
गोयस्स नमः अक्षयं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– १०८ बार जाप करें।

मंत्र– ॐ नमो गोमय स्वामी भगवऊ ऋद्धि समोवृद्धि समो
अक्खीण समो आन आन भरी भरी पुरी पुरी
कुरु कुरु हः स्वाहा।

विधि– १०८ बार जाप करें।

मंत्र– ॐ ह्रीं अरहंताणं सिद्धाणं सूरीणं उवज्झायाणं साहूणं मम्
ऋद्धि वृद्धि समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– १०८ बार जाप करें।

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं श्रूं ह्रः कलिकुंड स्वामिने जये विजये अप्रतिचक्रे अर्थ सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

अनंतसुख प्राप्ति का मंत्र

मंत्र– ॐ नमोअनन्त नाथाय सर्व सोख्याय चिरकालं नन्दतु वर्द्धन्तु वज्रमयं करोमि कुर्वन्तु स्वाहा।

मंत्र– ॐ नमो अर्हते भगवते अणन्तो अणन्त सिजमदु मे भगवदो महाविज्जा महा विज्जा अणन्ते अगन्त केवलिए अणन्त केवल णाणे अणन्त केवल दंसणे अणु पुज्ज वासणे अणन्ते अणन्तगम केवलि स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं अनन्तनाथाय किन्नर यक्ष अनन्तमति यक्षी सहिताय नमः।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः सर्व बंधन विर्निमुक्ताय अनन्तसुख प्रदाय नमः स्वाहा।

मंत्र– ॐ णमो अर्हते भगवते अनंत तीर्थंकराय ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं सौभाग्यमायुरारोग्यमिष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

विधि– १०८ पुष्पों से १४ दिन तक सभी मंत्रों की जाप करने से अनन्त सुख की प्राप्ति होती है।

आरोग्य प्राप्ति मंत्र

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो उरगकुल जासु पासु सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर वुग्गै महावुग्गै सेपासै संमास सनिगितोदि स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से पुष्प अथवा ताम्बुल मंत्रित करके देने से आरोग्यता प्राप्त

होती है। (पार्श्वनाथ अनाहत) शेष विधि पूर्वोक्त जानना।

पौष्टिक कार्य

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असिआउसा अस्य........ नाम धेयस्य मनः पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– उत्तर दिशा की ओर मुख कर के जाप्य करें।

शान्ति कार्य हेतु मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असि आ उ सा अस्य .... सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– १०८ बार १०८ दिन तक जाप्य करने से शान्ति की प्राप्ति होती है।

शान्ति पुष्टि

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो विमलस्स सिज्झ-धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर अमले विमले कमले निम्मले स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार जाप्य करने से तुष्टि और पुष्टि होती है।

शान्ति मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रौं ह्रः झं वं ह्वः पः हः प, क्षी, प, देवदत्तस्य सर्वोपद्रव शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

सर्व शान्ति दायक मंत्र

मंत्र– ॐ वें श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनावृत विद्यायै णमो अरिहंताणं वैं सर्वशान्तिर्भवतु स्वाहा।

मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा नमः सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– विधियुक्त श्रद्धा से जाप करें। संकट दूर व शान्ति मिलती है।

शान्ति मंत्र

मंत्र– ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष कल्मषाय दिव्य तेजोमूर्तये नमः श्री शांतिनाथाय शांति कराय सर्व पाप प्रणाशनाय सर्व विघ्न विनाशनाय सर्व रोगाय मृत्यु विनाशनाय सर्वपरकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्व क्षाम डामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा मम् सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

विधि– इस शांति मंत्र को शुक्ल पक्ष के सोलह दिन के पखवाड़े में प्रत्येक दिन १००० जप करें। सोलह दिन में सोलह हजार जप दीप, धूप विधि से करें, फिर शान्ति विधान कराकर, १६००० जप का दशांश होम करें, तो सर्व प्रकार के रोग, सर्व प्रकार के डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रतादि बाधा दूर होती। लक्ष्मी लाभ होता है, मन वांछित सिद्धि प्राप्त होती है।

ऋण मोचन

मंत्र– ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं गं ॐ गं नमो संकट कष्ट हरणाय, विकट, दुःख निवारणाय ऋणमोचनाय स्वाहा।

विधि– प्रतिदिन १० माला करें।

आकर्षण

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रः अ सि आ उ सा एनां स्त्रियमाकर्षयाकर्षय संवौषट्।

विधि– यंत्र लाल वस्त्र पर बनावे पूर्व दिशा की ओर मुख करें, दण्डासन

से बैठे अंकुश मुद्रा से जाप्य करें।

इस मंत्र के जाप्य करने से नाना प्रकार के भूत-प्रेत आदि सभी का आकर्षण होता है।

जल स्तंभन

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा अत्र एनां वृष्टिं स्तम्भयः ठः ठः।

वर्षा बन्द करने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं नमः।

इस मंत्र को २१ बार जप कर दशो दिशाओं में पानी फेंकने से वर्षा बंद हो जाती है।

स्तंभन मंत्र

मंत्र– ॐ धणु धणु महाधणु स्वाहा।

११ लाख जाप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है।

मंत्र– ॐ गोयि मोयि २ भवे भवे डक्के मट्टे चट्टे चोर घरहे धेले मेले यपथि मायाले जम्भे स्तम्भिर्यम्मे मोहे स्वाहा।

इस मंत्र को एक लाख जाप करने से सिद्ध होता है। फिर शक्कर को दशों दिशाओं में फेंकने से चोरों का स्तंभन होता है। मंत्र को २ पाटा में लिखकर गाड़ देने से उस सीमा तक स्तंभन होता है।

मंत्र– ॐ नमो भगवते वरणाय २ स्तंभय २ ठ ठः।

इस मंत्र को एक लाख जाप करने से सिद्ध होगा। फिर इसको ७ बार जाप्य करने से दीपक आदि का स्तंभन होगा।

मंत्र– ॐ नमो भगवते वायवे मर्दय मर्दय प्रमर्दय २ स्तंभय २ हिरि संहर ठः ठः।

इस मंत्र को एक लाख जाप कर वायु को तथा मेघ को स्तंभन कर सकते हैं।

मंत्र– ॐ ह्म्ल्व्र्यूं लौं क्ष्मं ठं अमुकस्य जिब्हा स्तंभय २ ठः ठः।

सवा लाख जाप्य कर उसके नाम से तो उस व्यक्ति का मुख स्तंभन होगा।

प्रतिवादी की शक्ति स्तम्भन करने का मंत्र

मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं प्रतिवादि विद्याविनाशनं भवतु।

मंत्र––ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय अग्नि मेघ वायुकुमार स्तंभय २ स्वाहा।

विधि– १०८ बार जाप करें।

स्तंभन

मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असि आ उ सा साधकस्य एतन्नाम धेयस्य क्रोधं स्तंभय स्तम्भय ठः ठः।

विधि– हल्दी के पीले रंग से यंत्र बनाकर के पीली सामग्री बनावे। वस्त्र पीले आसन पीली माला पीली व्रजासन से बैठे। शंखमुद्रा से जाप्य करें। पीले पुष्पों से जाप्य करें।

विष नाशक मंत्र

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो कुन्थुस्स सिज्झ-धम्मै भगवदो विज्झर महाविज्झर कुन्थु कुन्थु कै कुन्थु शे स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को १०८ बार जाप्य करने से बिच्छु मधुमक्खी, खटमल, मच्छर आदि जीवों का उपद्रव नहीं होता।

शक्ति मंत्र

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरहदो अणंत सिज्झ- धम्मे भगवदो विज्झर महाविज्झर अणंते अणंतणाणे अणंत केवल णाणे अणंत केवल दंसणे अणु पुज्जवासणे अणंतागम कैवलियै स्वाहा।

विधि– इस मंत्र को जप करने से सर्व इन्द्रिय जनित सुख मिलता है। और परम्परा से मोक्ष भी मिलता ही।

मंत्र– ॐ णमो भगवदो अरिट्ठ णेमिस्स अरिट्ठै ण बंधेण बंधयामि रक्कसाणं भूयाणं खैयराणं डाइणीण चौराणं साइणीणं डायिणीणं महोरगाणं जेक्केवि दुठ्ठा संभवंति तेसिं सव्वेसिं मणो मुहं गई दिठ्ठिं बंधेण बंधामि धणु धणु महाधणु जः जः जः ठ ठ ठ वषट् घे घे हूँ फट् स्वाहा।

यंत्र प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

मंत्र– ॐ क्रौं ह्रीं असि आ उ सा य र ल व श ष स ह अमुष्य प्राण इहप्राण अमुष्य जीवा इहस्थिता अमुष्य यंत्र, मन्त्र, तन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि काय वाङ्मन् चक्षु श्रोत्र घ्राण प्राण देवदत्तस्य दहैवायन्तु अहं अत्र सुखं चिरंतिष्ठंतु स्वाहा।

पद्मावती स्तोत्र

स्त्रग्धरा छन्द

श्रीमद्गीर्वाणचक्र, स्फुटमुकुटतटी, दिव्य माणिक्यमाला।
ज्योतिर्ज्वाला कराल, स्फुरित मुकुरिका घृष्ट पादारविन्दे।।
व्याघ्रोरुल्कासहस्त्र ज्वलदनलशिखा लोलपाशांकुशाढ्ये।
ॐ क्रौं ह्रीं मन्त्ररूपे! क्षपितकलिमले? रक्ष मां देवि? पद्मे।।१।।

भित्वा पातालमूलं, चलचलचलितं, व्याललीलाकराले?।
विद्युद्दण्डप्रचण्ड, प्रहरण सहितैः सद्भुजैस्तर्जयन्ती।।
दैत्येन्द्रं क्रूरदष्टैः कटकटकटिते? स्पष्टभीमाट्टहास्ये।
मायाजीमतूमाला, कुहरित गगने? रक्ष मां देवि? पद्मे।।२।।

कूजत्कोदण्डकाण्डो ड्ंउमरविधुरितं क्रूरघोरोपसर्ग।
दिव्यं वज्रातपत्रं प्रगुणमणिरणत्किंकिणी काणरम्यम्।
भस्वद्वैडूर्यदण्डं मदनविजयिनो बिभ्रती पार्श्वभर्तुः।।
सा देवी पद्महस्ता, विघटयतु महा, डामरं मामकीनम्।।३।।

भृंगी काली कराली, परिजन महिते? चंडि? चामुंडि? नित्ये?।
क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षणार्धे क्षतरिपुनिवहे? ह्रीं महामंत्र वश्ये?।
भ्रां भ्रीं भ्रूँ भृंग संगे? भ्रकुटि पुटतटे त्रसितोद्दामदैत्ये?।
झ्रों झ्रीं झ्रूं झ्रः प्रचण्डे? स्तुतिशतमुखरे? रक्ष मां देवी? पद्मे।।४।

चञ्चत्काञ्चीकलापे? स्तन तट विलुठ त्तार हारावलीकू?।
प्रोत्फुल्ल त्पारिजात द्रुम कुसुम महा मञ्जरी पूज्य पादे?।।
द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं समेते? भुवनवशकरी, क्षोमिजी द्राविणीत्वम्।
आँ ऐं ॐ पद्महस्ते? कुरु कुरु घटने? रक्ष मां देवि? पद्मे।।५।।

लीलाव्यालोलनीलोत्पलदलनयने ? प्रज्वलद्वाडवाग्नि ।
उ घज्जालास्फुलिङ्ग स्फुरदरुणकरो- द्भुतवज्राहस्ते ।।
ह्लां ह्लीं ह्लूँ ह्लौं ह्लः हरन्ती, हर हर हर हुँकार भीमैकनंदे ।
पद्मे पद्मासनस्थे व्यपनय दुरितं रक्ष मां देवी ! पद्मे ।।६।।

कोपं वं झं सहस्रं कुवलकलितो दुदामलीला प्रबन्धे!
ज्रां ज्रीं ज्रूं ज्रः पवित्रे! शशिकर धवले! प्रक्षरत्क्षीरगौरे!।।
व्याल व्याबद्धजूट प्रबलमहाबल कालकूटं हरन्ती।
हा हा हुँकारनादे? कृतकरकमले? रक्ष मां देवि पद्मे ।।७।।

प्रातर्बालार्करश्मि, स्फुरित घन महा साद्र सिंदूर धूली।
संध्या रागारुणाङ्गी त्रिदिश वरवधू वन्द्यपादारविन्दे?
चंचच्चण्डासि धारा, प्रहत रिपु कुले, कुण्डलोघृष्ट पंडे।
श्रां श्रीं श्रूँ श्रः स्मरन्ती मदगजगमने, रक्ष मां देवि पद्मे ।।८।।

गर्ज्जन्नीरदगर्भ निर्गततडिज्ज्वालासहस्र स्वस्फुरत्।
सद्व ज्रांकुश पाश पंक जकरा, भक्त्या मरै रर्चिता।
सद्यः पुष्पित पारिजात रुचर दिव्यं वपुः विभ्रती।।
सा मां पातु सदा प्रसन्नवदना, पद्मावती देवता।।९।।

विस्तीर्णे पद्मपीठे, कमलदलनिवा, सोचते काम गुप्ते।
लां तां ग्रीं समेते? प्रहसित वदने? नित्य हस्तग्रहस्ते।।
रक्ते? रक्तोत्पलांगी, प्रति वडसि सदा वाग्भबांकामबीजं।
हंसारूढे? सुनेत्रे? भगवति? वरदे? रक्ष मां देवि ? पद्मे।।१०।।
षट्कोणे चक्रमध्ये? प्रणववरयुते? वाग्भवे? कामराजे!
हंसारूढे सबिन्दुं विकसितकमल कर्णिकाये निधाय।।
नित्यं क्लिन्न मदार्द्र, द्रवयसि-सततं साकुशे? पाशहस्ते?।
ध्यानात् संक्षोभयन्ती त्रिभुवन वशकृत रक्ष मां देवि? पद्मे।।११।।

जिह्वाग्रे नासिकान्ते, हृदिमनसि दृशो:, कर्णयोर्नाभिपद्मे।
स्कन्धे कण्ठे ललाटे, शिरसि च भुजयो: पृष्ट पार्श्व प्रदेशे।।
सर्वाङ्गोपाङ्ग शुद्ध्या- प्यतिशय भुवनं दिव्य रूपं स्वरूपम्।
ध्यायाम् सर्वकालं प्रणव बलयंतु पार्श्वनाथेति शब्दम्।।१२।।

ओं क्रों ह्रीं पचवणै: लिखितषट्‌दलै चक्रमध्ये हस्त्रौं क्लीं।
क्रों ह्रीं पत्रान्तराले, स्वपरिकलिते, वायुना वेष्टिताङ्गी।।
ह्रीं वेष्टयारक्तपुष्पैर्जयतिमति महा क्षोभिणी द्राविणी त्वम्।
त्रैलोक्यं चालयन्ती सपदि जनहिते! रक्ष मां देवि! पद्मे।।१३।।

ब्रह्माणी कालरात्रि भगवति वरदे! चण्डि! चामुण्डि! नित्ये।
मातर्गन्धारि गौरि धृतिमति विजये कीर्ति ह्रीं स्तुत्यपद्मे?।।
संग्रामे शत्रुमध्ये जयज्वलनजलै: वेष्टितान्यै: स्वरास्त्र:।
क्षां क्षीं क्षूं क्ष: क्षणार्धे क्षतरिपुनिवहे? रक्ष मां देवि पद्मे।।१४।।
भूविश्वेक्षणचन्द्र बिम्ब पृथिवी, युग्मैक संख्याक्रमात्।
चन्द्रोम्भो निधिबाण विश्व मुनिदिक्, संवेचरेशादिशु।।
ऐश्वर्य रिपुमारि विश्व भयकृत् क्षोभान्तराया विषा।
लक्ष्मी लक्षण भारती गुरु मुखान्मन्त्रार्चिते? दैवते।।१५।।
खड्गं कोदण्ड काण्ड, मुसल हतयुतं वाण नाराच चक्रै।
शक्त्या शल्यत्रिशूलै- र्वरफणशकरै: मुद्‌गरैर्मुष्टिदण्डै:।।
पाशै: पाषाणवृक्षै: वरगिरिसहितै: दिव्यशस्त्रैरमानै:।
दुष्टानां दारयन्ती, वर भुजललिते रक्ष मां देवि? पद्मे।।१६।।

यस्या: देवैर्नरेन्द्रैरसुरपतिगणै: किन्नरैर्दानवेन्द्रै:।
सिद्धे नागेन्द्रपक्षैर्नरमुकुटतटी, घृष्टापादारविन्दे।।
सौम्ये? सौभाग्यलक्ष्मीर्दलितकलिमले? पद्मकल्याणमाले।
अम्बे काले समाधिं, प्रकटय परमं रक्ष मां देवि! पद्मे!।।१७।।

धूपैश्चन्दनतुन्दलैः शुभमहा, गन्धैश्च मन्त्रान्विते।
र्नानावर्णयुतैः विचित्रकुसुमैः दिव्यैर्मनोहारिभिः।।
नैवेद्यैः मणिदीपकैः शुभफलैः भक्त्यान्वितैः पूजिते?।
अर्घ्यं त्वं भवति गृहाण सततं, पद्मे ? सदा त्राहि माम्।।१८।।

तारा त्वं सुगतागमे, भगवती गौरीति शैवागमे।
वज्रा कौलिकशासने जिनमते, पद्मावती विश्रुता।।
गायत्री श्रुति शालिनी प्रकृति-रित्युक्तासि सांख्यागमे।
मातर्माराति? किं प्रभूतभणितैर्व्याप्तं समस्तं त्वया।।१९।।

सं जत्वा करबोर रक्त कुसुमैः पुष्पैशिचरं संचितैः।
संमिश्रैः घृत गुग्गुलोघमधुभिः कुण्डे त्रिकोणे कृते।।
होमार्थ कृतषोडशांकुलमितं वह्नौ त्रिकोणे जपेत्।
तं वाचं दसीह देवि? सहसा, पद्मावती देवता।।२०।।

ह्रीं कारे चन्द्रमध्ये पुनरपि वलये षोडशावर्त पूर्णे।
वाह्ये कण्ठ्येरवेष्टच्या, कमलदल युतं, मूलमंत्र प्रयुक्तम्।।
साक्षात त्रैलो!क्यवश्यं पुरुषवशकृतं मन्त्र राजिन्दराज्यम्।
एतत्तत्वस्वरूपं परम पदमिदं पातु मां पार्श्वनाथः।।२१।।

भक्तानां देहि सिद्धिं, मम सकल मलं, देव दूरीकुरु त्वम्।
सर्वेषां धार्मिकाणां, सततनियमितं वाच्छितं पूरयित्वा।।
संसाराब्धौ निमग्नां प्रगुण गुणयुतां जीवराशिञ्ज पाहि।
श्रीमज्जैनेन्द्र धर्म प्रकटय विमलं देवि! पद्मावती । त्वम्।।२२।।

पाताले वसतं विषं विषधरां-श्चूर्णन्ति ब्रह्माण्डजा।
स्वर्भूमिपति देवदानवगणाः सूर्योदये सद्गणाः।।
कल्पेन्द्रास्तव पदापंकजनुता, मुक्तामणिश्चुम्बिता।
सा त्रैलोक्यनतानना त्रिभुवने त्वपादभूता सदा।।२३।।

क्षुद्रोपद्रव रोगशोक हारिणी, दारिद्र्य विद्राविणि।
व्यालव्याघ्रहरा फणात्रयधरा, देहप्रभा भासुरा।।
पातालाधिपति प्रियो प्रणयिनी, चिन्तामणिः प्राणिनाम्।
श्रीमत्पार्श्वजिनेश शासन सुरी, पद्मावती देवता।।२४।।

मातः पद्मनि पद्मराग रुचिरे? प्रद्मप्रभुनानने।
पद्मे ? पद्मावनस्थिते परिलसत् पद्माक्षि पद्मानने।।
पद्मामोदिनि ! पद्मराग रुचिरे? पद्मप्रसूरानने।
पद्मोल्लासिनी ! पद्मनाभिवलये ! पद्मावती पाहि माम्।।२५।।

दिव्य स्तोत्रं पवित्रं, पटुतर पठतां भक्ति पूर्व त्रिसन्ध्यम्।
लक्ष्मी सौभाग्य रूपं, दलितकलिमलं, मंगलं मंगलानाम।।
पूज्या कल्याणमालां जनयति सततं पार्श्वनाथ प्रसादात्।
देवी पद्मावती नः प्रहसित वदना; या स्तुता दानवेन्द्रैः।।२६।।

या देवी त्रिपुरा पुरत्रयगता शीघ्रा च शीघ्रप्रदा।
या देवी समया समस्तभुवने, या गीयते कामदा।।
तारा मानविमर्दिनी भगवती, देवी च पद्मावती।
सा स्यात्सर्वगता त्वमेव नियतं मातेति तुभ्यां नमः।।२७।।

पद्मानना पद्मदलायताक्षी पद्मानिनी पद्मकरांघ्रि पद्मा।
पद्मप्रभा पार्श्व जिनेन्द्रशक्तिः पद्मावती पातु फणीन्द्र पत्नी।।२८।।

आद्यं चोपद्रवं हन्ति द्वितीयं भूतनाशनम्।
तृतीयं च मरीं हन्ति चतुर्थ रिपुनाशनम्।।२९।।

पञ्चमन्तु जनानां च वशीकार भवेत्सदा।
षष्ठं चोच्चाटनं हन्ति सप्तमं घोरसंकटम्।।३०।।

हन्त्युद्वेगं चाष्टम च नवमं सर्वकार्यकृत्।
इष्टा भवति तेषां च त्रिकालञ्च पठन्ति ये।।
आह्वाननं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूर्जामिर्चा न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि।।३१।।

पठितं भणितं गुणतं जय विजय रमानिबन्धनं परमम्।
सर्वाधि व्याधि हर्तृं जगति पद्मावती स्तोत्रम्।।३२।।

अपराधसहस्राणि क्रियते नित्यशो मया।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि! प्रसीद परमेश्वरी।।३३।।

आज्ञाहीनं क्रियाहीनं मन्त्रहीनं (तथैव च) च यत्कृतम्।
तत्सर्व क्षम्यतां देवि! प्रसीद परमेश्वरी।।३४।।

पद्मावती मंत्र यंत्र तंत्र साधना विधि

ॐ नमो भगवते त्रिभुवन वशकरी सर्वा भरण भूषिते, पद्मासने पद्मनयने पद्मगन्धिनी पद्मप्रभे, पद्मकोसनी पद्मवासिनी पद्महस्ते।

श्रीं ह्रीं कुरु कुरु मम हृदय काय कुरु कुरु, मम सर्व शांति कुरु कुरु मम सर्वराजं वश्यंकुरु २ सर्वलोक वश्यं कुरु २ मम सर्ववश्यं कुरु २ मम सर्वभूत पिशाच प्रेतरोष हर हर सर्वरोगान् छिन्द २ सर्व विघ्नान् भिन्द २, सर्वविषं छिन्द २, सर्व कुरु मृगं छिन्द २ सर्वशाकिनी छिन्द २, श्री पार्श्वनाथ पादाम्भोज भृङ्गि नमो दत्ताय देवी नमः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः स्वाहा। सर्वजनराय स्त्री पुरुष वश्यं सर्व वश्यमह् २। ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐं क्लीं ह्रीं देवी पद्मावती त्रिपुर काम साधनि दुर्जनमति विनाशिनी त्रैलोक्य क्षोभिनी श्री पार्श्वनाथोप सर्ग हरनी क्लीं ब्लूं मम

दुष्टान् हन् हन् मम् सर्वकार्याणि साधय २ हूँ फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं आं अर्हं मम पापं फट् दह २ हन २ पच २ पाचय २ ह ष्भ ष्भीं क्ष्वीं हंस ष्भः वं भष २ क्षयहः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षौं क्षं क्षः क्षीं ह्रां ह्रीं हूँ ह्रे ह्रै ह्रौं ह्रः हिं हिं द्रां द्रीं द्रावय द्रावये नमोर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः मम् श्रीरस्तु पुष्टिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा।

पद्मावती का ध्यान

मस्तक पर नागराज वाली, अत्यन्त लाल, कमल के आसन वाली कुर्कुट नाग के वाहनं वाली, रक्त कान्ति वाली, कमल के समान मुख वाली, वरद, अंकुश, बँधे हुए पाश, दिव्य फल युक्त हाथों वाली, जपने वाले को सदा फल के देने वाली, माता पद्मावती का ध्यान करे। तोतला, त्वरिता, नित्या, त्रिपुरा, कामसाधनी, पद्मावती और त्रिपुर भैरवी देवी की स्तुति करे। पाश, फल, वरद, और अंकुश सहित चार भुजाओं वाली, नेत्र वाली, लाल कमल के आसन वाली पद्मावती मेरी रक्षा करें।

'ॐ ह्रीं हे पश्चात् ह्रां ह्रीं आदि शून्य बीजों को लगाकर देवी का नाम लिखकर 'शीर्ष, वक्त्र, हृदय, नाभि, पादौ' पद लगाकर 'रक्ष रक्ष' पद लगावे। इसका मंत्रोद्धार–

ॐ ह्रीं पद्मे पद्मावति देवि ह्रां मम् शीर्ष रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं पद्मे पद्मावति देवि ह्रीं मम् वक्त्रं रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं पद्मे पद्मावति देवि हूं मम् हृदयं रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं पद्मे पद्मावति देवि ह्रौं मम् नाभि रक्ष रक्ष।

ॐ ह्रीं पद्मे पद्मावति देवि ह्रः मम् पादौ रक्ष रक्ष।

पद्मावती का यंत्र

'झ' पिण्ड (झम्ल्व्र्यूं) माया ह्रीं कष (आं) टान्त (ठ) को लिखकर उसके बाहर अष्टदल बनावे। उनमें दशाक्षरी (क. ख. ग. घ. ङ. च. छ. ज. झ. ञ) वौषट् और छ इन्दु (ह्वीं) लिखकर पद्मावती के मूलमंत्र से वेष्टित करें।

पद्मावती का मूलमंत्र

अन्त में नमः आदि से तेज (ॐ) लोकनाथ (ह्रीं) ह्रौं व्योम (हः) षांत (स) और कामराज (क्लीं) सब मिला हुआ रूप पद्मे पदम कटिनी सहित देवी का मूलमंत्र है। इसका मंत्रोद्धार है–

ॐ ह्रीं हैं हस्क्लीं पद्मे पद्मकटिनि नमः।

इस मंत्र को अगुरु आदि से लिखकर उत्तर की ओर मुख करके पूजन करता हुआ जो पुरुष दशाक्षर मंत्र का जप करता है। उसको पद्मे कोई फल अवशिष्ट नहीं रहता। जो उपरोक्त नित्य 'ॐ' आदि मंत्र से गंध-फल-पुष्प आदि जिस किसी को देता है, वह उसके वश में हो जाती है।

हे पद्मे इस सौभाग्यशाली की उत्पत्ति बड़े विचित्र ढंग की होती है। हे पद्मावती यदि कोई पुरुष तुझमें संतोष करके किसी स्त्री के सिर-मुख-हृदय-नाभि और पैरों में काम के पांच बाण लगावे तो उसका संमोहन और द्रावण होता है। हे पद्मे जो पुरुष स्त्री के गुह्य अंग के ऊपर नीचे भाग में मायाक्षर (ह्रीं) और दोनों पाश्वों में 'ब्ले' का ध्यान करके उसको घूमती और पैरों में पड़ती हुई ध्यान करता है, वह उस स्त्री को प्राप्त करता है। हे पद्मे जो मंत्र स्त्री के नेत्र की आदि मध्य और अंत में क्रमशः 'ब्लें' कामराज 'क्लीं' और द्विप लोक (क्रों) का सिंदूर के समान वर्ण युक्त ध्यान करता है वह शीघ्र उसको द्रवित करता है। जो पुरुष पद्मावती के इस स्तोत्र को प्रातः दोपहर और सायंकाल के समय उत्तम मंत्रों के सहित पढ़ता है उसकी वाणी सिद्ध हो जाती है। सब पुरुष उससे प्रेम करते हैं। इस प्रकार मंत्री इस मंत्रार्थ गर्भ स्तोत्र से पद्मावती देवी की भक्ति-पूर्वक स्तुति करके उसको पूर्ण

साधना विधि से सिद्ध करें।

पद्मावती देवी का लाल कमल के फूलों और लाल कनेर के फूलों पर तीन लाख जाप करने से सिद्ध होती है।

होम विधि

एक ताम्र पर नाम को ह्रीं से वेष्टित करके उसके चारों ओर द्रां द्रीं क्लीं, ह् लीं स: को लिखकर और बाहिर फिर ह्रीं लिखकर उसको त्रिकोण होम कुण्ड में गाड़ दें। घी-दूध-शक्कर और गूगल को चने के बराबर गोलियों के तीस सहस्त्र होम से पद्मावती देवी सिद्धि होती हैं। इस साधन विधि में कुछ कमी रह जाने पर यदि मंत्री को मंत्र न हो तब भी उसके कार्य निश्चय से ही सिद्ध हो जाते हैं।

शिष्य को विद्या देने की विधि

एक चौकोर मण्डल को श्वते रक्त-हरित और कृष्ण इन पांच प्रकार के रंगों के चूर्ण से बनाकर उसके चारों कोनों में जल पूर्ण कलश रखे। उसके ऊपर अत्यन्त बड़ा मण्डल बनावे। जो सुगंधित पुष्प से भरा हुआ हो और चन्द्रमा के समान उज्जवल घंटा और सुन्दर दर्पणों से युक्त हो। यह बीच का मण्डल अष्टदल कमल के आधार का हो. उसकी कर्णिका में कपूर चन्दन ओर केशर से–

ॐ अर्हद्भ्य: स्वाहा। ॐ सिद्धेभ्य: स्वाह। ॐ सूरिभ्य: स्वाहा। ॐ पाठकेभ्य: स्वाहा। ॐ सव्व साधुभ्य: स्वाहा।

उसके पूर्वादि दिशाओं में आठों दलों में निम्नलिखित मंत्र लिखे–

ॐ जयाये स्वाह। ॐ जम्भायै स्वाहा। ॐ विजयायै स्वाहा। ॐ मोहायै स्वाहा। ॐ अजितायै स्वाहा। ॐ स्तम्भायै स्वाहा। ॐ अपराजितायै स्वाह। ॐ स्तम्भिन्यै स्वाहा।

और उसकी दक्षिण दिशा में देवी के स्वर्णमयी पादुका बनावे। इस मंत्र की पंच परमेष्ठी के मंत्र और देवी के चरणों की जलादि अष्ट द्रव्य से पूजा करे। फिर एक शिष्य को जो अन्य मत के शास्त्रों से विमुख हो तथा जिनदेव व जिनधर्म में भक्ति रखने वाला है– उसे स्नान कराके तथा अलंकार पहनाकर मंडल के सामने लावे। और पूर्व से ही यंत्र के चारों ओर रखे हुए चारों कलशों से उसका स्नान कराकर और अन्य आभूषण आदि देकर पूर्व कर्म से चला आया हुआ मंत्र दे और कहे–

"तुमको मैंने यह गुरु परम्परा से चला आया हुआ मंत्र अग्नि-सर्प-चन्द्र-नक्षत्र आदि की साक्षी पूर्वक दिया है। तुम भी इसको उन्माद रहित पुरुष को ही देना जो कि देव-शास्त्र-गुरु में भक्ति रखता हो। यदि तुम इसको लोभ या प्रेम से अन्य मतावलम्बियों को दोगे तो तुमको बाल हत्या-स्त्री हत्या-मुनि हत्या, जीव हत्या का पाप लगेगा।

इस प्रकार मंत्री उसको गुरु और देवता के सामने शपथ देकर मंत्र साध ान के विधान के अनुसार मंत्र दे दे।

पद्मावती आह्वानन मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत् पार्श्वचन्द्राय त्रैलोक्य विजयालंकृताय, सुवर्ण वर्ण धरणेन्द्र नमस्कृताय नीलवर्णाय, कर्मकान्तारोन्मूलन मत्त-मत्तङ्गजाय, संसारोतीर्णाय, प्राप्त परमानन्दाय, तत्पादारविन्द सेवा हे वाक् चंचरीकोप में मानव देव-दानव विनम्र मोलि मुकुट मण्डली मयूख मंजरी रजितांघ्री पीठे सेवक जन वाच्छितार्थ पूरणाधरीकृतक चिन्तामणि काम धेनु कल्प लतेः विकएज्जा कुसुमोदितार्क पद्मरागारुण देह प्रभाभासुरीकृत समस्ताकाशादिक चक्रवाल लीला निर्दलित रौद्र दारिद्रोपद्रवे शरणागत त्राणकारिणी, दैत्यौप सर्ग निवारिणी भूत-प्रेत-पिशाच-यक्ष राक्षसाकाश जल, स्थल देवता दोष निर्णाशिनी मातृ मुग्दल चेटकोग्र ग्रहण शाकिनी

योगिनी वृन्द वेताल रेवती पीड़ा प्रमर्दित परविद्या मंत्र यन्त्रोच्छेदिनी पर सैन्य विध्वंसिनी स्थावर जंगम विष संहारिणी सिंह शार्दूल व्याघ्रोरग प्रमुख दुष्टसत्व भयापहारिणि कास-श्वास, ज्वर भगन्दर श्लेष्मवातपित्त कंडूकामल क्षयो दुम्बर प्रसूति प्रमुख रोग विध्वंसिनी चोरानल जल राजग्रहविच्छेदिनी एकाहिक द्वायहिक त्रयाहिक चातुर्थिक भौतिक वातिक सान्निपादतिक पैत्तिक ज्वरोच्चाटिनी त्रिभुवन जन मोहनी भगवती श्री पद्मावती महादेवी एहि एहि आगच्छ आगच्छ प्रसादं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

पद्मावती माला मंत्र लघु

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय पद्मावती सहिताय धरणोरगेन्द्र नमस्कृताय सर्वोपद्रव विनाशनाय, पर विद्याच्छेदनाय, परमंत्र प्रणाशनाय सर्व दोष निर्दलनाय आकाशान् बंधय-२ पातालान् बंधय बंधय देवान् बंधय-२ लाकिनी बंधय-२ जाकिनी बंधय-२ ग्रहीत मुक्तकाम बंधय-२ दिव्य योगिनी बंधय-२ वज्र योगिनी बंधय-२ खेचरी बंधय-२ भूचरीम् बंधय-२ नागान् बंधय-२ वर्ण राक्षसान् बंधय-२ जोटिगान् बंधय-२ मुग्दल ग्रहान् बंधय-२ व्यन्तर ग्रहान् बंधय-२ आकाश देवी बंधय-२ जल देवी बंधय -२ स्थल देवी बंधय-२ गोत्र देवी बंधय-२ एकाहिंक द्वायहिकत्रयाहिक चातुर्थिक नित्य ज्वंर रात्रि ज्वर सर्व ज्वर मध्यान्ह ज्वर वेला ज्वर वातिक-पैतिक श्लेष्मिक-सान्निपातिक-सर्व दोष देव कृत-मानव कृत यंत्राकृत कार्मण उच्छेदय- २ विस्फोटय-२ सर्व दोषान् सर्व भूतान् हन-हन दह-दह पच-पच भस्मी कुरु कुरु धे धे।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय ठ्म्ल्व्र्यूं क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्यं क्ष्मः कलिंकुण्ड दण्ड स्वामिन्नतुल बलवीर्य पराक्रम मम् शाकिन्यादि भयोपशमनं कुरु कुरु आत्मविद्यां रक्ष रक्ष पर विद्यां छिंदि छिंदि भिंदि भिंदि ह्रीं फट् स्वाहा।

पद्मावती मंत्र

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय सर्व लोक हृदयानन्द कारिणि भृंगी देवी सर्व सिद्धि विद्या विधायिनी कालिका सर्व विद्या मंत्र यंत्र मुद्रा स्फेटिनिकरालि सर्व पर द्रव्ययोग चूर्ण मथिनि सर्व विष प्रमर्दिनि देवि। अजितायाः स्वकृत विद्या मंत्र तंत्र योग चूर्ण रक्षिणि जृम्भे पर सैन्य मर्दिनि नोमोदानन्द दायिनि सर्व रोग नाशिनि सकल त्रिभुवानन्द कारिणि भृंगी देवि सर्व सिद्ध विद्या विधायिनि महामोहिनी त्रैलोक्य संहार कारिणि चामुण्डि ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वग्रह निवारिणि फट् २ कम्प २ शीघ्रं चालय २ बाहुं चालय २ गात्रं चालय २ पादं चालय २ सर्वाङ्ग चालय २ लोलय धनु धनु कम्प २ कम्पय २ अजिते ह्रीं २ हन २ दह २ पच २ पाचय २ चल २ चालय २ आकर्षय २ आकम्प २ विकम्पय २ क्ष्म्ल्व्र्यूं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः हूँ फट् फट् निग्रह ताडय २ क्म्ल्व्र्यूं स्रां स्रीं हूँ क्रौं क्षं क्षौं क्षः क्षः हः २ सः २ धः २ सं २ भ्म्ल्व्र्यूं हूँ २ धर २ कर २ हूँ फट् फट् फट् ॐ शंख मुद्रया धर २ य्म्ल्व्र्यूं पुर हूँ फट् कठोर मुद्रया मारय २ ग्राहय २ क्ष्म्ल्व्र्यूं हर हर स्वस्तिक मुद्रा ताडय २ रम्ल्व्र्यूं पर २ प्रज्वल २ प्रज्वालय २ धग २ धूमान्धकारणी रां रां प्रां प्रां क्लीं हः २ वः २ आं नंद्यावर्त मुद्रया त्रासय २। क्ष्म्ल्व्र्यूं शंख चक्र मुद्रया छिंदि २ भिंदि २ ग्म्ल्व्र्यूं मुशल मुद्रया ताडय २ पर विद्यां छेदय २ पर मंत्र भेदय २ ध्म्ल्व्र्यूं धम २ बन्धय २ भेदय २ हलमुद्रया पः २ वः २ यं कुरु २ व्म्ल्व्र्यूं ब्रां ब्रीं ब्रूं ब्रौंब्रः समूद्रे मज्जय २ घ्म्ल्व्र्यूं छ्रां छ्रीं छ्रौं छ्रः अंत्राणि छेदय २ पर सैन्यमुच्चाटय २ परं रक्षां क्षः क्षः क्षः हूँ ३ फट् फट् कपर सैन्य विध्वंसय २ मालय २ दारय २ विदारय २ गातिं स्तम्भय २ भ्म्ल्व्र्यूं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः श्रवय २ श्रावय २ ट्म्ल्व्र्यूं यः प्रेषय २ पं छेदय २ द्वेषय २ विद्वेषय २ स्म्ल्व्र्यूं स्रां स्रीं स्रूं स्रौं स्रः श्रावय २ मम रक्षां रक्ष २ पर मंत्र क्षोभय २ छेद २ छेदय

२ भेद २ भेदय २ सर्व यंत्र स्फोटय २ मं मं म्म्ल्व्र्यूं म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जृम्भय २ स्तम्भय २ दुःखय २ दुःखाय २ ख्म्ल्व्र्यूं ख्रा ख्रीं ख्रौं ख्रः हाः ग्रीवां भंजय २ मोहय २ त्म्ल्व्र्यूं त्रां त्रीं त्रूं त्रौं त्रूः त्रासय २ नाशय २ क्षोभय २ सर्वाङ्ग स्तम्भय २ चल २ चालय २ भ्रम २ भ्रामय २ धूनय २ कम्पय २ आकम्पय २ भ्म्ल्व्र्यूं स्तम्भय २ गमनं स्तम्भय २ सर्वभूतं प्रमर्दय २ सर्व दिशा बंधय सर्व विघ्नान् छेदय २ निकृन्तय २ सर्व दुष्टान् निग्राहय २ सर्व यंत्राणि स्फोटक २ सर्व श्रृखलान् त्रोटय २ मोटप २ सर्व दुष्टान् आकर्षय ह्म्ल्व्र्यूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः शान्ति कुरु २ तुष्टिं कुरु २ पुष्टि कुरु २ स्वस्ति कुरु २ ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रौं ह्रः पद्मावती आगच्छ २ सर्व भयात् माम रक्ष २ सर्व सिद्धि कुरु २ सर्व रोगं नाशय २ किन्नर किं पुरुष गरुड़ महोरग गंधर्व यक्ष राक्षस भूत प्रेत शाकिनी मर्दय २ सर्व रोग योगिनी गणं चूर्णय गणं चूर्णय २ नृत्य २ गाय २ काल २ किलि २ हिलि २ मिलि २ सुलु २ मुलु २ कुलु २ कुरु २ अस्माकं वरदेः पद्मावतीः हन २ दह २ पच २ सुदर्शन चक्रेण छिंदि ह्रीं २ क्लीं प्लीं प्लुं प्लुं ह्रां ह्रीं श्रूं ह्रूं भ्रूं स्त्रूं स्त्रं ह्रूं ग्रीं प्रीं श्रां श्रीं त्रां त्रीं ह्रां ह्रीं प्रां प्रीं प्रः पद्मावती धरणेन्द्र माज्ञापयति स्वाहा।

यह पद्मावती माला मंत्र पढ़ने मात्र से सिद्ध होता है। नित्य त्रिकाल पढ़ें। सर्व कार्य की सिद्धि होती है, भूत प्रेतादि व्याधियां नष्ट होती हैं।

पंचोपचारी पूजा

आह्वानं स्नापनं देव्याः सन्निधीकरणं तथा।
पूजां विसर्जनं प्राहुर्बुधाः पञ्चोपचारकम्।।

आह्वानं, देव्याह्वानं, स्थापनं, सन्निधीकरणं, देव्याः सन्निधीकरणं, तथा तेनैव प्रकारेण पूजा, देव्यार्चनं, विसर्जनं, देव्याविसर्जनं। बुधाः पचोपचारकं, एतत्पंचोपकारकं, प्राहुः कथयंति।

महादेवी का अवाहन्, स्थापना, सन्निधीकरण करना, पूजन करना और विसर्जन करना– इनको विद्वानों ने पञ्चोपचार पूजा कहा है।

ॐ ह्रीं नमोस्तु भगवति एह्येहि संवौषट्।
कुर्यादमुना मंत्रेणाह्वानमनुस्मरन् देवीं।।

ॐ ह्रीं नमोस्तु भगवतिपद्मावति ऐह्येहि संवौषडिति अनेन मंत्रेण अनुस्मरन्देवीं, देवीं पद्मावती चिंतयन् देव्याह्वानं कुर्यात्।

ॐ ह्रीं नमोस्तु भगवति एहि–२ संवौषट्। इस प्रकार मंत्र का चिन्तवन करता हुआ देवी का आह्वानन करे।

तिष्ठद्वितयं टांत द्वयं व संयोजयेत् स्थिती करणे।
सन्निहिता भव शब्दं मम वषडिति सन्निधिकरणे।।

तिष्टद्वितयं प्राक्कथित मंत्राग्रे तिष्ट तिष्टेति पद द्वयं न केवलं तिष्ठ तिष्टेति पदद्वयं, ठं, त द्वयं च ठ कार द्वयं च, संयोजयेत्, सम्यक् योजयेत्, क्व स्थिति करणे, देव्यास्थाने, सन्निहिता भव शब्दं, ममवषडिति प्राक्कथित मंत्रस्याग्रे मम् सन्निहिते भव वषडिति पदं योज्यं, सन्निधी करणे देव्याभि मुखी करणे।

पूर्वोक्त मंत्र के साथ तिष्ठ तिष्ठ पद को लिखे, उसके बाद ठः ठः दोनों को भी लिखे, स्थिति करण के लिए, फिर देवी की स्थापना में मम् सन्निहितो भव २ वषट् इसको भी पूर्वोक्त मंत्र के आगे लिखे देवी को अभिमुख करने के लिए।

गंधादीन् गृन्ह गृन्हेति नमः पूजा विधानके।
स्वस्थानं गच्छगच्छेति जः त्रिस्वात्तद्विसर्जने।।

गंधादीन् गृन्हेति नमः, प्राक्कथित मंत्रस्याग्रे गंधादीनं गृह्ण गृह्ण नमः। इति योज्यं, क्वपूजाभिधानके, देव्यार्चन, विधाने स्व स्थानं गच्छ

गच्छेति जः स्त्रि स्यात्, प्राक्कथित मंत्रस्याग्रे स्व स्थानं गच्छ २ जः जः जः इति त्रिवारं योजयेत्, क्व विसर्जने, देव्याविसर्जने।

मंत्रोद्धार

ॐ ह्रीं नमोस्तु भगवति पद्मावति एह्येहि सँवौषट्।

ॐ ह्रीं नमोस्तु भगवति पद्मावति तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थितिकरणं।

ॐ ह्रीं नमोस्तु भगवति पद्मावति मम् सन्निहिता भव वषट।

ॐ ह्रीं नमोस्तु भगवति पद्मावति गंधादीन् गृह्ण २ नमः।

इति पूजाभिधानं।

ॐ ह्रीं नमोस्तु भगवति पद्मावति स्व स्थानं गच्छ २ जः जः जः, इति विसर्जनं।

आह्वानन स्थापन और संनिधिकरण करने के बाद पूर्वोक्त मंत्रका उच्चारण करता हुआ जल, गंध, अक्षत, पुष्प, चरु, दीप, धूप, फल, अर्घ्य को समर्पण करता हुआ, गृह्ण २ बोलता हुआ, पूर्वोक्त मंत्र के साथ स्वस्थानं गच्छ २ जः ३ इस प्रकार तीन बार कहे, देवी का विसर्जन करने के लिए।

पूरक रेचक योगादाह्वान विसर्जनं करोतु बुधः।
पूजाभिमुखी करणे स्थापन कर्माणि कुंभकतः।।

बुद्धिमान् मनुष्य पूरक योग से देवी का आह्वानन करे, रेचक योग से देवी का विसर्जन करे, कुंभक येग से पूजाविधि और सन्निधिकरण स्थापना करे।

ब्रह्मादि लोक नाथं ह्रैं कारँ व्योमषान्तमदनोपेतम्।
पद्मे च पद्म कटिनि नमोऽन्तगो मूलमन्त्रोऽयम्।।

पहले ब्रह्म माने ॐ कार, लोक नाथ माने मायाबीज ह्रीं कार,

हैं आकाशबीज माने हूं कार, ष का अंत सकार कामबीज माने ल्कीं कार मिलकर हस्ल्की, पद्मे पद्मकटिनि और नमः शब्द है अंत में जिसके ऐसा यह मूल मंत्र है।

सिध्यति पद्मादेवी त्रिलक्ष जाप्येन पद्मपुष्पाणाम्।
अथवारुण करवीरक संवृत पुष्प प्र जाप्येन्।।

इस मंत्र का कमल के फूलों से तीन लाख जाप्य करने से मंत्र सिद्ध होता है, कमल फूलों के अभाव में लाल कनेर के डाली सहित फूलों से तीन लाख जाप्य करने से पद्मावती देवी सिद्ध होती है।

ब्रह्म माया च हैं कारं व्योम क्लीं कार मूर्धगम्।
श्रीं च पद्मे ! नमो मंत्रं प्राहुर्विद्यां षडक्षरीम्।।

ब्रह्म ॐ कार माया ह्रीं कार हैं कार हस्ल्कीं और श्रीं बीज पद्मे, यह पद और नमः इस पद से बना हुआ इस मंत्र को मंत्रवादी षडक्षरो मंत्र कहते हैं।

मंत्रोद्धार– ॐ ह्रीं हैं हूँ क्लीं श्रीं पद्मे नमः।

वाग्भवं चित्तेनाथं च ह्रौं कारं षान्तमूर्धगम्।
बिन्दुद्वययुतं प्राहुर्विबुधाख्यक्षरीमिमाम्।।

वाग्भवं माने ऐं कारं चित्तनाथं माने ल्कीं कारम् ह्रौं कारं, उसके बाद आये हुए सकार और विसर्ग सहित ह्सौ यह बीज इस मंत्र को विद्वानों ने तीन अक्षर का मंत्र है।

मंत्रोद्धार– ॐ ऐं क्लीं ह्सौ नमः।

वर्णान्तः पार्श्वजिनो यो रेफस्तलगतः स धरणेन्द्रः।
तुर्यस्वरः सबिन्दुः स भवेत् पद्मावतीसंज्ञः।।

वर्णों के अंत में का हकार, वह हकार पार्श्वनाथजिन संज्ञा का

वाचक है, उस हकार के नीचे, रेफ वह रेफ धरणेन्द्र संज्ञा वाला होता है, चौथा नंबर का स्वर, याने ई कार वह बिन्दु अनुस्वार युक्त वह पद्मावती संज्ञा वाला है, इस प्रकार से बनने वाले मंत्र को एकाक्षरी मंत्र कहा है।

मंत्रोद्धार– ॐ ह्रीं नमः।

यह एकाक्षरी विद्या है।

त्रिभुवनजनमोहकरी विद्येयं प्रणवपूर्वनमनान्ता।
एकाक्षरीति संज्ञा जपतः फलदायिनी नित्यम्।।

यह एकाक्षरी मंत्र तीनों लोकों को मोहित करने वाला है और जाप्य करने वाले मंत्री को हमेशा (नित्य) फल देने वाली विद्या है।

होम विधि

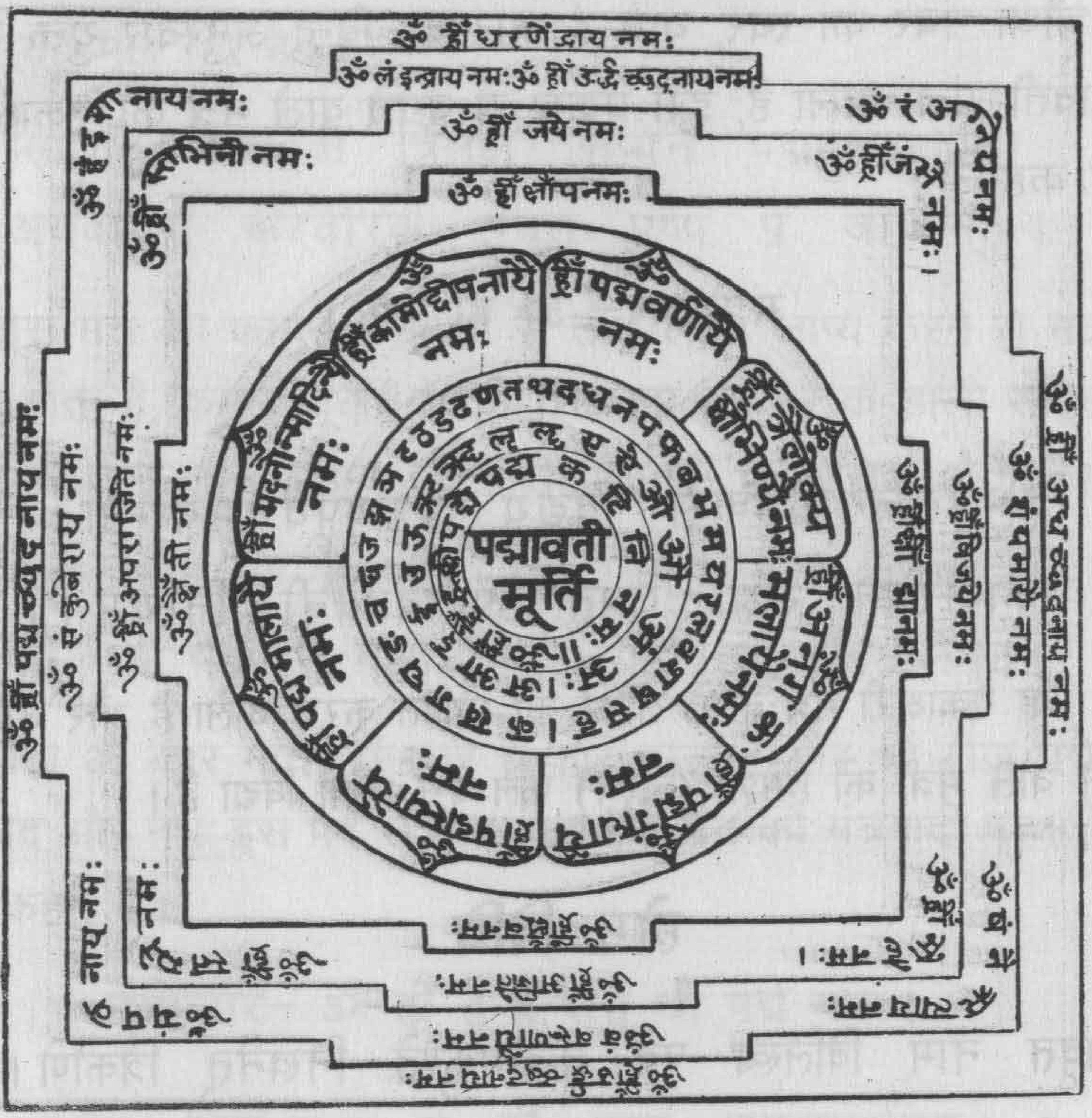
तत्वावृत नाम विलिख्य पत्रे तद्धोमकुण्डे निखनेत् त्रिकोणे।
स्मरेषुभिः पञ्चभिराभिवेष्टय बाह्ये पुनर्लोकपति प्रवेष्ट्यम्।।

ताम्रपत्र पर नाम लिख कर, उस नाम को ह्रीं से वेष्टित करे। याने ह्रीं के मध्य में नाम लिखे, फिर चारों तरफ से कामबाण, द्राँ द्रीं क्लीं ब्लूँ सः ये पांच लिखे, उसके बाद ह्रीं से वेष्टित करे, इस यंत्र को त्रिकोण होम कुण्ड में गड़ दे।

मधुरत्रिक सम्मिश्रित गुग्गुलकृतचणकमात्र वाटिकानाम्।
त्रिशतसहस्त्रस्त्रहोमात् सिध्यति पद्मावती देवी।।

फिर घी, दुग्ध, शक्कर से संयुक्त गुग्गुल की चने के बराबर ३०,००० तीस हजार गोली बनावे, इन गोलियों से होम करे, पद्मावती देवी सिद्ध होती है।

मंत्राराधनाके समय पास रखनेका यंत्र



मन्त्रस्यान्ते नमः शब्दं देवताराधना विधौ।
तदन्ते होमकाले तु स्वाहा शब्दं नियोजयेत्।।

अर्थ– मंत्र के अन्त में नमः। शब्द लगाकर जाप्य करे, फिर होम करने के समय मंत्र के अन्त में स्वाहा शब्द लगाकर होम करे, तब सिद्धि हो जाती है।

धरणेन्द्र यज्ञ की साधन विधि

दशलक्षजाप्य होमात् प्रत्यक्षो भवति पार्श्वयक्षोऽसौ।
न्यग्रोध मूलवासी श्यामाङ्गस्त्रिनयनो नूनम्।।

धरणेन्द्र यक्ष के मंत्रों का दश लाख जाप्य करने से वट्वृक्ष के ऊपर

रहने वाले पार्श्वयक्ष जो की काला रंग वाला, और त्रिनेत्र वाला है, उस यक्ष की सिद्धि होती है, होम १,००,००० एक लाख मंत्रों से करे। याने १०,००० दशलक्ष जाप्य से और एकलक्ष मंत्र होम से धरणेन्द्र यक्ष की सिद्धि होती है।

मंत्रोद्धार– ॐ ह्रीं पार्श्वयक्ष दिव्य रूप महर्षण एहि–२ ॐ क्रों ह्रीं नमः।

यह यक्षाराधना मंत्र है।

निजसैन्यैर्मायामय समुच्छ्तैर्वैरिलोकमप्रस्थम्।
विमुखीकरोति यंत्रः सङ्ग्रामें निमिषमात्रेण।।

यह लक्ष अपनी मायामय सेना बनाकर, बड़ी भारी शत्रु सेना को भी क्षण मात्र में जीत लेता है। युद्ध भूमि में आये हुए बड़ी सेना भी क्षण भर में भी भाग जाती है। माया ह्रीं कोट के प्रभाव से।

सान्तं बिन्दूर्ध्वरेफं बहिरपि विलिखेदायताष्टाब्जपत्रं।
दिक्ष्वै श्रीं ह्रीं स्मरेशो गजवशकरणं ह्रौं तथा ब्लै पुनर्यू।।
बाह्मे ह्रीमों नामोऽर्हं दिशि लिखित चतुर्बीजकं होमयुक्तं।
मुक्ति श्री वल्लभोऽसौ भुवनमपि वशं जायते पूजयेद् यः।।

बिन्दु और रेफसे सहित हकार यानी र्हं बीज को लिखकर उसके बाहर आठ पंखुड़ी का कमल बनावे उस कमल के चारों तरफ से चारों दिशाओं के दलों में ऐं श्रीं ह्रीं और क्लीं को लिखे, फिर विदिशाओं के दलो में क्रौं झ्रौं ब्लें और यूँ अं को लिखकर, उस यंत्र के बाहर के भाग को ह्रीं कार से वेष्टि करे, फिर पूर्वादि चारों दिशाओं में ॐ नमोऽर्हं ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा, मंत्र से वेष्टित करे। इस प्रकार चिन्तामणि यंत्र की जो कोई पूजन करता है उस मनुष्य के वश में संपूर्ण लोक रहता है और मोक्ष लक्ष्मी भी वश में रहती है।

ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं क्लीं जये विजये अजिते अपराजिते झ्म्ल्व्र्यूं जम्भे भ्म्ल्व्र्यूं मोहे म्म्लव्र्यूं स्तम्भे ह्म्ल्व्र्यूं स्तम्भिनि अमुकं मोहय २ मम वश्यं कुरु २ (आँ) क्लीं ह्रीं क्रों वषट्।



वाजिमाहिषकेशैश्च विपरीत मुखस्थयोः।
आवेष्टय स्थापयेद् भूम्यां विद्वेषं कुरुते तयोः।।

फिर उस यंत्र को घोड़े का और भैंसे का बाल लेकर लपेटे तदन्दर श्मशान भूमि में दोनों यंत्रों का उल्टा मुँह कर के गाड़ दे यंत्रों में लिखे दोनों पुरुषों से परस्पर द्वेष उत्पन्न हो जाता है याने द्वेष उत्पन्न कर देता है।

श्मशाने निखनेद् रोषात् कृत्वा तद् भस्मपूरितम्।
करोति तत्कुलोक्चाटं वैरिणां सप्तरात्रत:।।

फिर उस यंत्र को क्रोध में आकर श्मशान की राख से भरकर श्मशान में फेंक दे तो इस यंत्र के प्रभाव से सात दिन में शत्रु के सम्पूर्ण परिवार का उच्चाटन कर देता है। उच्चाटन कर्म के लिए यह ह रंजिका यंत्र है।

फडक्षरं नम: स्थाने श्मशान स्थित कर्पटे।
निम्बार्कजरसेनैतद! विलिखेत् कुद्धचेतसा।।

पहले कहे अनुसार यंत्र के समान ह कार के स्थान पर फट् अक्षर श्मशान के कपड़े पर नीम का रस और अकौए का रस से क्रोध में आकर भरकर यंत्र को लिखे।

सुवर्णगठितं कृत्वा बाहौ वा धारयेद् गले।
करोतीदं सदा यन्त्रं तरुणीजन मोहनम्।।

यह यंत्र सोने के ताबीज में डाल कर हाथ में अथवा गले में बांधे तो सदा ही यंत्र तरुणी जन को मोहित करता है, वश करता है।

क्षाद्यक्षरपदे योज्यं लं शिलातलसम्पुटे।
विलिक्ष्योर्वीपुरं बाह्मे स्तम्भने तालकादिभि:।।

पूर्वोक्त यंत्रनुसार (क्षवषट्) के स्थान पर लंकार को लिखे, कहां लिखे? पृथ्वी में रहने वाले शिलातल संपुट पर लिखे। किस से लिखे? हरतालादि पीले द्रव्यों से लिखे और इन द्रव्यों से पृथ्वी मंडल बनाकर रखे, तो स्तंभन होता है।

स्तम्भने तु मैन्द्रं निज बीजमैन्द्रं (न्दं) श्री कुङ्कु माद्योर्लिखितं सु भूर्ज्जे।
त्रिलोहवेष्टयं विधृतं स्वबाहौ, करोति रक्षां ग्रह मारी रुम्भ्य:।।



पूर्वोक्त यंत्र के अनुसार लंकार की जगह पर श्रीं कार को लिख कर स्थापन करके इस यंत्र को भोजपत्र पर सुगन्धित द्रव्यों से लिखकर त्रिलोह के मादलीया में डालकर अपनी दाहिनी भुजा में धारण करे तो यह मंत्र ग्रह मारी आदि रोगों से रक्षा करता है।

मंत्र– ॐ नमो भैरवी अग्नि स्तंभिनि, पंचदिव्यो तारिणि श्रेयस्करी यशस्करी ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल सर्व कर्म साधिनी स्वाहा।

त्रीकारं चिन्तयेद् वक्त्रे विवादे प्रतिवादिनाम्।
त्रां वा रेफं ज्वलन्तं वा स्वेष्ट सिद्धि प्रदायकम्।।



दूसरे के साथ शास्त्रार्थ करते समय अपनी विजय हो, इसलिए मुँह में त्रींकार त्रां अथवा जाज्वल्यमान रकार माने (रँ अग्नि बीज) का चिंत वन करने से इष्ट सिद्धि होती है।



मंत्रोद्धार– ॐ थंभेई अमुके अमुकस्य जल ज्जलणं चिंन्तिय मिन्तेण पंचणमु यारो अरि मारि चोर राउल घोरुवसग्गं विणासेई स्वाहा।

ॐ वार्तालि ! वराहि ! वराहमुखि । जम्भे ! जम्भिनि ! स्तम्भे ! स्तम्भिनि ! अन्धे ! अन्धिनि! रून्धे! रून्धिनि! सर्वदुष्टप्रदुष्टानां क्रोधं लिलि गतिं लिलि जिह्वां लिलि ॐ ठः ठः ठः। अयं वार्तालीमंत्र।

वार्ताली मंत्रोद्धार



ॐ वार्तालि, वाराहि, वाराहमुखि, जम्भे, जम्भिनि स्तंभे, स्तंभिनि, अन्धे, अन्धिनि, रून्धे, रून्धिनि सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां क्रोधं लिलि गतिं लिलि, मतिं लिलि, जिव्हां लिलि ठः ठः ठः।

ऋषभनाथ का मंत्रोद्धार

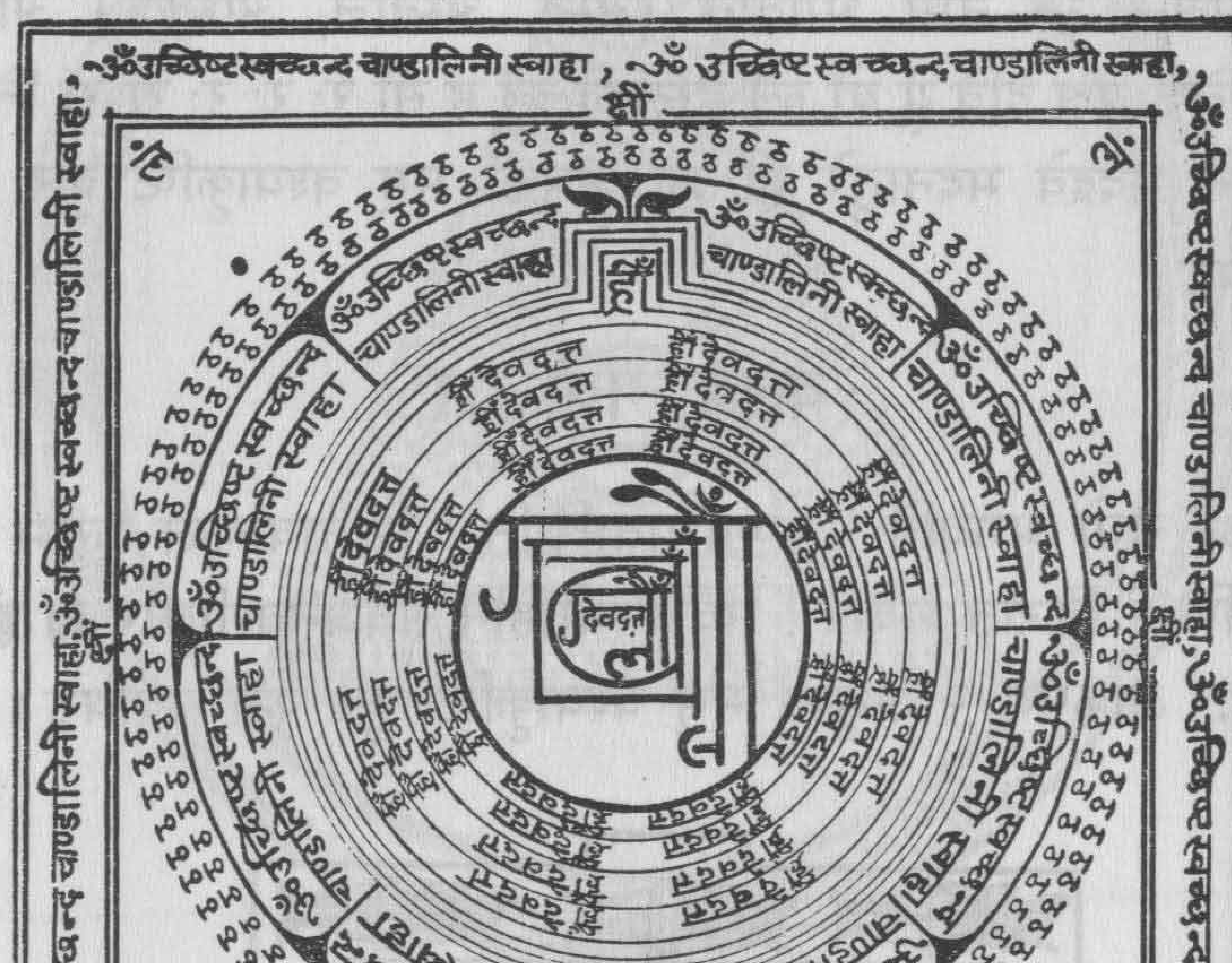
ॐ णमो भगवदो रिसहस्स पडिनिमित्तेण चारण पण्णति इंदेण भणामइ ययेण उपाडिया अजीहा, कण्ठोठ मुह तालु वर वीलियायेमइ

भंसदू योमइ दुट्ठदिट्ठिए वज्जसंखलाए देवदत्तस्स मणं हिययं कोह जीव्हा खीलिया भेलखियाये, ल ल ल ल ठ ठ ठ ठ।

मंत्रोद्धार

ॐ उच्छिष्ट स्वच्छन्द चाण्डालिनि! स्वाहा।

ॐ हूँ ह्रीं क्लैं ग्लौं स्वाहा ठ ठ देवदत्तस्य पट्टाश्वे ॐ हूँ ह्रीं क्लैं ग्लौं स्वाहा ठ ठ देवदत्तस्य पट्टगजे ॐ हूँ ह्रीं इत्यादि मंत्रेण समन्ततो वेष्टयेत।



ॐ हूँ ह्रीं क्लैं ग्लौं स्वाहा ठ ठ देवदत्तस्य पट्टाश्वं, ॐ हूँ ह्रीं क्लैं ग्लौं स्वाहा ठ ठ देवदत्तस्य पट्टगजे ॐ हूँ ह्रीं ऐं ग्लौं स्वाहा ठः ठः।

मंत्र– ॐ ह्रीं भैरवरूपधारिणि चण्डशूलिनी, प्रतिपक्ष सैन्यं चूर्णय २ घूर्म्मय २ भेदय २ ग्रस २ पच २ खादय २ मारय २ हूँ फट् स्वाहा।

आकर्षण मंत्र

द्विरेधयुक्तं लिख मान्तयुग्मं षष्ठस्वरौकारयुंत सबिन्दु।
स्वरावृत पञ्च पुराणि वन्हें रेफात् क्रमात् क्रोमथ ह्रीं च कोणे।।

दो रेफ से युक्त छट्ठा स्वर उकार और औकार युक्त अनुस्वार सहित दो यकार लिखना, यानी यूँ और यौं को लिखना, फिर इस बीज के बाहरी भाग में सोलह स्वरों को लिखे, तदनंतर उसके बाहरी भाग में पांच अग्निपुर का लेखन करे, पांच अग्निपुर के प्रथम मंडल में तीनों कोनों में क्रौं और ह्रीं बीज को अनुक्रम से लिखे।

मंत्र– ॐ नमो भगवति (अम्बे, अम्बाले, अम्बिके) अंबिके अंबालिके यक्ष देवि यूँ यों ब्लैं ह्स्लकी ब्लूँ ह् सौं रः रः रः रां रां नित्ये, क्लिन्ने मदद्रवे मदनातुरे ह्रीं क्रों अमुकीं मम् वश्याकृष्टि कुरु कुरु संवौषट्।

वलय मंत्रोद्धार

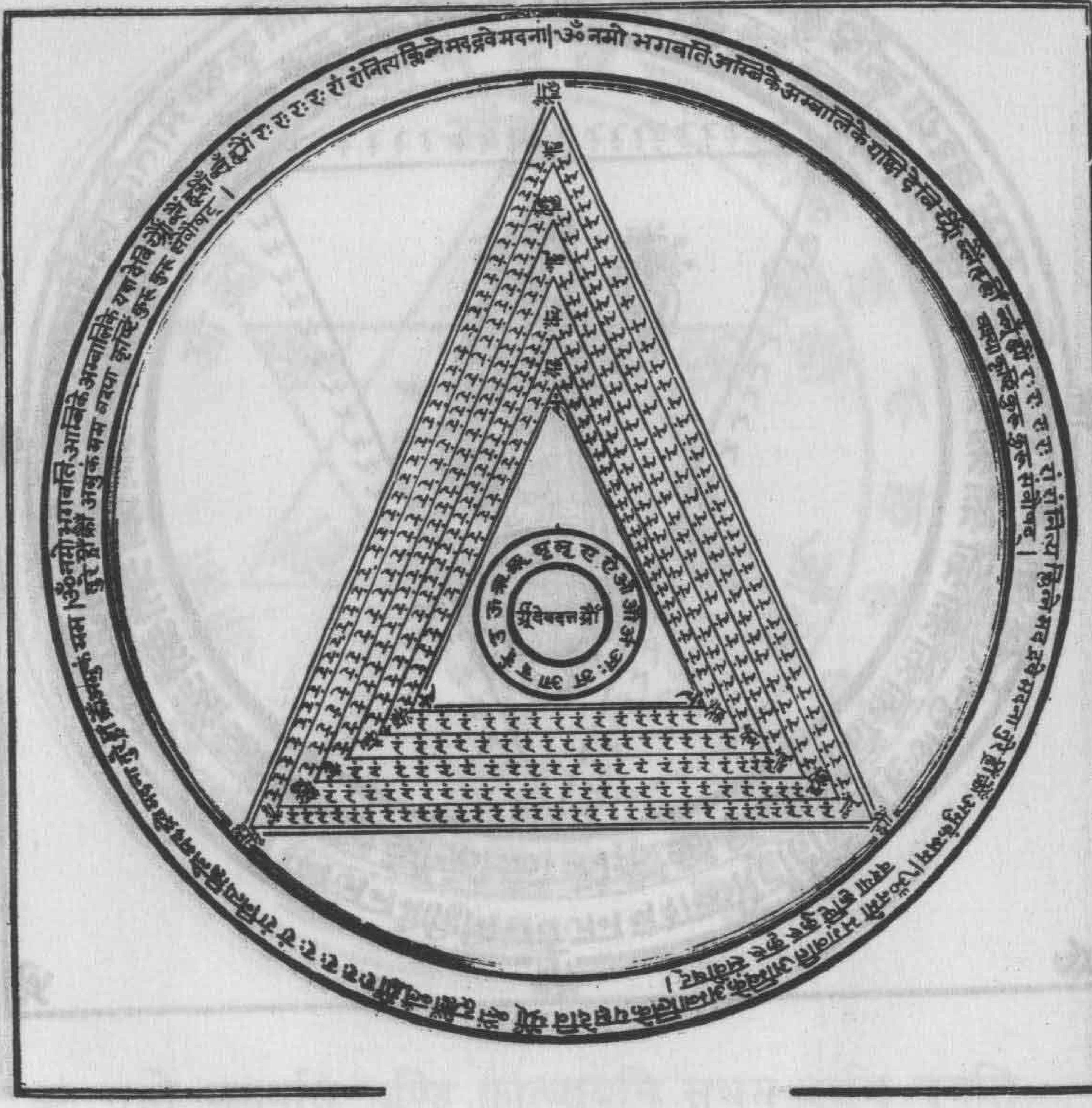
ॐ नमो भगवति ! कृष्णामाताङ्गिनि ! शिलावल्कल कुसुम रूप धारिणि ? किरात शवरि ! सर्वजनमोहिनि सर्वजनवशीकरि ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं हः आकर्षय २ अमुकां मम वश्याकृष्टिं कुरु कुरु संवौषट्।



सेनास्तंभन यंत्रचित्र नं. २४,

वलय में लिखने के लिए मंत्र

ॐ नमो भगवति कृष्णमातङ्गिनिशिलाव त्कल कुसुम रूप धारिणि किरात शवरि सर्वजन मोहिनि सर्वजन वशकरि ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अमुकां (कीं) आकर्षय २ मम वश्या कृष्टिं कुरु कुरु संवौषट्।



वलयमंत्रोद्धार

मंत्र– ॐ ह्रीं ह् स्कलीं ह् सौ आँ क्रों य्र्यूं नित्यक्लित्रे ! मदद्रवे! मदनातुरे ! अमुकी मम् वश्याकृष्टिं कुरु कुरु संवौषट्।

ॐ ह्रीं ह्स्ल्कीं ह् सौ आँ क्रौं य्र्यूं नित्य क्लिन्ने मदद्रव मदनातुरे

अमुकीं मम् वश्या कृष्टिं कुरु कुरु संवौषट्।

ॐ ह्रीं हैं ह्क्लीं पद्मे पद्म कटिनि अमुकां मम् वश्याकृष्टिं कुरु कुरु संवौषट्।



रविदुग्धादिविलिप्ते युवतिकपालेऽथवा लिखेद् यंत्रम्।
पुरुषाकृष्टौ च पुनर्नृकपाले यन्त्रमेवेदम्।।

इस यंत्र को आंकड़े के दूध अथवा भूअर के दूध, गृह की धुआं, सफेद सर्सों और नमक आदि द्रव्यों से किसी स्त्री के कपाल पर लिखे, पहले कहे हुए यंत्र को अथवा पुरुषाकर्षण में पुरुष के कपाल पर लिखे, यंत्र को खेर की अग्नि पर तपावे तो सात दिन में स्त्री आकर्षित होती है।

वलय मंत्रोद्धार

ॐ नमो भगवति ! चण्डि ! कात्यायनि ! सुभग दुर्भग युवतिजनानाकर्षय आकर्षय ह्रीं र र य्र्यूं संवौषट् देवदत्ताया हृदयं घे घे।



मंत्र– ॐ नमो भगवति चण्डि कात्यायनि सुभग दुर्भग युवति जनानामाकर्षय २ ह्रीं र र य्र्यूं संवौषट् देवदत्तायां हृदयं घे घे।

वशीकरण

भूर्ये सुरभिद्रव्यैर्विलिख्य तत् सिक्थकेन परिवेष्टय।
नूतनघटेऽम्बुपूर्णे तद्यन्त्रं स्थापयेद् धीमान्।।

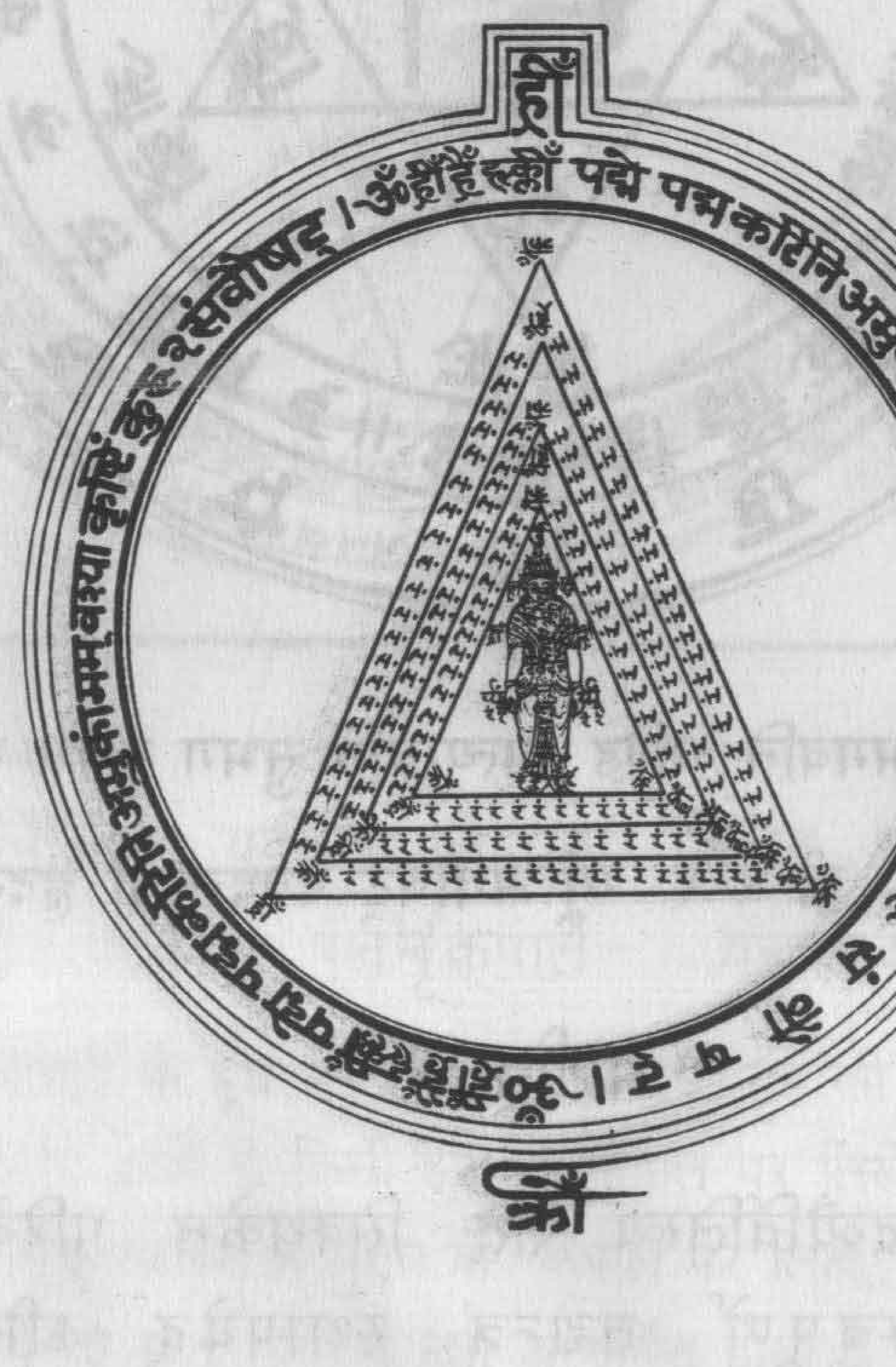
मंत्रसाधक इस यंत्र को भोज पत्र पर केसर, कर्पूर, आदि सुगन्धित द्रव्यों से लिखकर, यंत्र को मोम मे लपेट कर, ठंडे पानी से भरे हुए नवीन घड़े में रखे।

तन्दुलपूर्ण मृण्मयभाजनमप्युपरि तस्य संस्थाप्य।
श्री पार्श्वनाथ सहितं करोति दाहज्वरोपशमम्।।

फिर चांवलों से भरे हुए मिट्टी के घड़े के ऊपर स्थापना कर उसके ऊपर श्री पार्श्वनाथ भगवान को स्थापना करने से दाह ज्वर शांत होता है।

मंत्रोद्धार

ॐ ह्रीं ह्रैं ह्स्लकीं पद्मे ! पद्मकटिनि ! नमः।



कृत्वा ततश्चोभय सम्पुटं च श्रीपार्श्वनाथस्य पुरो निवेश्य।
सन्ध्यासु नित्यं करवीर पुष्तैर्भवेदवश्यं जपतः सुसाध्यम्।।

उसके बाद साधक यंत्र और साध्य यंत्र को संपुट करके माने दोनों को एक साथ यंत्र का एक ही तरफ मुंह करके, मुह मिलाकर यंत्र को संपुट कर दो, फिर उस यंत्र को पार्श्वनाथ तीर्थकर की मूर्ति के समान स्थापन करके, त्रिकाल कनेर के फूलों पर जाप्य करने से साधक को यंत्र की सिद्धि होती है।



ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं असिआउसा अनाहतविद्यायै नमः।

भूर्यपत्रे पटे वाऽपि विलिखेच्च हिमादिभिः।
ॐ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूँ सकारान्त्यमन्त्रं क्षोभकरं जपेत्।।

इस यंत्र को भोजपत्र वा वस्त्र पर कपूर, केशरआदि सुगंधित द्रव्यों से लिखे, और ॐ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूँ सः। इस मंत्र का जन क्षोभ करने के लिए जप करना चाहिए।

तद् बाह्येऽर्कशशिभ्यां जपतः शून्यैश्च पञ्चभिर्नित्यम्।
नागनरामरलोकः क्षुभ्यति वश्यत्वमायाति।।

इस यंत्र के बाहर भाग में चंद्र और सूर्य को बनावे, फिर पांच शून्याक्षरों का सर्व काल जाप करने वाले साधक कने नाग लोक, मनुष्य लोक, देव लोक ये तीनों लोक के जीव वश्य हो जाते हैं क्षोभ को प्राप्त हो जाते हैं। वशीभूत होते हैं।

अष्टौ लघुपाषाणान् दिशासु परिजप्य निक्षिपेद् धीमान्।
चौरादिरौद्र जीवादभयं सन्पद्यतेऽटव्याम्।।

आठ छोटी कंकरियों लेकर निम्न लिखित मंत्र से मंत्रित कर आठों दिशाओं में फेकने वाले बुद्धिमान व्यक्ति को अरण्य में अथवा अन्य जगह भयंकर पशुओं जीवों से होने वाला भय नष्ट हो जाता है।

मंत्र–ॐ नमो भयवदो अरिट्ठणेमिस्स अरिट्ठेण बंधेण बंधामि रक्खसाणं भूयाणं खेयराणं चोराणं दार्ढाणं साइणीणं महोरगाणं अण्णे जे के वि दुट्ठा संभवंति तेसिं सव्वेसिं मणं मुहं दिट्ठिं बंधामि धणु धणु महाधणु महाधणु जः ठः ठः ठः हुं फट।

अरिष्ठ नेमि मंत्र

ॐ णामो भयवदो अरिट्ठणेमिस्स बंधेण बंधामि रक्खसाणं भूयाणं खेयराणं दाढीणं महोरगाणं, अण्णे जे के वि दुट्ठा संभवंति तेसिं सव्वेसिं मणं मुहं गहं दिट्ठि बंधामि धणु धणु महाधणु–२ जः जः जः ठः ठः हूं फट्।

मंत्रोद्धार– ॐ ह्मक्लीं ह्रीं ऐं नित्ये क्लिन्ने मदद्रवे मदनातुरे ममामुकीं वश्याकृष्टि कुरु कुरु वषट् स्वाहा।



मंत्र– ॐ ऐं ह्रीं देवदत्तस्य सर्वजनवश्यं कुरु कुरु वषट्।

इस यंत्र को सर्व काल पूजने से और हाथ में बांधने से त्रैलोक्य में रहने वाले सर्व लोग मोहित होते हैं।

मंत्र– ॐ भ्रम भ्रम केशि केशि भ्रम माते भ्रम माते भ्रम विभ्रम विभ्रम मुह्य मुह्य मोहय मोहय स्वाहा।

मंत्र– ॐ भ्रम २ केशिभ्रम २ मातेभ्रम २ विभ्रम २ मुह्य २ मोहय २ स्वाहा।

एतेन लक्षमेधं भ्रमिमसम्प्राप्त सर्षपैर्जप्त्वा।
क्षिप्ते गृहेदेहल्यामकालनिद्रां जनः कुरुते।।

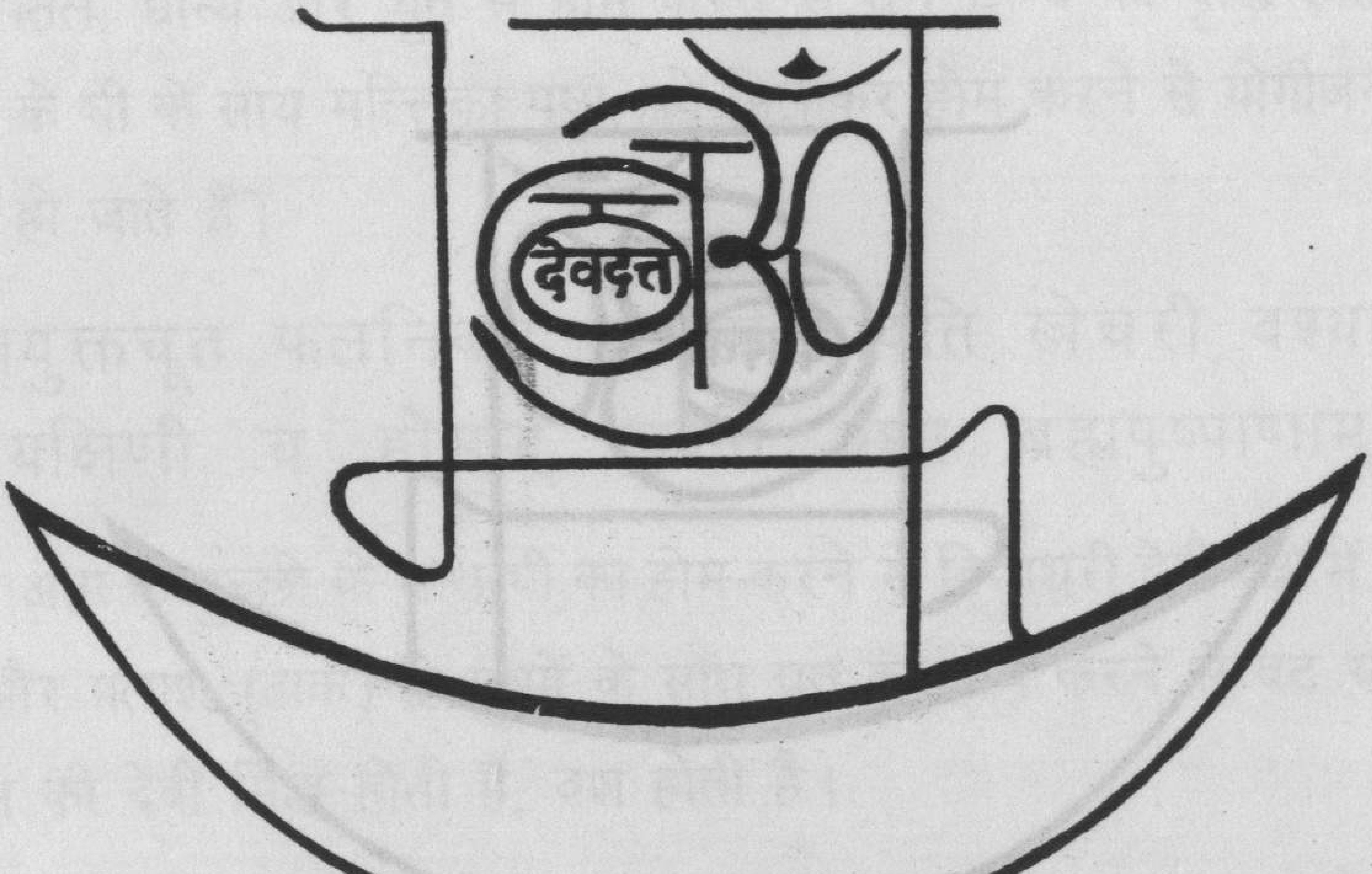


इस प्रकार कहे हुए मंत्र को भूपि पर नहीं गिरे हुए सफेद सरसों से एक लक्ष जाप्य करे और उन सरसों को घर की देहली (चौखट) फेंक दे तो घर के सब लोग अकालनिद्रा को प्राप्त हो जाते हैं। यानि सब सो जाते हैं।

फलपुष्पादिक को मंत्रित करने का मंत्र

मंत्र– ॐ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूँ सः ह्क्लीं ऐं नित्य क्लित्रे मदद्रवे मदनातुरे सर्वजनं मम् वश्यं कुरु कुरु वषट्।

ज्वर हरण मंत्र यत्र



मंत्र– ॐ चण्डेश्वर ! चण्ड कुठारेण अमुकं ज्वरेण ह्रीं गुह्ल गुह्ल मारय मारय हूं फट् घे घे।

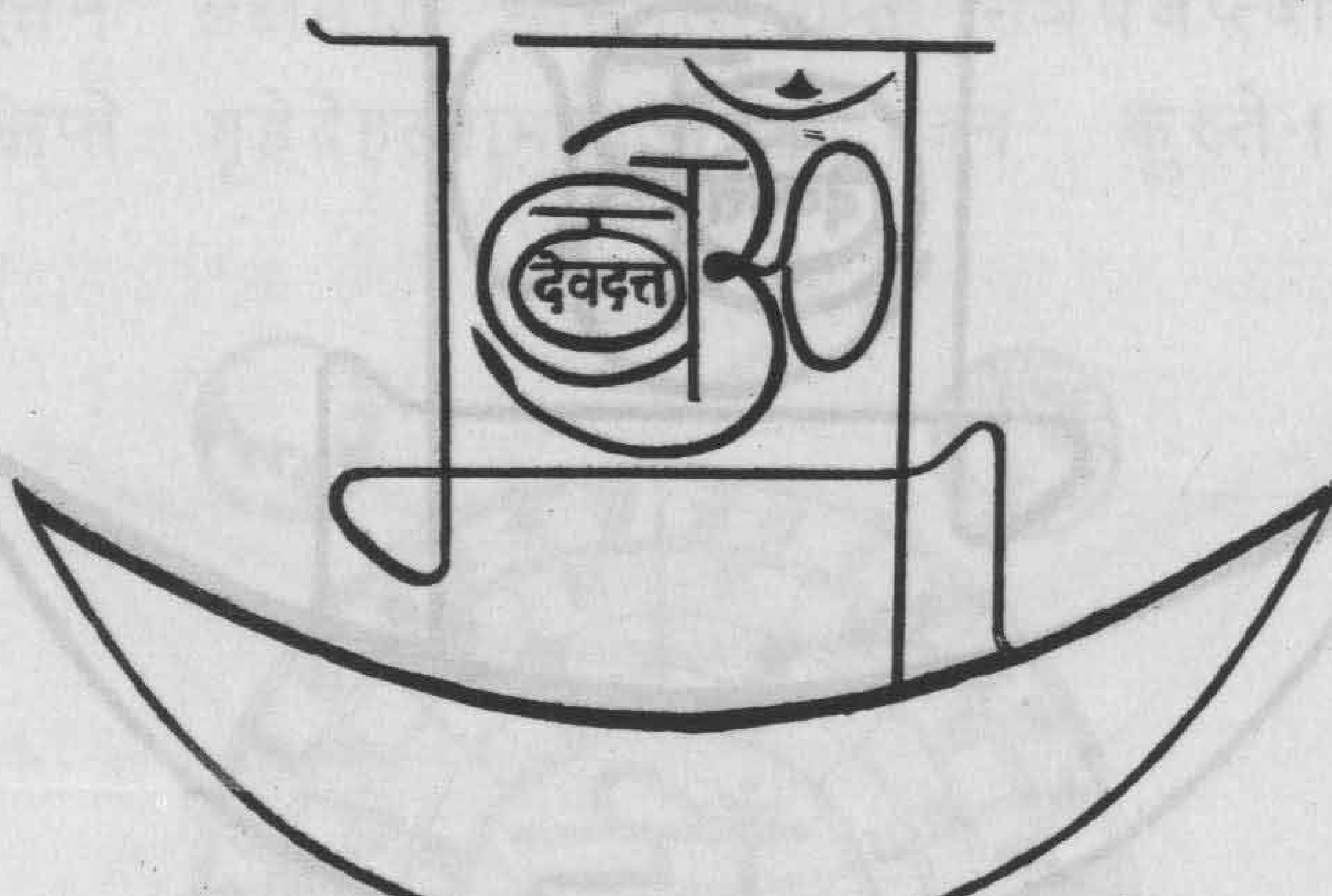
मंत्रोद्धार– ॐ नमो चण्डेश्वर चण्ड कुठारेण अमुकं ज्वरेण ह्रीं गृह्ल २ मारय २ हूँ फट् घे घे।

ॐ चण्डेश्वराय स्वाहा।

जाप्य सहस्त्रदश

उपरोक्त विधि के पहले साधक को लाल कनेर के फूलों से १०,००० जाप्य कर लेना चाहिए।

होम द्रव्य विधान



शाल्यक्ष्रतदूर्वाङ्कु रमलयजहोमेन शान्तिकं पुष्टिम्।
करवीर पुष्प हवनात् स्त्रीणां कुर्याद् वशीकरणम्।।

शाठी के चांवल, दूर्वा के अंकुरे और लाल चंदन के होम से शांतिक और पुष्टि कर्म, लाल कनेर के पुष्पों से हवन से भी स्त्रियों का वशीकरण होता है।

महिषाक्षपद्महोमात् प्रति दिवसं भवति पुरजनक्षोभः।
क्रमुकफलपत्र हवनात् राजानो वश्यमायान्ति।।

गूगल और कमल पुष्प अथवा लाल कनेर के पुष्पों से होम करने से नगरवासी लोग प्रतिदिन क्षोभ को प्राप्त होते रहते हैं। सुपारी और नागरवेल पान के हवन से राजा लोग वश में होते हैं।

तिलधान्यानां होमैराज्ययुतैर्भवति धान्य धनवृद्धिः।
मल्लि प्रसूनहोमात् सघृताद् वश्या योगिजनाः।।

तिल, धान्य और घृत से होम करने से धन धान्य की वृद्धि होती है, गाय के घी के साथ मल्लिका पुष्प, को मिलाकर होम करने से योगीजन भी वश हो जाते हैं।

घृतयुक्तचूत फलनिकर होमतो भवति खेचरी वश्या।
वटयक्षिणी च होमाद् भवति वशा ब्रह्मपुष्पाणाम्।।

आम के गुच्छों के साथ घी का होम करने से विद्याधरी देवी वश में होती है और पलाश (ढाक) के पुष्पों के साथ घृत का होम करने से वट यक्षणी नाम की देवी सिद्ध होती है, वश होती है।

गृह धूम निम्बराजीलवणान्वित काक पक्षकृतहोमैः।
एकोदर जातानामपि भवति परस्परं वैरम्।।

घर के धुए का काजल, नीम, काली सरसों, समुद्र का नमक, कौए के पंख सहित होम करने से एक माता से उत्पन्न होने वाली अत्यंत स्नेही संतान में भी द्वेषभाव उत्पन्न होता है।

ज्ञान मंत्र साधना

सिद्धयति सहस्त्रजाप्यै दशगुणितैः प्रणवपूर्वहोमान्तैः।
दर्पण निमित्त मन्त्रश्चले चुले चूले प्रभतिनोच्चार्यः।।

दर्पणनिमित्त के मंत्र का दश हजार जाप्य करने से मंत्र सिद्ध होता है दशांश होम आहुति मंत्र की अवश्य देनी चाहिए।

मंत्र– ॐ चले चूले चूडे (ले) कुमारिकयोरङ्गप्रविश्य यथाभूतं यथा भाव्यं यथा सत्यं, मां विलम्बय ममाशां पूरय-पूरय स्वाहा।

मंत्रोद्धार

ॐ नमो मेरु महामेरु, ॐ नमो गौरी महागौरी, ॐ नमः काली महाकाली, ॐ इन्द्रे महाइन्द्रे, ॐ नमो विजये महाविजये, ॐ नमः पण्णसमणि, अवतर अवतर देवी अवतर अवतर स्वाहा।

दर्पण अंगुष्ठ दीपकादि निमित में देखे, मंत्रवादी को नीचे लिखे मंत्र को आठ हजार जाप्य करने से सिद्धि मिलती है।

आराधन का मंत्र

ॐ नमो मेरु महामेरु ॐ (नमो धरणि महाधरणि) ॐ नमो गौरी महागौरी, ॐ नमो काली महाकाली, ॐ नमो इन्द्रे महाइन्द्र ॐ नमो जये महाजये ॐ नमो विजये महाविजये ॐ नमो पण्णसमणि, महापण्ण समणि, अवतर-अवतर देवि अवतर- देवि अवतर मम चिन्तितं कार्यं ब्रूहि -२ स्वाहा।

स्थानत्रय संस्थापन मंत्रोद्धार

ॐ क्रों क्षाँ क्षीं क्षूं स्वाहा।

जाप्यं भानुसहस्त्रैः सितपुष्पैश्चन्द्र किरणसङ्काशैः।
सिद्धयति दशांश होमादार्दश निमित्त मन्त्रोऽयम्।।

दर्पण निमित्त मंत्र की सिद्धि बारह हजार चंद्रमा के समान उज्जवल सफेद पुष्पों के जाप्य करने से और दशांश होम करने से होती है।

कर्ण पिचासनी मंत्र

मंत्रोद्धार– ॐ श्रवणपिशचिनि मुण्डे स्वाहा।

मन्त्र परिजप्त कुष्टं हृन्मुखकर्णाङ्घ्रि युगल मालिप्य।
सुप्तस्य कर्णमूले कथयति यच्चिन्तितं कार्यम्।।

मंत्रवादी इस मंत्र से कूठ को २१ बार मंत्रित करके उसको पीसकर हृदय, मुख दोनों कानों पर दोनों पैरों पर लगाकर सोवे तो कर्णपिशाचिनी देवी सोते समय चिन्तित कार्य को कान में कहती है।



मार्तण्ड स्नुहि दुग्धं त्रिकटुकहय गन्ध सद्म भवधूमैः।
आलिप्य ललाटस्थं गृहिणां कुरुते गृहावेशम्।।

इस यंत्र को अकोवे का दूध, चार धारी वाले थूअर का दूध, त्रिकुट (सोंठ, काली मिर्च और पीपल (असगंध, घर के धुआं से बनाकर ग्रह से पकड़े हुए के मस्तक पर रखने से ग्रह दूर हो जाता है।

वशीकरण मंत्र

लवंगं कुङ्कु मोसीरं नागकेसर राजिका: ।
एलामन: शिला कुष्टं तगरोत्पल रोचना: ।।

लवंग, केशर, चन्दन, नागकेशर, सफेद सरसों, इलायची, मनशिल, कूठ, तगर सफेद कमल ओर गोरोचन।

श्री खण्ड तुलसी पिक्वी पद्मकं कुटजान्वितम् ।
सर्वं समानमादाय नक्षत्रे पुष्यनामनि ।।

लाल चंदन, तुलसी, पिक्का (गन्ध द्रव्य) पद्माखा कुटज, (चंदन, तुलसी, कपूर, केशर, कुटज) (चंदन, केशर, कस्तूरी, कुटज) सबको बराबर पुष्य नक्षत्र में खरीद कर लावे।

कन्या पेषयेत् सर्वं हिम भूतेन वारिणा ।
कुरु चन्द्रोदये जाते तिलकं जनमोहनम् ।।

कुमारी कन्या से धतूरे के रस में सबको पिसवाकर, ओले के पानी से, चंद्रोदय होने पर तिलक करने से संसार मोहित होता है।

स्त्री वशीकरण

बर्हि शिखासित गुञ्जा गोरम्भानु कीटस्य मलम् ।
जिन पञ्च मलोपेतं चूर्णं वनितां वशीकुरुते ।।

मयूरशिखा, सफेद गुँजा, गोरखमुँडी (गोभी) आक का पत्ता, कीट का मल और अपने पाचों मलों का चूर्ण, पान के अन्दर खिलाने से स्त्री वशीकरण होती है।

स्त्री वश्य गुटिका

करवीर भुजङ्गाक्षी जारी दण्डीन्द्र वारुणी ।
गोबन्धिनी सलज्जानां विधाय वटिका बहू: ।।

लाल कनेर, भुजङ्गाक्षी, जटा, ब्रह्मदण्डी, इन्द्रायन, गोबन्धनी (गोखुरी) (अधोपुष्पी या प्रियंगु) लज्जावती के चूर्ण की गोलियों बनावे।

वश्य चूर्ण

मृत भुजग वदन मध्ये लज्जरिकां सन्निधाय सितगुञ्जाम्।
रुद्र जटा सम्मिश्रामाकृष्य दिनत्रयं यावत्।।

मरे हुए काले सांप के मुंह में लाजवंती, सफेद गुँजा और रुद्र जटा को रखकर इनको तीन दिन बाद निकाले।

लाङ्गलिकाया: कन्दे गोमय लिप्ते परिक्षिपेच्चूर्णम्।
परिभाव्य शुनीपयसा स्वमलै: पञ्चाङ्ग सम्भूतै:।।

उस चूर्ण को काली कुतिया के दूध और अपने पांचों मलों से भावित करके गोबर से लिपे हुए कलिहारी के सम्पुट कन्द में डाले।

वश्य दीपक

पञ्च पयस्त रुपयसा पोत वयण्ड करसेन परिभाव्य।
तिल तैल दीप वर्तिस्त्रिभुवन जन मोहकृद्भवति।।

दूध के पांच प्रकार के पेड़ों का दूध (बड, गूलर, पीपल, पिलरबन और अंजीर इन पांचों के पेड़ों का दूध) और ऐरन्ड के रस में बन कपास, आक, कमलसूत्र, सेंभल की रुई और पटवन (सन) की बनी हुई (पंचसूत्री बत्तिका) बत्ती को भावना देकर काले तिलों का दीपक जलाने से तीनों लोक वश में हो जाते हैं।

वशीकरण प्रयोग

विषमुष्टि कनक हलि नीपिशाचिका चूर्णमम्बु देहभवम्।
उन्मत्ताक भण्डगतं क्रमुकफलं तद्वशं कुरुते।।

डोड़ा काला धतूरा कालि हरी हलिनि, पिशाचिका छोटी जटामांसी को अपने मूत्र में मिलाकर उन्मत्तक (सफेद धतूरा) को बर्तन में सुपारी सहित रखने से वशीकरण होता है।

क्रमुकफलं मुखनिहितं तस्माद्दिवस त्रयेण संगृह्य।
कनक विष मुष्टि हलिनी चूर्णैः प्रत्येकं संक्षिप्य।।

मरे हुए सर्प के मुंह में सुपारि को तीन दिन रख कर काले धतूरे की जड़ का चूर्ण विषमुष्टि के चूर्ण और हलिनी (विशल्याकन्द) के चूर्ण के साथ पृथक-पृथक पीस कर डाले।

खरतुरगशुनीक्षीरैः क्रमशः परिभाव्य योजयेत् खाद्ये।
अबलाजन वशाकरणं मदनक्रमुकं समुद्दिष्टम्।।

उस पीसे हुए द्रव्य को अर्थात् उस सुपारी को और धतूरे के चूर्ण को गधी के दूध में भावित करे, (विषमुष्टि) जहर कुचला के चूर्ण को घोडी के दूध में भावित करे, हलिनी चूर्ण को कुतिया के दूध के साथ भावित करे, उस सुपारी को तीन दिन भावना देनी चाहिए। इस प्रकार सिद्ध हुई सुपारी को खाद्य पदार्थ में खिलाकर अथवा पान के साथ खिलावे तो स्त्रीजन का वशीकरण होता है।

वश्य काजल

पुत्तं जारीकुङ्कुमशर पुङ्खीमोहनी शमी कुष्टम्।
गोरोचनाहि केसर तगर रुदन्ती च कर्पूरम्।।

पुत्रजारी, केशर, सरफोंका, मोहिनी, शमी, कूठ, गोरोचन, नागकेशर, तगर रुद्रवन्ति और कपूर।

कृत्वैतेषां चूर्णं यावक मध्ये ततः परिक्षिप्य।
पङ्कजभवतन्तुवृता वर्तिः कार्या पुनस्तेन।।

इन सबका चूर्ण करके इनको अरुत्तक के पटल में रखकर और कमल सूत्र से लपेट कर इनकी बत्ती बनावे।

कारुकिकुच भव पयसा त्रिवर्ण योषास्तु स्तनक्षीरैः।
परिभाव्य ततः कपिला घृतेन परिबोधयेदीपम्।।

फिर ब्राह्मण स्त्री का दूध, क्षत्रिय स्त्री का दूध, वैश्य स्त्री का दूध इन में उसको भावित करके कपिला गाय के घी में दीपक जलावे।

उभय ग्रहणे दीपोत्सवे च नवकर्परऽञ्जनं धार्यम्।
गोमयविलिप्त भूम्यां स्थित्वा मन्त्राभिषिक्तायाम्।।

सूर्य ग्रहण अथवा चंद्र ग्रहण वा दीपमालिका को नवीन माटी के बर्तन में काजल को ग्रहण करना, गोबर से लिपी हुई और नीचे लिखे हुए मंत्र से अभिषिक्त की हुई पृथ्वी पर बैठ कर काजल ग्रहण करना।

मंत्रोद्धार

ॐ भू भूमि देवते! तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

मंत्र– ॐ नमो भगवते चन्द्रप्रभाय चन्देन्द्र महिताय नयन मनोहराय हरिणि हरिणि सर्व वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

मंत्र– ॐ नमो भूताय समाहिताय कामाय रामाय ॐ चुलु चुलु गुलु गुलु नील भ्रमरि नील भ्रमरि मनोहरि नमः।

कज्जल रञ्जितनयने दृष्ट्वा तां वाञ्छतीह मदनोऽपि।
नरमप्यञ्जित नयनं भूपाद्यास्तस्य यान्तिवशम्।।

इस काजल से युक्त आंखों की जो कोई देखता है वह वश में हो जाता है, स्त्री ने अपने आंखों में डाला तो पुरुष वश में होते हैं, अगर पुरुष आंखों में डालकर राजा के सामने जावे तो राजा भी वश में होता है।

पिशाची पान

विषमुष्टिकनकमूलं रालाक्षत वारिणा ततः पिष्टम्।
तद्रसभावितपत्रं पिशाचयत्युदर मध्यगतम्।।

जहरी कुचला, काले धतुरे की जड़ को, कांगनी चांवल के धोवन के पानी में पीसकर उस रस में पान को भिगोकर, जिसको खिलावे, वह पिशाच के समान आचरण करे, अर्थात् उदर में प्रवेश करते ही पिशाच तुल्य आचरण करने लगता है।

शत्रु भय करण काजल

चिक्कणिके केप्सितरूपापिशाचिका सार्द्र चित मषीमथिते।
नृकपाले मातृगृहे कान नका पसिकृतवर्त्या।।

चिक्कणि सुपारी, मोम, कोंचको को पीसकर, उनको जंगली कपास में मिलाकर बत्ती बनावे, उस वत्ती से सप्तमातृका के गृहों में गिली चित्ता की स्याही से (काजल) मथे हुए मनुष्य के कपाल पर।

धार्यं कृष्णाष्टभ्यामञ्जनमेतन्महाघृतोद्भूतम्।
तेन त्रिशूलमञ्जनमपि कुर्यादङ्कभीत्यर्थम्।।

कज्जलोद्धार मंत्र

ॐ नमो भगवति ! हिडिम्बवासिनि ! अल्लल्ल मांसप्पिये नहयलमंडल पइट्ठिए तुह रणमत्ते पहरणदुट्ठे आयासमंडि ! पायालमंडि सिद्धमंडि जोइणिमंडि सव्वमुहमंडि कज्जलं पड्ड स्वाहा।

इस महाघृत से कृष्णपक्ष की अष्टमी अथवा चतुर्दशी को अञ्जन बनावे, इस काजल को आंखो में भी डाले और मस्तक पर त्रिशूल बनावे। इसे जो कोई देखेगा, वह महा भयभीत होगा।

अदृश्य गुटिका तंत्र

चित वन्हिदग्धभूतद्रुमय शाखामषीं समाहृत्य।
अंकोल्लतैलसूतककृष्णबिडाली जरायुश्च।।

चिता की अग्नि से जले हुए बहेड़े के वृक्ष को दक्षिण दिशा की स्याही को लेकर, उसको अरंडी के तेल में।

धूकनयनाम्बुमर्दितगुलिकां कृत्वा त्रिलोह सम्मठिताम्।
धृत्वा तामात्मसुखे पुरुषोऽदृश्यत्वमायाति।।

उल्लू के आंखों के पानी में गोली बनाकर, फिर उसको त्रिलोह के साथ सोलह अग्नि देकर अपने मुख में रखे-तो अदृश्य हो जावे।

सितशरपुंखामूलं धृत्वा सितकोकिलाक्ष बीजं च।
वनवसलारसपिष्टं वीर्यस्तम्भं मुखे संस्थम्।।

सफेद सरफोंके की जड़ और सफेद कोकिलाक्ष के बीजों को जंगली पोदीने के रस में पीसकर गोली बनावे, उस गोली को मुख में रखे तो वीर्य स्तम्भन होता है।

वाद विवाद विजय तंत्र

मूलं श्वेतापमार्गस्य कुबेरदिशि संस्थितम्।
उत्तरात्रितयं ग्राह्यं शीर्षस्थं द्यूतवादजित्।।

उत्तर दिशा में रहने वाला सफेद आंधी झाड़ा की जड़ को उत्तरा फाल्गुनी उत्तराषाढा, उत्तरा भाद्रपद इन तीनों नक्षत्र के भीतर लेकर शिर पर रखने से सदा, जुआँ वादविवाद में जय होती है।

अच्छा रोजगार चलाना

निर्गुण्डिका च सिद्धार्था गृहद्वारेऽथवापणे।
वद्धं पुष्यार्क योगेन जायते क्रयविक्रयम्।।

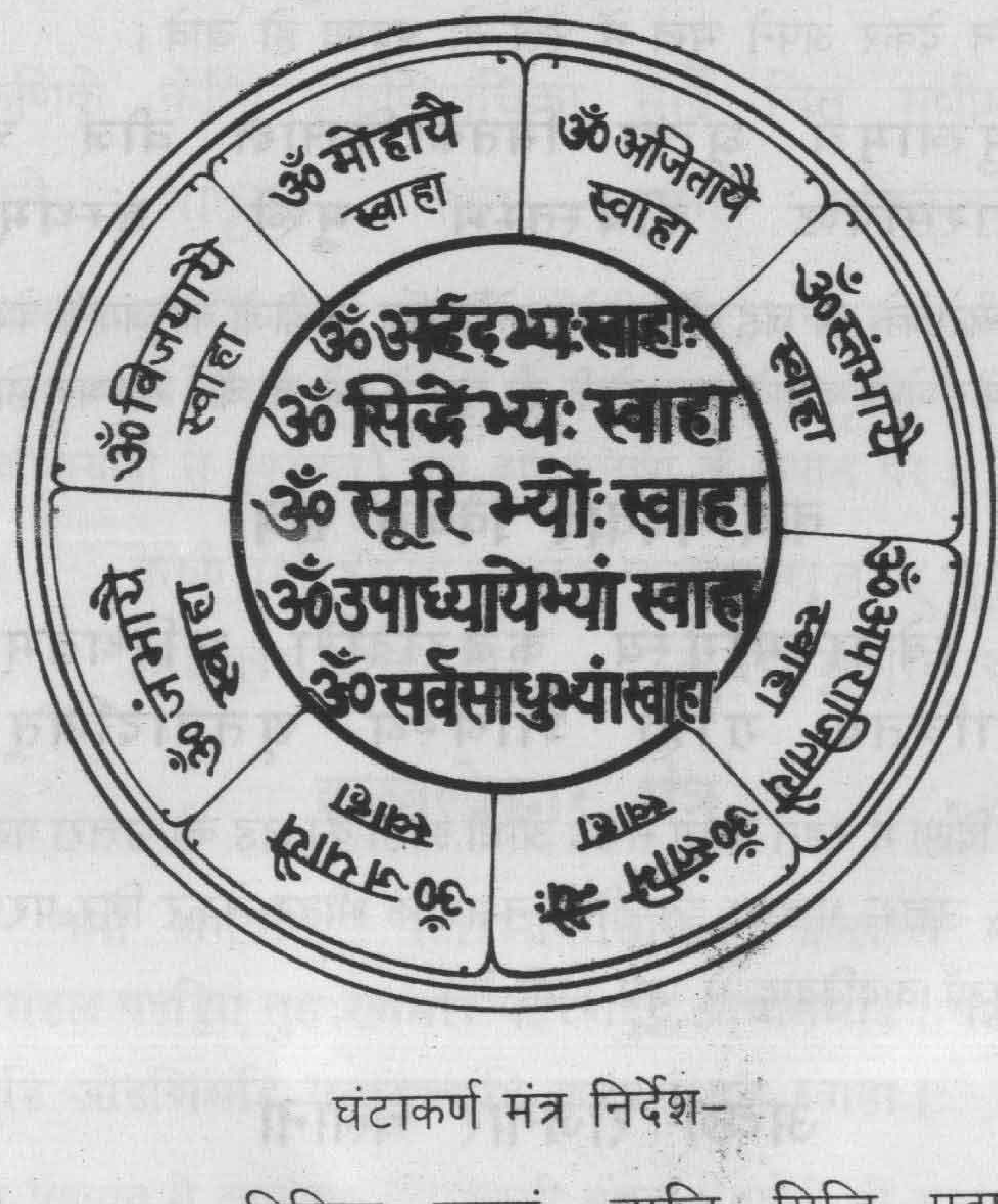
निर्गुण्डि और सफेद सरसों को पुष्य नक्षत्र में लेकर घर के द्वार पर बांधने से अथवा दुकान के दरवाजे पर बांधने से अच्छा माल बिकता है।

घर से सर्प भगाने का मंत्र

ॐ कुरु कुल्ले ! हूँ फट्।

घर में प्रवेश करने के द्वार के ऊपर की ओर गरुड यंत्र बनाकर उसमें गरुड बंध मंत्र लिखे तो उस सर्प घर से भाग जाता है।

घंटाकरण



घंटाकर्ण मंत्र निर्देश–

ॐ प्रणम्य गिरिजा कान्तं,. ऋद्धि सिद्धि प्रदायकं।
घंटाकरस्य कल्यां चा, रिष्ट कष्ट निवारणम्।।

शुभ मुहूर्त–प्रथम शुभ महीना, शुक्ल पक्ष, तिथि पंचमी दशमी पूर्ण तिथि

शुभवार शुभयोग लें। अमृत सिद्धि, श्रीवत्स, छत्र व आनन्द सिद्ध योग शुभ कार्यों में श्रेष्ठ हैं। शुभ बलवान चन्द्रमा देखकर, फिर साधन करें।

अशुभ बार, हस्त, मूल, पुष्यार्क आदि नक्षत्र कृष्णपक्ष की अष्टमी चतुर्दशी, अमावस्या, आदि तिथि मारण उच्चाटन आदि कर्म में श्रेष्ठ है।

स्थान- पवित्र स्थान में आसन लगावे। वन में बाग में, देवस्थल अथवा घर में जहां एकान्त पवित्र स्थान हो वहां साधन करे।

साधन समय निम्न मंत्र पढ़कर भूमि शुद्ध करे।

भूमि शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं भूम्यादि देवाय नमः।

उपरोक्त मंत्र जपकर धूप खेवे, दीपक जलावे और अक्षत, पुष्प, नैवेद्य आदि से भूमि शुद्ध (पूजा) करे। फिर निम्न मंत्र पढकर स्नान करे-

स्नान मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं क्लीं गंगे जलाय नमः।

उसके पश्चात् निम्न मंत्र पढ़कर शुद्ध वस्त्र पहन कर शुद्ध क्रिया से रहे।

वस्त्र धारण मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं आनन्द देवाय नमः।

इसके पश्चात् निम्न घंटाकरण मंत्र जपे।

घंटाकर्ण मंत्र प्रथम

ॐ घंटाकर्णो महावीर, सर्व व्याधि विनाशकः।
विस्फोटक भये प्राप्ते, रक्ष रक्ष महाबलः।।१।।
यत्र त्वं तिष्ठते देव, लिखितोऽक्षरपंक्तिभिः।
रोगास्तत्र प्रणश्यांति वात पित्त कफोद्भवाः।।२।।

तत्र राज भयं नास्ति, यांति कर्णे जपात्क्षयं।
शाकिनी भूत वैताला, राक्षसा प्रभवंति नः।।३।।
नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण डस्यते।
अग्निन चोरभयं नास्ति, ह्रीं घंटाकर्णो मनोऽस्तुते।।५।।
ठः ठः ठः स्वाहा।

घंटाकर्ण मंत्र द्वितीय

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं म्म्ल्व्र्यूं ॐ घंटाकर्णे ह्रीं नमः।

ॐ ह्रीं घंटाकर्णो महावीर, सर्व विघ्न (शत्रु...विनाशकः

विस्फोटकभये प्राप्ते, रक्ष रक्ष महाबल।
लक्ष्मी वृद्धिकरं देवं ह्रींकाराय नमोस्तु ते।
यत्र त्वं तिष्ठसे देव, लिखितोऽक्षरपंक्तिभिः
रोगास्तत्र प्रणश्यंति, वातपित्तकफोद्भवाः।।२।
तत्र राजभयं नास्ति, यांति कर्णे जपात्क्षयं।
शाकिनी भूतवैताला, राक्षसा प्रभवंति नः पिशाचा ब्रह्म राक्षसाः।।३।।
नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दश्यते।
ग्रह देवा क्षेत्रपाला, स्वपन भवंति कदाचन।।
अग्नि चोर भयं नास्ति, ह्रीं घंटाकर्ण (महावीराय) नमोऽस्तु ते।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लीं ऐं घण्टाकर्णो नमोस्तु ते ॐ नर वीर ठः ठः ठः स्वाहा।

१. ॐ शत्रुनाशिने नमः   ८. ॐ गृहणयादिनाशिने नमः।
२. ॐ भयनाशिने नमः   ९. ॐ परवादिनाशिने नमः

३. ॐ गदनाशिने नमः | १०. ॐ व्यंतर आदि दोषनाशिने नमः
४. ॐ मिथ्यावादनाशिने नमः | ११. ॐ राक्षसादिदोषनाशिने नमः
५. ॐ राज्यभयनाशिने नमः | १२. ॐ सर्पभयनाशिने नमः
६. ॐ विशूच्यादिनाशिने नमः | १३. ॐ अग्निभयनाशिने नमः
७. ॐ निर्नैमिकायनाशिने नमः | १४. ॐ चोरभयनाशिने नमः

मंत्र साधन उपाय

यह घण्टाकर्ण मंत्र का जाप ४२ दिन तक प्रतिदिन त्रिकाल १०८ बार जपे। धूप खेवें। मिर्च, सरसों जप कर होम करे तो इष्ट देव को भय नहीं होता।

ॐ घण्टाकर्णो महावीरः आदि एक सौ पैंतीस (१३५) अक्षर का मंत्र राजभय हरण निमित्त जपें तब एक वस्त्र पहनें और एक वस्त्र ओढें। पूर्व मुख होकर गूगल की गोली दस हजार (१००००) और कनेर के फूल ग्यारह हजार (११०००) लेकर एक बार मंत्र जपकर होमते जायें। सात दिन तक ऐसा करें। भोजन एक समय करें अथवा उपवास करें। राजभय न रहे।

ॐ घंटाकर्णो महावीरः' आदि मंत्र के पीछे 'मम बंदि मोक्षं कुरु कुरु स्वाहा। लगाकर कैदी के छुड़ाने के अर्थ पश्चिम दिशा में मुख करके २१ दिन तक दस हजार जाप करे। तब यह मंत्र सिद्ध होता है। बंदी के छूट जाने के पश्चात् दशांश पंचामृत होम करे।

डाकिनी शाकिनी नाशन निमित्त १०८ बार जपे और गूगल से होम करे।

भूत के नाशार्थ

१०८ बार मंत्र जपे तथा गुगल और घी से होम करे। राक्षसादि भगाने के लिए एक हजार जप करें और घर के बीच में गूगल और घी से होम करे तब राक्षस का नाश होता है और घर सुखी होता है।

अग्निभय नाश

२१ बार मंत्र पढ़कर जल का छींटा दे तो अग्नि शान्त हो जाती है।

चोर भय के निमित्त सात सात बार मंत्र पढ़कर कंकरी आठों दिशाओं में फेंकने से तो चोर का भय दूर हो जाये। तथा २१ बार मंत्र पढ़कर चोटी में गाँठ दे तो मार्ग में चोर का भय नष्ट हो।

सर्पभय के विनाशार्थ १०८ बार मंत्र पढ़कर पानी पिलायें, तथा १०८ बार मंत्र पढ़कर काली मिर्च, तथा पान व नीम की निमौली चबा दे तो सर्प का विष नष्ट हो जाता है।

मंत्र यंत्र लिखकर होम करके गले में बाँधे तो वात-पित्त-कफ और ज्वरादि सर्व रोग नष्ट हो जाय। डोरा करके दीजिये तो ताप, तजेरा और वेला ज्वर नष्ट हो जाये। सर्व रोग व्याधि नष्ट हो जाय।

इस मंत्र का स्मरण करने से गर्भ के सब दुख दूर हो जाते हैं। तथा मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित जल पिला दें। इस मंत्र को तीनों संध्याओं में १०८ बार जपे तो नाना प्रकार का सुख मिले।

इस मंत्र के पीछे "मम अमुकं वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।" लगाकर खोपरा, पेड़ा, सुपारी २१ बार मंत्रित कर रविवार के दिन जिसको देवे वह वश्य होय।

इस मंत्र को षट्काल में केशर से अक्षर पंकित लिख ऊपर बाँधे रोग नाश करे अथवा मंत्र पानी में धोये पिलायें तो सर्व रोग जायें। इस मंत्र को नित्य १०८ बार जल मंत्रित कर पिलायें तो वात, पित्त, कफ से उत्पन्न सब रोग दूर हो जावे।

इस मंत्र का जो नित्य जाप करता है और यंत्र पास रखता है, उस पुरुष को राजभय नहीं होता और शाकिनी, भूत, बैताल, पिशाच, राक्षस आदि के भय उत्पन्न नहीं होते। इस मंत्र के जाप से सर्प न डसे, अग्नि का भय न होय, चोर का भय न होय, पशुओं के रोग जाय। नित्य पाठ करने वाले के सहस्र पाप क्षमा हो जाते हैं, ऐसा इस मंत्र का प्रभाव है।

इस मंत्र का तेंतीस हजार ४२ दिन तक नित्य त्रिकाल १०८ बार जाप कीजे, धूप खेवे, दीपक जलावे। जाप करके मिर्च सरसों से होम करे तो दुष्ट

का नाश होय, दुष्ट का भय मिटे। परचक्र का भय नहीं उपजै। दशांश होम करे। दही, दूध, घृत, केशर, कस्तूरी, कूपर, गूगल, मिर्च, सरसों, कडुवे तेल की आहुति दें।

घण्टाकर्ण मंत्र स्मरण करने से परिवार रोग, मृगी रोग टलै, मार्ग में सुमरिये चोर कटक भय टलै। डोरो का दीजे बेला ज्वर, एकान्तरो जाप तेजरो जाय।

डोरा मंत्रित कर २१ गाँठ दीजे, तो चौरासी बार जाप्य, सात दिन तक एक झाड़ा दे शाकिनी, डाकिनी, भूत प्रेत रोग दोष सर्व जाय। २१ बार झाड़ा देकर लोहे सों पानी पढ़ देना, सर्व दोष मिट जायें।

नोट– घण्टाकर्ण मंत्र जिस कामना पै जपे तिस प्रकार वैसा ही श्लोक बदलकर पाठ करे तो वही कामना होय।

सकल कार्य कर्ता सम्पूर्ण भय हर्ता घण्टाकर्ण मंत्र रोग, शोक, पीड़ा भय, मिथ्यावाद, अपार संवाद निवारण के लिए सात दिन तक एक समय भोजन करे, ब्रह्मचर्य से एकान्त स्थान में षोडशांगुल प्रमाण जमीन में कुण्ड १००८ (११००) बार नित्य जपे। दीप, धूप से युक्त कुंदरु, घृत, मेवा, सिलारस से होम करे। सिद्ध हो जाता है।

सामान्य विधि

जिस कार्य की इच्छा से इस मंत्र का जप करें, सो कामना घण्टाकर्ण देवता पूर्ण करे। जैसा कार्य हो तैसी ही विधि करे जो कि आगे लिखी है, सत्य मानों। तीनों समय १०८ बार जपे, ब्रह्मचर्य से रहे। किसी के हाथ का भोजन न करे, अपने हाथ का भोजन करे, भूमि पर सोवे, इस विधि से मंत्र सिद्ध हो। सर्व कामना सिद्ध होय। साधन चूके तो दुख पावे, सिद्ध न होय, यह सत्य है। इस मंत्र से सभी कार्य आगे सिद्ध हुए हैं। यह दुधारा खड्ग है जो सीधे सो सिद्ध होय। इस प्रयोग के अतिरिक्त प्रयोग नहीं है। ऐसा इसका माहात्म्य है।

घण्टाकर्ण का मूलमंत्र

ॐ घण्टाकर्ण महावीर, सर्वव्याधि विनाशक।
विस्फोटक भयं प्राप्तौ, रक्ष रक्ष महाबल।।१।।

यत्र त्वं तिष्ठते देव; लिखितोऽक्षर पंक्तिभि:।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति, वात-पित्त कफोद्भवा:।।२।।
तत्र राजभयं नास्ति, यांति कर्णे जपाक्षयं।
शाकिनी भूत वेताला, राक्षसा च प्रभवंतिन:।।३।।



नाकाले मरणं तस्य न सर्पेण दंस्यते।
अग्निश्चौरभयं नास्ति, घण्टाकर्णो नमोस्तुते।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घण्टाकर्णे ठ: ठ: ठ: स्वाहा।

मंत्र साधन विधि

प्रथम भूमि शुद्धि करें। उस समय निम्नोक्त मंत्र पढ़ें–

ॐ ह्रीं श्रीं भूम्यादि देवताय नम:।

इस मंत्र को सात बार पढ़कर भूमि पर जल के छींटे देवें।

इसी मंत्र से जलगंधादि समर्पण करें।

ॐ ह्रीं श्रीं भू देवाय अत्र आगच्छ अत्र तिष्ठ तिष्ठ अत्र मम सन्निहितो भव वषट् सन्निधिकरणं।

ॐ ह्रीं भू देवाय इदं जलं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं, धूपं, फलं, स्वस्तिकं च यज्ञभागं च यंजामहे अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

भूमि शुद्धि में– मिट्टी से भूमि को लेपे फिर उपरोक्त मंत्र से भूमि पूजा करें।

स्नान करने का मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं शुद्धजलेन स्नानं करोमि स्वाहा।

इसके बाद शुद्ध वस्त्र पहनकर यह मंत्र पढ़ें

ॐ ह्रीं क्लीं शुद्धवस्त्र परिधानोपधारयामि स्वाहा।

मंत्र व विधि में नियम

एक समय भोजन करें, ब्रह्मचर्य का पालन करें, भूमिशयन करें, मंत्र साधना पूर्ण होने तक जूते, चप्पल आदि का उपयोग नहीं करें, लोभ कषाय का त्याग करें, झूठ बोलने का त्याग करें, क्रोध का त्याग कर हित–मित–प्रिय शब्द मृदुता से बोलें, आहार विहारादि प्रत्येक क्रिया में शुद्धता रखें, अष्टपल्लवादि का ध्यान रखते हुए मंत्र जाप्य करें।

दुष्टदेव व शत्रु का भयनिवारण विधि

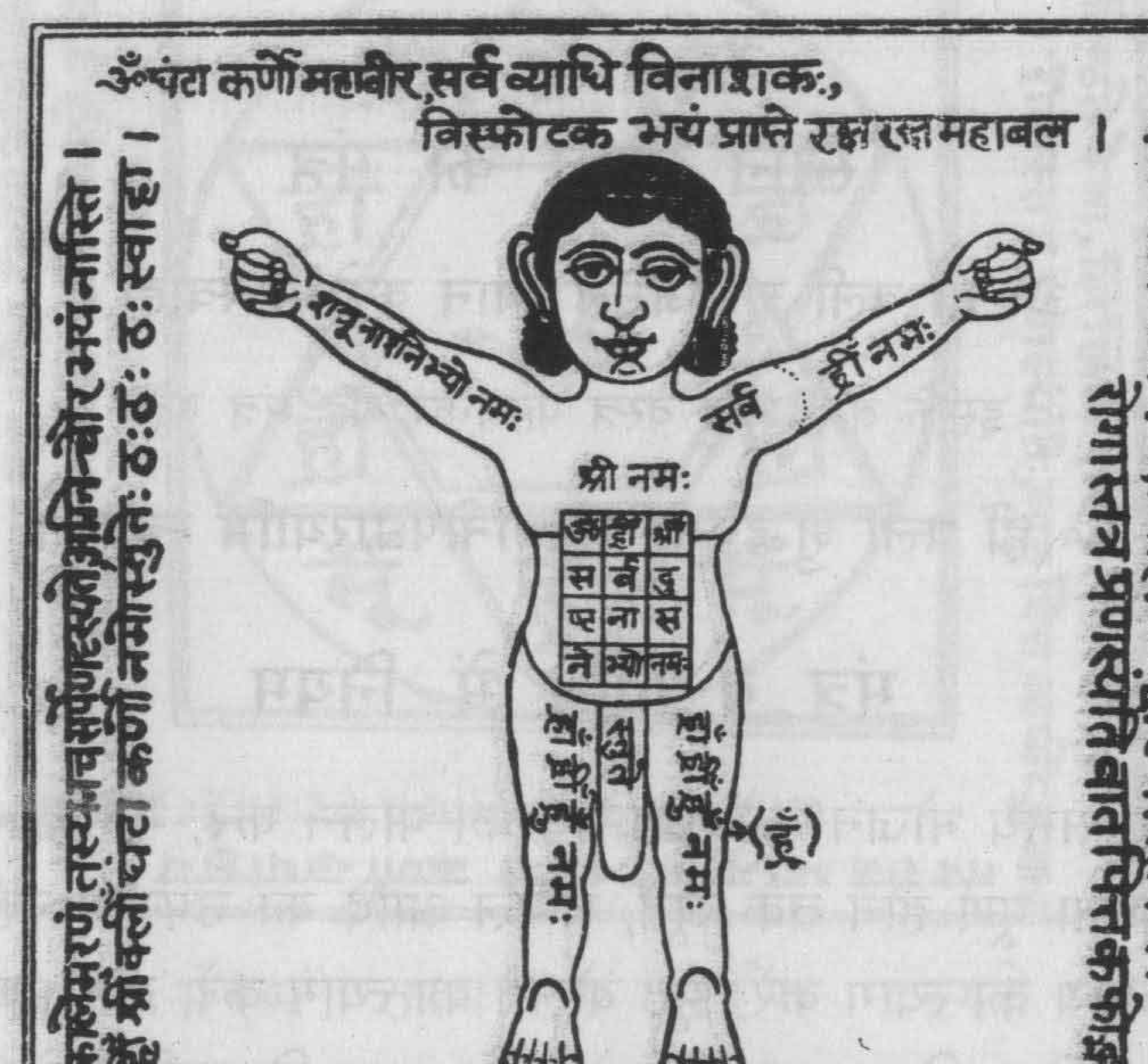
उपरोक्त घण्टाकर्ण मूलमंत्र का ४२ दिन में ३३००० जाप्य विधि पूर्वक करें। १०८ बार नित्य करें।

पीली सरसों, काली मिर्च से मंत्र का दशांश होम करें, तो दुष्टदेव व शत्रु का भय निवारण होता है।

यंत्र बनाने की विधि

पुरुषाकार एक पुतला बनावें, उस पुतले के पेट पर बारह कोटे निकाले, उन कोटों में यह मंत्र लिखें–

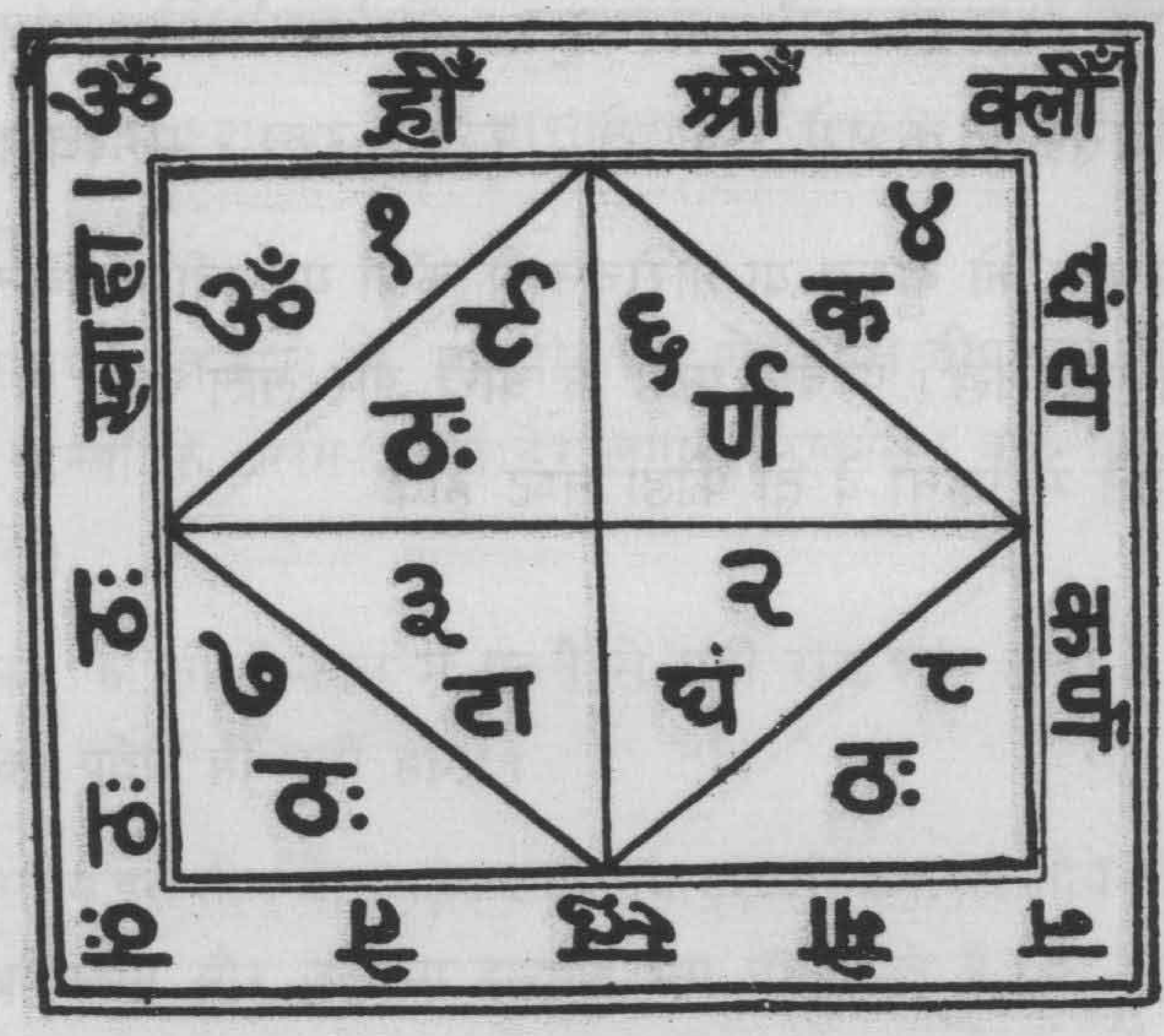
लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र



षट्कोण बनावे, षटकोण में ये मंत्र अक्षर लिखें–

" ॐ ह्रीं ह्रां ह्रीं ह्रौं नमः"

इसके बाद ऊपर एक वलय खीचें उसके ऊपर घण्टाकर्ण मूलमंत्र वेष्ठित करें। उसके बाद साधन करें।



लक्ष्मी प्राप्ति के लिए पूर्व दिशा में मुख करके, सफेद वस्त्र पहन कर सफेद आसन पर बैठकर, सफेद माला से एकाग्रचित होकर संयम से रहते हुए जाप्य करें।

जाप्य १,२५,००० बार ७२ दिन में करें अर्थात् सवालक्ष जाप्य करें।

एकान्त में एक समय गेहूं के सामान से बना भोजन करें। किशमिस, चिरौंजी, बादाम छुहारा, खोपरा का होम करें।

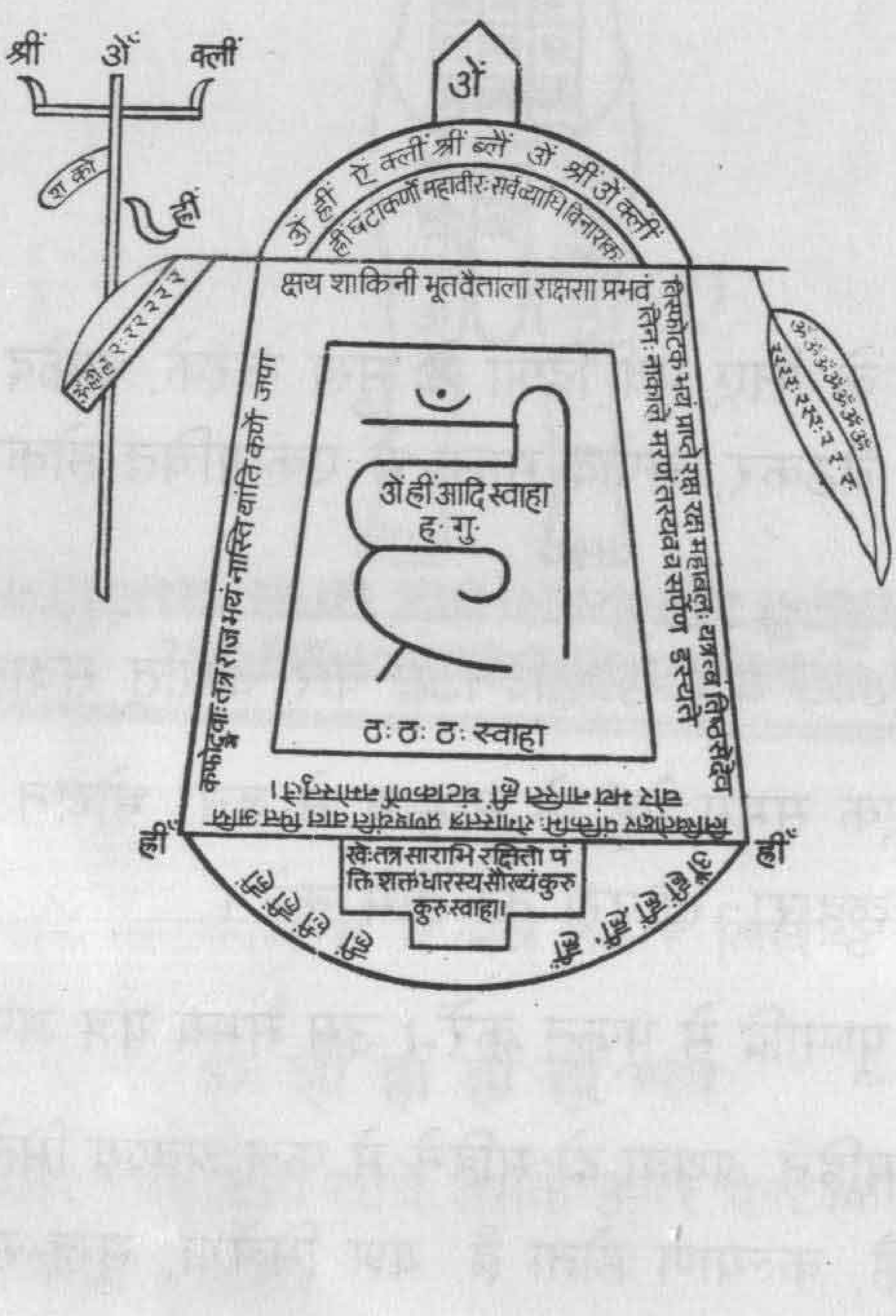
जलगंधाक्षत पुष्पादि से पूजन करें। उस समय यंत्र अपने पास में रखें।

फल— एक महिने अथवा दो महिने में फल अवश्य मिलेगा अर्थात् लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, कल्याण होता है, यश मिलेगा, सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है, आनन्द ही आनन्द प्राप्त होता है।

फोड़ा विनाशक यंत्र

ॐ घण्टाकर्णो महाबल: सर्वव्याधिविनाशक: ।
विस्फोटकभये प्राप्ते रक्ष रक्ष महाबल: ।।

इस मंत्र को कुंकुम या गौरोचन से कुँआ या नदी के किनारे बैठकर भोजपत्र पर लिखें। पश्चात् फोड़े के चारों ओर लाल कपड़े से कुण्डली दे अथवा गले में पहना दे तो फोडा नष्ट हो।



अन्य यंत्र विधि

घण्टाकर्ण मूलमंत्र को रवि या पुष्य नक्षत्र या रवि मूल नक्षत्र में या किसी शुभ दिन में १२५०० (साढे बारह हजार) जाप्य करें। यह १४ या २१ दिन में पूरा करें।

उस समय वस्त्र शुद्ध हों, महावीर प्रभू के सामने दीप धूप सहित आठ प्रकार के धान्यों के अलग-अलग ढेर लगाकर एकासन करें, ब्रह्मचर्य का पालन करें।

इस मंत्र को तीनों काल में पढ़ने से मृगी रोग शांत होता है। घर में इस रोग का प्रवेश ही नहीं होगा।

सोते समय इसे तीन बार पढ़कर तीन बार ताली बजाकर सोये तो सर्पभय, चोरभय अग्निभय और जलभय इत्यादि भय नहीं होते हैं।

अछूते पानी से २१ बार इस मंत्र को मंत्रित करें और उस पानी के छींटे देवें तो अग्नि बुझ जाती है।

मंत्र को लिखकर घंटे में बांधें और घंटा बजाने पर उसकी आवाज जहाँ-जहाँ जाएं वहां वहां के उपद्रव शांत होते हैं।

कन्या के द्वारा काता हुआ सूत्र में ७ गांठें लगावें और २१ बार इसे पढ़ता जाए, इस सूत्र को बच्चे के गले में बांधे तो नजर नहीं लगे।

उसी सूत्र को २१ बार मंत्रित कर धूप देवें और हाथ में बांधे तो एकान्तरा ज्वर का नाश होता है।

अन्य विधि

दीपावली की रात में या शुभ मुहूर्त में मंत्र जाय प्रारंभ कर भगवान महावीर के सामने ब्रह्मचर्य पालन करते हुए पूर्वोक्त विधि के अनुसार १२ दिन में १२५०० जाप्य पूरा करें।

बाद में गुगुल ढाई पाव, लाल चंदन, घृत, बिनोला (कपास के बीज) तिल,

राई, सरसों, दूध, दही, गुड़, लाल कनेर के फूल इन चीजों को मिलाकर साढ़े बारह हजार गोली बनाना, फिर एक-एक करके मंत्र के साथ अग्नि में होम करें– इस प्रकार मंत्र का दशांश होम करें तब मंत्र सिद्ध होता है। नित्य देव पूजा करना, माला चंदन की होनी चाहिए।

फल

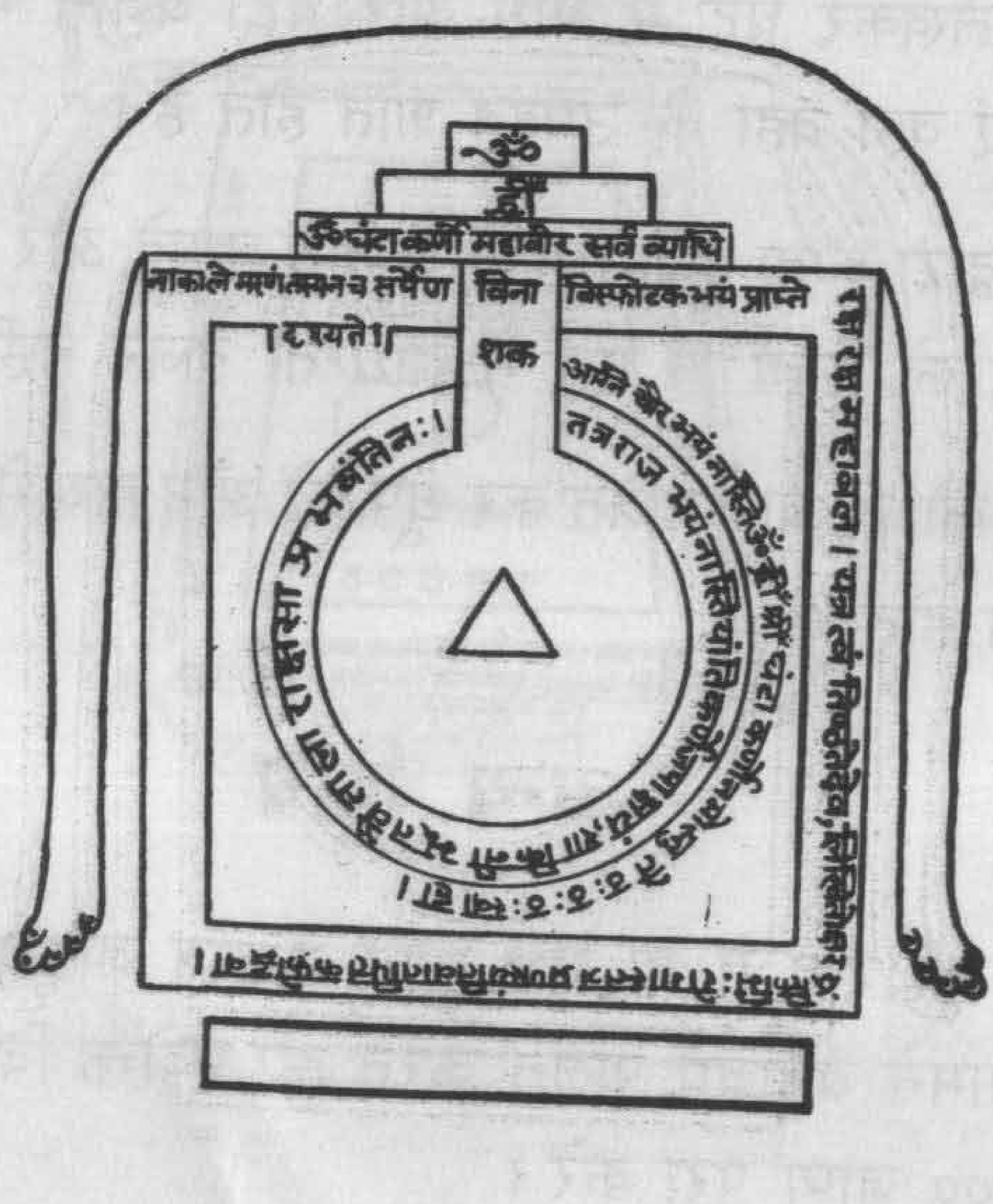
राजद्वार में जाते समय मंत्र को तीन बार पढ़कर मुख पर हाथ फेरें, राजसभा वश में होती है।

खाने की वस्तु को २१ बार मंत्रित करके जिसको खिलाएं, वह वश में होता है।

रात के पिछले पहर में गुगुल खेकर १०८ बार मंत्र पढ़कर, मुख पर हाथ फेरे तो वाद-विवाद में जीत हो, वचन ऊपर रहें याने उसकी बात को सब माने।

पहले गुगुल की गोली से १०८ बार होम करना फिर रोगी को झाड़ा देना तो भूत प्रेत सर्पादिक दोष जाते रहते हैं।

अन्य विधि



घंटे के आकार के यंत्र को घंटे के ऊपर खुदवाकर घंटे की प्राण प्रतिष्ठा करें।

घण्टाकर्ण मूलमंत्र का १२५०० (बारह हजार पांच सौ) बार शुद्धि पर्वूक शुद्ध वस्त्रादि पहनकर दीप धूप जलाकर चंदन की माला से मन एकाग्र करके जाप्य करें।

यंत्र की पूजा

जब तक जाप्य पूरा न हो तब तक यंत्र का पंचामृत अभिषेक करके अष्टद्रव्य से पूजा करें, जाप्य पूरा होने पर उत्तम-उत्तम पदार्थों से दशांश होम करें अथवा गुगुल से हवन करें।

उस घंटे को ऊंचे लटका कर घण्टा बजावे जितने प्रदेश में इस घंटे की ध्वनि जायेगी, उतने प्रदेश का वातावरण शुद्ध हो जायगा। उतने प्रदेश में किसी प्रकार की मारि अरि आदि नाना प्रकार की व्याधि नष्ट हो जाती है।

यह घण्टा कार्य पड़े तब ही बजावें नित्य नहीं।

यह मंत्र सर्व व्याधि विनाशक है।

मंत्र का जाप करते समय जितनी शुद्धता और स्वच्छता रखोगे उतना ही फायदा है।

जीवन मरण विचार

मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ ह्रीं नम कृष्ण वा ससे क्ष्मौं शत सहस्त्र लक्ष कोटि सिंह वाहने फ्रैं सहस्त्र वदने ह्रौं महाबले ह्रौं अपराजिते ह्रीं प्रत्यंगिरे हयौं पर सैन्य निर्णाशिनी ह्रीं पर कार्य कर्म विध्वंशनीह्य: पर मन्त्रोच्छेदिनि य: सर्व शत्रूच्चाटनी ह्यौं सर्वभूत दमनि ठ: सर्व देवान् बंधय बंधय ह्रूं फट् सर्व विघ्नान् छेदय २ य: सर्वानर्थान निकृत्य २ क्ष: सर्व दुष्टान् भक्षय २ ह्रीं ज्वाला जिह्वे ह्रौं कराल वक्त्रे ह्य: पर

यंत्रान् स्फोटय २ ह्रीं वज्र श्रृंखलान् त्रोटय २ असुर मुद्रां द्रावय २ रोद्र मूर्ते ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे मम् मनश्यिति तं मंत्रार्थ कुरु कुरु स्वाहा।

विधिः– अस्य स्मरणात् सर्व सिद्धि।

मंत्रः- ॐ नमो महेश्वराय उमापतये सर्व सिद्धान नमो रे वार्चनाय यक्ष सेनाधिपते इंद कार्यं निवेदय तद्यथा कहि २ ठः ठः।

विधिः- एनं मंत्रं वार १०८ क्षेत्रपाल्स्याग्रे पूजा पूर्व जपेत्। ततो वार २१ गुग्गलेनाभिमन्त्रय आत्मानं धूपयित्वा सुप्यते स्वप्ने शुभाशुभं कथयति।

कार्य सिद्धि मंत्र

मंत्रः– ॐ विधुज्जिहे ज्वालामुखी ज्वालिनी ज्वल २ प्रज्वल २ धग २ धूमांधकारिकी देवी पुरक्षोभं कुरु कुरु मम् मनश्चिततिं मंत्रार्थं कुरु कुरु स्वाहा।

विधिः- अमुं मंत्रं कर्पूर चन्दनादिभिः स्थालादौ लिखित्वा श्वेत पुष्पाक्षतादि मोक्षं पूर्व सहस्त्र जाप्येन प्रथमं साध्य पश्चात्नित्यं स्मर्यमाणात्सिद्धिः।

व्यंतर बाधा दूर करने का मंत्र

मंत्र–ॐ नमो भगवते पिशाच रुद्राय कुरु २ यः भंज २ हर २ दह २ पच २ गृन्ह २ माचिरं कुरु रुद्रो आज्ञां पयति स्वाहा।

विधि– अनेन मंत्रेण वार १०८ गुग्गल, हींग (हिंगुल) सर्षप चुलिका एकत्र मेलयित्वागर्भन्त्रय धूपोदेयः तत्क्षण शाकिन्यादि दुष्ट व्यंतरादि गृहीतं पात्रं सद्यो विमुच्यते स्वस्थं भवति।

दुःख दूर करने का मंत्र

मंत्रः- ॐ इटि मिटि भस्मं करि स्वाहा।

विधिः- अनेन बार १०८ जलमभिमन्त्रय पाय्यते उदर व्यधोपशा भ्यति।

वर्द्धमान मंत्र

मंत्र– ॐ णमो भयवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स चक्कं चलं तं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जये वा विवादे वा थंभणे वा रणांगणे वा रायंगणेवा मोहेण वा सव्व जीवसत्ताणं अपराजिदो मम् भवदु रक्ख २ स्वाहा।

विधि– इस वर्द्धमान महाविद्या को उपवास करके एक हजार जप सुगन्धित पुष्पों में जप करें, दसमांस होम करें, तो ये मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर कहीं से भय आने वाला हो अथवा आ गया हो, तो सरसों हाथ में लेकर सर्व दिशाओं में फेंक देने से आगत उपद्रव, भय, परकृत विद्याएं सर्व स्तमभित हो जायेंगे। घर में स्मरण मात्र से ही शान्ति हो जायेगी। विशेष गुरु गम्य है।

यक्षिणी कल्प

१. विचित्रा	२. विभ्रमा	३. विशाला
४. सुलोचना	५. बाला	६. मदना
७. हंसिनी	८. माननी	९. शतपत्रिका
१०. मेखला	११. विकला	१२. लक्ष्मी
१३. काल करणी	१४. महाभय	१५. माहिन्द्रीका
१६. श्मशानी	१७. वट यक्षिणी	१८. चन्द्रिका
१९. चक्रपाली	२०. भीषणा	२१. जनरंजिका
२२. विशाला	२३. शोभना	२४. शंखिनी

विचित्रा

मंत्र– **ॐ ऐं विचित्रे विचित्र रूपे सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।**

विधि– वट वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करने से, विचित्रा नामक यक्षिणी सिद्धि होती है।

प्राप्ति– दीर्घ आयु का वरदान देती है।

विभ्रमा

मंत्र– **ॐ ह्रीं भर भर स्वाहा।**

विधि– एक लाख जाप करें तथा तीन कोनों में यज्ञ कुंड बनाकर उसमें दुग्ध, घृत व शर्करा से दशांस हवन करें तो विभ्रमा नामक यक्षिणी सिद्ध होती है।

प्राप्ति– साधक के पास अदृश्य रूप में रहती है तथा चिंतित अर्थ देती है।

विशाला

मंत्र– **ॐ ऐं विशाले ह्रीं ह्रीं क्लीं एहि एहि ह्रौं विभ्रम भुये स्वाहा।**

विधि– श्मशान में दो लाख जाप करें। गुग्गल व घृत व दशांस हवन करें।

प्राप्ति– साधक के पास अदृश्य रूप में रहे। ५०० व्यक्तियों तक का भोजन दे।

सुलोचना

मंत्र– **ॐ लैं लैं सुलोचने सिद्धं देहि-देहि स्वाहा।**

विधि– पर्वत पर या नदी के किनारे तीन लाख जाप करें। घृत में दशांस हवन करें, तो सुलोचना नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– आकाश गामिनी दो पादुकाऐं भेंट करें जिससे जहाँ चाहे जा सके।

मदना

मंत्र– ॐ **ऐं मदने मदन बिंटबिनी आत्मीय मम देहि देहि श्रीं स्वाहा।**

विधि– राज द्वार पर एक लाख जाप करें तथा जाति पुष्प व दूध से दशांस हवन करें तो मदना नामक यक्षिणी सिद्ध होती है।

प्राप्ति– एक गुटिका भेंट करें, जिसे मुंह में रखने से अदृश्य हो जाने की शक्ति प्राप्ति होती है।

मानिंनी

मंत्र– ॐ **ऐं मानिनी ह्रीं ऐहि-ऐहि सुन्दरि हस-हस समीह में सगमकं स्वाहा।**

विधि– जहां चौपाये जानवर रहें। वहां बैठकर १,२५००० जाप करें व लाल फूल व तीन सुधर वस्तुओं से दशांस होम करें, तो मानिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– साधक के पास स्त्री रूप में आकर उससे वार्ता करें। उसके बाद एक तलवार भेंट दें। जिससे वह विद्याधर बनने की शक्ति प्राप्त करें।

हंसिनी

मंत्र– ॐ **हंसिनी हंसयनि क्लीं स्वाहा।**

विधि– नगर द्वार पर एक लाख जाप करें व कमल पत्र से दशांस हवन करें तो हंसिनी नाम यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– साधक को अंजन भेंट करें, जिससे पृथ्वी के अन्दर की वस्तुयें देखी जा सकें।

शतपत्रिका

मंत्र- ॐ शतपत्रिके **ह्रां ह्रीं** ध्वीं स्वाहा।

विधि– वट वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करें व धृत से दशांस हवन करें, तो शतपत्रिका नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– पृथ्वी में गड़े खजाने को बताये।

मेखला

मंत्र– ॐ हूं मम मेखले ग ग ह्रीं स्वाहा।

विधि– पलाश वृक्ष के नीचे १४ दिन तक जाप करें, तो मेखला नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– इस मंत्र के जाप्य से मन में सोचे हुए कार्य सिद्ध हो।

विकला

मंत्र– ॐ विकले ऐं ह्रीं श्रीं हूं स्वाहा।

विधि– घर में तीन मास तक जाप करें, तो विकला नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– अणिमा (छोटा होना) आदि विद्या दे।

लक्ष्मी

मंत्र– ॐ ऐं कमले कमल धारिणी हंस स्वाहा।

विधि– लाल कनेर के फूलों से एक लाख जाप करें। कुण्ड में गुग्गुल से दशांस हवन करें। इससे लक्ष्मी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– पांच विद्या दे तथा मनवांछित धन दे।

कालकर्णि

मंत्र– ॐ क्रौं कालकर्णिके ठ: ठ: स्वाहा।

विधि– ब्रह्म वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करें, शर्करा मिश्रित दशांस हवन

करें, तो कालकर्णि नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– सैन्य स्तंभन, अग्नि-स्तंभन, मधु स्तंभन तथा गर्भ स्तंभन की विद्या दे।

महाभय

मंत्र– **ॐ ह्रीं महाभय एहिं स्वाहा।**

विधि– श्मशान में जहाँ मुर्दा जलाया गया हो, वहां बैठकर एक लाख जाप करें तो महाभय नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– रमायन दे, जिसके खाने से वृद्धावस्था नहीं आये।

माहिन्द्री

मंत्र– **ॐ ह्रीं माहिन्द्री कुल-कुल युल-युल स्वाहा।**

विधि– इन्द्र धनुष के उदय के समय निर्गुण्डी वृक्ष के नीचे बैठकर १२,००० जाप करें, तो माहिन्द्री नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– आकाश गामिनी, पाताल गामिनी, नगर प्रवेश, वचन सिद्ध, देव, भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, बेताल, आदि को दूर करने की शक्ति दे।

श्मसानी

मंत्र– **ॐ ह्रां ह्रीं स्युः श्मसान वासिनी स्वाहा।**

विधि– श्मसान में नग्न होकर ४ लाख जाप करें, तो श्मसानी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– एक पट्टे दे, जिससे अदृश्य होकर तीनों लोकों में घूम सकें।

वट् यक्षिणी

मंत्र– **ॐ ऐं कपालिनी ह्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं हंस हम्बलीं फट् स्वाहा।**

विधि– वट वृक्ष के नीचे बैठ कर चांदनी रात में तीन लाख जाप करें, तो वट नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– साधक की स्त्री के रूप में रहकर वस्त्र, अलंकार, स्वर्ण, गन्ध व पुष्प आदि दें।

चन्द्रिका

मंत्र– ॐ नमो भगवती चन्द्रिकाय स्वाहा।

विधि– शुक्ल पक्ष की रात्रि में एक लाख जाप करें, तो चन्द्रिका नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– अमृत रसायन दे, जिससे सैकड़ो वर्ष तक जीवित रहने की शक्ति प्राप्त हो।

घंटाकर्णि

मंत्र– ॐ ऐं घंटे पुर क्षोभय राजा नाम क्षोभय क्षोभय भगवती गंभीरः श्वर प्लीं स्वाहा।

विधि– बजते हुए घण्टे के साथ बीस हजार जाप करें, तो घंटाकर्णि यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति– इतनी शक्ति दे कि पूरे नगर को भयभीत कर सकें।

भीषणाः जनरंजिका विशाला

मंत्र– ॐ भीषणा क्षपेत माता छिते चिरं जीवितं कर्मव्या, साधकेन, भगिन्या जनरंगिनी कालोंजन रंगि के स्वाहा।

विधि– एक लाख जाप से भीषणा सिद्ध हो जायेगी। उसके सिद्धि होने से जनरंजिका सिद्ध हो जायेगी। ५० हजार और अधिक जाप से विशाला सिद्ध हो जायेगी।

प्राप्ति– विशाल स्त्री के समान तथा जनरंजिका, दासी के समान रहेगी तथा भीषणा इन दोनों की स्थिति में रहेगी।

शोभना

मंत्र– ॐ अशोक पल्लवा काटकर तले श्रीं क्षः स्वाहा।

विधि– लाल वस्त्र व माला से तीनों समय १४ दिन तक जाप करें, तो शोभना नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

–o–